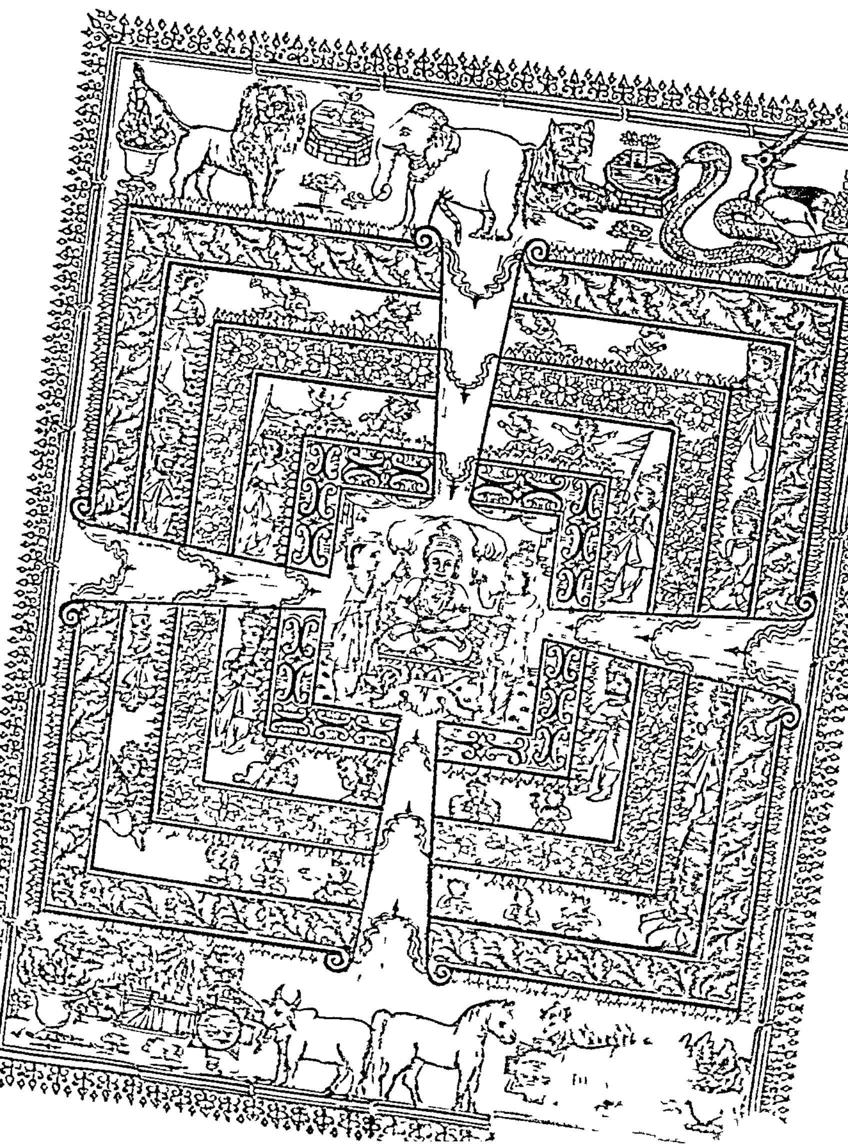


प्रस्तावना.



आ पंचमकाल समाप्तिना अवसरे ठेला दूप्पसहनामा आचार्य थशे. तेमना निर्वाणसुधी जिनधर्मरूप मानससरोवरना साधु, साध्वी, श्रावक तथा श्राविका ए चतुर्विध संघरूप चार आरा खुला रहेवा जोयेठे. एवुं परमेश्वरनु वचन ठे. कदाचित कालना प्रबल प्रन्नावथी कोई समये कोई आरो न्यूनता पाम्या जेवुं थाय तोपण बाकीना चालु रहेला बीजा आराने प्रन्नावे समय पाम्याथी ते आरो पण सुधरी जाय ठे.

आ समयमां पूर्वना समयना करतां घणी न्यूनता थई गएली दीगमां आवेठे. चतुर्विधसंघमां साधु तथा साध्वी तो क्वचितज्ञ दीगमां आवेठे अने श्रावक तथा श्राविकाओनुं पण अल्प अस्तित्व ठे. तेओनी उपरज धर्मवृद्धि आधारं राखे ठे. धर्म वृद्धि ज्ञाननी वृद्धिथी थायठे. माटे ज्ञान वृद्धि अवश्य करवी जोयेठे. ज्ञाननी वृद्धि ज्ञानना साधनोनी वृद्धि उपर आधार राखेठे. ज्ञाननां साधनो पूर्वाचार्य कृत ग्रंथोनो जीर्णोद्धार तथा अवलोकन, विद्यान्यास, उत्सुकता, धर्मप्रीति, अन्निरुचि, तथा उद्योग प्रमुख ठे.

पूर्वाचार्योक्त ग्रंथोनो जीर्णोद्धार कस्याथी ते समयना पंमितोनुं पांमित्य जाण्यामां आवेठे; मनुष्योनी धर्मउपर केवी रुचि हती ते जणायठे. नूत कालथी ते आ वर्त्तमान कालसुधी वचगालामां धर्म तथा विद्वत्ता प्रमुखनी केटली अधिक न्यूनता थई ठे ते दीगमां आवेठे. पूर्वाचार्यो अति श्रम वेठी विद्यान्यास करी मोटा मोटा ग्रंथोनी रचना करता हता तेनो हेतु मात्र धर्मवृद्धि अथवा ज्ञानवृद्धि विना बीजो कांई हतो के शुं ते वात स्पष्ट देखाई आवेठे. ग्रंथनी रचना कस्यामां केवल परोपकार विना बीजो काई पण स्वार्थ होयठे के शुं? ते कलाय ठे. पूर्व कालना करतां हालना वखतमां विद्यान्यासनो उद्योग केटलो अधिक अथवा न्यून थयोठे? ते जणाई आवेठे. इत्यादिक बीजा पण घणा हेतुउ दीगमां आवेठे. माटे अवश्य प्राचीन ग्रंथोनो जीर्णोद्धार करवो जोयेठे. केमके, ए ज्ञानवृद्धिनुं मुख्य साधन ठे. जो पुरातन ग्रंथोनो जीर्णोद्धार नही थाय, तो कालांतरे विठेद थई जवानो संन्नव ठे. अने तेवुं थएलुं हाल दीगमां आवेठे, जुवो के हरिन्नद्रसूरिए चौद शे ने चुमालीश ग्रंथो कस्या ठे, ते बधानो जीर्णोद्धार नही थयाथी तेउमांना केटलाएक ग्रंथोनो हाल पत्तो पण मलतो नथी, एवा बीजा पण अनेक सुविहित आचार्योना करेला ग्रंथोनो शोध मली शकतो नथी तेनुं कारण पण एज ठे. ते केटलुं लखियें! यद्यपि मारुं एम कहेवुं नथी के आज दिवससुधी कोईए ग्रंथोनो जीर्णोद्धार कस्योज नथी, मोटा राजाउ तथा सद्गृहस्थो वगेरे घणा ज्ञान

नंमारा करी गयाछे ते अद्यापि विद्यमान छे, अने तेथीज हाल केटलाएक पुरातन ग्रथोनु आपणने दर्शन थायछे तथापि मात्र दर्शन करवाथीज कांई वलगानु नथी, प ण योग्यरीते उपयोग करवाथी कार्यसिद्धि थवानो सभवछे जेम पूर्व धर्माभिमानी रा जा वगैराउए ज्ञान भंडारा कराछे तेम पाछल थयु नथी ए मोटी दिलगीरीनी वात छे जो एवो चालज पडी गयो होत तो एके ग्रथ विच्छेद गयो न होत अने आटली ज्ञाननी न्यूनता पण थई न होत जुवोके, देरासरनो जीर्णोद्धार करवानो चाल पडी गयोछे तो तेनी सतति विच्छेद गएली देखाती नथी तेमज ग्रथोविषे चाल पडवो जोयेछे केमके ग्रथोनो जीर्णोद्धार तो ज्ञाननी वृद्धिनु एक मुख्य कारण छे

हालना समयमां ग्रथोनो जीर्णोद्धार करवाना जेवा साधनो मली आवेछे तेवां आग ल कोई वखते पण नहोतां पहेला प्रथम ग्रथोनो जीर्णोद्धार तालपत्र ऊपर थएलो देखायछे, ने त्यार पछी कागल ऊपर थयो छे ते अद्यापि सिद्ध छे परतु ते हस्तक्रिया विना पत्रादिकनी सहायताथी थएलो नथी ने हाल तो मुद्रायत्रनी अति उत्कृष्ट स हायता मली आवेछे, तेनो उपयोग करवानु मूकी दईने आलस करी वेशी रहेशु तो ग्रथो केम कायम रहेशे ? हाल विद्याभ्यास करीने नवा नवा ग्रथोनी रचना करवी तो एक कोरे रही, पण छतीशक्तिये पुरातन ग्रथोनी रक्षा करवानो यत्न नही करशु तो आपणेज ज्ञानना विरोधी ठरशु केमके जे जेनी रक्षा करे नही ते तेनो विरोधी अथवा अहितकर होयछे ए साधारण नियम आपणी ऊपर लागु पडशे

श्रावक भाईयो, पुरातन ग्रथोनो जीर्णोद्धार करवाथी ते ग्रथोनु अवलोकन थशे. प्रयासविना केटलोएक विद्याभ्यास थशे, रस उत्पन्न थईने ज्ञान सपादन करवानी अंत करणमा उत्कठा थशे शुद्ध धर्म ऊपर प्रीति वधशे, अभिरुचि एट ले पुन पुन ज्ञान मेलववानी इच्छा थशे, अने उद्योग प्रमुख सर्व ज्ञानना साधनोनो सहज प्राप्त थशे उद्योग ए सर्व पदार्थ मेलववानु अथवा वृद्धि करवानु मुख्य साधन छे, परतु अमस्ता उद्यमथीज कांई थई शकतु नथी तेनी साथे द्रव्यनी पण सहायता जोयेछे द्रव्य जे छे ते सर्वोपयोगी पदार्थ छे माटे द्रव्यवान पुरुषोए अव श्य ए काम ऊपर लक्ष देवो जोयेछे केमके, तेउनी ए फरज छे के, जेम बने तेम ज्ञाननी वृद्धि करवी जोयेछे ते आप्रमाणे – सारा सारा पंडितोनी मारफते प्राचीन ग्रथो सुधारी लखावी अथवा छपावीने प्रसिद्ध करवा तेनो भाविक लोकोने अभ्या स करावववो इत्यादिक शास्त्रोमा कह्या प्रमाणे सर्व प्रकारे ज्ञाननी वृद्धि करवी एवा हेतुथीज में आ ग्रथो छपाववानु काम हाथमां लीधु छे, परतु कोईनी सहायता विना स्वतंत्र मारी मरजी प्रमाणे हु ग्रथो छपावी शकु एवी मारीपाशे द्रव्यनी शक्ति नही

होवाने लीधे आ 'प्रकरण रत्नाकर' नामनुं मोटुं पुस्तक छपाववानी आगमज मारा स्वधर्मी भाइयोनो मने मदत लेवी पडीछे. मारा भाग्यजोगे योग्य रीते मदत पण मली आवी. तेथी आ पुस्तकनो प्रथम भाग समाप्त करी ते गया जेष्ट मासमां प्रसिद्ध कर्यो अने आ बीजो भाग पण हमणा पूर्ण थयो छे तेथी हुं मने कृतकृत्य समजुं छुं.

आ ग्रंथ प्रसिद्ध करवाने मुख्य मदत करनार शेठ. केशवजी नायकछे.

हरेक पदार्थने सम योग्यतावान वा अधिक योग्यतावान रक्षण करी शकेछे एवुं बहुधा दीठामां आवेछे. जेम ग्रीष्म ऋतुना तापथी तप्त थएला पर्वतने मेघज रक्षण करेछे. तेम ज्ञाननुं रक्षण ते उत्तम योग्यतावान पुरुषथीज थई शकेछे. यद्यपि सकल चतुर्विध संघने ज्ञाननी रक्षा करवानो अधिकार छे. तथापि सर्वने तेवुं सामर्थ्य होवुं नथी. माटे योग्यतावानज रक्षण करी शके छे. तेवी योग्यता कोई विरलानेज होय छे, केमके. बाह्य सर्व लक्ष्म्यादि समृद्धि छतां अंतरनेविषे जिन वचन श्रद्धानरूप समृद्धि पण जोये छे. तेमांनी बाह्य समृद्धि तो घणाओने होयछे तेम छतां जिनवचन श्रद्धान होतुं नथी तो तेनाथी कोई पण एवुं शुभ कृत्य थई शकतुं नथी. तेथी बाह्य संपत्ति सहित प्रवचनश्रद्धान पण जोये छे. बाह्य उत्तम संपदा अने अंतर स्वधर्म निष्ठा ए उत्कृष्ट पुण्यानुबंधीपुण्यनुं फल छे. तेवुं कोईएकनेज होय छे. एनुं प्रत्यक्ष उदाहरण आ वर्त्तमान द्विशतकरूप कालनेविषे श्रेष्ट केशवजी नायक छे. केमके. एवी योग्यतावान बीजो कोई पुरुष हाल दीठामां आवतो नथी. एओ बाह्य लक्ष्म्यादि संपत्तियुक्त छतां आंतर धर्म सम्यक्त्व श्रद्धानरूप अत्युत्तम संपत्तिए करीने पण युक्त छे. जेनेविषे पंच प्रकृतिरूप अंतराय कर्मनो क्षयोपशम आधुनिक सर्व संघ जनोना कर्त्ताअधिक दीठामां आवेछे; एमना जेवुं आतप नाम कर्म तो कोई नृपने पण क्वचित् उदय थयलुं दृष्टि गोचर थशे! तेमज आदेय नामकर्म. अंगोपांग नाम कर्म. यशः कीर्त्तिनाम कर्म. प्रमुख शुभ प्रकृतिओनुं एमणे एवो तो उत्कृष्टबंध कर्योछे के. तेवो हाल दक्षिणभरतार्द्धमां कोई बीजानेविषे क्वचित् दीठामां आवशे एवा पुरुषने शुं अशक्य होय? अने कीयुं कार्य करवाने समर्थ न थाय! अर्थात् सर्व कार्य करवाने शक्तिमान छे. पूर्वे थईगएला संप्रति राजा तथा वस्तुपाल तेजपाल अने कुमारपाल प्रमुख महत् प्रभाविक पुरुषोनी पठे एमणे पण वर्त्तमान कालानुसार धर्म दीपनार्थ तथा स्वश्रद्धान दर्शनार्थ श्री अर्हद्देवालयो तथा अंजन शलाका प्रमुख उत्तम धर्म कृत्यो कर्यां छे; ते बधाओथी पण अ

त्युत्तम ज्ञानवृद्धिनी उत्कृष्ट पूर्वक तद्युक्त पुरुषोने अतिशय आश्रय दियेले, माटे
श्रये करी एमने पूर्ववृत्त धर्म श्रद्धावान कुमारपाल राजा प्रमुखनी पंकिमां गणा
न गणाय किंतु तेमनी तुलना करे तेवाज छे आ नगरमां कोईए अतिशयोक्ति
मळवी नही, पण निर्पक्षपात बुद्धिथी विचार करो जाउं छे शेठ केशवजी नायक
सर्व उपमाने योग्य छे के नही ! जुओ के अमे अकिन कथान श्रावण करेना था
क लक्ष सख्याक महत् चतुर्नागात्मक पुस्तकना अकनीय स्वर्चनविषे एवी युक्ति
आश्रय आप्योछे के जेथकी केटलाएक समयोछगिन पूर्व धीनाश्राय करी रचित ग्र
योजु सुखरूप पुन जीर्णोद्धार थई शकशे माटे एमन जेटली उपमाईये तेटली थोडी

रावबहादूर बाबुसाहेब लक्ष्मीपति सिंहजी छत्रपति सिंहजी

शेठ केशवजी नायकविषे लखतां आ प्रसंगे श्रीमकसूदाबाद निवासी स्वर्गांत सूर्य
समान, लक्ष्म्यादि बाह्य अमित समृद्धि युक्त, उत्तम यश कीर्ति नाम कमादयवान,
ज्ञान वृद्धयुत्कतावान अतिशय, प्रतापी स्वधर्म दीपक पुण्यक पंक्ति अविराजनीय, सर्व
संघ तिलक भूत तथा श्रावक गुण सहित्यादि अपूर्व कृत्याकार नृपित रावबहादूर
नृपतिदत्त पदक धारक बाबुसाहेब लक्ष्मीपति सिंहजी छत्रपति सिंहजी ' अवलोकन
प्रमाणेज योग्यतावान होवाथी अधुना अनुपमेयज छे

जस्टिस् ऑव् धि पीसाख्य नृपतिदत्त पदक धारक शेठ रतनचंद नाम सपावन
बबहादुराख्य नृपतिदत्त पदक धारक शेठ लक्ष्मीपतिसिंहजी छत्रपतिसिंहजी निरुचि ए
विक धर्म दीपक पुरुषो श्रावक मण्डलनेविषे हमेश उत्पन्नथता रहो, अने साधनोनी
वृद्धिरूप धर्मकृत्यो कर्त्ता रहो एवो अमारो अंत करण पूर्वक आशिर्वाद छे सुख

आ ज्ञानवृद्धिक उत्तम कृत्यने सारो आश्रय आपनार प्रभाविक पुरुषोनी पंक्तिमां
शोभित, अपेक्षा तथा उपेक्षा रहित, सारासार ग्राहक, परम रहस्यज्ञ, परोपकार
तिमान, करुणा, दया, कृपा तथा शीलादि गुणगुण युक्त, श्री जीनराजपद कमल मक
रद लालसाये भ्रमरायमान, महात्मा सदृश मुनी महिमा सागरजी तथा सुमति सागर
जी, एमनो अत्यंत प्रार्थना पूर्वक अत्युपकार युक्त नाम स्मरण अत्र गुथित करु छु

श्री मुंबईना श्रावक मण्डळमांना श्रेष्ठ हरजम नरसिंह, श्रेष्ठ पेथा भाई पदमसी
श्रेष्ठ वर्द्धमान पुनसी, श्रेष्ठ भोजराज देसल, एमणे ज्ञान वृद्धि विषयक पोतानी मार्ग
उदारता दर्शावी छे माटे तेमना उपकार पूर्वक हु नाम गुथित करु छु

श्रीमकृष्णुदावाद निवासी परम ज्ञान प्रसारोद्युक्त मतिमान स्वज्येष्ट भ्राता तुल्य ल क्ष्मी तथा गुण युक्त भूप दत्तक रायवाहादूर पद धारक वावुसाहेव धनपति सिंहजी छत्रपति सिंहजी एमने पण पोतानी उत्कृष्ट ज्ञान वृद्धिक कृत्यने सारी उदारता दर्शावी छे तेथी तथा वीजो पण ज्ञान वृद्धिने अर्थे पुस्तक अंकित करवानो हमेश उद्योग चालुं राखेले तेथी अति सत्कार पूर्वक तथा मान्यता युक्त नामस्मरण गुंथित करुंछुं.

श्री मुंबईना श्रावक मंडळमांना शेठ परवत ळधा, शेठ मूळजी देवजी, शेठ जादव जी परवत, सा. भोजराज नरपाळ, तथा शेठ कीकाभाई फूलचंद तथा शा. ठाकरसी देवजी एओए पण यथाश्रद्धान प्रमाणे आ ज्ञानवृद्धिना कृत्यने आश्रय आप्योछे तेथी तेओनुं उपकार सहित नामस्मरण गुंथित करुं छुं.

श्री अहमदावादना श्रावक मंडळ माहेला शेठ दळपत भाई भगुभाई, तथा शेठ मयाभाई प्रेमाभाई, एउनी ज्ञाननी प्रशस्ति थवानेविषे अति उत्कंठा जोईने मोटा आभार सहित नामस्मरण गुंथित करुं छुं;

श्री साणदवाळा शेठ साकळचंद हुकमचंद तथा श्री भरूचवाळा शेठ अनूपचंद मलु कचंद, एओए पोतानी धर्मप्रभावना अधिक दर्शाववाने अर्थे ज्ञाननी वृद्धि थवा सारु जे उत्सुकता वतावी छे ते जोईने मोटा उपकार साथे नामस्मरण गुंथित करुं छुं.

६ . . श्री कछ मुदराना रहेवाशी शेठ कस्तुरचंद सिंघजी पारेख एमनी अद्भुत धर्म प्री

पति म...यता तथा ज्ञानवृद्धिनी अतिशय चाहना जोईने मोटा आदर पूर्वक आ पु

टा ए उ...साथे नाम गुथित करुं छुं.

हरण आ मंडळ मार्गमार्गित संवेगी साधु वर्य, अति विवेकी, ज्ञान पीयूष वुभुत्सुक

ग्यतावान चन श्रवण श्रद्धावान श्रावक जन मन कर्णने परमामृत रहस्य पान कराव

नियुक्त ठ साधु गुण भूषणालंकृत, ज्ञानवृद्धि कर्त्ता पुरुषरूप वृक्षोने मेघवृष्टि समान अत्यु

नेविषे एं त्कृष्ट साधन भूत, महाराज श्री मूळचंदजी तथा जवेर सागरजीना, नामस्मरण प्रेम पूर्वक गुंथित करुं छुं.

साधु मंडळमां साधु गुण संपन्न, ज्ञानरूप सूर्यना प्रकाशने आवरण करनारा जे नाना प्रकारना संशयो, कुतर्कों, द्वेष, मान, ईर्षा तथा कुसंग प्रमुख वादळ समूहरूप घनघटानो सम्यक् प्रकारे विध्वंश करवाने वळवान पवन समान; धर्म तथा धर्मांग ज्ञानादिकनी वृद्धि करवाने पूर्वना अत्युत्तम सुविहित शास्त्रपारग आचार्यादि आर्य जन तुळ स्याद्वाद सैळीना जाण वहुधा पंजावाख्य देश निवाशी संवेगी साधु श्री आत्माराम समान आत्मारामजी एमनुं अति भावपूर्वक नामस्मरण गुंथित करुंछुं.

सवेगी साधु श्री नितीविजयजी महाराज एओनो ज्ञान वृद्धि अर्थे सारो अ
होवाथी प्रथम भागनी पठे नामस्मरण गुथित करु छु,

सवेगी साधु साध्य वस्तु साधनोद्युक्त युक्त मतिमान जिनवचन समुद्रमांथी र
वत ग्रहीत धर्माकाशस्थित जलवृष्टि वत् ज्ञान वृद्धि कर्त्ता, सवेगी साधु शुद्ध सम्यक
पदारथ, परम सुविहित सुसाधु मण्डल माल ग्रोहीत, ज्ञानादि शुद्ध जिनधर्मागर्ग
प्रयत्नवान. श्रीशाति सागरजी महाराजनु नामस्मरण गुथित करुछु,

जन वृद्ध वय अचल गछाचार्य भट्टारक श्रीविवेक सागर सूरि, एमनु पूर्वभाग
पठे नाम स्मरण गुथित करु छु,

मनुष्य पुज पूज्य तप गछाधिपति भट्टारक श्री धरणेन्द्रसूरि, एमनु नाम स्म
गुथित करु छु,

श्री हुकमचन्दजी महाराजनु में प्रथम भागमां नाम स्मरण गुथन कर्यु छे तेमन
अत्रे पण गुथित करु छु

प्रवचन रहस्य ज्ञाता, कोविद मतिमान, अद्भुत चपल वक्तृत्वशक्तियुक्त, सरूपसा
गरवित् श्रीरूपसागरजीनु नाम स्मरण गुथित करु छु,

शुद्ध वीतराग परुपित, जिनधर्म विभूति युक्त श्रीअहमदावाद नगर निवास
सर्व श्रावक मण्डल जन भूप समान अत्यत लक्ष्मि सपत्तिवान पूर्वज
श्रेणि आगत श्रीमान उत्तम श्रद्धान सद्वर्त्तमान तथा धर्मदीपक श्रेष्ट मयाना
मानाईनु नामस्मरण पुन गुथित करु छु

बीजा पण जे जे सद्बुद्धिमान पुरुषोए धर्म प्रभावना दर्शाववा निमित्ते स्वसामर्थ
नुसार ज्ञानवृद्धि हेतुथी जे उदारता दर्शावी छे तेओनां नामस्मरणार्थी पुस्तकना
नेविषे गुथित थशे

क्षमापना

प्रथम भाग मध्ये मतिदोषथी तत्वानुबोध नामनो ग्रथ जे पृष्ठ ७३१ थी ७५६
सुधीमा नाखवामा आव्यु छे ते स्थानकवासी रतनचदनो करेलो छतां लखेली प्रतमां
तेवु न जणायाथी भूलथी छपाई गया छे एटला माटे हु सर्व सुबुद्धिवान वाचको पासे
थी क्षमा मांगु छु के अन्ति ग्रथना मुख पृष्टमा सुविहित गीतार्थ रचित ग्रथो
ज नाखवानो मे प्रतिज्ञा करेली छे तेने कोई दूषण आपशो नही केम के, हरेक

काम भूलथी थाय. ते क्षमा करवा योग्य छे ढुंढिया यद्यपि जिनधर्मी नामधरावनारा तो छे पण जाते मूर्खज होय छे तेथी तेउ जिनोक्त मार्गनी विपरीत परुपणा करता डरता नथी एवात सर्व सुज्ञ जनोने सम्मत छे माटे ते मूर्ख होवाथी गीतार्थ कहेवाय नही तेथी ए ग्रंथ अवश्य जैन सैलीथी विपरीतजछे एवुं जाणी त्याग करवा योग्य छे; कोईए सुविहित गीतार्थकृत जाणीने वांचवो भणवो नही ए वात हुं श्री भावनगरमां साधु श्री आत्मारामजी महाराजने मलवा गयो हतो त्यारे तेमणे मारी पाशे कही ए रतनचंद थानकवासी साथे आत्मारामजी महाराजनो मलाप थयलो हतो इत्यादिक बहुवातो मे एमना मुखथी सांभलीने तेथी में घणो पश्चात्ताप कर्यो पण पछी थाय शुं? माटे मूलथी मारी प्रतिज्ञामां में भूल कीधी तेनी मुनि श्री आत्मारामजी महाराजना उपकार सहित सर्व सज्जनो पाशेथी क्षमापना मागुं छुं.

शा. भीमसिंह माणक.

विनती.

समस्त जैन धर्म रागी. नाना ग्रंथ विचार कुतुहलुक, जिनवचन पीयूषपान कर्त्ता, शरल चित्तवाला जनोने अति प्रार्थना पूर्वक विनति करुं छुं के, जेम जननी अथवा जनक स्वपुत्रना दोषविषे रचमात्र विचार न करतां मात्र गुणनुंज ग्रहण करेछे. तेम आ अंकित पुस्तकनेविषे कोईने कांई दोष दृष्टिगोचर थाय तो मफ कपर रंचमात्र रोष करवो नही केमके, सर्व प्रकारे निर्दोषता एक केवलीविना बीजा कोईनेविषे पण संभवे नही एटला माटेज पूर्वे थई गयला महत् आचार्य प्रमुख श्रुतज्ञान पारग अत्युत्कृष्ट पंडितो पण स्वरचित ग्रंथोमां बुद्धि दोषनेविषे क्षमा मागी गयला दीठामां आवेछे; त्यारे आधुनिक साधारण जननी वात शुं कहेवी? आ पुस्तकनुं शोधन करतां मति दोष अथवा दृष्टिदोष अवश्य दीठामां आवशे; ते जोईने रोष न करतां क्षमा करवी. केमके, वांचता अथवा लखतां भूल थायज छे एवो नियम छे. एविषे जे गर्व करे ते मूर्ख कहेवाय. माटे ए विषे हुं सर्व सत्पुरुषोनो विनय करुंछुं के, आपनी हंसना चंचू जेवी मतिथी सारासार विचार पूर्वक जलरूप दोषनुं निवारण करीने पयरूप गुणनुं ग्रहण करवुं. अने असत् पुरुषोनो पण अधिक विनय करुं छुं के. आपनी काकना चंचू जेवी मतिवडे गुण तजीने दोषनुं ग्रहण करीने ते लुम्बेथी प्रसिद्ध कर[illegible]ी छुं

मोटो उपकार मानीश ? केमके, जो दोप दर्शावनार नही मले तो दोप दीठामां केम आवे? गुणग्राहकनी क्षमारूप अमृत धाराथी यद्यपि गुणनी पुष्टी थायछे, तथापि दोप ग्राहकनी कुमतिरूप कुठार धाराथी बुद्धि भिन्न भिन्न थइने तेने अदोपता करवाविषे घणा प्रयत्नमां प्रवृत्ति थायछे, तेथी तेनो पण उपकार मानवा योग्य छे माटे सर्व सज्जन तथा दुष्ट पुरुषोनी विनति करु छुं के, यथा स्वमति अनुसार गुणदोष विचार करीने क्षमादिक करवु

शा० भीमसिंह माणक

प्रार्थना

आ पुस्तक वांचनारा अने भणनारा प्रमुख सर्व जनोने अति नम्रतापूर्वक हु याचना करुछु के, आ

णमा अंतरवृत्तिजन्य दोपथी, बाह्यदृष्टि दोषथी जैननी सैलीथी विपरीतता अथवा साशयिक दीठामां सर्व लखी लईने ते मने मोकलावी देवु, के जेथी तं परिहार करवामां आवे जेम के, प्रथम भागमा ना.. मा अनुसुदरने अवधिज्ञान उत्पन्न थया पछी अनत ता ते सर्व वात स्मरणमां

दीठामा आवे त्यां त्याथी लखे... तो मने सूचना करवी एवी हु तेमन र मान्यामा आवशे

॥ श्री ॥

प्रकरणरत्नाकर नामाख्य पुस्तकना बीजाभाग माहेला ग्रंथोनी स्थूल विषयानुक्रमणिका प्रारंभः

श्री जिनस्तोत्र संग्रह, श्री कल्याणसागर सूरिकृत.

विविधविषयिकस्तोत्र, जिनप्रभाचार्यकृत.



॥ अथ श्री महिम्नस्तोत्रप्रारंभः ॥

महिम्न. पारं ते परमलभमाना अपि विभो भवति स्तोतारः समवसृतिभूमौ समुदिताः ॥ यदिंद्राद्यास्त्वां तज्जिनवृषभभक्त्या स्तवयतो ममाप्येष स्तोत्रे हरनिरपवाद. परिकर· ॥ १ ॥ स्वरूपं चिद्रूपं किमपि तदरूपं भगवत श्चतूरूपा ब्राह्मी यदि गदितुमीष्टे न भवतः ॥ ततः कस्य स्तुत्यं किमुपममिदं कस्य विषय. पदे त्ववाचीने पतति न मनः कस्य न वच. ॥ २ ॥ यद्वा ॥ पदं शैवं केचित्परममनपेक्षाक्षयसुखं स्तुवति त्वा राज्यादिकपदकृते मंदमतय. ॥ भवेद्वा तत्वार्थे रतिरतितरां नैव भवतः पदे त्ववाचीने पतति न मन कस्य न वच ॥ ३ ॥ गुणानामानंत्यादविषयतया वाङ्मनसयो र्न शक्या तत्वज्ञै रपि तव विधातुं स्तुतिरियम् ॥ भवन्नामोच्चारात्पुनरपि ममैतां निजगिरं पुनामीत्यर्थेऽस्मिन् पुरमथनबुद्धिर्व्यवसिता ॥ ४ ॥ यद्वा ॥ जटालंकारालंकृतमथ वृषांकं च भगवन् पुनानं विश्वं त्वां प्रथमजिन मत्वा किमु ततः ॥ जटां धृत्वा श्रित्वा वृषभमहमपि ख्यातजमिदं पुनामीत्यर्थेऽस्मिन्पुरमथनबुद्धिर्व्यवसिता ॥ ५ ॥ न कोपस्याटोपः स्वरिपुषु न च स्वेष्वपि तथा प्रशान्तिर्नो कान्तादिकपरिकर. कश्चिदिति ते ॥ त्रिलोक्यामालोक्याप्यहह परमां भारत्नरमां विहंतुं व्याक्रोशीं विदधत ऽन्ये के जडधिय· ॥ ६ ॥ ध्रुवं कश्चित्कर्त्ता निखिलभुवनस्यापि स पुन र्विभुर्नित्यश्चैक· सततनुरतनुर्वा स्ववगत· ॥ स्वयं सिद्धेन्यस्मिंस्तव मतमनासान् हतधिय कुतर्कोयं कश्चिन्मुखरयति मोहाय जगत. ॥ ७ ॥ विगुर्णैरागाद्यैरपि भवति किं सर्वविदहो विना वा सर्वज्ञं ननु जिन किमाप्तोपि स च किम् ॥ त्वदन्योपि क्वापि त्रिजगति वताप्तस्त्वविषये यतोमंदास्त्वा प्रत्यमरवर संशेरत ऽमे ॥ ८ ॥ त्वमेवार्हन् बुद्धो जगति परमेष्ठी च पुरुषो तमोभङ्ग्या भास्वान्विबुधगुरुराडीश्वर इति ॥ विभो नानाकान्ति· समविषममार्गेषु चरतां नृणामेकोगम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव ॥ ९ ॥ प्रसादात्ते पुत्रा विषयसुखसाम्राज्यमभजन न के वा सेवातस्तव भवनवामृद्धिमगमन् ॥ तृणे स्त्रैणे स्वर्णे दृषदि च सदृक्षः पुनरहो न हि स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णा भ्रमयति ॥ १० ॥ भवन्ननादक्षातिशयमहिमेक्षावशसमुद्भवद्भक्तिव्यक्त्या रणरणकितात करणत. ॥ अधीरप्युद्युक्तोस्मिजगदशक्यं स्तवमपि स्तुवन् जिह्नेमि त्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता ॥ ११ ॥ न श्रियां कस्यास्तां नमिविनमिपती जिनपते त्वदेकस्वामित्वाक्रमकमलसंवाह रतिनौ ॥ प्रसादात्ते विद्याधरपतितति यत्सविनयं स्वयं तस्थे नान्या तव किमनुवृत्तिर्न फलति ॥ १२ ॥ तदा विद्याः प्राप्य ध्रुवमखिलविद्याधरमहा स्यय प्रादुर्भाव्य प्रथमम

थ वेताढ्यविज्जुताम् ॥ यदेतो डुस्सार्यौ सुरनरवराणामनजता म्यिरायाम्लन्नकेस्त्रि
पुरहर विस्फुर्ज्जितमिदम् ॥ १२ ॥ श्रथायातंगर्धं मदनमदरिच्चमि च महानिव
सर्वज्ञत्वमसमविनूतिश्च परित ॥ शिवासगभग सततमिति नो कम्य रुनिन स्वि
रायास्त्वन्नकेस्त्रिपुरहर विस्फुर्जितमिदम् ॥ १४ ॥ विवाहादौ नेतुर्भुटरूपरुतो ब्रि
तिनव त्वया पारपर्यागतपरिचयान्मोहचरट ॥ तथा दूरं नट क्वचिदपि ययार्कं
जकनाप्रतिष्टा त्वय्यासीद् ध्रुवमुपचितो मुह्यति स्वन ॥१५॥ निजश्र्वा स्पर्द्धांतुर्नेत
रिज्जुरासीन्मघवता यदाऽपत्तस्यार्द्धासनमथ सुरस केवजरमाम् ॥ तवेतस्मिन्सते तव
पदविनम्रे समुचितं न कस्याप्युन्नत्यं नवति शिरसस्त्वय्यवनति ॥ १६ ॥ निनम
यां पूर्वं क्षणमजगणत्वा नरतराद् सम चक्रेणाहो तदिह रिपयाणां रिपमता ॥ यद
तस्यार्चात्र प्रमितफलदैवाशिवसुख न कस्याप्युन्नत्यं नवति शिरसस्त्वय्यवनति
॥ १७ ॥ प्रनो त्वत्पुत्रस्यातुलबलनतो बाहुबजिनस्तपस्तीव्र तादृक् शरदवनिमानार
पि रुतं ॥ निदान ज्ञानस्य ध्रुवमनवदाश्चर्यमथवा रिकारोपि श्लाघ्यो सुरननयनग
व्यसनिन ॥ १८ ॥ न सुत्रामा यत्र प्रनवति विधातापि न विज्ञु स वैकुण्ठ कुण्ठ
किमपि न नवश्चानवदलम् ॥ जिगीषु स त्वामप्यपरसुरमहुर्म्मतिरनूत् स्मर स्म
र्त्तव्यात्मा न हि वशिषु पथ्य परिनव ॥ १९ ॥ प्रयुजान स्वामिन्स्वयमसिनगि
रुपान्यसुमता कला पुसा स्त्रीणामपि च सकला क्ष्मापतिरपि ॥ कुजाजादीन्ताता
न् क्षणमपि नयन् शिक्षणविधौ जगद्रक्षार्थे त्व नटसि ननु वामेव रिज्जुता ॥२०॥
प्रनो तैस्तै सारैरणुनिरखिलैश्चामरवरै रुतं रूपं सर्वोत्तमसुखगमगुष्ठकमितम् ॥
त्वदगुष्टस्याग्रे क्षुनति किन्न नागारकइवेत्यनेनैवोन्नेपं धृतमहिमदिव्य तव वपु
॥२१॥ प्रजा प्राज्य राज्य स्थविरजननी स्वस्य तनुजास्तपस्यन्नासत्तावपि च विहरन्वा
हुबजिन ॥ उपेक्षिष्टा श्चात्तव्रतनृपसहस्राश्च चतुरो विधेये क्रीडत्यो न खलु परतत्रा
प्रञ्जुविय ॥ २२ ॥ यदा नो रत्नानां त्रयमखिलदौर्गत्यहरण निदान सपत्तेस्त्रिभुवनन
नानामनुदिनम् ॥ नवान् योगक्षेमावपि विरचयन्मन्मथजये त्रयाणां रक्षार्थ त्रिपुर
हर जागर्त्ति जगताम् ॥ २३ ॥ यथा पूर्वं मुग्धास्तवसदुपदेशाद्युगलिन सदा स्वामि
न्नीशाजनिषित सदाचारचतुरा ॥ तथा कस्क सप्रत्यपि न विशदेषु त्वदुदितश्रुतौ श्र
र्द्धा बध्वा दृढपरिकर कर्मसु जन ॥ २४ ॥ तपस्तीव्र ब्रह्मव्रतनियमनिष्ठा बहुवि
धा क्रियाकष्टास्पष्टा अपि जिनप डुष्टाशयतया ॥ त्वदाज्ञावज्ञायां नियतमहितार्थै
व नविना ध्रुव कर्त्तु श्रद्धाविधुरमनिचाराय हि मता ॥ २५ ॥ क्षमानून्मुख्या के
नियतमधिमात्रानपि सदा स्वयस्यान् शास्त्रौघान्नदधतितरां यस्य हतये ॥ अविघ्न त

निघ्नन्नसमसमयस्त्रामसमृगं त्रसंतं ते ऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधरजसः ॥ २६ ॥
परिभ्राम्य क्लेशार्जितमपि सहस्रेण शरदा मदाश्विइाजत्वं सपदि मरुदेव्य तदपि चेत्॥
प्रभो निस्नेहं सा व्रतसमयसर्वावगणनादवंति त्वामद्धा बत वरद मुग्धा युवतयः
॥ २७ ॥ महानंदे यद्यप्यसि जिन दवीयस्यपि पदे न रुष्टस्तुष्टश्च त्रिभुवनजनेषु क्व
चिदपि ॥ भवन्नाम स्वामिन्स्त्वमनसि महामंत्रमनिशं तथापि स्मर्तृणां वरद परमं
मंगलमसि ॥ २८ ॥ प्रभो प्राणायामाभ्यसनरसिकत्वान्निजमनः समाधावाधाया
खिलविषयतोक्षाणि युगपत् ॥ द्रुतं प्रत्याहृत्य स्थिरनिहितनासाग्रनयना दधत्यंत
स्तत्वं किमपि यमिनस्तत्किल भवान्॥२९॥ सुरद्रुः स्वः कुंभस्त्रिदशसुरभिस्त्वं सुरम
णिः पिता माता भ्राता विभुरपि सुहृत्त्वं च सुगुरुः ॥ परात्मा ब्रह्मापि त्वमसि पर
मं दैवतमतो न विघ्नस्तत्तत्वं क्वचिदिहहि यत्त्वं न भवसि ॥ ३० ॥ अकाराद्यैर्वर्णै
स्त्वयि परिणतान् पंच परमेष्ठिनः स्पष्टं पंचाक्षररचनया नामिनिगदन् ॥ कलाना
दव्यक्तं किमपि परमब्रह्मविषयं समस्तं व्यस्तं त्वां शरणद गृणात्योमिति पदम्॥३१॥
न रागाद्यैर्ग्रस्तो न पुनरनुकंप्यो मदपरः कृपालुस्त्वत्तोन्यो न जगति न तेभ्यः पुनरलम्॥
स्वयं तैरत्यार्त्तैः किमितरसुरैश्चेति विमृशन् प्रियायास्मैधाम्ने प्रविहितनमस्योस्मि
भवते ॥ ३२ नमो नासक्ताय क्वचिदपि विरक्ताय च नमो नमः संबुद्धाय प्रशमद
मरुद्धाय च नमः ॥ नमः सर्वज्ञाय स्मरणपरतन्त्राय च नमोनमः सर्वस्मै ते तदि
दमितिशर्वाय च नमः ॥ ३३॥ दलितरजसे शश्वद्विश्वार्चिताय नमोनमः प्रहततम
से श्रीसर्वज्ञाधिपाय नमोनमः॥ जनहितकृते तुभ्यं सत्वाधिकाय नमोनम. प्रमहसि
पदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमोनम. ॥३४॥ कुसुमवटुरिवाहं तद्गुतो किंचनार्हं कृतिभि
रुरसि कंठे वा गुणत्वादधार्यम् ॥ जिनवर जिनहर्षोत्कर्षतोकार्पमेवं वरद चरणयंस्ते
वाक्यपुष्पोपहार ॥ ३५ ॥ प्रांशुश्रीसोमवंशेऽजनिपत मुनयोमौक्तिकानीव शुद्धास्ते
ष्वप्येकावली च प्रगुणगुणवती श्रीमदाचार्यपंक्तिः ॥ जीयाद्राज्यं यदूनामिव गुरुज
यचड्राव्हयश्रीमुनींद्रस्तस्यामप्येष चिंतामणिरुचिररुचिर्नायक' कृष्णदेवः ॥ ३६ ॥
निहितचरमपादं श्रीमहिम्नः स्तवस्य त्रिभुवनमहितस्य श्रीयुगादीश्वरस्य ॥ भ्रमरइव
सदा तत्पादपद्मोपजीवी रुचिरमलघुवृत्तैः स्तोत्रमेतद्व्यधत्त ॥ ३७ ॥ एवं शारदसो
मसुंदरयशःस्तोमं युगादीश्वरं चेतोभूजयचंद्रमौलिभिरभिष्टत्यान्वहं योगिभिः ॥ ज्ञानं
प्राप्य विशालराजसदृशल्हादं समाश्रीयते मुक्त्यै मूर्ध्नि रत्नशेखररमा ब्रह्मैकतेजो
मयी ॥ ३८ ॥ इतिश्रीयुगादिदेवमहिम्नः स्तोत्रं संपूर्णम् ॥

॥ अथ क्षमाकल्याणजीकृत चतुर्विंशतिजिनस्तुतिप्रारम्भ ॥

शार्दूल विक्रीडितछंद ॥ अथ ऋषभस्तुति प्रारम्भ ॥ सन्नतया नतमौलिनिर्जरवरश्रेणि
लुमौलिप्रभा समिश्रारुणदीप्तिशोभिचरणांभोजद्वय सर्वदा ॥ सर्वज्ञ पुरुषोत्तम सु
रितो धर्मार्थिना प्राणिना भूयाद्भूरिविभूतये मुनिपति श्रीनाभिसूनुर्जिन ॥१॥ मह्रो
धोपचिता सदैव दधतांप्रौढप्रतापश्रियो येनाज्ञानतमोवितानमखिल विक्षिप्तमत
क्षण ॥ श्रीशत्रुंजयपूर्वशैलशिखर भास्वानिवोद्भासयन् भव्यांभोजहित स एव जयतु
श्रीमारुदेवप्रभु ॥२॥ योविज्ञानमयो जगत्त्रयगुरुर्य सर्वलोकाश्रिता सिद्धियेन वृतास
मस्तजनता यस्मै नतितन्वते॥ यस्मान्मोहमतिर्गता मतिभृतायस्यैव सेव्य वचो यस्मि
न्विश्वगुणास्तमेव सुतरा वदे युगादीश्वर॥३॥अथ अजितस्तुति प्रारम्भ ॥मालिनीछंद॥
सकलसुखसमृद्धिर्यस्य पादारविंदे विलसति गुणरक्ता भक्तराजीव नित्य॥ त्रिभुवनन
नमान्य शांतमुद्राभिरम्य स जयति जिनराजस्तुगतारंगतीर्थे॥१॥भवति किल भव्या
यस्यबिंवं ईक्षनेन व्यपगतदुरितोघ प्राप्तमोदप्रपच ॥ निजवलजितरागद्वेषविद्वेषिवर्गं
तमजितवरगोत्र तीर्थनाथ नमामि ॥ २ ॥ नरपतिजितशत्रोर्वंशरत्नाकरेंदु सुरपतिव
तिसु स्त्येर्नैकिदर्के समर्च्य ॥ दिनपतिरिव लोकेऽपास्तमोहांधकारो जिनपतिरजितेश
पातुमां पुण्यमूर्त्ति ॥३॥ अथ सभवस्तुति ॥ स्रग्धराछंद ॥ यन्नतया सक्तचित्ता प्रभु
रतरभवत्रांतिमुक्ता मनुष्या सजाता साधुनावोल्लसितनिजगुणान्वेषिण सयएवा स
श्रीमान्सभवेश प्रशमरसमयोविश्व विश्वोपकर्त्ता सद्भर्ता दिव्यदीप्ति परमपदकृत से
व्यतां भव्यलोका ॥ १ ॥ शुक्लध्यानोदकेनोज्वलमतिशयितस्वज्ञानावालतेन स्वस्मादा
दृत्य कृत्न शिवपदनिगम कर्मपकप्रपच॥ नीरध्र दूरयित्वा प्रकृतिमुपगतोनिर्विकल्पस्वरू
प सेव्यस्तादृर्यंधजोसौ जगति जिनपतिर्वीतराग सदैव॥२॥ वाद्दैा वियोतिरत्नप्रकर
इव परिभ्राजते सर्वकाले यस्मिन्नि शेषदोषव्यपगमविशदे श्रीजितारेस्तनूजे ॥ इप्रा
पो उष्टसर्वं स्फुटगुणनिकर शुद्धबुद्धिक्षमादि कल्याणश्रीनिवास स भवतिवद
ताऽभ्यर्चनीयो न केषां ॥३॥ अथ अभिनदनस्तुतिप्रारम्भ ॥ द्रुतविलंबितछंद ॥ विश
दशारदसोमसमानन कमलकोमलचारुविलोचन ॥ शुचिगुण सुतरामभिनदन ज
य मुनिर्मलताचितभूधन ॥ १ ॥ जगति कांतहरीश्वरलांछितक्रमसरोरुह कामरूपा
निधे॥ मम समीहितसिद्धिविधायक त्वदपर किमपीह न तर्कये ॥ २ ॥ प्रवरसवर स
वरभूपतेस्तनय नीतिविचक्षण ते पद ॥ शरणमस्तु जिनेश निरतर रुचिरभक्तिसुयुक्तिभृ
तो मम ॥ ३ ॥ अथ सुमतिस्तुति प्रारम्भ ॥ उपेंद्रवज्राछंद ॥ सुवर्णवर्णो हरिणासव

णों मनोवनं मे सुमतिर्बलीयान् ॥गतस्ततो दुष्टकुदृष्टिरागद्विपेंद्र नैव स्थितिरत्र कार्या ॥ १ ॥जिनेश्वरो मेघनरेंद्रसूनुर्घनोपमो गर्जति मानसे मे॥ अहो गुरुद्वेषहुताशन त्वा मतो शमं नेष्यति सद्यएव ॥ २ ॥इत. सुदूर व्रज दुष्टबुद्धे समं दुरात्मीयपरिच्छदेन ॥ सुबुद्धिनर्त्ता सुमतिर्जिनेशो मनोरमः स्वांतमितो मदीय ॥ ३ ॥ अथ पद्मस्तुतिप्रारंभः भुजंगप्रयातछंदः ॥ उदारप्रभामंडलेर्भासमानः कृतात्यंतदुर्दांतदोषापमानः ॥ सुसीमागजश्रीपतिर्देवदेव स्त्सदा मे मुदाभ्यर्च्चनीयस्त्वमेव ॥ १ ॥ यदीयं मनःपंकजनिलय मेव त्वयालंकृतं ध्येयरूपेण देव ॥ प्रधानस्वरूपं तमेवातिपुण्यं जगन्नाथ जानामि लोके सुधन्यं ॥ २ ॥ अतो धीशपद्मप्रभानंदधाम स्मरामि प्रकामं तवैवांग नाम ॥ मनोवांछितार्थप्रदं योगिगम्यं यथा चक्रवाको रवेर्धाम रम्यं ॥ ३॥ अथ सुपार्श्वजिनस्तुतिप्रारंभः तोटकछंदः ॥ जयवंतमनंतगुणैर्निभृतं पृथिवीसुतमद्भुतरूपभृतं ॥ निजवीर्यविनिर्जितकर्मबलं सुरकोटिसमाश्रितपत्कमलं ॥ १ ॥ निरुपाधिकनिर्मलसौख्यनिधिं परिवर्जितविश्वदुरंतविधिं भववारिनिधे. परपारमिमं परमोज्वलचेतनयोन्मिलितं २॥कजर्धातसुवर्णशरीरधरं शुभपार्श्वसुपार्श्वजिनप्रवरम् ॥ विनयावनत. प्रणमामि सदा हृदयोद्भवभूरितरप्रमुदा ॥ ३ ॥ अथ चंद्रप्रभजिनस्तुतिप्रारंभः ॥ वंशस्थछंदः॥ अनंतकांतिप्रकरेण चारुणा कलाधिपेनाश्रितमात्मसाम्यतः॥ जिनेंद्र चंद्रप्रभ देवमुत्तमं भवंतमेवात्महितं विभावये॥ १ ॥उदारचारित्रनिधे जगत्प्रभो तवाननांभोजविलोकनेन मे ॥ व्यथा समस्तास्तमितोद्भिन सुखं यथा तमिस्राद्विवमर्कतेजसा ॥ २॥ सदैव संभवनतत्परे जने भवति सर्वेपि मृगा सुहृद्द्वयः॥समग्रलोके समचित्तवृत्तिना त्वयैव संजातमनोनमोस्तु ते ॥ ३ः अथ सुविधिजिनस्तुतिप्रारंभ ॥ वसंततिलकाछंदः ॥ विश्वाभिवंद्यमकरांकितपादपद्म सुग्रीवजात जिनपुंगव शांतिसद्म ॥भव्यात्मतारणपरोत्तमपानपात्र मा तारयस्व भवसागरनिर्धविरूपात् ॥ १ ॥ निःशेषदोषविगमोद्भवमोक्षमार्ग भव्याः श्रयंति भवदाश्रयतो मुनींद्र ॥ संसेवित सुरमणिर्बहुधा जनानां किंनाम नोभवति कामितसिद्धिकारी ॥ २ ॥ विज्ञं कृपार्णवनिधिं सुविधे भ्रमद्भूर्मत्वा भवंतमिति विज्ञपयामि तावत्॥ देवाधिदेव तव दर्शनवल्लभोहं शश्वद्भवामि भुवनेश तथा विधेहि॥ ३॥ अथ शीतलजिनस्तुतिप्रारंभः॥शार्दूलविक्रीडितछंद ॥कल्याणांकुरवर्द्धने जलधरं सर्वार्गिसंपत्कर विश्वव्यापियशःकलापकलितं कैवल्यलीलाश्रितं ॥ नंदाकुक्षिनभोमणि दृढरथक्षोणीपतेर्नंदनं श्रीमत्सूरतबिंदरे जिनवरं वंदे प्रभु शीतलं॥ १॥ विश्वाज्ञानविद्धस्तिसिद्धिपदवीहेतुप्रबोधं दधद्भव्यानां वरभक्तिरक्तमनसां चेतः सुमुल्लासयन्, नित्यानंदमयप्रतिष्ठसमय. सद्भूतनामाश्रयो दुष्टानिष्टतमःप्रणाशतरणि[illegible]न

ल ॥ १ ॥ सद्भक्त्या त्रिदशेश्वरै कृतनुतिर्नानाविधगुणालंकृति सत्कल्याणतमद्युति शुभ
मति कल्याणकृत्सगति ॥ श्रीवत्साकसमन्वितस्त्रिभुवनत्राणे गृहीतव्रतो भूयाद्भक्ति
भृता सदेष्टवरद श्रीशीतलस्तीर्थकृत् ॥ ३ ॥ अथ श्रेयांसजिनस्तुतिप्रारम्भ ॥ हरिणी
छद ॥ चिरपरिचितागाढव्यासा सुबुद्धिपराङ्मुखी निजबलपरिस्फूर्त्योदग्रा समग्रतया
मम॥व्यपगतवती दूर दृष्टा स्वनिष्टकृदष्टिता अपचितसहा सद्योभूत्वा यदीयसुदृष्टित १
निरुपमसुखश्रेणीहेतुर्निराकृतदुर्दशा शुचितरगुणग्रामावासो निसर्गमहोज्ज्वला। हृदय
कमले प्रादुर्भूता सुतत्वरुचिर्मम विदलितभवभ्रातिर्यस्याप्यजस्त्रमनुस्मृते ॥ २॥ उपकृ
तिमतिर्दाने दक्षो निरस्तजगद्व्यथ समुचितकृतिर्विज्ञानांशुप्रकाशितसत्पथ ॥ नृपगण
गुरोर्विष्णोर्वशे प्रभाकरसन्निभ स भवतु मम श्रेयांसेन प्रबोधसमृद्धये॥३॥ अथ वासुपू
ज्यस्तुतिप्रारम्भ ॥ रथोद्धताछद ॥ पूर्णचन्द्रकमनीयदीधिति भ्राजमानसुखमद्भुतश्रि
या॥शातदृष्टिमभिरामचेष्टितं शिष्टजतुपरिवेष्टितं पर॥१॥नष्टदुष्टमतिनिर्यमीश्वर सस्मर
भ्निरिहभूरिनिर्भृनि ॥क्षीणमोहसमयादनतरा प्रापि सत्यपरमात्मरूपता ॥२॥ पार्थिवे
शवसुपूज्यवेश्मनि प्राप्तपुण्यजनुर्ष जगत्प्रभु ॥वासुपूज्यपरमेष्ठिन विश के स्मरति नहि
तं विपश्चित ॥३॥ अथ विमलजिनस्तुतिप्रारम्भ ॥ मदाक्रांताछद ॥ससारेस्मिन्महतिम
हिमामेयमानदिरूप त्वां सर्वज्ञ सकलसुकृतिश्रेणिससेव्यमान ॥ दृष्ट्वा सम्यग्विमलसद
सज्ज्ञानधाम प्रधान सप्राप्तोह प्रशमसुखदा सद्भूतानदवीचिं॥१॥ येतु स्वामिन् कुमति
पिहितस्फारसद्बोधमूढा सौम्याकारां प्रतिकृतिमपि प्रद्वयते विश्वपूज्यां॥द्वेषोद्भूते कलु
षितमनोवृत्तय स्यु प्रकाम मन्ये तेषां गतशुभदृशां का गतिर्भाविनीति ॥ २ ॥ श्यामा
सूनो प्रतिदिनमनुस्मृत्य विज्ञानिवाक्य हित्वानार्य कुमतिवचन ये भुवि प्राणभाज ॥पू
र्णानदोल्लसितहृदयास्त्वा समाराधयति श्लाघ्याचारा प्रकृतिसुभगा सति धन्या स्तए
व॥३॥अथ अनतस्तुतिप्रारम्भ ॥ स्रग्विणीछद ॥यस्य भव्यात्मनो दिव्यचेतोगृहे सर्वदा
ऽनतचिंतामणिर्द्योतते॥याति दूरेस्वतस्तस्य दुष्टापदो विश्वविज्ञानवित्त भवेदक्षय॥१
यस्तु सर्वज्ञरूप स्वरूपस्थित वीक्ष्यसद्भावत सिंहसेनात्मज॥अद्भुतामोदसदोहसपूरि
तोमन्यतेधन्यमात्मीयनेत्रद्वय ॥२॥ सोपवर्गानुगामिस्वभावोज्ज्वलां व्यूढमिथ्यात्ववि
द्रावणे तत्परा बधुरात्माऽनुभूतिप्रकाशोद्यतां शुद्धसम्यक्त्वसपत्तिमालबते ॥ ३ ॥ यु
ग्म ॥ अथ धर्मस्तुतिप्रारम्भ ॥ कामक्रीडाछद ॥ भास्वज्ञान शुद्धात्मान धर्मेशान स
द्धान शक्त्यायुक्त दोषोन्मुक्त तत्वासक्त सद्भक्ता॥शश्वच्छांतं कीर्त्या कांतं ध्वस्तध्वातं वि
श्राम क्लिष्टावेश सत्यादेश श्रीधर्मेश वदध्व॥१॥नि शेषापायप्राडुष्कर्त्ता सिद्धेर्भर्त्ता ससर्त्ता
दुर्भावानां दूरेहर्त्ता दीनोद्धर्ता सस्मर्त्ता॥सद्भक्तेभ्योमुक्तेर्दाता विश्वत्राता निर्वाता स्तुत्यो

भक्त्या वाचोयुक्त्या चेतोवृत्त्या ध्येयात्मा॥१॥सम्यग्दृग्भिः साक्षात्दृष्टोमो हास्पष्टो
कृष्ट स्त्रोतोग्रामैः संपज्ज्येष्ट. साधुश्रेष्ट. सत्प्रेष्ट॰॥श्रद्धायुक्तस्वार्तैर्जुष्टो नित्यंतुष्टो निर्दु
स्त्याज्यो नवश्रीवज्रांको नष्टातंको नि शंकः॥२॥ युग्म ॥ अथ शांतिजिनस्तुतिप्रारंभ॰।
द्रुतविलंबितछंदः ॥ विपुलनिर्मलकीर्त्तिभरान्वितो जयति निर्जरनाथनमस्कृतः ॥ लघु
विनिर्जितमोहधराधिपो जगति यः प्रभुशांतिजिनाधिप.॥१॥ विहितशांतसुधारसमज्ज
नं निखिलदुर्जयदोषविवर्जितं ॥ परमपुण्यवतां भजनीयतां गतमनंतगुणैः सहित सतां
॥२॥तमचिरात्मजमीशमधीश्वरं भविकपद्मविबोधदिनेश्वरं॥ महिमधाम भजामि जग
त्त्रये वरमनुत्तरसिद्धिसमृद्धये ॥ ३ ॥ त्रिभिर्विशेषकं ॥ अथ कुंथुजिनस्तुतिप्रारंभः॥गी
तपद्धतिमाह ॥ जयजय कुंथुजिनोत्तमसत्तम तत्वनिधान धर्मजनोज्वलमानसमानस
हंससमान ॥ ज्ञानाच्छादकमुख्यमहोद्धतकर्मविमुक्त विषमविषयपरिभोगविरक्त शुभाश
यमुक्त॥१॥ जयजय विश्वजनीन मुनिव्रजमान्य विशुद्ध चेतन चारुचरित्रपवित्रितलोक
विबुध निरुपममेरुमहीधरधीर निरतरमेव गर्वविवर्जितसर्वसुपर्वविनिर्मितसेव ॥ २ ॥
जयजय सुरनरेश्वर नंदनचंदनकल्प वासक विश्वविभावविनाशक वीतविकल्प ॥ नि
र्मलकेवलबोधविलोकितलोकालोक प्राडुर्भूतमहोदयनिर्वृतिनित्यविशोक ॥ ३ ॥ अ
यारजिनस्तुतिप्रारंभः ॥ रामगिरिरागेण गीयते ॥ दिव्यगुणधारकं भव्यजनतारकं
रितमतिवारकं सुकृतिकारतं ॥ जिनविषमसायकं सर्वसुखदायकं जगति जिननायकं
रमशांतं दि० ॥१॥स्वगुणपर्यायसंमीलतं व्याहत विगतपरभावपरिणतिमखंडं॥सर्व
योगविस्तारपारगत प्राप्तपरमात्मरूपं प्रचंडं॥ २ ॥ दि० ॥ साधुदर्शनवृतं भाविकै
तुत ॥ प्रातिहार्याष्टकोभासमानं ॥ सततमुक्तिप्रदं सर्वदा पूजित॥शिवमपरसार्वभौ
मानं ॥ ३ ॥ अथ मल्लिस्तुतिप्रारंभः ॥ कुंभसमुद्भव संमदाकर सद्गुणवरहेमछवि
न देव जयजय विश्वपते। कृत्याकृत्यविवेकिता जिनसमुचिता हे त्वयि जागर्ति जि
०॥२॥नित्यानंदप्रकाशिका भ्रमनाशिका हे तव शुभदृष्टिरनीश ज०॥३॥शुद्धिनि
भिधे सद्गुणनिधे हे वर्जितसर्वविकार ज०॥४॥ निजनिरुपाधिकसंपदा शो
दा हे निर्मलधर्मधुरीण ॥ ५ ॥१९ ॥अथ मुनिसुव्रतस्तुति प्रारंभः ॥अथान्या
वि. ॥ उत्तमचेतनधर्मसमृद्धजगत्पते॥ नित्यानित्यपदार्थनिचयविज्ञसन्मते॥नि
जितमोहमहाभटभूपते ॥ श्रीपद्मातनुजात सुजातहरिद्युते ॥१॥ श्रीमुनिसु
ाक सज्जना· कृतसद्गुरुशुभवाक्यसुधारसमज्जनाः हे प्रणमंति भवंतमनंतसु
केवलमुज्वलभावमखंडमनिंदितं ॥ २॥ तेनिःसंशयमेव जगत्त्रयवंदि— ॥
ंति सुदृष्टयानंदिता:॥कृत्यं स्वोचितमेव यतः किल कारणं॥

॥ श्रीसर्वज्ञायनमोनमः ॥

अथश्री मुनिसुंदरसूरिकृत अध्यात्मकल्पद्रुमो

बालावबोधसहितः प्रारभ्यते

॥ प्रथम अर्थकर्त्तानुं मंगलाचरण ॥

श्रीशंखेश्वरपार्श्वेशं प्रणताभीष्टदायकं ॥
प्रणमामि परमप्रेम्णा सर्वाभीप्सितसिद्धये॥ १ ॥
सर्वज्ञं सर्वभाषाभिः सर्वसंसत्प्रबोधकं ॥
सर्वसत्वहितं वंदे वर्द्धमानजिनेश्वरं ॥ २ ॥
अध्यात्मकल्पद्रुमसंज्ञकस्य शास्त्रस्य संविज्ञहितावहस्य ॥
वार्त्ताभिरप्रौढमतिप्रतुष्ट्यै बालावबोधां विदधे विवृत्तिं ॥ ३ ॥

हवेग्रंथनेआदि ग्रंथकार प्रथमस्थापनानुं सूत्रकहेछे

अथायंश्रीमान् शांतनामा रसाधिराजः सकलागमादि सुशास्त्रार्णवोपनिषद्भूतसुधारसायमान ऐहिकामुष्मिका नंतानंदसंदोहसाधनतया पारमार्थिकोपदेश्यतया सर्वरस सारभूतत्वाच्च शांतरसभावनात्माध्यात्मकल्पद्रुमाभिधा नग्रंथांतरग्रंथननिपुणेन पद्यसंदर्भेण भाव्यते ॥

अर्थ ॥ पूर्वेश्री मुनिसुंदरसूरियें त्रिदशतरंगिणी गुर्वावली प्रमुख ग्रंथकीधा ते वारपछी आग्रंथकीधो तेभणीइहां अथशब्दआव्यो तेमाटे अथकहेतां एटलाथकी अनंतर जेजैनशासननेविषे प्रत्यक्ष शांतनामाजे रसाधिराज रसनो १ शृंगार २ हास्य ३ करुणा ४ रौद्र ५ वीर ६ भयानक ७ बीभत्स ८ अद्भुत ९ शांत एनवमध्येअधिराजके० शिरोमणी तेहनुं मुनिसुंदरसूरि पद्यके० काव्यतेहनो संदर्भजेरचना तेणेंकरीने भाव्यतेके० विचारवुं एटलेपूर्वेमनमांधर्योछे तेकाव्यबंधे प्रगटकरीकहेवुं केहवोछेते रसाधिराज श्रीके० मोक्षरूपिणीलक्ष्मी तेने फलजेहनुं एहवो वलीकेहवोछे

आगमजे श्रीजिनेश्वरप्रणीत सिद्धांत तेआदेंदेइने सकलजे सुशास्त्रकहेतां धर्मशास्त्र तेरूपीउं अर्णवजे समुद्र तेहनु उपनिषद्भूतके० सारभूत एहवो सुधारसायमानके० अमृतरसतुल्यछे हवेअन्यशृंगारादिक रसतजीने केवलशांतरसनेज शांयासनावधु तेहनोहेतुकहेछे एकतोऐहिकामुष्मिकके० इहलोकसबंधी अने आमुष्मिकके० परलोकसबधी जेअनतआनदनो सदोहके० समूह तेनुसाधनछे तेहेतुयेकरीने वली बीजोहेतुकहेछे परमार्थिकजे मोक्षार्थी तेहनाजेजाणनार तेहनेउपदेशदेवायोग्यछेए टलेमोक्षार्थीनाउपदेशकजे तीर्थंकर गणधरादिक तेआशांतरसनोज उपदेशकरे तेणेकरीने वलीत्रीजोहेतुकहेछे जेआशांतरसते सर्वरसनेविषे सारभूतछे तेहेतुथकी हवे पद्यसदर्भकहेवुछे तेकेहेछे शांतरसनाभावनास्वरूप अध्यात्मकल्पद्रुम एहवेनामेजेग्रंथ विशेष तेहनु ग्रथनजेरचना तेहेनेविषे निपुणछे मनइच्छित अध्यात्मज्ञान आपवाने कल्पवृक्षनीपेठेसमर्थ तेमाटेआग्रंथनुनाम अध्यात्मकल्पद्रुम जाणवु

जयश्रीरांतरारीणा लेभे येन प्रशांतित ॥
त श्रीवीरजिन नत्वा रस शांतो विभाव्यते॥१॥

अर्थ ॥ हवेग्रथनेआदें ग्रथकर्त्ता मगलाचरणकहेछे जेणेप्रशांतितके० तरसथी क्रोध मान माया लोभ राग द्वेष ए छए अतरगशत्रुछे तेओ लक्ष्मीपामीछे एहवाते श्रीवीरजिनप्रते मुनिसुदरसूरि नमस्कारकरीने रस तेने भाववु एटले समुचितेष्टदेवताने नमस्कारलक्षण ग्रथारभेमगलि ॥ पृथ्वी

सर्वमगलनिधौ हृदि यस्मिन् सगते निरुपम सुखमेति
मुक्तिशर्म च वशीभवति द्राक् त बुधा भजत शांतरसेद्र॥२॥

अर्थ ॥ हवेशांतरसनु महात्म्यकहेछे बुधाके० हेविवेकीजनो तमें आ सर्वमागलनुं निधान एहवोजे शांतनामारसाधिराज तेप्रतेंभजो केमके एशांतरस जेनाहृदयमांआव्यो तेप्राणी अनुपम सर्वार्थसिध्यादिकनाजेसुख तेप्रतेपामे वलीजे हृदयमां आवेयके जेमोक्षसुखतेपण द्राग्के० तत्काल थोडाकालमाज वशथाय ॥ २ ॥

समतैकलीनचित्तो ललनापत्यस्वदेहममतामुक् ॥ विषयकषायाद्यवशः शास्त्रगुणैर्दमितचेतस्कः ॥ ३ ॥ वैराग्यशुद्धधर्मा देवादिसतत्त्वविद्विरतिधारी॥ सवरवान् शुभवृत्तिः साम्यरहस्यं भज शिवार्थिन् ॥ ४ ॥

॥ जे नामका लेदक प्र वर्शानिर्मिदि प्रसादमादित देवदेवमेवस सुरनरेंद्र नम्न्म

अर्थ ॥ हवे साम्योपदेशयोग पुरुषनाविशेषण द्वारेंकरीने ग्रंथकर्त्ता ग्रंथमध्येक हेवाना सोल द्वारकहेछे हेमोक्षार्थिपुरुषतुं साम्यरहस्यजे समतानुंसार तेप्रत्तेंनज तेकहेवोयछनेनज जे एकतो समतासाथें लीनचित्तकरीने एटलेएपहेलुं द्वारपण कयुं वली वीजुं ललनाजे स्त्रीनीममतामोचन द्वार त्रीजुं अपत्यजे पुत्रादिकसंततिनी ममतामोचन द्वार चोथुं स्वके० धननीममतामोचन द्वार पांचमुं देह तेहनीममतायेंर हितयको एटलेपांचमुं देहममतामोचन द्वार ठहुं विषयजे शब्दादिकनोनिग्रहकरवो सातमुं कषायजे क्रोधादिक तेनोनिग्रहकरवो इहां आदिशब्दथी राग द्वेष प्रमादादि क तेहुने अवश्यके० आधीननहीं एहवोथकोरहे तथा शास्त्रजे जैनागम तेहना गुणजे हेयोपादेयादिक तेणेकरीने दम्युंछेचित्तजेणे एटलेशास्त्रगुणते आठमुं द्वार अनेचित्तदमननामे नवमुं द्वार वली वैरागेंकरीने शुद्धनिर्दोषछे धर्मजेहनुं एमांदस मुं वैराग्य द्वार अने इग्यारमुं शुद्धधर्मनामा द्वार तथा देवजेश्रीअरिहंत गुरुजेसु साधु अनेकेवलिप्रणीतधर्म एत्रण तत्वनो जाणथयीने एटले ए देवादिकस्वरूपनाह्रा रसुं द्वार तथा विरतिजे पंचाश्रवनुंविरमण तेहनुंधारकथको एतेरमुंविरति ना द्वार वली संवरजेसत्तावनभेदें आश्रवनिरोधरूप तेणेकरीसहित तेचउद वें द्वार अने शुभउत्तम वृत्तिके० आचरणाछेजेहनी एहवोथको तुंसाम्यरहस्य इहां शुभवृत्तिनामापन्नरमुं द्वारथयुं अनेसोलमुं साम्यरहस्यनामा द्वार आ सोल द्वारना नामवेश्लोकेकरीकह्या ॥ ३।४ ॥

इति षोडशाधिकारे शास्त्रोपदेशपदसंग्रहो यथा

चित्तबालक मात्याक्षी रजस्रं भावनौषधी. ॥
यत्त्वां दुर्ध्यानभूता न छलयंति छलान्विपः ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवेप्रथम समताना अधिकारआश्री उपदेशकहेछे हेचित्तरूपीयावाल क तुं सदाय भावनाजे अनित्यादिकवार तथामैत्र्यादिकचार तेरूपणीऔषधीप्रतें छां मीसनहीं केमकेएभावनाने नछांमवाथी शोगुणथायछे तेकहेछे जेथकीताहगछलना जोनाराजे आर्त्तरौद्रादिकुध्यान तेरूपीआ भूतपिशाचते तुजनेछलकरीशकशेनही॥५

यदिंद्रियार्थैः सकलैः सुखं स्यान्नरेंद्रचक्रित्रिदशाधिपानां ॥
तद्बिंदुवत्येव पुरोहि साम्यसुधांबुधेस्तेन तमाद्रियस्व ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हवेएशुभभावना ते समताविना नहोय तेकहेछे सघला इंद्रियार्थैजे शब्द रूप रस गंध अनेस्पर्श तेणेकरीने राजाचक्रवर्त्ती अनेत्रिदशाधिपकहेतां इंद्र

तेहनेजेसुखहोय तेसर्वसुख समतारूपीपुंजे सुधांबुधिकहेतां अमृतनसमुद्रने तेथा गल बिन्दुबराबरदेखाय एटलेसंसारिकसुख सघलुमलीने बिन्दुतुल्यछे अनेसमतानु सुखछेते समुद्रतुल्यछे तेमाटेमोक्षार्थिजीवते समतारूपीआ सुधासमुद्रनेआदरे॥६॥

अदृष्टवैचित्र्यवशाज्जगज्जने विचित्रकर्माशयवाग्विसंस्थुले ॥
उदासवृत्तिस्थितचित्तवृत्तय सुखं भजते यतय क्षतार्त्तय ॥७॥

अर्थ ॥ हवेसमताआदरवानु फलकहेछे जगतजे त्रिभुवनतेमां जनजे देवमनु ष्यादि तेमज्येयतीजेनिर्ग्रंथ तेजसुखीथाछे तेजगतजनकहेवाछे तेकहेछे अदृष्टजेपूर्वक तकर्म तेहनुविचित्रजे नानारूपपणु तेहनावशथकी नानाविधकर्मना विपाकथी स सारीजीवना मननोअभिप्राय तथावचन अनेकायानीचेष्टापण नानाविधछे तेणेकरी व्याकुलछे हवेयतीकहेवाछे उदासवृत्तिजे लाभालाभ सुखदुःख अने प्रियअप्रिय तेने विषेसमानवृत्तिछे तथाजेनी चित्तवृत्ति स्थितरहीछे वलीजेनीसर्वचिंता क्षयपामीछे॥७

विश्वजंतुषु यदि क्षणमेकं साम्यतो भजसि मानस मैत्रीं ॥
तत्सुखं परममत्र परत्राप्यश्नुषे न यदभूत्तव जातु॥ ८ ॥

अर्थ ॥ वलीसमतानु विशेषफलकहेछे हेचित्त जोतु समतायेकरीने सर्वजीवने विषे एकक्षणमात्रपण मैत्रिता चिन्तवेतो तु पूर्वेसंसारमाभ्रमणकरता कोइवखतपा म्योनथी एवा इहलोक अने परलोकमांपण परमउत्कृष्टसुखप्रतेंपामें ॥ ८ ॥

न यस्य मित्रं न च कोपि शत्रुर्निज परो वापि न कश्चनास्ते॥
न चेन्द्रियार्थेषु रमेत चेतः कषायमुक्तं परमः स योगी ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ हवेएसमताने योग्यजीवकोणहोय तेकहेछे जेहनेकोइमित्रनथी तथा कोइशत्रुपणनथी तेमजजेहने पोतानु तथापारकुकांइनथी वलीजेहनु चित्त कषाय रहितथको इन्द्रियार्थजे शब्दादिविषय तेनेविषे रमेनही तेप्राणीपरमयोगवतहोय एटले ते समतावतजाणवो ॥ ९ ॥

भजस्व मैत्रीं जगदंगिराशिषु प्रमोदमात्मन् गुणिषु त्वशेषत ॥
भवार्तिदीनेषु कृपारसं सदाऽप्युदासवृत्तिं खलु निर्गुणेष्वपि॥१०॥

अर्थ ॥ हवेसमताआव्याना कारणउपदेशेछे हेजीव जगतना अंगीके०जेजीवते हनीराशिकहेता समूहनेविषे एटलेसामान्यथकीसर्वजीवनेविषे मैत्रिताप्रत्यें भजस्वके० आदरीने वलीसमस्तप्रकारें जेकोइ ज्ञानादिकगुणयुक्तहोय तेहनेविषे प्रमोदप्रत्यें भजि

अनुमोदनाकर तथा नवके० संसारनी आर्त्तिजपीडा तेणेकरीदीनके० दुःखितप्राणिने विषेकृपाकरस्यतेंमज वली निर्धनिर्गुण प्राणीनेविषेपण उदासवृत्तिप्रतेंभज ॥१०॥

मैत्री परस्मिन् हितधीः समग्रे भवेत्प्रमोदो गुणपक्षपातः ॥
कृपा भवार्त्ते प्रतिकर्त्तुमीहोपेक्षा च माध्यस्थ्यमवार्यदोषे ॥११॥

अर्थ ॥ हवेएमैत्र्यादि चारेभावनानुं स्वरूपकहेछे समस्तपोताथी व्यतिरिक्तजेवी जाजीव तेनेविषेजे हितचिंतववानीबुद्धि तेनेमैत्रीकहियें तथागुणीजे ज्ञानादिकगुणवंत तेहनोपक्षपातजे प्रशंसा तेहनेप्रमोदकहियें तथाभवार्त्तिजे जन्ममरणादिक संसारनाडुःख प्रतिकारकरवानीवांछा कोइअज्ञानीजीवने पापथकीनिवर्त्ताववानेअर्थे प्रतिबोधदेवो तेनेकृपाकहियें जेमश्रीवीरस्वामीयें शूलपाणीयक्ष चंडकोशिकसर्पप्रमुखें अपराधकर्यापण कृपाकीधी. वलीजेप्राणीअवार्यदोषकहेतां वारतांथकांपण दोषनेनटाले तथावारवायोग्यपणनहोय एहवोदोषवंत जेपुरुष तेनेविषे मध्यमभावें रागद्वेषरहितपणे समभावेंरहेवुं तेउपेक्षाभावनाकहियें ॥ ११ ॥

तथाचोक्तं तुर्यषोडशके॥परहितचिंता मैत्री परदुःखनिवारिणी तथा करुणा ॥परसुखतुष्टिर्मुदिता परदोषोपेक्षणमुपेक्षा ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ तेमजवलीकहेछे श्रीहरिभद्रसूरियें चोथाषोडशकमध्ये जे परनेंहितचिंतववुंतेमैत्री तथापरनाडुःखने निवारणकरवानीभावना तेकरुणा अनेपरनुंसुखजे समतादिरूप तेदेखीने संतोषपामवो ते मुदिताके० प्रमोदभावना कहियें अने परनादोष देखी उवेखवुं उदास रहेवुं तेनेउपेक्षाभावना कहियें ॥ १२ ॥

तथाच योगशास्त्रे ॥माकार्षीत्कोपि पापानि मा चाभूत्कोपि दुःखितः ॥ मुच्यतां जगदप्येषा मतिर्मैत्री निगद्यते ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ वलीयोगशास्त्रमध्येपण श्रीहेमचंद्रसूरियेंकह्युंछे के कोइपापमकरो कोइ दुःखीथाओमां तथाजगतनवें कर्मथीमुकाओ एवीजेमतितेने मैत्रीकहियें ॥ १३ ॥

अपास्ताशेषदोषाणां वस्तुतत्वावलोकिनां ॥ गुणेषु पक्षपातो यः स प्रमोदः प्रकीर्तितः ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ सकलदोषरहित तथा वस्तुतत्वजे स्वभाव अने परभाव तथा द्रव्य गुण पर्यायनाजाण एवाजेगुणवंत तथाउपलक्षणथकी सामान्यपणेपण जेगुणवंतहोय तेहना गुणनेविषे जेपक्षपात तेनेप्रमोदभावनाकहियें ॥ १४ ॥

दीनेष्वार्त्तेषु भीतेषु याचमानेषु जीवितं ॥ प्रती
कारपरा बुद्धि कारुण्यमभिधीयते ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ वलीदीन असमर्थ अनेआर्त्तपीडावत तथा भयेंकरी आकुल अनेजी वितव्यनेयाचतां एवाप्राणिनेविषेजे प्रतिकारकहेता दुःख निवारवानीबुद्धि राखवी तेने कारुण्यके० करुणाभावना कहिये ॥ १५ ॥

क्रूरकर्मसु निःशंकं देवतागुरुनिंदिषु ॥ आ
त्मशंसिषु योपेक्षा तन्माध्यस्थ्यमुदीरित ॥१६॥

अर्थ ॥ तथा शंकारहित क्रूरकर्मनाकरनार अने देवगुरुनानिंदक पोतानीप्रशंसानाकरनार एवाअधमपुरुषनेविषेजे उपेक्षा तेमध्यस्थभावनाकहियें ॥ १६ ॥

चेतनेतरगतेष्वखिलेषु स्पर्शरूपरवगंधरसेषु साम्यमे ॥
ति यदा तव चेत पाणिग शिवसुख हि तदात्मन् ॥१७ ॥

अर्थ ॥ हवेवली मूलसूत्रकार समताआदरवाथी मोक्षनी सुलभताकहेछे हेआत्मन् जेवारे ताहारुंचित्त अखिलके० समग्रचेतनजे अनुक्रमें स्त्री देह स्त्रीकटाक्ष कोकिलनाद कस्तुरी पशुमासप्रमुख तथाइतरजे अचेतनपदार्थ अनुक्रमें शय्या आभरणघरेणादिक कर्पूर वीणा शर्कराप्रमुख तेसबधी जेस्पर्श रूप रवके०शब्द गध रस तेहनेविषेतु साम्यताके० इष्टानिष्टनेविषे समवृत्तिप्रतेंपामशे तेवारेंज निश्चेंकरीने मुक्तिसुखते ताहरेहस्तगतथाशे ॥ १७ ॥

के गुणास्तव यत स्तुतिमिच्छस्यद्भुत किमकृथा मदवान् यत् ॥
कैर्गता नरकभी सुकृतैस्ते किं जित पितृपतिर्यदचिंत ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ हवेआत्माजे स्तुतिनेवांछेछे तेनोमदनिवारवाने कहेछे हेआत्माऔदार्य धैर्य गाभीर्य दान शील तप भावना उपशमादिक जेगुणछे तेमांहेलाताहरामां श्यागुण छे केजेहने माटेतु स्तुतिकहेतां लोकनामुखें पोतानीप्रशसा करावयावांछेछे तथावली तेंशुसाधुआश्रीने राज्यादिमर्द्धिकनेप्रतिबोध अथवासर्वशास्त्रप्रवीणता उग्रतप युगप्रधानपणु इत्यादिक अथवाश्रावकआश्रीने जीर्णोद्धार बिंबप्रतिष्टा सप्तक्षेत्रपण अमारपडह इत्यादिक अद्भुतके० आश्चर्यकारी कार्यश्याकीधा केजेनाथी तु मदवतथायछे तथा कयासुकृतेंकरी ताहारीनरकनीबीकगइ अथवापितृपतिजे यम तेशुं

तेंजिस्यो जेमाटेंतुंअचिंतकहेतां निश्चितयकोरहेने. एटले स्तुतिनीवांछा मदक
अने निश्चितरहेवुं ए तने युक्तनथी ॥ १८ ॥

गुणस्तवैर्यो गुणिनां परेषा माक्रोशनिंदादिभिरात्मनश्च ॥
मनः समं शीलति मोदतेवा खिद्येत च व्यत्ययतः स वेत्ता॥१९॥

अर्थ ॥ हवेजेवेत्तापणुंते शांतरसनुंकारणछे एमकहेछे जेप्राणी परके० अन्यजेगुण
वंतपुरुषनांय तेनागुणस्तवजे गुणवर्णन अनेआत्मनःकहेतां पोतानाआक्रोशजे गा
ळप्रमुख तथानिंदादिक तांनजीने पोतानुंमन समपरिणामेराखे पण अमर्षधरेनही
वळटो मोदनेकहेतां हर्षपामे अनेएमविचारेजे गुणवंतना गुणस्तववाजवछे तथा
हेआत्मातुं निर्गुणछो माटे निंदानेजयोग्यछो एमप्रमोदधरे तथाव्यत्ययकहेतां उ
परकह्याथीविपरीतजे बीजागुणवंतपुरुषना आक्रोशके० निंदातांनजीअनेपोतानी
प्रशंसादिकसांनजीने खेदपामे जेएएवागुणवंतपुरुषनी निंदाकांकरेछे तथामाहारामां
तोगुणनथी तेमछतांएछुंकहेछे एमचिंतवे तेहनेवेत्ताके० ज्ञानीकहियें ॥ १९ ॥

न वेत्सि शत्रून् सुहृदश्च नैव हिताहिते स्वं न परं च जंतोः॥ दुः
खं द्विषन् वांछसि शर्मचैत न्निदानमूढः कथमाप्स्यसीष्टं॥२०॥

अर्थ ॥ हवेयथार्थने नहीजाणनारजीवनुं मूढपणुंकहेछे हेजीव तुंशत्रूजेरागादिक
तथामित्रजेउपशमादिक तेहनेनथीजाणतो तथाहितजेसंवरादिक अने अहितजेआ
श्रवादिक तथावळीस्वनावजे ज्ञानदर्शनादिक अनेपरनावजे मिथ्यात्वरागादिक तेहने
पणथीओळखतो वळी दुःखजेपरिसहादिक तेहथीउद्वेगपामेछे अनेशर्मजे इहलोकतथा
परलोकादिकनुंसुख तेनेवांछेछे तेवारें तुं एसुखनुं निदानजे कारण तेहनुं ता मूढके०
अजाणछो तेमछतां शीरीतेंवांछित पदार्थप्रतेंपामीश एटलेसुखनुंमूळ निदानते सं
वरछे तेविनाइष्टसुखनी प्राप्तिनथाय॥ २० ॥

कृती हि सर्व परिणामरम्यं विचार्य गृह्णाति चिरस्थितीह ॥
नवांतरे ऽनंतसुखाप्तये तदात्मन्किमाचारमिमं जहासि ॥ २१॥

अर्थ ॥ हवेजाणपणानुं फळदेखाडीने उपदेशछे कृतीजेमात्ताेपुरुषहोय तेतोस
र्वजे वस्तुपरिणामेरम्य तथासुखदाइहोय अनेचिरस्थितिकहेतां घणोकाळर
हेतेविचारकरीने तेवस्तुनेतेग्रहणकरे तोहेआत्मा नवांतरेअनंतसुख आपवाने
अर्थेतेवाजेज्ञानादिक चारपदार्थ तेनेतुंकेमत्यजेछे एचारेवस्तुपरिणामेरम्यछे अने
घणाछे एटलेघणाकाळसुधी रहेएवीछे माटेतेतुंजनेत्यजवीघटेनही ॥ २१ ॥

निज· परो वेति कृतो विभागो रागादिभिस्ते त्वरय स्तवात्मन् ॥
चतुर्गतिक्लेशविधानतस्त त्प्रमाणयन्नस्यरिनिर्मित· किं ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ हवेआत्मा रागादिकने वशथको पोतानुंअने पारकुंलेखेछे तेथाशीउपदे शेछे हेआत्मा निजकहेता स्वजन कलत्र पुत्रादिक अथवा परजेशत्रुप्रमुख एवोवि भागजे भेदकरीजाणवो तेभेदसर्वरागादिकनुं करेलुंछे माटेतारूंरे जेप्राणीसाथे राग छे तेहनेतु स्वजनकरीजाणेछे अनेजेनाथीद्वेषछे तेनेशत्रुकरीजाणेछे पणतेरागादिक तो चारगतिनाक्लेश कष्टनाकरनार ताराशत्रुछे तोअरिनिर्मितके० तेशत्रुनुजनीपना व्यु जेभेद तेने तुंप्रमाणकरेछे एटलेरागद्वेषनावशथी निजपराविभागकरवुतेजूठोछे

अनादिरात्मा न निज परो वा कस्यापि कश्चिन्न रिपु सुहृद्वा ॥
स्थिरा न देहाकृतयोणवश्च तथापि साम्य किमुपैपि नेपु ॥ २३ ॥

अर्थ ॥ हवेसर्ववस्तुनी अनित्यतादेखामी आत्मानेसमतानी प्रेरणाकरेछे हेआ त्मा तुंआदिरहितछो अनेकोइनेकोइ पोतानु तथापारकुनथी वलीकोइनोकोइशत्रु अ नेमित्रपणनथी वलीहेआत्मन् देहजेपुरुष स्त्रीआदिकनुंशरीर तेआकारेपरिणाम्या एवाअणुकहेता पुद्गल तेपणस्थिरनथी केमके क्षणक्षणप्रत्यें उपचयके० अनअप चादिक अवस्थापामेछेछे तेमछतां हेआत्मा आदेहाकारजे पुद्गलतेनेविपे तुकेम सा म्यताकहेता रागद्वेपरहिततापणु नथीपामतो हेआत्मा तुतोअनादीछे अनेएदेहाकृती तो अस्थिरछे माटेसमतानेआदर ॥ २३ ॥

यथा विदा लेप्यमया न तत्वा त्सुखाय मातापितृपुत्रदारा ॥
तथा परेपीह विशीर्णतत्तदा कारमेतद्धि सम समग्र ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ वलीएजअर्थ दृढकरेछे आससारमांजेम लेपमयकहेता चित्रादिलिखित जे माता पिता पुत्र दारा कलत्रहोय ते तत्वथकी विचारीजोतां विवेकीपुरुपने सुखदाइ नहोय एटलेतेहने देखीविवेकीसुखमानेनही तेम अपरेके० बीजापणजे साक्षात्दृश्य मान माता पिता पुत्र कलत्रादिक तेपणतत्वथकी विवेकीने सुखदाइनथाय केम के तेना तेतेआकारनाशायकी ते लिप्यमय जेचित्रितपुतला तथाप्रत्यक्षदृश्यमानजे मातापितादिक तेसर्वेसरखाथाय माटेतेनेविपे ममत्वकरवु तेमिथ्याछे ॥ २४ ॥

जानति कामान्निखिला ससज्ञा अर्थ नरा कर्म च केपि धर्म ॥
जैन च केचिद् गुरुदेवशुद्ध केचित् शिव केपि च केपि साम्य ॥ २५ ॥

अर्थ ॥ हवेसमताना धरनारप्राणियोडाहोय तेकहेछे संसारमां समग्रसंज्ञाधारक जीवमात्र तेकामकहेतां शब्दादिकविषयजाणेछे एटले कामनाअर्थी सर्वजीवछे तेसर्वमनुष्य अर्थकहेतां धनउपार्जन तथाकर्मकहेतांकाम एवेपदार्थजाणेछे केमके मनुष्यना कामनोगते धननेआधीनछे तेमांवलीकोइकमनुष्यते सामान्यथकी मिथ्यादृष्ट्यादिक धर्मनेजाणेछे वलीतेमांपणकोइकज जैनधर्मनेजाणेछे वलीतेमांपण कोइकविरलाज शुद्ध अष्टादशदोषरहितदेव तथागुरु सुविहितसुसाधु एवोजैनधर्मजाणेछे वलीतेमांपण शिवजेमोक्षार्थ तेहनेतोकोइकज जाणेछे वलीतेमांपणसमताना जाणतो कोइकविरलाजछे एटले ए सर्वथीअधिक तेसमताना जाणनेकह्यो ॥ २५॥

स्निह्यंति तावद्धि निजानिजेषु पश्यंति यावन्निजमर्थमेभ्यः ॥
इमां भवेऽत्रापि समीक्ष्य रीतिं स्वार्थे न कः प्रेत्य हिते यतेत ॥२६॥

अर्थ ॥ हवेस्वजनना संबंधते केवलस्वार्थनिष्टितछे तेदेखाडेछे निश्चयथी निजके० पोतानास्त्रीपुत्रादिकतेसहु निजके० पोताना पतितादिक स्वजननेविषेतिहां लगें स्नेह धरें जिहां लगें ते स्वजनथी पोतानुंअर्थ जे भरण पोषणादिक थतुंदेखे तिहांलगें स्नेह धरेछे एम प्रत्यक्षआभवनेविषेपण स्वजनादिकनी एरीतछे तेजोइने प्रेत्यके० परलोकनेविषे हितकारी एवोस्वार्थजे आत्मार्थ संयमादिक तेहनेविषे कोणउद्यमनकरे॥२६॥

स्वप्नेंद्रजालादिषु यद्वदाप्तै रोषश्च तोषश्च मुधा पदार्थैः ॥
तथा भवेऽस्मिन् विषयैः समस्तैरेवं विभाव्यात्मलयेऽवधेहि ॥२७॥

अर्थ ॥ हवेजेरागद्वेषधरवो तेफोगटछे एमदेखाडेछे जेमस्वप्न तथाइंद्रजालादिक विषे पाम्याजे अशुभ तथा शुभपदार्थ तेणेकरीने रोषकहेतांद्वेष अने तोषकहेतां हर्षकरवो ते मुधाके० निरर्थकछे एटले जेमस्वप्न इंद्रजालादिकना पदार्थोथी अर्थसिद्धिकांइनथी तेमभवमांपण अशुभतथा शुभविषयेंकरीने रोषअनेतोषकरवो तेमुधाछे एमविचारीने हेआत्मातुं आत्मसमाधिनेविषे अवधेहिके० सावधानरहे ॥ २७ ॥

एष मे जनयिता जननीयं बंधवः पुनरिमे स्वजनाश्च ॥
द्रव्यमेतदिति जातममत्वो नैव पश्यसि कृतांतवशत्वं॥२८॥
नोधनैः परिजनैः स्वजनैर्वा दैवतैः परिचितैरपि मंत्रैः ॥
रक्ष्यतेऽत्र खलु कापि कृतांतान्नो विभावयसि मूढ किमेवं॥२९॥

अर्थ ॥ हवेबेकाव्यमां जीवने मृत्युनुं आधीनपणुं देखाडेछे हेआत्मा आमाह

रोपिता आमाहरीमाता आस्वजन आउव्य एम ममत्वमा मग्नथयोथकोतु स्वकहे तापोतेज यमनेवशपडश्यु नथीदेखततोहतो ॥ २८ ॥ तोहेमूढ एससारनेविषे निश्च येकरीने धनतथापरिजन सेवकादिक तथा स्वजन पुत्र कलत्रादिक वलिदेवता त या परिचितकहेता विधियीउपार्ज्या जेमत्रतेएसर्वेमलीनेपण रुतातजेमृत्यु तेथी कोइप्राणीरखायनही एवुहेमूर्खतु केमविचारतोनथी ॥ २९ ॥

तैर्भवेपि यदहो सुखमिछ स्तस्य साधनतया प्रतिभाते ॥ मुह्य
सि प्रतिकल विपयेपु प्रीतिमेपि न तु साम्यसतत्वे ॥ ३० ॥

अर्थ ॥ अहोआत्मा जेमाटेतुससारमापण तेपूर्वोक्तजेधनादिक तेणेकरीने सु खवांछतो छतो समयसमयविपे विपयमा मोहपामेछे पणतेधनादिक कहेवाछे तेतुज नेसुख साधन तयाके० कारणपणे प्रतिभास्यांछे पणतेधनादिक तोसुखनाकार णनथी मात्रतने एमजाण्याछे जे ए सुखनासाधनछे तेथी तु समताना सतत्वसरू पनेविपे प्रीतिनथीपामतु ॥ ३० ॥

अर्थतोयुग्म ॥ किं कपाय कलुप कुरुपे स्व केपु चिन्ननु मनोरिधि
यात्मन्॥ तेपि ते हि जनकादिकरूपैरिष्टता दधुरनतभवेपु ॥३१॥

थर्थ ॥ हवेस्वजनादिकनु अनेकातिकपणु देखाडेछे निश्चयथकी हेआत्मा कोइ कप्राणीनेविपे अरिधियाकहेता एमाहाराशत्रुछे एवीबुद्धेकरी पोतानुमन कषायेंकरीक लुपितथुकरेछे केमके तेप्राणीपण ताहरा पिता मातादिकस्वरूपेंकरीने अनता भवमा अनतासगपणोने धरताहवा तेमाटेतेओने केवल शत्रुकरीजाणवु तेमिथ्याछे ॥३१॥

यांश्च शोचसि गता किमिमेमे स्नेहला इति धिया विधुरात्मा॥
तैर्भवेपु निहतस्त्वमनतेष्वेव तेपि निहता भवता च ॥ ३२ ॥

थर्थ ॥ हवे जे स्वजनछे तेजशत्रुछे एवुदेखाडेछे हेयात्मातु एमाहारो स्नेहवत स्वजन किहागयो एवीबुद्धियें विधुरात्माके० दुःखेंव्याकुलथको मुवागयाजेस्वज नादिक तेप्रत्येंशोचेछे एमजेहनो शोककरेछे तेजस्वजनादिक तुजनेअनतानवनेवि पेहण्योछे वलीतेंपण तेहनेअनतानवनेविपे हण्याछे तेटलामाटें स्वजनबुद्धियेंजे स्ने हराखवु तेपणमिथ्याछे ॥ ३२ ॥

त्रातु न शक्या भवदु सतो ये त्वया न ये त्वामपि पातुमीशा ॥
ममत्वमेतेपु दधत् मुधात्मन् पदेपदे किं शुचमेपि मूढ॥ ३३ ॥

अर्थ ॥ हवेकोइकोइने राखवासमर्थनथी एवुंदेखाडेछे नवके० संसारनाडुःखथ की जेप्राणीने तुं राखीशक्योनही अनेतेपण नवडुःखथीतुजने राखीशक्यानही तो जेनवडुःखथी राखवानेसमर्थनथी तेवारेंहेमूर्खआत्मा स्वजनादिकनेविषे मुधाके० फो कटममत्वकरतोथको पगेपगेंशुशोकपामेछे माटेशोकतजीने समतानेनज ॥ ३३ ॥

सचेतनाः पुजलपिंडजीवा अर्थाः परे चाणुमया द्वयेपि ॥
दधत्यनंतान् परिणामभावान् तत्तेषु कस्त्वर्हति रागरोषौ॥३४॥

अर्थ ॥ हवेजीवना पुजलसाथे नानाविध परिणामछे तेकहेछे पुजलपिंडके० पुज लनो समूहजेदेहलक्षण तेहनेआश्रीनेरह्या एवाजे सचेतनके० चेतनाधारक सर्व जीव अथवा अणुमयाके० पुजलमयजे वीजा अचेतन अर्थके० पदार्थ एटलेशरी रधारकजीव अने पुजल एबेपण अनंतागमे परिणामभावके० पर्यायप्रत्येंधरेछे तोते जीवअनेपुजलनेविषे रागअनेरोषकरवाने कोणयोग्य थाय निपुणपुरुषे तेउपर राग रोषकरवो युक्तनथी॥३४॥ इतिश्रीअध्यात्मकल्पद्रुमे साम्योपदेशाख्यः प्रथमोधिकारः

अथस्त्रियः॥ मुह्यसि प्रणयचारुगिरासु प्रीतितः प्रणयिनीषु कृतिन् किं॥ किं न वेत्सि पततां भववार्धौ तान्नृणां खलु शिलागलबद्धाः॥१॥
चर्म्मास्थिमज्जांत्रवसास्रमांसामेध्याद्यशुच्यस्थिरपुजलानां ॥ स्त्री देहपिंडाकृतिसंस्थितेषु स्कंधेषु किं पश्यसि रम्यमात्मन् ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवेबीजाअधिकारमां स्त्रीओनोममत्व त्यजवाआश्री उपदेशआपेछे हेरु तिन् प्रणयचारुके० स्नेहेकरीमनोहरछे गिराके० वाणीजेहनी एहवी प्रणयिनीके० स्त्री ओनेविषे प्रेमेकरीने शुंमोहपामेछे पण एमकानथीजाणतोजे भववार्धौके० सं सारसमुद्रमां पडतापुरुषनागलामां स्त्रीओते शिलाउबांधेछे ॥ १ ॥ हवेएस्त्रीओना शरीरनुं अपवित्रपणुंकहेछे हेआत्मन् चामडी हाम चरवी आंत्रमां पांसली मेद रुधिर मांस विष्टा तथा आदिशब्दथी मूत्र कफ श्लेष्मादिक एहवाअपवित्र अने अस्थिरके० क्षणविनाशिक जे पुजल तेहना स्कंधके० समूहवी बन्यो जेस्त्रीनुंशरी र तेहनी पिंमाकृतिके० सांइ सुघटआकार तेरूपेंसंस्थितरह्याछे तेमां शुंतुंमनोहर पणुंदेखेछे एटलेएसर्व अपवित्र अस्थिरपुजलनो पिंमछे तेमांकांइसारनथी ॥ २ ॥

विलोक्य दूरस्थममेध्यमल्पं जुगुप्ससे मोटितनासिकस्त्वं ॥
भृतेषु तेनैव विमूढयोषावपुष्षु तत्किं कुरुषेऽभिलाषं ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ वलीतेद्दिजकहेछे हेआत्मन् अल्पके० थोडुकपण अमेध्यके० विष्टादि कदेखीने मोटित्तनासिकाके० नाकमचकोडीनेतुं जुगुप्ससेके० दुगंछाकरेछे तांहे मूर्ख विष्टादिकेजनथा एहवाजे स्त्रिओनाशरीर तेहनेविषे सुं अनिज्ञापकरेछे ॥३॥

अमेध्यमांसास्रवसात्मकानि नारीशरीराणि निषेवमाणा ॥
इहाप्यपत्यद्रविणादिचिंतातापान् परत्रेप्रतिदुर्गतीश्च॥४॥

अर्थ ॥ हवेस्त्रीओनाशरीरते इहलोके अने परलोकेपण दुःखदायीछे तेकहेछे अमेध्यजे विष्टादिक ते मांस रुधिर मेद तेथीजबनेला तन्मय एहवाजे स्त्रीओनाशरीर तेहने सेवनाराजेपुरुष तेइहलोकेपण अपत्यके० सतानपुत्रादिक तथा द्रविणके० धनइत्यादिकनी चितानासतापप्रतें पामेछे अने परलोकेपण दुर्गतिप्रतेंपामेछे४

अगेषु येषु परिमुह्यसि कामिनीना चेत प्रसीद विश
च क्षणमतरेषा ॥ सम्यक् समीक्ष्य विरमाशुचिपिंडके
न्यस्तेन्यश्च शुच्यशुचिवस्तुविचारमिच्छत् ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ वलीस्त्रीनादेहनी अपवित्रताकहेछे चित्तनीप्रसन्नतायेंकरीनेजे स्त्रीओनाअगनेविषे मोहपामेछे तेहनेकहियेछेयेजे तु तेमांएकक्षणमात्र प्रवेशकरी एटलेसूक्ष्मदृष्टीयेंकरी तेहनुसम्यक्प्रकारे स्वरूपविचारीने पवित्र अने अपवित्र एवेवस्तुनाविचारने वांछतुथको होयतो जेजे स्त्रीनाअगछे तेतेसर्व अपवित्रतानाज पिंडके० ढगलाछे तेहथीतु विरमके० रागत्यजीने अलगोरहे ॥ ५ ॥

विमुह्यसि स्मेरदृशः सुमुख्या मुखेक्षणादीन्यभिवीक्षमाण ॥
समीक्षसे नो नरकेषु तेषु मोहो भवा भाविकदर्थनास्ता ॥६॥

अर्थ ॥ हवेस्त्रीनाअंगनिरीक्षण तथाभोगनुफलकहेछे हेआत्मातु सुं सुखीके०च द्रमुखी तथास्मेरके०विकसितछेनेत्रजेहुना एहवीस्त्रीओनामुख तथाईक्षणजेनेत्र आदिशब्दथी स्तन जघादिक तेहनाउपर सरागपणेजोतोथको मोहपामेछे पणजे महादुःखमयनरक तेहुनेविषे तथाविध मोहथकी उपनीओ एहवी भाविके० आगामिककदर्थनाजे महापीडाओ तेप्रतेंतुकेमविचारतोनथी ॥ ६ ॥

अमेध्यभस्त्रावहुरध्रनिर्यन्मलाविलोद्यत्क्रमिजालकीर्णा ॥
चापल्यमायानृतवंचिका स्त्री सस्कारमोहान्नरकाय भुक्ता॥७॥

अर्थ ॥ वलीतेद्दिजकहेछे विष्टादिकेभरीथकी भस्त्राके० धमणीसरिखी तथाब

णारध्रजे वारेद्वार तेह्थीनिकलता मलके० विष्टामूत्रश्लेष्मादिक तेणेकरी आविलके० मलिन तथा उद्यतके० उपजता कृमिजे योनीमांहेला सूक्ष्मजीव तेह्ना जालके० समूह तेणेकरी कीर्णके० व्याप्त वली चपलपणुं तथा कपटाइपणुं अने अनृतके० असत्यवचन तेणेकरी वंचिकाके० पुरुषनेठगनारी एह्वीजेस्त्री तेसंस्कार जे जन्मांतरनोसंबंध तेह्नावशथकी अथवा संस्कारजे स्नान तिलक आभरणादिक तेह्थी उपनोजेमोह् तेह्नावशेंकरी भोगवीथकी नरकायके०नरकनीदेवावालीथाय७

निर्भूमिविषकंदली गतदरी व्याघ्री निराव्हो महाव्या
धिर्मृत्युरकारणश्च ललनाऽनभ्रा च वज्राशनिः ॥ बंधु
स्नेहविघातसाहसमृषावादादिसंतापभूः प्रत्यक्षापि च
राक्षसीति विरुदैः ख्याताऽऽगमे त्यज्यतां ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ वलीपणस्त्रीनुंज त्यजवुंकहेछे श्रीसिद्धातमां स्त्रीनेएह्वे विरुदेंकरीवखाणीछे तेमाटेस्त्रीनेत्यजवी तेकिहांकिहांविरुदेंत्यजवी तेविरुदोनानामकहेछे एस्त्रीतेभूमिविना विषनी कंदलीके० नवाअंकुरनीलीखाछे तथा कंदरीजेगुंफाथीरहितथकीपण वाघणसरिखीछे वलीकोइ नामविनापण महारोगरूपछे वली अकारणके० अपथ्य सेवन अजीर्णादिक कारणोविनाज मृत्युके० मरणतुल्यछे वली अभ्रवादलरहितते वज्रसरिखी वीजलीछे अने बंधुके० स्वजननो स्नेह तेह्नो विघातके० नाशकरनारी छे तथा साहसके० अविचारितकार्यनुंकरवुं असत्यबोलवुं वली आदिशब्दथी अदत्त अब्रह्म परिग्रहादिक तेसंबंधी संतापनो भूके० उत्पत्तिनोस्थानकछे वली प्रत्यक्ष साक्षात् राक्षसीपणजाणवी एरीतें एसर्वेस्त्रीना एह्वा अशुभ विरुदजाणीने विवेकी पुरुषने स्त्रीसंबंधी ममत्वत्यजवुं ॥ ८ ॥ इतिश्रीअध्यात्मकल्पद्रुमे स्त्रीममत्वमोचनो नाम द्वतीयो ऽधिकार संपूर्णः ॥

अथापत्याधिकारः॥ माभूरपत्यान्यवलोकमानो मुदाकुलो मोहनृपारिणा यत्॥ चिक्षिप्सया नारकचारकेऽस्मिन् दृढं निबद्धो निगडैरमीभिः॥१॥

अर्थ ॥ हवेत्रीजाअधिकारें पुत्रादिकनुं ममत्वमुकवाआश्री उपदेशकहेछे तेमां प्रथम संतानउपरें मोह्करवुंनही तेकहेछे हेआत्मातुं अपत्यजेपुत्रपुत्रीप्रमुख तेने जोतोथको मुदाके० हर्षेआकुलथाइस केमके मोह्राजारूप शत्रुयें नरकरूपजे चारकके० बंदीखानुं तिहां चिक्षिप्साके० घालवानीइछायें अपत्यरूप निगडके० बिमियें दृढकरीने तुजने बांध्योछे ॥ १ ॥

आजीवित जीव नवांतरेपि वा शल्यान्यपत्यानि न वेत्सि किं हृदि॥
चलाचलैर्यैर्विविधार्तिदानतोऽनिशं निहन्येत समाधिरात्मन ॥२॥

अर्थ ॥ हवेउपमानतरेकरी सतानतु डुखदाडपणुंदेखाडेछे हेआत्मा आजन्म मां जावजीवलगे तथा नवांतरे परनवेपण अपत्यजे सतानते शल्यके० शनरुप छे एमतुताहराहृदयमा केमनथीजाणतो जेसदपायुपवत सतानादिक तेशोकरुप पीडाआपेछे अने दीर्घायुषवतजे अपत्यते लग्नादिकद्रव्यव्ययप्रमुख विविधप्रकारनी पीडाआपेछे तथा नरणपोषणादिकनी चिंता रुपजेआर्त्ति तेहनेउपजावेकरीने अह निशके०निरतर हेआत्माताहरी समाधी सुखताने हन्येतके० हणीछे ॥ २॥

कुक्षौ युवत्या कृमयो विचित्रा अप्यस्त्रशुक्रप्रनवा नवंति ॥
न तेषु तस्या न हि तत्पतेश्च रागस्ततोऽयं किमपत्यकेषु
॥ ३ ॥ त्राणाशक्तेरापदि संबधानंत्यतोमिथोऽगवता ॥
संदेहाच्चापकृतेर्माऽपत्येषु स्निह्यो जीव ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ वलीतेहीजकहेछे स्त्रीनीकुखनेविषे अस्त्रजेस्त्रीनीयोनीनुरक्त अने शुक्रते पुरुषनुंवीर्य तेहनासयोगथीउपना एहवाकमीजे बेइंद्रियादिकजीव तेपणविचित्रप्र कारनाथायछे यडक्त इत्थीणजोणिमज्ञे हवतिबेंदियाउ जे जीवा ॥ इक्कोयदोवतिन्निव लरकपहुत्त च उक्कोसा ॥ १ ॥ तथासमूर्छिम अनेगर्नजपचेंद्रीमनुष्यपणथायछे तो तेस्त्री तथानर्त्तार वेहुने किनिश्चये स्युके० तेकृमीजीवनेविषे केमरागस्नेहनथीहोतु अ नेअपत्यजेपुत्रपुत्रादिक तेहनाउपर रागकेमउपजेछे केमके एकजस्थानकनाउपना तेकृमी अनेअपत्य तेबेहुवराबरछे ॥ २ ॥ हवे अपत्यथकी काइपणसार्थसिद्धिनी आशाराखवी जूठीछेतेदेखाडेछे हेआत्मातु अपत्यउपर स्नेहकरीसनही शाहेतुमाटेके आपदाजे मरणरोगादिक आवेथके जेअपत्यते त्राणके० राखवानेसमर्थनथी तथाव लीपरस्परेप्राणीने सबधतु अनित्यछे कारणकेनानाप्रकारना सबधछे माटे उपकारना पणसदेहछे केमकेजोपुत्रादिकसार्थे वैरानुबधी सबधहोयतो तेथकी उपकारकेमथा य श्रेणीकअने कोणीराजानीपरें तेमाटेस्नेहनु धरवुतेफोकटछे ॥ ४॥ इतिश्रीअध्या त्मकल्पद्रुमे पुत्रममत्वमोचनाख्यस्तृतीयोऽधिकारसमाप्त ॥

अथधनाधिकार ॥ या सुखोपकृतिकृत्त्वधिया त्व मेलयन्नसि रमा ममताभाक् ॥ पाप्मनोधिकरणत्वत एता हेतवो ददति ससृतिपात॥१॥

अर्थ ॥ हवेचोथाअधिकारें धननीममत्वमूकवाआश्री उपदेशआपेढे तिहांपहेलुं धनथी सुखतथाउपकार नथाय तेकहेढे हेजीवतुं ममत्वने नजततोथको एममानेढे जे एलक्ष्मी ते मने तथामहारांकुटुंबने सुखकारीथासे तथा दिनादिकनो उपकारकरवा ने कामआवसे एहवीबुद्धियें जे रमाके० लक्ष्मीनेमेलवेढे तेएलक्ष्मीतोकर्मादानादिक सावद्यव्यापारने करवेकरी अधिकरणपणायकी पापमन.के० पापनीजहेतुढे तेमाटे संसृतिपातजं संसारमांभ्रमणकरवुं तेप्रतेंजआपे एहवीढे तेभणी लक्ष्मीयकी सुख तथा उपकारनीवांछाते फोकटढे ॥ १ ॥

यानि द्विषामप्युपकारकाणि सर्पोंदुरादिष्वपि यैर्गतिश्च ॥
शक्या च नापन्मरणामयाद्या हंतुं धनेष्वेषु क एव मोहः॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवेधनथकी अनर्थनीपरपराथाय तेकहेढे जेधनते द्विषांके० शत्रुनेपण उपयोगीथाय एटलेधनना संचयकरनारने हणीनेज शत्रुबलवंतथाय अनेतेहना धननेज भोगवे वली जेधननेसंच्यायका उंदिरइत्यादिकनीगतिप्राप्तथाय केमके धन नोलोभीजीव धननीमूर्छायेंमरीने तेधनउपरें सर्प तथा उंदिर इत्यादिकथयी अवत रे वलीजे धनेकरीमरण तथारोगइत्यादिक आपदाओतेपण सुभुमचक्रवर्तिप्रमुखनी परें निवारीशकायनहीं तोएहवाधननेविषे मोहतेशीकरवी ॥ २ ॥

ममत्वमात्रेण मनःप्रसादः सुखं धनैरल्पकमल्पकालं ॥
आरंभपापैः सुचिरं तु दुःखं स्याद्दुर्गतौ दारुणमित्यवेहि ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हवेएधनथकीसुखथोडुंढे अने दुःखघणुंढे तेकहेढे केमके धनेकरी केव लममत्वना जन्मनोज प्रसादथाय कारणके महारापासेंधनढे एमचिंतवीचिंतवी ने धननोजोनिमाणी हर्षपामेढे पणतेधनेकरी सुखनो अल्पकाल क्षणमात्र थोडा कालजरगेंजहोय पणतेहना अतिनिमित्तक आरंभनापापेंकरीने दुर्गतिनेविषे दारु णके० कठिणदुःखहोयज एहवुं नवनंदराजाने दृष्टांतें अवेहिके० जाण ॥ ३ ॥

द्रव्यस्तवात्मा धनसाधनो न धर्मोपि सारंभतया निशुद्धः ॥
निःसंगतात्मा त्वतिशुद्धियोगा न्मुक्तिश्रियं यच्छति न द्वयेपि ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवेधनविना द्रव्यस्तवरूपधर्मनथाय तेमाटेंधनउपार्जवुं एहवुंविचारपण निश्चेंथकी जोता अयुक्तढे तेदेखाडेढे धनेंसाधियें एहवुंद्रव्यस्तवात्माके० द्रव्य स्तवरूप जिनभवन जिनप्रतिष्ठा दानसाजादिक जेधर्मेकरणीढे तेपण सारंभके०

द्व्यारंजसहितपणेकरीने अतिनिर्मलनथी पणमात्रस्वर्गादिकगतिनाहेतुछे माटेतेष्ठ मेनेपण मुक्तिनुपरंपरा कारणजाणवुनही अने नि संगतारूपजे धर्मते अतिशुद्धके० निर्मलता निरवद्यतानायोगथी तेहिजनवमांपण मोक्षरूप लक्ष्मीने आपे ॥ ४ ॥

क्षेत्रवास्तुधनधान्यगवाश्वैर्मेलितै सनिधिभिस्तनुभाजा ॥
क्लेशपापनरकाभ्यधिक स्यात् को गुणो यदि न धर्मनियोग ॥५॥

अर्थ ॥ हवेघणुपरिग्रहते पापनुमूलछे तेकहेछे क्षेत्र क्यारडाप्रमुख तथावस्तुते घरप्रमुख धनधान्य गायो अश्वइत्यादिक तथानिधिजे भंडारतेणेसहित एहवोपरि ग्रहमेलवेथकेपण जो एक धर्मनियोगके० जिनबिंबादिक शातक्षेत्रमा ववरायन ही तो तेवारे तेपरिग्रहथकी क्लेश पाप अने नरक एत्रणविना अन्यधिकके० अति रेकबीजोशोगुणहोय एटले परिग्रहथकी अनुक्रमे कष्ट पाप अने नरक एत्रणवा नाजथाय पणबीजोगुणकोइनथाय ॥ ५ ॥

आरंभैर्भरितो निमज्जति यत प्राणी भवांभोनिधावीहते कुनृपादय
श्च पुरुषा येन छलाद्बाधितु ॥ चिताव्याकुलताकृतेश्च हरते यो धर्म
कर्मस्मृति विज्ञा भूरि परिग्रह त्यजत त भोग्य परै प्रायश ॥६॥

अर्थ ॥ हवेपरिग्रहथकी इहलोके तथा परलोके दु खथायतेकहेछे जेपरिग्रहमे लववाथकी प्राणी आरंभेके० आरंभेभरयुथको ससारसमुद्रमाबुडेछे वलीतेपरिग्रहकरी दुष्टराजा तथाआदिशब्दथी मंत्रीप्रमुख अधिकारीओ अनेचोरादिक तेपुरुषने छले करी बाधितुके० पीडवानेवाछेछे केमकेबहुधनवंत उपरखोटोपण गुनाहनो आरोप करीनेदंडकरे वलीपरिग्रहनी चिताये व्याकुलताने करवेकरीने धर्मकर्मस्मृतिके० धर्मकार्यनु संभारवु तेहनोहरणकरीलिये माटेहेविवेकीजनो एधनते प्रायेबाहुल तायें परनाजनोगमाआवे एटले एकेसच्योहोय अनेबीजोभोगवे एहवोजेए भूरिके० घणुपरिग्रहतेहने त्यजो गाथो यदुक्त कीटिकासंचितधान्य मक्षिकासंचितमधु ॥ कृप णे संचितवित्त परैरेवोपभुज्यते॥१॥ जेमयोगियें घणाकष्टेकरी सिद्धिनारसनो संग्रह कर्यो अने वलनिपुरमा राकाशेठनाभोगमाआव्यो तेमकोइनुसच्युधन कोइकभोगवे ६

क्षेत्रेषु नो वपसि यत्सदपि स्वमेतद्यातासि तत्परभवे किमिद गृहीत्वा ॥
तस्यार्जनादिजनिताघचयार्जितात्ते भावी कथ नरकदु खभराच्च मोक्ष ७

अर्थ ॥ हवेअर्थातरकहीने सातक्षेत्रे धनवावरवानु उपदेशकहेछे हेधनवंत जे तु छतुंपोतानुंस्वके० धन तेहनेसातक्षेत्रनेविषे नथीवावरतुतो एधननेतुसु परभवेसा

थैंलेऽज्ञनारने एटलेदमणातोतु लोजनावश्यकी धननेंतुमागें खरचतोनथी पणते
धन परजवेतांदुर्गीनाथे नऽजश्रावे वलीनेंधनना उपार्जनकरवाथी उपनुंजे अघ
के० पापनो चयके० समूह तेथी अर्जितके० उपजाव्यो एहवोजे नरकसंबंधीदुःख
तेहनो नरके० भारनेंदूर्थी मोक्षके० तूटवुतेकेमथाशे ॥ ३ ॥ इति श्रीअध्यात्मकल्प
द्रुमे धनममत्वमोचनोनामचतुर्थोधिकारः समाप्तः ॥

अथ देहाधिकार.॥पुष्णासि यं देहमघान्यचिंतयं स्तवोपकारं कमयं विधा
स्यति॥ कर्माणि कुर्वन्निति चिंतयायति जगत्ययं वंचयते हि धूर्त्तराट् ॥१॥

अर्थ ॥ हवेपांचमेंअधिकारें शरीरआश्रयी ममत्वमूकवो तेकहेछे तेमांप्रथम पापकरीने देहनुंपोषणकरवुनही तेकहेछे हेआत्मातुअघके० पापने अणविचारतोथकोजेहने पुष्णासिके० पोषेछे ते आ देहतुजने शुंउपकारकरशे वली आयतिके० आवताकालनी चिंताचितवी हिंसादिककर्मकरतोथकोप्रवर्त्तनारो एहवोजेताहरोदेहते धूर्त्तनोराजाछे सर्वजगतने वंचयतेके० ठगेछे तोतुपापकरीनेंदेहने पुष्टकरेछेपण एदेहतेआखरतुजनेंठगसे छेहदेहीजाशे ॥ १ ॥

कारागृहाद्बहुविधाशुचितादिदुःखा न्निर्गंतुमिच्छति जडोपि हि तद्विभिद्य॥
क्षिप्तस्ततोधिकतरे वपुषि स्वकर्मव्रातेन तद्दृढयितुं यतसे किमात्मन्॥२॥

अर्थ ॥ हवेएशरीरते कारागृहथीपणअधिकछे तेदेखाडेछे हेआत्माजेप्राणी जडके० मूर्खहोय तेपण कारागृहजे बंदीखानुं जेमां बहुविध अशुचिता अपवित्रता आदिशब्दथी क्षुधा तृषा वध बंधनादिदुःखहोय एहवाकारागृहने भेदी खात्रादिकपाडीने नीकलवावांछेछे तोतुजने स्वके० पोतानाकर्मने समूहे तेकारागृहथीअधिकुंएहवुंजे वपुके० शरीररूपबंदीखानुं तेमांघाल्योछे तोएहवाकारागृह सरिखोजे ताहारो देहतेहने दृढकरवानेंज शुंउद्यमकरेछे केमके कारागृहनुं बंधनतोथोडुंछे पणदेहनुं बंधनतो जावजीवसुधी तथापरलोकेपणहोय तेमाटेदेहनुंबंधन अधिकजाणवुं ॥२॥

चेद्वांछसीदमवितुं परलोकदुःखभीत्या ततो न कुरुषे किमु पुण्यमेव॥शक्यं
न रक्षितुमिदं हि न दुःखभीतिः पुण्यं विना क्षयमुपैति च वज्रिणोपि ॥३॥

अर्थ ॥ हवेपरभवनादुःखथी बीहीतोथको वणुजीववानेंअर्थेजे देहनेपोषेछे तेने कहेछे हेआत्मा जोतु आशरीरने परलोकसंबंधीदुःखनाभीरुकरी अवितुके० राखवावांछेछे तोतुंपुण्यउपार्जन केमनथीकरतो केमकेपुण्येंकरी एशरीरदुःखनाभयथकी राखवायनही एमतोकाइनथी एटलेशरीरने दुःखनाभयथी राखवानेपण पुण्यजसमर्थछे

अनेवलीपुण्यविनातु तो वञ्चिजेइद्द तेह्वुंशरीरपण नाशपामेछे तेमाटेजोपरलोके दुःखथीबीहेछेतो तुपुण्यकर ॥ ३ ॥

देहे विमुह्य कुरुषे किमघ न वेत्सि देहस्थ एव भजसे भवदुःखजाल ॥
लोहाश्रितोहि सहते घनघातमग्नि र्बाधा न तेस्य च नभोवदनाश्रयत्वे॥४

अर्थ ॥ हवेजेशरीरनुजेतुपोषणकरेछे तेशरीरमारह्योथकोज तुदुःखपामेछे एहदु देखाडेछे किनवेत्सिके० हेआत्मातु देहनेविषे मोहपामिने पापकरेछे अनेतेदेहमा रह्योथकोज भवदुःखना समूहप्रतेंपामेछे तेकेमनथीजाणतो एतोनिश्चेयकी जाण नेआश्रीत मर्त्युजेअग्नि तेजेम घणा घणोना प्रहारोनेसहनकरेछे तेमतुजने तथा ए शरीररूप अग्निनेपण नभवत्के० आकाशनीपरे अनाश्रयत्वेके० निरालंबपणुकरेता बाधाके० पीडानहोय एटलेलोहाश्रित अग्नीनीपरे तुपणदेहाश्रितथको दुःखपामेछे

दुष्ट कर्मविपाकभूपतिवश कायाह्वय कर्मकृत् बध्वा कर्मगुणैर्हषी
कचषकै पीतप्रमादासव ॥ कृत्वा नारकचारकापदुचित त्वा प्राप्य
चाशु छल गतेति स्वहिताय सयमभर त वाह्याल्प ददत् ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवेदेहकर्मकरतु उपमानकहेछे हेआत्मा एदुष्ट निर्दय एह्वोदेहनामे क र्मकरके ० राजसेवक तेतुजने कर्मरूप घणाबधनेबांधीने नरकरूप बंदिखाना सब धीआपदानो उचितयोगएह्वोकरी पछेछलताकीने उतावलोजतोरहसे एकर्मकरक देवुछेके कर्मविपाकनामाजेराजा तेह्नोवशवर्त्तिछे एटलेकर्मविपाकराजाये एहनेप्रे र्योछे माटेहेजीव ते कृपीकजे इंद्रियतेरूप चषकजे मद्यपाननापात्र तेणेकरी पा चविधप्रमादरूप आश्रवनामामद्य पीउंछे एह्वोजाणीनेतु पोतानाहितनेअर्थे तेकर्म करजे शरीरतेह्ने थोडुपणआहार दोषरहितआपीने सयमरूपभारवहरावके जेथ कीताहरा आत्मानी सिद्धिथाय ॥ ५ ॥

यत शुचीन्यप्यशुचीभवति कृम्याकुलात् काकशुनादिभक्ष्यात् ॥
द्राग्भाविनो भस्मतया ततोऽगात् मासादिपिडात्स्वहित गृहाण॥६॥

अर्थ ॥ हवेएअशुचिदेहथी बीजापदार्थपण अपवित्रथाय तेकहेछे शुचिके० प वित्रजेवस्तु एह्वाखीरखांडप्रमुख तेपण एशरीरनासगथी अपवित्रथाय तेमाटेएश रीरकहेवुछे तेकहेछेकमिजे उदरप्रमुखनाजीव तेणेकरीआकुलके० व्याप्त तथा का गडा कुतरा इत्यादिकजीवने भक्षवायोग्य अने प्राणगयापछि तत्काल भस्मथयो

राखधनारछे वली मांसादिकनुंपिंमछे एहवाए असारशरीरथकीतो जे स्वहितके० आत्मानेहितकारकएहवा संयमादिकतेप्रतेजेऽने आत्मसाधनकर ॥ ६ ॥

परोपकारोस्ति तपो जपो वा विनश्वराद्यस्य फलं न देहात् ॥
सभाटकादल्पदिनाप्तगेहमृत्पिमम्मूढः फलमश्नुतेकिं ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ वलीयुक्तिविशेषे देहनुं सफलकरवुंकहेछे जेपुरुषने एविनाशशील एहवुं जेदेह तेथकी परोपकार तथा तप जप प्रमुखनथाय तोतेपुरुष भाडेराखेलुं थोडा दिवससुधिपाम्युं एहवुंजेघर तेसरिखो एमाटीनापिंमरुप देहउपरमूढथतो शोफलपामें जेमभाडानुंघरते वापरियेतोजशारुं नहिंकांजेभाडुंखरचियेते व्यर्थजाय अनेवली आखरपोतानुंपण तेघरथायनही तेमएदेहनेपण अहारादिकभाडुंआपीने पोष्युंथको तपजपादिककरी वावरीये तोजसफलथाय नहिंकांनिःफलजाणवुं ॥७॥

मृत्पिडरूपेण विनश्वरेण जुगुप्सनीयेन गदालयेन ॥
देहेन चेदात्महितं सुसाधं धर्मान्नकिं तद्यतसेऽत्रमूढ ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ वलीतेहिजकहेछे जेमाटीनापिंमतरिखुं विनाशीआचारवत तथादुगंछा करवायोग्य अनेरोगनुं आलयके० घर एहवोजेदेह तेणेकरीने धर्मकरवाथी आत्महितसाधवुं तुजनेसुलभछे तोहेमूर्ख आत्महितसाधवाने केमउद्यमकरतोनथी माटे असारभूतदेहथी सारभूतआत्मानो हितसाधवाने सर्वथाउद्यमकरवुं ॥ ८ ॥
इतिश्री अध्यात्मकल्पद्रुमेदेह ममत्वमोचननामे पांचमोअधिकारसंपूर्णथयो.

अत्यल्पकल्पितसुखाय किमिंद्रियार्थैस्त्वं मुह्यसि प्रतिपदं प्रचुरप्रमादः॥
एते क्षिपंति गहने भवभीमकक्षे जंतून्न यत्र सुलभाशिवमार्गदृष्टिः ॥१॥

अर्थ॥पूर्वेकह्युजेदेहनिग्रहकरवुंतेकांइ विषयनीममतामूकवासीवाय थतुंनथी माटेहवेछठेअधिकारें विषयप्रमाद त्यजवा आश्रयी उपदेशछे तिहां प्रथम इंद्रियार्थनुं मोहत्यजवुं तेकहेछे हेआत्मातुं घणुजप्रमादवतथको पण अतिशयेंकरी अल्पके०थोडुंपणकल्पनामात्र जेसुखतेपण परमार्थेथीतोदुःखजछे पणतेंसुखकरीमान्युं एहवु जेसुख तेहनाअर्थे प्रतिपदके० ठामेठामे इंद्रियार्थजे शब्द रुप रस गंध स्पर्श तेणेकरी मुंमुंजायछे एइंद्रियार्थते जंतुके० प्राणीने गहनके० अपार एहवोसंसाररूपजे भीमके० रौद्र कक्षके० अटवीतेमां क्षिपंतीके० घालेछे बलात्कारें तेमां प्रवेशकरावेछे जिहां शिवके० मुक्तिमार्गनुं दृष्टिदर्शनतेजीवने सुलभनथी जेमकोइबीजोपण गहनवनहोयतोतेंमांहे शिवके० निरुपद्रव्यमार्गनुं जेदर्शनते दुर्लभहोय तेनीपरेंजा

एवु ॥ १ ॥ इहांप्रमादना पाचप्रकार तथा आठप्रकारनी गाथाकहेछे मज्ज विषय कषाया निद्दाविकहाय पचमीभणिया ॥ एए पच पमाया जिव पाडंति ससारे ॥ १ ॥ तथाआठप्रकार कहेछे पमाउयमुणिंदीहिं भणिउं अठभेयउं ॥ अन्नाण ससउ चेव ॥ मिछानाण तहेवय ॥ १ ॥ रागो दोसो मइभ्भसो धम्ममिय अणायरो ॥ जोगाण डुप्पणि हाण ॥ अठ्ठहावज्जियवउं ॥ २ ॥

आपातरम्ये परिणामदुःखे सुखे कथं वैषयिके रतोसि ॥ जमो पि कार्यं रचयन् हितार्थी करोति विद्वन् यदुदर्कतर्क ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवेससारिकसुखते प्रथमतोसुखदायीछे पण परिणामेदुःखदायीछे तेकहेछे हेचतुरआत्मातु आपातके० तत्कालमात्रतो रम्यमनोहरछे पणपरिणाम के० विपाककाले महादुःखदाइरूप एहवा विषयसबधी सुखमा सुराच्योछो केमके पोतानाहितने वाछनार एहवोजे जडके० मूर्खप्राणीहोय तेपण कोइकार्यकरेतो उदर्कके० जेआगामिककालनुफल तेहनु तर्कके० विचार करीने परिणामे अहितकारीहोयतेने त्यजेछे तोतुचतुरछता परिणामे दुःखदायी एहवाजे विषयादिक तेप्रते केमआचरेछे एआचरवा तुजने योग्यनथी ॥ २ ॥

यदिंद्रियार्थैरिह शर्मबिंदवद्यदर्णवत्स्व शिवग परत्र च ॥ तयो र्मिथोस्ति प्रतिपक्षता कृतिन् विशेषदृष्ट्यान्यतरद्गृहाण तत् ॥३॥

अर्थ ॥ हवेससारिकसुखनी अल्पतादेखाडेछे हेचतुरआत्मा इहलोकनेविषे इंद्रियार्थजे शब्दादिक तेणेकरीने बिंदुजे तुछसुख अनेवलीजे परलोके अर्णवके०स मुद्रसरिखु स्व शिवगके० देवलोक अनेमुक्तिसबधीजेसुख तेसुखने मिथ के० मा होमाहें प्रतिपक्षता एटलेशत्रुनावछे केमके जिहांइंद्रियार्थनुसुखछे तिहांमुक्तिसुख नथी अनेजिहां मुक्तिसुखछेतिहां इंद्रियार्थसुखनथी तेमाटेविशेषदृष्टियेकरी तेबेहुमां जेहनेतुरुडोजाणे तेहने ग्रहणकर ॥ ३ ॥

भुक्ते कथं नारकतिर्यगादि दुःखानिदेहीत्यवधेहि शास्त्रे ॥ निवर्त्तते ते विषयेषु तृष्णा बिभेषि पापप्रचयाच्च येन ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवेतेहिजविशेषे देखाडेछे हेआत्मा देहवतप्राणी नरकतिर्यचगतीनादुःख केटप्रकारेभोगवेछे एटलुतु शास्त्रमांथी जोइने अवधेहिके० निश्चयकर तोतुजने निर्भयकी विषयनेविषे तृष्णानीनिवार्त्तियासे अनेपापना सचवायकीतुबीहेतोरहिश

गर्भवासनरकादिवेदना पश्यतोनवरतं श्रुतेक्षणैः ॥
नो कपायविपयेपु मानसं श्लिप्यते वुध विचिंतयेति ताः ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ वलीतेह्रीजकहेछे हेपंमितप्राणी अनवरतंके० निरंतर श्रुतजे शास्त्रतेरूपी ईक्षणके० नेत्रेंकरीनेगर्भावास तथानरक आदिशब्दथी निगोद एकेंद्रियादिक तेसंबंधीवेदनाउप्रतेंजोता थका ताहरुं मानसके० चित्ततेकपाय तथा विपयनेविपें नो श्लिप्यतेके० अशक्तनथाय एहेतुमाटे पूर्वोक्तवेदनाउने सम्यकरीतेविचारीसतो ताहरुंचित्त विपयकपायथकी किंचितमात्र उद्विग्ननथाय ॥ ५ ॥

वधस्य चोरस्य यथा पशोर्वा संप्राप्यमाणस्य पदं वधस्य ॥
शनैःशनैरेति मृतिः समीपं तथाखिलस्येति कथं प्रमादः ॥ ६॥

अर्थ ॥ वलीमृत्युनयदेखामी प्रमादत्यजवानुं प्रतिवोधकरेछे जेमवधकरवानेकाढ्या एह्वाजे चोरतथा वोकडाप्रमुखजेपशु तेह्नेवधनास्थानके लइजतां जेमजेमवधना स्थानकतरफ पगलांनरे तेमतेमथोडेथोडे मृत्युपणनजीकआवे तेह्नीपरे सर्वेप्राणीओनें थोडेथोडे घडी पहोर दिवस मास वर्पादिकने जावेकरी मृत्युढुकडो आवेछे तेकारणमाटे आत्मानाहितसाधननेविपे विलंवकेमकरियें अर्थात् प्रमादत्यजीने सर्वथाधर्मनेविपे तत्परथावुं ॥ ६ ॥

विभेपि जंतो यदिदुःखराशे स्तदिंद्रियार्थेपु रतिं कृथा मा ॥
तदुद्भवं नश्यति शर्म यद्राक् नाशे च तस्य ध्रुवमेव दुःखं ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ ह्वेसुखनो शीघ्रके० तुरतनाशपणुंदेखाडीने जीवनेप्रतिवोधकरेछे हेजीवजोतु दुःखनासमूह्थकी वीहेछे तो इंद्रियार्थजे शब्दादिकतेह्नेविपे रतिके०रागकेमकरेछे केमकेइंद्रियार्थेथीउपनुंजे शर्मके० सुखतेद्राग्के० उतावलोज नाशपामेछे अनेतेह्नानाशपछि दुःखतो ध्रुवके० निश्चल चिरकाललगें निश्चितछे जेमप्रकाशनेअंते अंधकार निश्चेयकीहोय तेमसुखनेअंते दुःखपणनिश्चेयकीजहोय ॥ ७ ॥

मृतः किमु प्रेतपतिर्दुरामया गताः क्षयं किं नरकाश्च मुद्रिताः ॥
ध्रुवाः किमायुर्धनदेहवंधवः सकौतुको यद्विपयैर्विमुह्यसि ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ वलीप्रकारान्तरेजीवने सुखनाप्रतिवंधकदेखाडेछे हेआत्मा प्रेतपतिजे यममृत्युलक्षण तेमुंमुओ के जतोरह्यो तथादुष्टकारी आमयके० रोग यदुक्तं शेगाणं कोडीउ ह्वंति पंचेव लरकअडसठी॥ नवनवइसहस्साइं उच्चसयाचेव पणयाली

१५६८८५५८६४५ खासे सासे जरे दाहे कुक्षिसूले जगदरे॥ अरसा अजीर्ण दीहि मुहमूले अरोयए ॥ १ ॥ अछिवेयण कनु थकणवाधाजलोयरे ॥ कुडे एमाइया रोगा पीड़यंति सरीरिण॥ २ ॥ एसोलरोग महोटाकह्याछे तेछेहनेआश्रयीजग्ह्याछे तसुह्यपाम्या तथासातनरक तेहनावारणातेसु मुछिताके० ढंकाणा वंधयया तथा आयुष धन देह अनेस्वजनजे वधुतेसु ध्रुवके० निश्चलशाश्वताछे जेमाटेतु सर्वांतु कके० सहर्षवतथको विषयनेविषे मोहपामेछे एटलेमृत्यु रोग अने नरक एत्रण जयतो विद्यमानछे अने आयु धन देह स्वजन एतोअस्थिरछे तोतुमहर्षपणुते गा कारणथीधरेछे तेकाइसमजातुनथी॥ ८ ॥

विमोह्यसे किं विषयप्रमादै र्भ्रमात्सुखस्यायतिडुःखराशे ॥
तगर्धमुक्तस्य हि यत्सुख ते गतोपमं चायतिमुक्तिदं तत् ॥ ए॥

अर्थ॥ हवेविषयसुखते निदानडुःखरूपछे तेकही जीवनेप्रतिबोधेछे हेआत्मातुनने विषयनेप्रमादेमिलीने निदान डुःखराशीके० डुःखनासमूह तेहने सुखनाभ्रमथकी विमोह्यसेके० मोहपमाडेछे एटलेडुःखनासमूहनेविषे सुखनीभ्रांतियें जेतुमोहपामेछे तेमात्र विषयप्रमादना वशथकीजपामेछे एनावार्यछे तेमाटे गर्द्धमुक्तके० तृष्णारहित एहरोथकोनुजने उपशमलक्षणरूप गतोपमके० अनुपमसुखते आयतिके० निदानमुक्तिनुदातारछे तेमाटे तृष्णारहित निरिहतासुखनेआदर ए इतिश्रीअध्यात्मकल्पद्रुमे विषयावशतोपदेश षष्टोधिकार ॥ ए ॥

अथ कषया ॥ रे जीव सेहिथ सहिष्यसि च व्यथास्ता स्त्वं नारकादिषु पराजवभूः कषायैः ॥ मुग्धोदितै कुवचनादि जिरप्य तं किं क्रोधान्निहंसि निजपुण्यधनं डुराप ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हवेसातमेंअधिकारे कषायादिक त्यजवाथ्याश्री उपदेशकरेछे त्याप्रथम कषायनुफलकहेछे हेजीवतु कषायजे क्रोधादिकतेनाहेतुथी नरकादिकनेविषे पराजवजेपीडा तेहनो जाजन थको ते माहा डुःसह वेदनाओ सहनकरी अनेवलीपण महीश तेमाटेमुग्धजे अजाणलोकनाकहेला जे कुवचन गालप्रमुख इत्यादिकतुवकार गोनेवास्ते डुर्जनएवुजेपोतानु पुण्यरूपीधन तेनेक्रोधथीआहणेछे एटलेअल्पकारण माटे कषायकरीने डुर्लनजेपुण्यरूप धनतेनेहरेछे तेमाटेकषायनकरवु ॥ १ ॥

पराभिभूता यदि मानमुक्ति स्ततस्तपोखंडमतः शिवं च ॥
मानादृतिर्दुर्वचनादिभिश्च तपःक्षयस्तन्नरकादिदुःखं ॥ २ ॥
वैरादियात्रेति विचार्य लाभालाभौ कृतिन्नाभवसंभविन्यां ॥
तपोऽथवा मानमवाभिभूताविहास्ति नूनं हि गतिर्द्विधैव॥३॥ युग्मं॥

अर्थ ॥ हवेमानमुकवानुं अनेराखवानुं फलकहेछे हेआत्मा परजेअन्यजनतेथी अभिभूतिके० अपमान आक्रोशादिकउपजेथके मानजेअहंकार तेनेमुकीआप जेणे करीअखंडतपथी मोक्षप्राप्तिथाय अनेदुर्वचनादिकेकरी जोमानआदरीशतो तपनो क्षयथाय तेतपक्षयथके नरकादिकदुःखयाशे तथाआलोकेपण वैर धनहानि मरणा दिकदुःखथाशे माटेहेनिपुणआत्मा एमपूर्वोक्तप्रकारें मानमुक्याथीलाभछे अनेमान आदर्याथीअलाभछे एवेवातोविचारीने आभवके० एकभवसंबंधिनी अभिभूतिजेक [illegible] भव तेउपजेछतेपण तपनेराख अथवामाननेराख केमकेएकार्यमां वेजउपायछे [illegible] तेमांअभिभूतिथुंतो एकजभवनुं दुःखछे थनेमानकर्याथीतो तपक्षयथाशे [illegible] भवदुःखछे तेमाटेमानत्यजीने तपनेराख एवेकाव्यनोअर्थएकठोछे ॥ २ ॥ ३ ॥

श्रुत्वा क्रोशान् यो मुदा पूरितः स्यात् लोष्टाद्यैर्यश्चाहतो [illegible]
यः प्राणांतेप्यन्यदोषं न पश्यत्येष श्रेयो द्राग् लभेतैव [illegible] ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवेकषायतज्याथी मुक्तिफलछे तेकहेछे जेयोगीसाधु [illegible] सांभलीने आनंदपामी विचारेजे एगालिनुं अभिधेय मेंआचर्युं [illegible] नी वलीजेजोह पाषाणादिकें हणायोथकोपणजेनुं मनमांहि [illegible] चितवेजे आजमाहरे विशेषनिर्जराथइ एमजाणी वलीं [illegible] दोष तथाअवगुणनदेखे पणपोतानोजदोषदेखे [illegible] याथीशुभयोगवंत तेवतावलोज श्रेयजेमोक्ष तेने [illegible] ॥ ४ ॥

कोगुणस्तव कदा च कषायै निर्ममे [illegible]
किं न पश्यसि च दोषममीषां [illegible]

अर्थ ॥ हवेयुक्तियेंकरी कषायमां गुण [illegible]
दिक तेऐतुजनेकोइवारें कोइपणगुण [illegible]
लीआलोकेसंताप अनेपरलोके [illegible]
थीदुःखतोछुं जे तुंनिश्चितथको [illegible]

यत्कषायजनित तव सौख्यं यत्कषायपरिहाणि भवति ॥
तद्विशेषमथवैतदुदर्कं संविभाव्य भज धीर विशिष्टं ॥६॥

अर्थ॥वलीप्रकारांतरे कषायत्यजवु उपदेशेछे हेआत्मा तुजनेकषायथी उपनुजेसु ख अनेकषायना परित्यागथी उपनुजेसुख एवेनुविशेषजे अधिकपणु तथा उदर्क॰ निदानो विपाकजेफल तेसम्यक प्रकारे विचारीने पछे हेधीरपमित एमाजेतुजने विशि ष्टउत्तमजाणवामाआवे तेनेतुंआदरअंगीकारकर ॥ ६ ॥

सुखेन साध्या तपसा प्रवृत्ति र्यथातथा नैव तु मानमुक्तिः ॥
आद्या न दत्तेपि शिवं परा तु निदर्शनाद्बाहुबलेः प्रदत्ते॥७॥
सम्यग् विचार्येति विहाय मानं रक्षन् दुरापाणि तपांसि यत्नात्॥
मुदा मनीषी सहतेऽभिभूती शूरः क्षमायामपिनीचजाताः ॥८॥

अर्थ॥हवेतपकरवाथी मानत्यागनी दुष्करता देखाडेछे हेआत्मा जेम तपनीप्रवृ त्तितेसुखेसाध्यछे तेममानमुक्तिजे मानतुंत्यजवु तेसुखेसाध्यनथी तो आद्याके॰ पहेली कहीजे तपप्रवृत्तितेमुक्तिआपवा समर्थनथी अने बीजीजेमानमुक्ति तेयद्यपिडु साध्यछे तोपणते मुक्तिआपवाने समर्थछे बाहुबलनेदृष्टांतें जेमबाहुबलने मानमुक्तिविना मात्र तपथकीज केवलज्ञान उपनुनही अनेमानमुक्यु तेवारे तत्कालज्ञानउपनु एवुसम्यग् विचारीने मानत्यजीनेयत्ने करीदुर्लभ एहवोजेतप तेनेराखतोथको क्षमानेविषे शूर एवोजे मनीषीके॰ पमित ते नीच जननो करेलो अभिभूति जेपराभव तेनेपण मुदा के॰ हर्षकरीनेसहेछे ॥ ७ ॥ ८ ॥ एवेकाव्यनोअर्थएकछे

पराभिभूत्याल्पिकयापि कुप्यस्यघैरपीमां प्रतिकर्त्तुमिछन् ॥
न वेत्सि तिर्यङ्नरकादिकेषु तास्तैरनंतास्त्वतुला भवित्रीः ॥९॥

अर्थ ॥ वलीएपरिसह सहेवाआश्रीज उपदेशेछे हेआत्मातु थोडीपण परनीकरे लीजे अभिभूति पीडादिक तेणेकरी अभिभूतिना करनारजे पुरुषतेउपर कोपेछे अने वली पापकरीने तेहना प्रतिकारने वांछेछे एटले पूर्वजन्मांतरना पापविपाकथकी प रानवपामेछे अनेवलीतेहनो प्रतिकारपण पापेकरीनेज वांछेछे परंतुतेपापेकरीने तु अभिभूतिजेपीडाओ तेतिर्यंचनरकादिक गतिनेविषे अनंततथाअतुल मोटीटी एवि भवित्रीकेहेता पीडाथाशे एवुकानथीजाणतो ॥ ९ ॥

धत्से कृतिन् यद्यपकारकेषु क्रोधं ततो धेह्यरिषट्कएव ॥
अथोपकारिष्वपि तद्भवार्तिकृत्कर्मंहन्मित्रवहिर्द्विपत्सु ॥ १० ॥

अर्थ ॥ हवेक्रोधकरवो तेवैरीनेज विषुक्तछे तेकहेछे हेपंमितआत्मा जोतुं अपकार
शत्रुनेविषे- क्रोधधरेछेतो तेनेवदलेतादृश अंतरंगनाजे क्रोध मान माया लो
राग अनेद्वेष मलीछशत्रुछे तेहनेविषेज क्रोधधर केमकेएछशत्रुथी वीजोकोइ तुफ
वधारेदुःखदाइनथी अथवा उपकारक मित्रनेविषे जोतुंक्रोधधरतोनथी तेवारेतुं सं
सारमां आर्तिकारी एहवाज्ञानावर्णादिक कर्म तेनोहरणकरनाराजे उपसर्गादिकना
करनार शत्रु तेनाउपसर्गनेकरवेकरी वाह्यदृष्टियेंतोते तादृशशत्रूछे पणकर्मक्षयकर
वामां अनेपरलोकना अनंतसुखनीप्राप्तिकरवामां साह्यकारीथया माटे तत्वदृष्टियें
जोता अभ्यंतरपणे तेमित्रनावेज परिणम्या तेथी उपसर्गकारकशत्रुने तत्वदृष्टीयें
मित्रतुल्य जोइने तेमित्रनेविषे क्रोधनधरवो एभावार्थछे ॥ १० ॥

अधीत्यनुष्टानतपःशमाद्यान् धर्मान् विचित्रान् विदधत्समायान् ॥
न लप्स्यसे तत्फलमात्मदेहक्लेशाधिकं तांश्च भवांतरेषु ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ हवेमायात्यजवा आश्रीउपदेशछे हेअत्मातुं अधीतिके०भणवुं तथाअ
नुष्टानजे क्रियाआवश्यकादिक तथातपउपशमादिक नानाविधधर्म ते मायाके०
कपटसहित करतोथको मात्रतुं पोतानादेहने कष्टजआपेछे पणतेथी व्यतिरिक्तके०
वीजूंफलकांइ भवांतरनेविषे पामीसनही वली भवांतरनेविषे तेधर्मनेपणपामीसन
ही केमकेमायावीने वोधीपामवीदुर्लभहोय ॥ ११ ॥

सुखाय धत्से यदि लोभमात्मनो ज्ञानादिरत्नत्रितये विधेहि तत् ॥
दुःखाय चेदत्र परत्र वा कृतिन् परिग्रहे तद्वहिरांतरेपि च ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ हवेलोभत्यजवाआश्री उपदेशकरेछे हेआत्माजोतुं पोतानासुखनेअ
र्थे लोभकरेछे तोज्ञानादिक जे ज्ञानदर्शनअनेचारित्र एत्रणरत्ननेविषे लोभकर वी
जीधनधान्यादिक असारवस्तुथी कांइसुखनथाय माटेहेचतुरआत्मा तुंआलोके
दुःखनेअर्थे वाह्यथीधनधान्यादिक अने अंतरंगथी क्रोधमानादिक परिग्रहनेविषे
लोभ करिसनही ॥ १२ ॥

करोपि यत्प्रेत्य हिताय किंचित्कदाचिदल्पं सुकृतं कथंचित् ॥
माजीहरस्तन्मदमत्सराद्यैर्विना च तन्मा नरकातिथिर्भूः ॥ १३ ॥

अर्थ॥हवेजीवने सुकृतराखवाआश्रयी उपदेशछे हेआत्मातुं कोइकाले कथंचित् ध

गोक्टेटगीने काइएक अल्पके० थोडुपणसुरुत जेदानादिक तथातपसयमादिकते प्रत्यके० परलोकना हितनेअर्थेकरेछे तेसुरुतने मद मत्सर क्रोध लोनादिके करीने हारिमनही अनेवली तेसुरुतविना सातनरकनो अतिथिके० परोणो थइशनही एटले तेसुरुत खोयाथी नरकगतियशे तेमाटे मदमत्सरादिकने निवारीनेसुरुतराखजे॥१३

पुरापि पापै पतितोसि ससृतौ दधासि रे किं गुणिमत्सरं पुन ॥
न वेत्सि किं घोरजले निपात्यसे नियन्त्र्यसे शृंखलया च सर्वत ॥१४॥

अर्थ॥वली मत्सरत्यजवाआश्री उपदेशछे हेआत्मातु पूर्वेपण पापेकरीने ससारमा पडयाछे अनेवलीगुणवतने विषे शुमत्सरधरेछे एमकानथीजाणतोजे एमत्सरतोगु णने योगे० अगाधदुःखरूपियुं जेमा जलछे एहवा ससाररूपीया समुद्रमानाखेछे अनेवली तारा सर्वागने निकाचित कर्मरूप सांकलेकरीबांधेछे ॥ १४ ॥

कष्टेन धर्मो लवशो मिलत्ययं क्षयं कषायैर्युगपत्प्रयाति च ॥
अतिप्रयत्नार्जितमर्जुनं तत किमङ्ग हीहारयसे नभस्वता ॥ १५ ॥

अर्थ॥वलीआत्माने कष्टेउपार्जितधर्म राखवानो उपदेशकहेछे हेआत्मातुधर्मनु एकल वलेशमात्रपण कष्टेकरीने मलयछे केजेथकीताहरो कपायेकरीने युगपतके०समकाले एकारतनो सघलो कोधनुजेह्नेगतेवधागेज क्षयपामे तेमाटेहेमूर्ख घणाउद्यमे उपा र्जितु अर्जुनने सुवर्ण ते वायुएकरीने हाडतिस्वेदे वृद्धारी जायछे एटलेसुवर्णरस वायुये हायानीरो कष्टेउपार्जेलधर्म तेनेकपायरूपवायुये हारावेछेतेयुक्तनथी ॥१५

शत्रूभवन्ति सुहृद कलुषीभवन्ति धर्मा यशासि नि
चिता यशमीभवन्ति ॥ स्निह्यन्ति नैव पितरोपि च बान्ध
वाश्च लोकद्वयेपि विपदो भविना कषायैः ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ हवेकषायथी उपाधिथायतेगुणथायछे तेकहेछे ससारीजीवने कषायेकरी ने मित्रहेतेशत्रुथाय वलीधर्मने तपदानादिक तेमेलाथाय वलीचिरकालनोसचेलोयश तेरुव अपयशथाय वलीमातापिता तथा बीनाभजनादिक तेपणस्नेह करे नही तेमजेजीवनि कपायेकरी आलोक अनेपरलोकपण आपदाथाय ॥ १६ ॥

रूपलाभकुलविक्रमविद्या श्रीतपोवितरणप्रभुताद्यै ॥
किं मदं वहसि वेत्सि न मूढानन्तश स्वभृशलाघवदु स्वं ॥१७॥

अर्थ ॥ हवेवलीने मदनिवारवाआश्री उपदेशकहेछे हेआत्मातु रूप ज्ञान कु ल पराक्रम विद्या लक्ष्मी तप दान ऐश्वर्य तयाआदिशब्दथी जाति परिवार स्त्री म

दिर इत्यादिकें करीनें मद अहंकार शुंवहेते? हेमूर्खअनंतिवार पोताना अतिशये लाघवपणानुंजे दुःख तेकेमनथी विचारतो? तुंपोतेंज अनंतिवार कुरूप लाजरहित हीनकुल निर्बल मूर्ख दरिद्री तपकरवाने अशक्त कृपण दास किंकर एहवो अपतखो हतो त्यांपणसर्ववातें हीनपणुं अनुभव्युं तोत्र्यानइहां शुंमदकरेछे॥१७॥

विना कषायान्नभवार्त्तिराशि र्नभवेन्नवे देव च तेषु सत्सु॥ मूलं
हि संसारतरोः कषायास्तत्तान् विहायैव सुखी भवात्मन्॥१८॥

अर्थ॥ वलीफरीने कषायनुंत्यजवुंज कहेछे. हेआत्मासंसारमां कषाय विना संसार संबंधीनी आर्त्तिनोसमूह होयजनही अनेतेकषायेंकरी विद्यमानछते भवार्त्तिनीराशि होयज केमके संसाररूपीया वृक्षनुमूल तेकषायजछे. माटेतेकषायनेछांमीनेसुखीया. शांतिसुखनेपाम.॥ १८॥

समीक्ष्य तिर्यङ्नरकादिवेदनाः श्रुतेक्षणैर्धर्मदुरापतां तथा॥
प्रमोदसे यद्विषयैः सकौतुकै स्ततस्तवात्मन् विफलैव चेतना॥१९॥

अर्थ॥ हवेजेविषयने त्यजीशक्तोनथी तेप्राणीने शास्त्रभण्यो तेपणअफलछे ते आश्रीकहेछे हेआत्मा श्रुतजेसिद्धांत तेनेजोवेकरीने तिर्यंच नरक प्रमुखनी वेदनाने तथासर्वज्ञभाषित धर्मनुंदुर्लभपणुंछे एमतेंसम्यक्प्रकारेंजाणीने पणजोतुं कौतुकसहितथको विषयमांराचेछे तेवारें ताहारो चेतनाजे ज्ञानदृष्टि तेनिस्फलछे केमके तुंनरकादिकनादुःखने जाणतोछतोपण दुर्लभधर्मपामिने धर्मकरतोनथी॥ १९॥

चौरैस्तथा कर्मकरैर्गृहीते दुष्टैः स्वमात्रेप्युपतप्यसे त्वं॥ पुष्टैः
प्रमादैस्तनुभिश्च पुण्यधनं न किंवेत्स्यसि लुठ्यमानं॥ २०॥

अर्थ॥ हवेधर्मरूपधन तेलुटातुंनथी तेआश्रीजीवने उपदेशकहेछे हेआत्माचोर लोको तथा दुष्टकुलक्षणकर्मकर जेदासादिकतेणे स्वमात्रके० मात्रबाह्यधनने अपहरणछतां तुंपरितापकरेछे पणपोतानापोष्या एवाजेप्रमाद तथा तनुके० शरीर तेणेचोरनीपेठें लुटयुं एहवुंजे ताहरुं पुण्यरूप धन तेसर्वलुंटाइजायछे माटेतेहनी रक्षाकरकेजेथीतुं भवांतरेंसुखीथाय॥ २०॥

मृत्योः कोपि न रक्षितो न जगतो दारिद्र्यमुत्त्रासितं रोगास्तेननृपादि
जा न च भियोनिर्णाशिताः षोडश॥ विध्वस्ता नरका न नापि सुखिता
धर्मैस्त्रिलोकी सदा तत्कोनाम गुणो मदश्च विभुता का ते स्तुतीछा च का२१

अर्थ ॥ वलीआत्माने गुणरहितपणुदेखाडी मदटालवा उपदेशकरेछे हेआत्मा जोतें मृत्युनामुखथी कोइप्राणीराख्योनथी तथा जगतजेविश्वतेनु दारिद्रनाशपमाड्युनथी वलीसोलेरोगजे कासादिक तथाराजाअने चोरप्रमुखनाभय तेनाशपमाड्या नथी वलीसातजेनरक तेपणनिवारयानथी तथाधर्मकरीने त्रिभुवनने सदासुखीकीधुन थी इत्यादिकगुणमाहेलो एकगुणजोताहरामानथी तेवारेताहारोगुणतेस्यो, अनेतेगु णविना मदतेस्यो, तथा विभुताके० मोहोटाइतेशी, तथास्तुति प्रशंसानीवांछा तेप णशी, एटलेपूर्वोक्त तथाविध कोइगुणजोताहरामाहोयतो मदकरवोपणघटेछे पण तेविना तोजेमदकरवोतेसर्वे निरर्थकछे तेमाटे मदमत्सरादिकत्यजवा २१ इतिश्री अध्यात्मकल्पद्रुमेविषयकषायाद्यवशताधिकार सप्तम सपूर्णम्म ॥

अथशास्त्राभ्यासनित्योपदेश ॥शिलातलाभे हृदि ते वहति विशति सिद्धांत रसा न चात ॥यदत्र नो जीवदयार्द्रता ते न भावनांकूरततिश्च लभ्या॥१॥

अर्थ ॥ हवेआठमेअधिकारे शास्त्रगुणकेहेछे त्याप्रथमउपमानेशिक्षातरेचितनुक ठिणपणुदेखाडेछे हेआत्माशिलाना तलियासरखा ताहराहृदयमा सिद्धांतरूपिया रसाहेछे पणतेथीतारोअंत करण लिगारेभेदातोनथी केमकेएहृदयमां जीवदया रूप णीरोमनता तथाभावनाजे अनित्यत्वादिक तेरूपीयाअंकूरनी श्रेणी देखातीन थी शोमनदृष्टी जेम जलप्रवाहनेयोगे आर्द्रतापामे तथात्या अनेकअंकुरादिप्रगटे तेमआसननिद्धिकजीवने सिद्धांतनायोगथी हृदयमा कोमलताथाय तथाभावनाअं कुर शुभपरिणामपणउपजे अनेदूरसिद्धिकजीवने तोए शिलातलनुदृष्टांतजाणवु

यस्यागमाम्भोदरसैर्न धौत प्रमादपक स कथ शिवेच्छु ॥
रसायनैर्यस्य गदा क्षता नो सुदुर्लभ जीवितमस्य नून ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवेउक्तिविशेषेकरी सिद्धांतनुं माहात्म्यकहेछे जेप्राणिने आगमजेसिद्धांत तेरूपीया मेघनेमेकरी प्रमादरूपीयो पकजेकचरो तेधोवाणोनथी तेवाप्राणिमुक्ति इछानेछे एटले जेने सिद्धांतजाणवाथीपण प्रमादमटयोनही तेप्राणिपछे इच्छाथीअ मादरहितपद मुक्तिपामशे केमके सिद्धांतथीअधिक बीजोकोइ प्रमाद परिहारना उपायनथी तेउपरदृष्टांतकहेछे जेप्रुस्पने रसायनजेपारदादिक तेथीपण रोगक्षयन पाम्यो तेनेनिवतव्य तेपणदुर्लभछे एमइहांपणजे सिद्धांतजाणीने प्रमादरहितन थया तेनेमुक्तिपामवी पणीदुर्लभछे ॥ २ ॥

अधीतिनोर्चादिकृते जिनागमः प्रमादिनो दुर्गतिपापतेर्मुधा ॥
ज्योतिर्विमूढस्य हि दीपपातिनो गुणाय कस्मै शलभस्य चक्षुषी ॥३॥

अर्थ ॥ हवेजेपुरुषसिद्धांतभणिनेपण प्रमादवंतछे तोतेहनुंभणवुं वृथाछेते कहे छे जेपुरुषप्रमादवंत सर्वथा दुर्गतिनोपडनार तेअर्चादिके० केवलपूजासत्कारादिक नेजअर्थे सिद्धांतभणे एवोहोयतेहनु भण्युं मुधाके० निष्फलजाणवुं तेउपर दृष्टांतकहेछे ज्योतिके० प्रकाशेंकरीनेज मुंझाणोथकोदीवामांजइपडे एवोजे शलभके० पतंग तेहनांचक्षूजेनेत्र तेकेवागुणनाअर्थेहोय एतोउलटाअवगुणकारीजथाय तेमप्रमादिजीवरूपजे पतंगते अर्चासत्कारादिक ज्योतिमां मुंझाणोथको दुर्गतिरूप दीपज्वालामांपडेछे त्यांसिद्धांतरूपचक्षुतेकांईकामनआवे सामोमोहकारीथाय ॥ ३ ॥

मोदंते बहुतर्कतर्कणचणाः केचिज्जयाद्वादिनां काव्यैः केचन कल्पितार्थघटनैस्तुष्टाः कविख्यातितः ॥ ज्योतिर्नाटकनीतिलक्षणधनुर्वेदादिशास्त्रैःपरे ब्रूम. प्रेत्य हिते तु कर्मणि जडान् कुक्षिंभरीनेव तान्॥४॥

अर्थ ॥ हवेतत्वज्ञानविना घणुंभण्योपण व्यर्थछे तेदेखाडेछे केटलाएकपुरुष घणातर्कजेप्रमाण प्रमेयादिन्याय तेहनातर्कविचारनेविषे चणके० प्रतिष्टित एवाछतां प्रवादिने जीपवायकी हर्षपामेछे तथावलीकेटलाक चिंतव्याअर्थनी रचनाएरच्यां एहवेकाव्येंकरीने कवीपणानीप्रसिद्धिथकी संतोषपामेछे वलीकेटलाएक ज्योतिष नाटक नीतिके० व्यवहार शास्त्र लक्षणके० सामुद्रिक तथाअश्व गजलक्षणादिक धनुर्वेदके०आयुध अभ्यासनांशास्त्र आदिशब्दथी शकुन शास्त्रि इत्यादिक शास्त्रेंकरीने संतोषपामेछे पणपरलोकनेविषे हितकारीएवाजे संयमादिककर्मतेहनेविषेजो जडके० अज्ञानछेतोतेसर्वेने अध्यात्मशास्त्रने अनुसारे अमेपेटभरा कहियें छैये एटलेअन्यशास्त्रनेमूकीबीजासर्वेजे पापश्रुतादिशास्त्र तेपेटभराउनाजछे ॥ ४ ॥

किं मोदसे पंडितनाममात्रात् शास्त्रेष्वधीती जनरंजकेषु ॥ तत्किंचनाधीष्व कुरुष्व चाशु न ते भवेद्येन भवाब्धिपातः॥५॥

अर्थ ॥ वलीतेहिजदृढकरे छे हर्षंभित्ततुं जनके० लोकनेरंजनना करनार एहवाजे नाटककाव्यादिशास्त्र तेहनेविषेप्रवीणथको नाममात्रपंडितपणाथी शुंहर्षपामे ए लोकरंजकशास्त्रथी कांइआत्मार्थनीसिद्धिनथी पणतुंशास्त्रनेजाणीने शीघ्रपणे एहवीकरणीकर केजेणेकरीनें तुजनेसंसार समुद्रमां बुडवुंनथाय एटलेजिनागमने तेहनेअनुसारें संयमआराध ॥ ५ ॥

धिगागमैर्माद्यसि रंजयन् जनान् नोद्यच्छसि प्रेत्य हिताय संयमे॥
दधासि कुक्षिंभरिमात्रतां मुने क्व ते क्व तत् क्वैष च ते भवांतरं ॥६॥

अर्थ ॥ हवेक्रियाविना केवल आगमनुजाणवुं तेपण अर्थसाधकनथी तेकहेछे हेमुनितनेधिक्कारछे केमकेतु आगमसिद्धांत तेणेकरीने लोकने रीझवेछे पणपरलो कना हितनेमाटे संयमनविषेउद्यमवंत नथीयातो तेमाटेतुकेवल पेटभराइनकरोछे पणताहरेपादगलसुके भवांतरनेविषे तेजिनागमक्यांछे अनेलोकनुरीझववुंपणक्यां तथासंयमपणक्यां एटले भवांतरेएवीगतिपामिश केजिहांएमाहेलोएकेतुजनेनदोष

धन्याः केप्यनधीतिनोपि सदनुष्ठानेषु बद्धादरा दुःसाध्येषु परोपदे
शलवतः श्रद्धानशुद्धाशयाः ॥ केचित्त्वागमपाठिनोपि दधतस्तत्पु
स्तकान् येऽलसा अत्रामुत्र हितेषु कर्मसु कथं ते भाविनः प्रेत्यहा ॥७॥

अर्थ ॥ हवेथोडोभणावाथीपण क्रियांक क्रियानो उत्कर्षदेखाडेछे केटलाकप्रा णी अल्पश्रुतवंतछतांपण श्रद्धानजे सम्यक्ततेणेकरीने शुद्धाशयके० निर्मलपरिणा मवंतछांपतेनेधन्यछे केमकेतेपारकाउपदेशना लेशमात्रथीपण दुःखेसाध्य एवांजे सदनुष्ठान तपसंयमादिक्रियाविशेष तेहनेविषे आदरवंतछे अनेहाइतिखेदेके टलाएक आगमना भणनारछतां तथाआगमना पुस्तकधरतांछतांपण आलोक अने परलोकनेविषे हितकारीकर्म जेसंयमादिक तेहनेविषे निरादरकरेछे तेपुरुषनेपरभवने विषेशुंथाशे एटलेपरभवेतेनी शीगतीथाशे अर्थात् ते माहादुःखपामशे ॥ ७ ॥

धन्यः स मुग्धमतिरप्युदितार्हदाज्ञारागेण यः सृजति
पुण्यमदुर्विकल्पः पाठेन किं व्यसनतोस्य तु दुर्विकल्पै
र्यो दुःस्थितोत्र सदनुष्ठितिषु प्रमादी॥८॥ इतिवापाठ ॥

अर्थ ॥ वलीअर्थांतर कहेछेजे अल्पश्रुतवंतथको पणकदाग्रहरहितछतो तीर्थंकरनी आज्ञानेविषे रागेकरीने श्रद्धांतक करीने अ विकल्प पुण्यउपार्जेछे ते धन्यछे अनेजेगमेतेटलुं भणेछे अने सदनुष्ठानने विषे प्रमादीछे ते पापना कामकरनार दुःखपामेछे एटलेदोषपापसहितछे कुविकल्पयुक्त कुमतिनेविषे रात्रदिवस दुःस्थितथको मा

अनेनलाअनुष्ठान जेधुनक्रियातेनेविषे प्रमादवंतछे तोतेहनुंनणवुपण निष्फलछे श्रा काव्यपेहेलाकाव्यनुं पाठांतरछे ॥ ८ ॥

अधीतिमात्रेण फलंति नागमाः समीहितैर्जीवसुखैर्भवांतरे ॥
स्वनुष्ठितैः किंतु तदीरितैः खरो न यत्सितायाः वहनश्रमात्सुखी॥९॥

अर्थ ॥ वलीतेजहढकरेछे हेआत्मा केवलनणवामात्रथकीज आगमसिद्धांतते नवांतरनेविषे वांछितसुखेकरी फलेनही इष्टफलदायकनहोय पणतेसिद्धांतनेविषे कह्यांजे स्वनुष्ठितके० नलाअनुष्ठान तपसंयमादिक तेनेआराध्येछते आगमफलदायक होय तेउपरदृष्टांतकहेछे जेमखरजेगर्दन तेसाकरनोनार उपाडवामात्रथी सुखीउ नहोय साकरनापरिनोगनुं सुखनपामे तेम आगमनणवामात्रथीज आगमोक्त क्रिया जनित फलपामेनही॥९॥इतिश्री अध्यात्मकल्पद्रुमे शास्त्रगुणाधिकारोऽष्टम.संपूर्णः॥

अथचतुर्गत्याश्रितोपदेशः॥ दुर्गंधतो यदणुतोपि पुरस्य मृत्युरायूंषि सागरमितान्यनुपक्रमाणि ॥ स्पर्शः खरः क्रकचतोतितमामितश्च दुःखावनंतगुणितौ भृशशैत्यतापौ ॥१॥ तीव्रा व्यथाः सुरकृता विविधाश्च यत्राक्रंदारवैः सततमभ्रभृतोप्यमुष्मात् ॥ किं भाविनो न नरकात् कुमते बिभेषि यन्मोदसे क्षणसुखैर्विषयैः कषायैः॥२॥युग्मं

अर्थ॥हवे एपूर्वोक्तशास्त्रधारांतर्गत चतुर्गत्याश्रीत उपदेशकहेछे तेमांप्रथम शास्त्रोक्त नरकगतिनाडःखकहेछे निश्चेंकरी नरकना एकपरमाणुमात्रना दुर्गंधथी पुरवासित मनुलोकनुं मृत्युथाय एहवामहाडर्गंधमय नरकनापुजलछे वलीजिहां निरुपक्रमके० अपवर्तनरहित निकाचित् अने सागरोपमप्रमित एकसागरोपमथी मांमीने तेत्रीस सागरोपम पर्यंत एहवाआउखाछे केमके देवताअने नारकीनाआउखा सदाइ निरु पक्रमहोय वलीजिहां स्पर्शतेपण करवतनीधारथी कर्कशछे वलीउहांथकी अनंत गुणडःखदायी महाशीत तथा महातापछे एमक्षत्रवेदनाकहीने हवेपरमाधामीनी करेलीवेदनाकहेछे वलीजिहां देवताजे पन्नरभेदें परमाधामीनेहनीकरेली अतितीव्र घोरजे वेदना तेविविधप्रकारना छेदन विदारणादिकहोय एप्रकारें निरंतर आक्रंद रुदनने शब्दकरी आकाशनेपुरतो एहवोजे नविष्यमाण नरक तेहथकी हेकुमतिवं तआत्मातुं केमनबीहितो जेमाटे कषायसहितथको क्षणमात्रसुखनाकारक एह वाविषयजे शब्दादिक तेणेकरी हर्षनेपामेछे एबेकाव्यनो अर्थएकजछे ॥ १ ॥ २ ॥

वचोऽनिशं वाहनताडनानि क्षुत्तृड्भ्रमातपशीतवाता ॥
निजान्यजातीयभयापमृत्यु दुःखानि तिर्यक्ष्विति दुःसहानि॥३॥

अर्थ ॥ हवेतिर्यंचगतिआश्री दुःखदेखाडेछे अनिशके० नित्यबंधन तथा वाहन के० [illegible] तथापराणादिकना प्रहारेंकरी ताडन वली क्षुधा तृषा भ्रामके० [illegible] तडको तथाटाढय वायुइत्यादिक तथावलीस्वजातीनोभय जेम [illegible] महिषनोभय तथाहस्तिने हस्तिनोभय तथाअन्यजातीयभय ते जेम मृगादि [illegible] व्याघ्रादिकनोभय तथाअपमृत्युजे कुमरण खड्गप्रहारथी तथाआहेडीप्रमुख [illegible] विषमादिकयोगथी क्षुधातृषादिक गाढवेदना आक्रांतपणे [illegible] इत्यादिकप्रकारें तिर्यंचगतिमां नयकरकठीन दुःखहोयछे ॥ ३ ॥

सुधान्यदास्याभिभवाभ्यसूया भियोतगर्भस्थितदुर्गतीनां ॥
[illegible] सुरेष्वप्यसुखानि नित्यं किंतत्सुखैर्वा परिणामदुःखै ॥४॥

अर्थ ॥ [illegible]गतिआश्रीदुःखकहेछे नित्यप्रते सुधाके० फोकट अन्यके० पारकी [illegible] मनुष्यतो धननाशोने तथाआजीविकादिक कारणथी परनीसेवा [illegible] तथाकोइनिमित्तनथी तोपणसदाकालें इंद्रादिकनीसेवाकरवी त [illegible]नी पीडा अने अभिसूयाके० परस्पर ईर्षा द्वेषादिकमां वर्ति [illegible] सम्यार्थसिद्धिना देवतानेपण [illegible] तथागर्भ [illegible] निजे [illegible] अथवातिर्यंचनुअवतारलेवु तेसर्व [illegible] घणाप्रकार अगुभने तेमाटेपरिणामें दुःख [illegible] तो तेसुखेंमुंथाय माटेतेसुखनेपण असुखकरीजाणवा॥४॥

[illegible]निष्टयोगगदद्दुःसुतादिभि ॥
[illegible] निरन्तरं नृजन्मन पुण्यत मरमना तदानय ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ [illegible]मनुष्यगतिआश्री दुःखकहेछे धृतके० निश्चेकरीने सातजीनिजे १ [illegible] २ [illegible] ३ आगन ४ आकस्मिक ५ आजीविका ६ मरण ७ अपयश [illegible] गर्भा [illegible] दुर्जनादिकथी पराभव तथा इष्टने [illegible] वियोग [illegible] योगके० मनंर तथा गदके० रोग [illegible] इत्यादिकप्रकारेकरीने मनुष्यजन्मनु [illegible] मनुष्यजन्मनु सुखसंपणुस्युं ॥ ५ ॥

इति चतुर्गतिदुःखततीः कृतिन्नतिभयास्त्वमनंतमनेहसं ॥ हृदि
विभाव्य जिनोक्तकृतांततः कुरु तथा न यथास्युरिमास्तव ॥६॥

अर्थ ॥ हवेउपसंहारकहेछे हेपंमितआत्मा एप्रकारें अनंतकालसुधी अतिशय भयनीकरनार एहवीचारगतिसंबंधीजे दुःखनीश्रेणी तेप्रतें जिनोक्त श्रीसर्वज्ञप्रणित कृतांतजे सिद्धांत तेथकी हृदयमां विचारीने जेम ए चारगतिना दुःखनीश्रेणीओ तुजने कोइवारें प्राप्तनथाय तेवो उपाय कर ॥ ६ ॥

आत्मन् परस्त्वमसि साहसिकः श्रुताक्षैर्य भाविनं चिरचतुर्गतिदुःखराशिं॥
पश्यन्नपीह न बिभेषि ततो न तस्य विच्छित्तये च यतसे विपरीतकारी॥७॥

अर्थ ॥ हवेआत्मा चारगतीना दुःखजाणतोथकोपण धर्मनेविषे तत्परथातुं नथी तेवास्तेपरमअविचारीपणुं देखाडेछे हेआत्मातुं अविचारमांहेमुख्यछो केमके आसंसारमा चिरकाललगें भावीएहवोजे चारगतिनादुःखनोसमूहतेहने श्रुतसिद्धांत रूपनेत्रेंकरी देखतोछतोपण बीकपामतोनथी वलीतेदुःखना समूहनोविछेद करवा नेपण उजमालथातुंनथी माटेतुं उपरांठांकर्मनुकरनारछो केमके दुःखछेद कर्मकरवानेबदले दुःखवृद्धिकारीकर्मकरेछे॥७॥इतिशास्त्रोपदेशांतरगतचतुर्गत्याधिकारसमाप्त

अथमनः ॥ कुकर्मजालैः कुविकल्पसूत्रजै निबध्य गाढं नरकाग्निभिश्चिरं॥
विसारवत्पक्ष्यति जीव हे मन· कैवर्तकस्त्वामिति मास्य विश्वसीः ॥१॥

अर्थ ॥ हवेचित्तदमन नामानवनमोअधिकार कहेछे तेमांप्रथम आत्माने मनरूपशत्रुनु विश्वासकरवुंनिषेधेछे हेजीवतुजने मनरुपी धीवर तेकुविकल्परुप सूत्रेंगुंथ्या एहवाजे कुकर्मरूपी जाळो तेणेकरीगाढोबांधीने नरकरुप अग्नियेंकरी मत्स्योनीपरें चिरकाललगें पचावसे जेमधीवरपण मत्स्यने सूत्रनीजाले गाढोबांधीनेपछे अग्नीमांपचावे तेमइहांपण एउपनयजाणवुं माटेतुंताहरामनरुप धीवरनोविश्वासकरीसनही जेम ते मनरुप धीवरनाबनावेला कुकर्मरुपजालमांपडेनही एवीरीतेंवर्त्तजे ॥ १ ॥

चेतोऽर्थये मयि चिरत्नसख प्रसीद किं दुर्विकल्पनिकरैः क्षिपसे भवे मां॥
बद्धोंजलिः कुरु कृपां भज सद्विकल्पान् मैत्रीं कृतार्थय यतोनरकाद्बिभेमि॥२

अर्थ ॥ हवेआत्माबीहितोथको मनरूपमित्रने विनंतीकरेछे हेचिरकालनामित्रतुं चेतहुंयाचुंछुं हेघणाकालना सहचारीतुं महाराउपर प्रसादकरीने एमाठा विकल्पने समूहेकरीने मुजने आसंसारमां शुंनमावेछे तुजनेहुं हाथजोडीने कहुंछुं जेतुंमहारा

उपर कृपाकरीने शुभविकल्पजे धर्म ध्यानलक्षण तेहनी भजनाकरी आपणीमैत्री स फलकर केमकेदु हवे नरकना दु खथी बीहुबु ॥ २ ॥

स्वर्गापवर्गौ नरक तथातर्मुहूर्त्तमात्रेण वशावश यत् ॥
ददाति जतो सतत प्रयत्नाद्वश तदत करण कुरुष्व ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हवेआत्माने मनवशकरवाआश्री उपदेशआपेछे हेआत्माजे अत करण वशतथा अवशयको जीवने अतरमुहूर्त्तमात्रमांज स्वर्गमोक्षादिकना सुखप्रतेआपे अनेनरकनी प्राप्तिपणकरावे एटलेमनवशथको जीर्णशेठ तथाप्रश्नचदराजर्षि इत्यादिकनीपरें स्वर्गमोक्षादिकआपे अने मनअवशथको तंदुलमत्स्यादिकनीपर अतर मुहूर्त्तमात्रमा नरकप्रतेआपे तेमाटेतुताहरा अत करणनेज सर्वथाप्रकारेवशकर॥३॥

सुखाय दु खाय च नैव देवा न चापि काल सुहृदोरयो वा ॥
भवेत्पर मानसमेव जतो ससारचक्रभ्रमणैकहेतु ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवेतेहिजकहेछे जीवने देवता तथा वर्षा शीत ग्रीष्मादिककाल तथा मित्र शत्रुतेकोइपण सुखदायी तथादु खदाइनहोय पणएकमन तेहिजजीवने सुख दायी तथा दु खदायीहोय हवे तेमनकहेवुछे तेकहेछे ससारसमुद्रमा भ्रमणजे ज न्ममरणादिक तेहनुएकहेतुछे एवचन सद्दीपचेइी आश्रीजाणवु अन्यथा असज्ञीने मनना अभावे पण ससारमा भ्रमण देखायछे ॥ ४ ॥

वश मनो यस्य समाहित स्यात् किं तस्य कार्य नियमैर्यमैश्च॥
हत मनो यस्य च दुर्विकल्पै किं तस्य कार्य नियमैर्यमैश्च ॥५॥

अर्थ ॥ जेप्राणीनेपोतानुमन समाधिवतछतो वशवर्त्तिहोय तेहने नियमजे १ शौच २ सतोष ३ स्वाध्याय ४ तप ५ देवताप्रणिधानादिक लक्षण तथायमजे प्राणातिपात विरमणादिक पाचमहाव्रत तेहनुसुकार्यछे केमकेतेतोसर्व मनवशकर वाना उपायछे अनेजेवारेते मनवशथयु तेवारेतो ते सर्वगुण प्रथमजआव्या अनजे प्राणीनु मन माठाविकल्पेकरी हतप्रहतछे तोतेहने नियमयमे करीने पणसुथवानुछे जेमगलानीना गलाना स्तनधाव्याथी काइ अर्थसिद्धि नथाय तेमज मनवश थयाविना यम नियमादिक पण व्यर्थ जाणवा ॥ ५ ॥

दान श्रुतध्यानतपोर्चनादि वृथा मनोनिग्रहमतरेण ॥ कषाय
चिंताकुलतोज्झितस्य परो हि योगो मनसोवशत्व ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जीवनेएक मनवशथयाविना दानतया श्रुतसिद्धांतनुंभणवुं तथाध्
तया अर्चनजे देवपूजा आदिशब्दथी प्रासाद देवप्रतिष्टादिक क्रिया तेसर्ववृथा
णवी पण तेमोक्षफलनी देनारनथाय केमके कषायजेक्रोधादिक तेसंबंधीनीचिं
थकी उपनीजे असाता तेणेकरीरहित एहवुंजेमन तेहनुंवशवर्त्तिपणुं तेहिजपर
योगछे अने तेहिज अष्टांग योगनुं सर्वस्वछे ॥ ६ ॥

जपो न मुक्त्यै न तपोद्विभेदं न संयमो नापि दमो न मौनं ॥
न साधनाद्यं पवनादिकस्य किं त्वेकमंतःकरणं सुदांतं ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ जीवने नवकारादिकनोजप तथा बाह्य अभ्यंतर बेप्रकारनुंतप तथासंयम
चारित्र तथा दमजे इंद्रियदमन तथामौनजे वचननुंसंवर तथा पवनादिकनुंसाधन
आदिशब्दथी चोरासी योगासनप्रमुख तेकांइमुक्तिना देवावाला थायनही तेवारे
गुजने किंतुके० मुक्तिप्राप्तिनो शोउपायछे तेकहेछे जेणेरुडीरीते पोतानुंअंतःकरणजे
मनतेहने वशकर्युं तोतेहिज एकमुक्तिनुं दातार होय ॥ ७ ॥

लब्ध्वापि धर्मं सकलं जिनोदितं सुदुर्लभं पोतनिभं विहाय च ॥
मन पिशाचग्रहिलीकृतः पतन् भवांबुधौ नायतिदृग्जडो जनः॥८

अर्थ ॥ जडके० हेअज्ञानीप्राणी अतिशयेंकरीपामवुंदुर्लभ प्रवहणसरिखो एह
सर्वज्ञप्रणीत संपूर्णधर्म तेप्रतेंपामिने वलीतेहनेछांमिने मनरूपिओ पिशाचके०
भूततेणेग्रहेलोकर्योथको संसारसमुद्रमांपडता आयतिदृग्के० उत्तरकालनो विचार
करतोनथी एटलेएमनथी विचारतोजे प्रवहणरूप धर्मनेछांमी संसारसमुद्रमां जंपापा
तखाउंछुं तेथी आगलें हवे महारी शीगति थासे ॥ ८ ॥

सुदुर्जयं ही रिपवत्यदोमनो रिपूकरोत्येव च वाक्तनू अपि ॥
त्रिभिर्हतस्तद्रिपुभि. करोतु किं पदीभवनदुर्विपदा पदे पदे॥ ९॥

अर्थ ॥ हेआत्माअतिशय दुर्जयएहवुंजे ताहरुंमन तेपोतेंशत्रुपणुं आचरेछे अ
नेवली वचनतथाकायानेपण शत्रुकरेछे मनदुष्टथके वचनतथा कायानाव्यापारपण
दुष्टथाय तेकारणमाटे मन वचन तथाकाया एत्रणेशत्रुयें परानव्यो एहवोतुंपगेंपगें दुष्ट
विपदा जे नरकादिक तेहवुं भाजनथातोथको शुंनुंकरे एटलेताहरोकांइचालतुं नथी॥९

रे चित्त वैरि तव किं नु मया ऽपराद्धं यद्दुर्गतौ क्षिपसि मां कुविकल्पजालैः॥जा
नासि मामयमपास्य शिवेऽस्ति गंता तत्किं न संति तव वासपदं ह्यसंख्याः॥१०

अर्थ ॥ हेचित्तरूपवैरी में तादृशोशो अपराधकीधोछे केतुंमुजने निरूपनार्थे बांधीने डुर्गतिमांनाखेछे जोतुएमजाणतोहोयजे एजीरमुजनेपरिहरीने मुक्तिनाखे तोपणतादृरे वशकरवानास्थानक वलीमहाराशिवाय बीजाअसख्याता ससारीनी वस्तुंनथी एटले एकडुजतोरह्यो तोपण तादृरेबीजानीशीसोटछे ॥ १० ॥

पूतिश्रुतिःश्वेव रतेर्विदूरे कुष्ठीव सपत्सुदृशामनर्हे ॥
श्वपाकवत्सद्गतिमन्दिरेषु नार्हेत्प्रवेश कुमनोहतोगी ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ हवेमननाअवशपणाथकी बहुप्रकारना अवगुणथायछेतेदेखाडेछे कुमनेकरीसतापपाम्यो एहवोजेप्राणी तेकुह्याकाननां कुतरानीपरें रतिजेनिवृत्तितेथी वेगेलोहोय जेम कीर्मेखाधो एहवोजे कुतरोते किहांपणक्षणमात्र रतिपामेनहीतेम कुविकल्पचित्तनोधणी तेपणरतिरहितहोय वलीकोढीआनीपरें सपदारूपणीजे सुदृशाओरूप उत्तमकन्याओ तेहेनेवरवाअयोग्यहोय जेमकोढीआनेकोइपण उत्तमकन्यावरवावांछेनही तेमदुष्टचित्तवतप्राणीने सौभाग्यादिक कोइपणसपदाआश्रयेनही वलीसद्गतिरूपजेमदिर तेहनेविषे श्वपाकके० चडालनीपरें प्रवेशकरवानपामे॥११

तपोजपाद्या स्वफलाय धर्मा न डुर्विकल्पैर्हतचेतस स्यु ॥
तत्खाद्यपेयै सुभृतेपि गेहे क्षुधातृषाभ्या म्रियते स्वदोषात्॥१२॥

अर्थ ॥ माटेविकल्पेकरी जेहनुचित्तपीडाएलुछे एहवाप्राणीने तपजपप्रमुखजेधर्म तेपोतपोताना फलनुदेवावालोनथाय अने कुविकल्पचित्तनोधणी धर्मक्रियाकरतोथ कोपण मोक्षफलपामेनही तेउपरदृष्टांतकहेछे जेमकोइ अपुण्यवतप्राणी खानपानादिके भरेलाघरमांपण पोताना कृपणतादादिकदोषथी क्षुधतृष्णायेंपीडाय तेमडूर्ह पण कुविकल्पचित्तवतप्राणीते छतेधर्मेपण परभवेंसीदाय ॥ १२ ॥

अकष्टसाध्यं मनसो वशीकृतात् पर च पुण्य न तु यस्य तद्वशं ॥
स वचित पुण्यचयैस्तडभवे फलैश्च हीही हतक करोतु किं॥१३॥

अर्थ ॥ एकमनना वशकरवाथी बीजुंसर्वपुण्यते सुखेंसाध्यछे अनेते मन जेहनेवशनथी तेप्राणी पुण्यनेसमूहें तथातेपुण्यजनितफलेंकरीने वंचितछे तेफोकटछे एजेमनवशविना पुण्यनी तथापुण्यजन्यक फलनी फोकट आशाराखेछे तेमाटे हीही इतिखेदे एवापडो प्राणी शुकरे पछे तेहने एके गतिनथी ॥ १३ ॥

अकारणं यस्य मुहुर्विकल्पैर्हतं मनः शास्त्रविदोपि नित्यं ॥
घोरैरघैर्निश्चितनारकायुर्मृत्यौ प्रयाता नरके स नूनं ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ यद्यपिसिद्धांतनोजाणनारछे तथापिजेहनुंमन अकारणके० उपसर्गादि कारणविना पण नित्यें अतिशयेंकुविकल्पेंकरी पीमितछे तेपुरुषमहारौद्रपापेंकरीने दृढकीधुंछे नरकायुजेणे एहवुंथकोतेसर्वथा मुआपछी नरकमांजजशे ॥ १४ ॥

योगस्य हेतुर्मनसः समाधिः परं निदानं तपसश्च योगः॥
तपश्च मूलं शिवशर्मवल्या मनःसमाधिं नज तत् कथंचित्॥१५॥

अर्थ ॥ मननीसमाधिजे एकाग्रता तेहिज योगनुंहेतुछे अनेवलीयोगजे अष्टांग लक्षण तेतपनुंपरम उत्कृष्टकारणछे अनेतेतपतो मोक्षसुखरूपणी वेलीनुंमूलछे मा टेहेआत्मा जेतेउपाय करीने मननीसमाधिनेआदर केमके मननीसमाधिथी योग अने योगथी तप तथा तपथीमोक्षसुख एमपरपरायें सर्वसिद्धिपामे ॥ १५ ॥

स्वाध्याययोगैश्चरणक्रियासु व्यापारणैर्द्वादशभावनाभिः ॥
सुधीस्त्रियोगी सदसत्प्रवृत्तिः फलोपयोगैश्च मनो निरुंध्यात् ॥१६॥

अर्थ ॥ हवेमनसमाधिना उपायकहेछे स्वाध्यायजे जिनागमतेहनायोगनुं वहेवुं आंबिलादिक तपविशेष तेणेकरीने तथाचारित्रसंबंधीनी क्रियानेविषे प्रवर्त्तवेकरी वलीअनित्यादिक बारभावनायेंकरीने वली त्रियोगीजे मन वचन कायानायोग ते होनी सदसद्प्रवृत्तिके० भलोअने भूंडोव्यापार तेहना फलनुं उपयोगजे विचारणा एटलेत्रियोगना शुभव्यापारनो शो फलछे एहवीविचारणा अने अशुभव्यापारनोशो फलछे एहवाजे उपयोगदेवा इत्यादिक प्रकारेंकरी मननेवशकरवुं ॥ १६ ॥

भावनापरिणामेषु सिंहेष्विव मनोवने ॥
सदा जाग्रत्सु दुर्ध्यानसूकरा न विशंत्यपि ॥१७॥

अर्थ ॥ हवेवली एसर्वप्रकारमां पण भावनापरिणामने विशेषदेखाडेछे मनरूपी आवननेविषे सिंहसरिखाजे भावनाना परिणाम तेमांसर्वदासावधानरहेथके दुर्ध्या नजे आर्त्तरौद्रध्यान तेरूपजे सूअरोते प्रवेशपणकरीशकेनही तोतिहां तेसूअरो वासकरवानेतो सर्वथानजपामे ॥ १७ ॥ इति श्रीअध्यात्मकल्पद्रुमे चित्तदमनाभि धानो नाम नवमोऽधिकार संपूर्ण थयो. ॥ ९ ॥

अथ सामान्यतो वैराग्यधर्मोपदेश ॥ किं जीव माद्यसि हसस्य यमीहसेऽर्थान् कामाश्च खेलसि तथा कुतुकैरशंक ॥ चिक्षिप्सु घोरनरकावटकोटरे त्वा मन्यापतत्यवु विभावय मृत्युरक्ष ॥१॥

अर्थ ॥ हवेसामान्यथी वैरागोपदेशनामा दसमोअधिकारकहेछे तेमांप्रथमजीवने मरणसबंधीभयदेखाडेछे हेजीवतु मदशानोकरेछे तथाशुहसेछे वली अर्थनेसुवर्णरूपादिक तेहनेसुवाछेछे तथावली नि शंकथतो कौतुकेकरीने कामजे शब्दादिक विषय तेप्रतेसुरमेछे तुजनेतो भयकर नरकरूपजे खाड तेमानाखवावाछतो एवा मृत्युरूपजे राक्षस तेछतावल्यु तारेसन्मुखआवतु सांभलीने नि शंकरहिशनही॥१॥

आलंबनं तव लवादिकुठारघाताश्छिनत्ति जीविततरुं न हि यावदात्मन् ॥ तावद्यतस्व परिणामहिताय तस्मिन् छिन्ने हि कः क्व च कथं भविता स्वतंत्र ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवेआउखुविद्यमानछते जीवनेधर्मकरवु उपदेशेछे हेआत्मातादृशी आलंबनआधारभूत एहवोजे जीवितव्यरूपवृक्ष तेप्रते लवादिकजे लव लेश क्षण घडी मुहूर्त्तप्रमुखकालमान तेरूपीया कुहाडानाघाव ज्यांहाभगछेदेनही तेहयोपहेलांज परिणामहितजे निदानहितकारी तपसयमादिक तेहनेअर्थेउद्यमकर जेथीतादृशो जीवतव्यरूप वृक्षछेद्यापछि फरीतेहने नवपल्लवकरवाने किहांक कोइप्रकारे पण मत्रउपायथासे जेणेकरीतु जीवतव्यरूपतरुने नवपल्लवकरीस एटलेडणीक्षणे जीवतव्यरूप वृक्षछेदातुजायछे तेछेदाइगयापछि फरीसज्जकरवानु कोइउपायनथी तेमाटे आत्महितनेविषे तत्परथावु एहिजश्रेष्टउपायछे ॥ २ ॥

त्वमेव मोग्धा मतिमान् त्वमात्मन्नेष्टाप्यनेष्टा सुखदु खयोस्त्व ॥ दाता च भोक्ता च तयोस्त्वमेव तच्चेष्टसे किं न यथाहितात्ति ॥३॥

अर्थ ॥ हवेसर्वकरणीते आत्मानेआधीनछे एहवुकहिने विशेषेंप्रेरेछे हेआत्मातु मोग्धाके० मूढतासहितछो अने मतिमान्के० ज्ञातापणतुछो वलीसुखदु वाछक अनेड खनुंअवाछकपणतुछो तथासुखअनेड खनुदाता अनेभोक्तापणतुजछो केमके सुखड खते स्वकृतकर्मथीजथायछे यडुक्त श्रीउत्तराध्ययने अप्पानईवेयरणि अप्पामेकूडसामली अप्पाकामदुघाधेणु अप्पामेनंदणवण अप्पाकत्ताविकत्ताय इत्यादिक माटे जेरीतें तादृशीआत्माने हितनीपजे तेमजकानथीकरतो ॥ ३ ॥

कस्ते निरंजन चिरं जनरंजनेन धीमन् गणोऽस्ति परमार्थदृशेति पश्य ॥
तं रंजयाशु चरितैर्विशदैर्भवाब्धौ यस्त्वां पतंतमवलं परिपातुमीष्टे ॥४॥

अर्थ ॥ हवेलोकनेरीजवतोथको आत्मापोतानुं हितकांइकरतोनथी तेआश्रयीउ पदेशेछे हेनिरंजन हेनिरलेपआत्मा हेबुद्धिवंत हेहिताहितविवेकनाजाण चिरकाल जावजीवलगें लोकनुंरीजववुं एटलेमलीनवस्त्र धारणकरी बाह्यक्रिया देखाडीने शू न्यचित्ते गामेगामें उपदेशआपीने लोकनुंमनरीजववुं तेथीतुजने शोगुणछे एटलुंतु त्वदृष्टे विचारी परमार्थदृष्टीयेंजोता लोकरीजव्याथी आत्माने अर्थसिद्धिकांइनथी तेमाटे लोकरंजनत्यजीने उतावलोथयो विशदके० निर्मलजे चारित्र तपसंयमादिक आचरण तेणेकरीने श्रीवीतराग तथातेमनाभाषेलाधर्मनेरीजव जेथकीतुजने अ वलंके० परभवें संवलेंरहित संसारसमुद्रमांपडताथकां राखवानेसमर्थथाय केमके संसारमांपडता एकधर्मजआधार आपशे पणलोककोइ आधारआपशेनही ॥४॥

विद्यानहं सकललब्धिरहं नृपोहं दाताहमद्भुतगुणोहमहं गरीयान्॥
इत्याद्यहंकृतिवशात् परितोषमेषि नो वेत्सि किं परभवे लघुतां भवित्री॥५

अर्थ ॥ हवेअहंकारनिवारवा उपदेशछे हेआत्मा हुंपंडितछुं हुंसर्वलक्ष्मीये स हितछुं हुंराजाछुं हुंदातारछुं हुंअद्भुतगुणवतछुं तथाहुंमहोटोछुं इत्यादिकजे पोता नामनकल्पित अहंकार तेहनावशथकी तुं परितोषके० हर्षपामेछे पणजन्मातरें भाविनी एहवीतेपदार्थोनी लघुताप्रते कांविचारतोनथी जेजेपदार्थनेतु आभवमां हुंपदकरेछे तेतेपदार्थनीतुं परभवेंहीनतापामिस इतिभावः॥यदुक्तं योगशास्त्रे ॥जाति लाभकुलैश्वर्य बलरूपतपःश्रुतैः ॥ कुर्वन् मदं पुनस्तानि हीनानि लभ्यते जन इति ॥५॥

वेत्सि स्वरूपफलसाधनबाधनानि धर्मस्य तं प्रभवसि
स्ववशश्च कर्त्तु॥तस्मिन् यतस्व मतिमन्नधुनेत्यमुत्र
किंचित्त्वया हि नहि सेत्स्यति भोत्स्यते वा ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हवेआत्माने इहभवेंधर्मकरवानी प्रेरणाकरेछे हेबुद्धिवंतप्राणी तुधर्मनुं स्वरूपजे क्षांत्यादिकदशविध लक्षण तथाधर्मनुंफलजे मोक्षादिक तथाधर्मनुंसाधन जे मनुष्यजन्म आर्यक्षेत्रादिक तथाधर्मना बाधकजे कुजन्म कुक्षेत्र प्रमाद मिथ्या त्व इत्यादिकसर्वप्रकारने वेत्सिके० जाणेछे अनेवली स्ववशके० पोतानेवशेंथको ध र्मकरवाने समर्थपणछो पणतिर्यंच नारकीनीपरें परवश तथाधर्मकरवाने असमर्थ

नथी तेमाटे आत्मवमाज धर्मनेविषे उद्यमकर केमकेफरी परजवेंते कांइ सीजेनही तथा तुजने तेवा धर्मनु फरीकांइ जाणपणुपण नहीथाशें माटे ॥ ६ ॥

धर्मस्यावसरोस्ति पुजलपरावर्त्तैरनंतैस्तथा यात सम्प्रति जीव हे प्रस हतो दुःखान्यनंतान्ययम् ॥ स्वल्पाह पुनरेष दुर्लनतमश्चास्मिन् य तस्वाहतो धर्मं कर्त्तुमिम विना हि नहि ते दुःखक्षय कर्हिचित् ॥७॥

अर्थ ॥ हवेआत्माने धर्मनुअवसरजणावेछे हेजीवयनताडुःख सहित तुजने अनंते पुजलपरावर्त्ते ससारमान्टकता सम्प्रतिके० हमणा आत्मवमा धर्म करवानुअव सरआव्योछे अनंतउत्सर्पिणी अने अवसर्पिणी प्रमाण एकपुजलपरावर्त्त थाय तेहनुस्वरूप ग्रथांतरथीजाणवु एधर्मनुअवसरते थोडाजदिवसलगणछे फरीपामवु घणुडुर्लनछे तेमाटेएअवसरे श्रीजिनोक्तधर्म करवाने उद्यमकर केमके एजिनोक्तधर्म विना ताहरे क्यारेपण जन्ममरणादिकना दुःखनो क्षयथवानुनथी माटेजोडुःखनु अंतकरवाने वांछतोहोयतो एअवसर पामिने धर्मकरवाने तत्परथा ॥ ७ ॥

गुणस्तुतिर्वांछसि निर्गुणोपि सुखप्रतिष्ठादि विनापि पुण्य ॥ अष्टांगयोग च विनापि सिद्धिर्वातूलता कापि न वा तवात्मन् ॥८॥

अर्थ ॥ हवेअयुक्तवांछकपणाथी जीवनुवाहुलापणुदेखाडेछे हेआत्मातुज्ञानदर्शन चारित्रादिकगुणेरहितथकोपण गुणस्तुतिजे पोतानीप्रशसा लोकनामुखथी कीर्त्तिवर्णनने वांछेछे तथापुण्यविनापण सुखने तथा प्रतिष्टाके० गौरवपणानेवांछेछे वली अष्टांगजेयोग यम नियम आसन प्राणायाम प्रत्याहार धारणा ध्यान समाधि एआठयोगविना पण सिद्धिअष्टकर्मक्षयलक्षण सिद्धनाआठगुण अथवा सिद्धिते अष्टमहासिद्धि लघिमा वशिता ईशिता प्राकाम्य महिमा अणिमा यत्रकामावसायिता प्राप्ति तेप्रत्येंतुवांछेछे माटेहेआत्मा एताहशो वाहुलापणुते कोइअपूर्वनवुं नदेखायछे केमके कारणनी सामग्रीविनाज कार्य नीपजाववानी अनिलाषाकरेछे ॥ ८ ॥

पदे पदे जीव पराभिभूती पश्यन् किमीर्ष्यस्यधम परेभ्य ॥ अपुण्यमात्मानमवैपि कि न तनोषि किंवा न हि पुण्यमेव ॥९॥

अर्थ ॥ हवेबीजानाकरेला अपमानथी जीवईर्षाकरेछे तेथीश्रीउपदेशकरेछे हे जीवतु पुण्यरहितपणाथी अधमके० नीचअवस्थापाम्योथकोपण पगेंपगें बीजानी करेली जे अभिभूतिके० अपमान आक्रोशादिक्तें देखीने परेभ्य के० तेजोकउपर तु ईर्षाके० क्रोधकरेछे पणपोताना आत्मानेज पुण्यहीन केमजाणतोनथी जेपुण्य

हितहोय तेहनेनी परंपरां पतनरुपाय तेमांतुं मल्होटीरातने एमशांविचारतोनथी त्र
यवानिश्रेष्ठी पुण्यजंत्रमयरत्तोनथी केजेथकी कोऽपयगनयनथाय ॥ ९ ॥

किमर्दयन्निर्दयमंगिनो लघून् विचेष्टसे कर्मसु हि प्रमादतः ॥
यदेकशोऽप्यन्यकृतार्दनः सहत्यनंतशोऽप्यंगययमर्दनं भवे ॥ १० ॥

अर्थ ॥ हवेआत्मासत परनेपीडातुं फलकहेछे हेआत्मातुं निर्दयपणेकरी ताहरा
थकी लघुने० निर्बल एहवाजे अंगीने० प्राणी तेहनेपीडतोथको तुं प्रमादत के०
प्रमादेकरी पापकर्मविषे प्रवर्त्तेछे केमके एहवाप्पण जेप्राणिये अन्यजीवने पीडाउ
पजावीहोय तेप्राणीअनंतिवार संसारमांपीडासहे यदुक्तं निगयरेउपउने सयगुणि
उसयसहस्सकोडिगुणा ॥ कोडाकोडिगुणोवादुज्ञ विवागो बहुतरो वा इति ॥१०॥

यथा सर्पमुखस्थोऽपि भेको जंतूनि भक्षयेत् ॥
तथा मृत्युमुखस्थोऽपि किमात्मन्नार्दसेऽगिनः ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ हवेनेउपर दृष्टांतकहेछे जेम भेकजे मेडको तेसर्पनामुखमां रह्यो अर्द्धग्रसित
थको पण जंतुजेन्हाना क्षुद्रजीवतेप्रतेंखाय तेम हेआत्मा तुंपणमृत्युना मुखमा र
ह्योथको पण अन्यप्राणीओने शुंपीडाआपेछे ॥ ११ ॥

आत्मानमल्पैरिह वंचयित्वा प्रकल्पितैर्वा तनुचित्तसौख्यैः ॥
भवाधमे किं जन सागराणि सोढासि ही नारकदुखराशीन् ॥ १२॥

अर्थ ॥ हवेइहभवे हिंसाजनित अल्पमात्रसुखथी परभवें अनंतादुःख सहेवा
पडशे तेकहेछे हेजन हेमसारीप्राणी प्रकल्पितके० तेताहरी कल्पनामात्रथी दुःख
नेज सुखकरीमान्या तेपणवली अल्प तुच्छ क्षण स्थायी एहवाजे मनवचनकाया
संबंधीसुख तेणेकरी इहभवें तुठगायोछतो हाहाइतिखेदे भवजे चारगतिरुपसंसार
तेमा अधमजे नरकतेहनेविषे घणाक सागरोपमसुधी नारकीनाजेदुःखसमूह तेसहे
वाने सुंतत्पर थायछे ए विषय सुखते दुःखजछे पणकल्पनामात्रथी एनेजीवसुख
करीमानेछे ॥१२॥ यदाह भर्तृहरि. ॥ तृषा शुष्यत्यास्ये पिबति सलिलं स्वादु सुरभि
क्षुधार्त. सन् शालीन् कवलयति मांसाज्यकवलान् ॥ प्रदीप्ते रागाग्नौ सुदृढतरमा
श्लिष्यति वधूं प्रतीकारो व्याधेः सुखमिति विपर्यस्यति जन.॥ १ ॥

उरभ्रकाकिण्युदबिंदुकाम्र वणिक्त्रयीशाकटभिक्षुकाद्यैः ॥
निदर्शनैर्हारितमर्त्यजन्मा दुःखी प्रमादैर्बहु शोचितासि ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ वलीनेहिजअर्थ उत्तराध्ययनसूत्रना दृष्टांतेकरी दृढकरेछे हेआत्मानु मा
माज्जे मद्यादिकपाच तेनावशथकी मनुष्यअवतारहारीने पछेपस्तावेड खीआवश
उन्नजेबोकडो कागिणी उदकबिंदु आम्रगातकीराजा वणिकत्रयीजे त्रणव्यापारी
शाकटजे गामावाहक निकुंजजेराक इत्यादिकोनादृष्टांतेतुंपण घणुशोचनाकरीस॥१
इहांमहेंपथी उन्नादिकना दृष्टांतलिखेछे तेमांप्रथम उरन्ननुदृष्टांतकहेछे केय
कोइगामना कोइकनागरमध्ये एकबोकडोहतो तेकोइक प्राहुणोआवसे तेवारे ए
हनुमांस खामआवसे एमचिंतवीने तेघरनामाणसो तेबोकडाने अन्नादिकपाव
अनुक्रमेते बोकडो घणुपुष्टशरीरथयो हवेतेहनेतेहवोदेखीने एकगाडरो मनमांसं
ताप्योथको क्रोधकरीने दोहतांथकाखुजे पोतानीमातानुदूध तेहने गावेनही तेवारे
मातायेकोपकारणपुछेथके कहेवालागो हेमाताजूओने आबोकडो यथेच्छ आ
हारिखापवे तेथीकरीने पुष्टथइरह्योछे एहनेपुत्रनीपरेपालेछे नानाप्रकारना अ
लंकारपहेरावेछे अनेमुजनेतो पोतानीमातानुदूध तेपणकोइ पीवादेतोनथी तथामुख
तृणनेरण चरवनउपर पुरामजतानथी एहवुसांभली मातायेंकह्यु आउरणि
रपा जाइरागिनदिउ॥सकनिपोहत्ताहि एप दीहाचलरकण॥१॥हेवत्स जेमरोगी
मरणाराद्यथाजोय तेहनेजेरोइ खावामांगे तेआपे तथाफूलनीमाला प्रमुखपहेरावे तेम
ज्योबकडानेपण रत्यमकननीपर शृगारादिककरेछे पोषेछे पणकोइप्राहुणाआवसे ता
रेनेमारसे तेमाटेनी चमकानोरह्यो पछेकाइकदिवस तेहनेघरप्राहुणाआव्या
तेवारेतबोकडानेवध घणुनडफडतो जीनकाढतो दीनस्वरे आरडता मस्त
कउपर कुरतामारीने घटाव्यडक्की पचावीने प्राहुणासहितसकुटुंबे घरधणिय
खाधो तेवारेतरूणी गाडरो नवपाप्योथको तुम्यातरम्योयकोपण मातानुदूध
नहीं तवारमानाये पुछेथके कहेवालाग्यो हेमाताम बोकडानीएहवी चूकीअवस्थादी
ठीतेथी मुजने घासतनारण थांनायाछेतेथी एमडलोपणउपनय जोज्या नमनत
हानेसनखर्नारकारो निनयरणे यथेष्टपुष्टयानुथको प्राहुणाआवे मृत्युमा
तेमजेअप्रमत्तरण प्रमादपुष्टथको यथाइगायेरिरांगेछे पणमृत्युआवेथके मनुष्य
जन्महारीनेसकाईकना ड गताभि घणुशोचपामीस
हवेकांकणीनुदृष्टांतकहेछे जेमकोइकरंक परदेशजइ मजुरीकरीने एक
सहस्र कमावे सहसासनाजा नगरजातो तेमार्गेमार्गमां दररोजमाट एकरूपक
ई, तेमसें (८०) कागणीमाथेगमी। बीनामरेइयनी गांसडीनगी सातीनगरीमा
नि।मे हिडकनगमें विश्रामस्थानक एककांगणीरीसरी ने मयमागमाथे अ

जातारुांजरी तेवारेंरांकेविचार्युंजे एककांगणीनीखोटे रखेनेवीजुंरूपक वटाववुंपछे इमचिंतवी सथवारेमूकी इव्यनीवांसली किहांकगोपवीने तेकांगणीलेवा पाछोव ल्यो आवीनेजूएन्नेतो कांगणीकोइकलइगयुं अनेपाछोफरीनेजूएतो वांसलीपण को इकलेइगयुं पछेनिराशथयी अतोभ्रष्ट ततोभ्रष्टथको घणुशोच करवालागो जेमतेरां के एककागणीनालोजथी हजारसोनैयानीवांसली अनेतेकांगणी बेन्हे खोइने घ णाशोचनुजाजनथयो तेमआत्मापणपूर्वे अप्राप्तकामजोगथको बहुमूलचारित्रपा मिने वलतुंकांगणीतुल्य कामजोगनीलालसायें चारित्रत्यजीने कामजोगगवेपतोथको कामजोगपणनपामे अनेचारित्रपणनपामे एमउजयज्रष्टथयोथको तेरांकनीपरें घ णुशोचपांमे इहां कांगणी ते एक मासानुं चोथोजाग अथवावीसकोमी अथवा एकरुपैयानुं (८०) मुंनागजाणवो.

हवेत्रीजुं उदकाबिंडुनुंदृष्टांतकहेछे कोइकवनमा कोइतृषातुरने कोइकदेवतायें क रुणाकरीने क्षीरसमुद्रनेकांठेजइमुक्यो तेमूर्खेतिहांपाणीपीधुंनही अनेदेवतानेकह्युंजे हेस्वामि महारागामनीसीममांकुछे तेहनेउपकाठे माजनेअग्रेलवमान एकजलबिं दुछे तेखरीपडशे माटेमुजनेतिहांमूकोतो बिंडुओपीउं तेसांजली तेहनेमूर्खेनिर्जाग्य जाणी देवतायेंतिहांमूक्यो देवतापोताने स्थानकेगयो पछेतेबिंडुओपण खरीपडयो तेदेखीतेमूर्ख उजयज्रष्टथयो थको शोचकरवालागो तेमइहांतृषातुरतेजीवक्षीरसमु इतेचारित्र देवतातेसगुरु जलबिंडुओरूप कामजोगनासुख एम उपनयजाणवुं.

हवेचोथुंआम्रदृष्टांतकहेछे कोइकराजाने आंबानाफलघणुंज वल्लजहता एकदिव सें घणाआम्रफलनाखावाथकी अजीर्णविशुचिकाथयी पछेवैद्येअनेक औषधेंकरी,घ णीकष्टेनिरोगीकीधो वलतुवैद्येकह्युं हवेजोआम्रफलखासोतो मरणपामसो एमकही सर्वथावार्यो राजायेपणपोतानादेशमांथी आंबानासर्ववनछेदावीनाख्या हवेकोइक दिवसेराजा आहेडेनिकल्यो तिहांदुष्टअश्वें अपहर्यो एहवाप्रधान अनेराजाबेहुजण घणुदूरपंथें किहांकअटवीमांजइपहोता सैन्यसर्वपाछलरह्युं राजाप्रधान बन्नेजण अ श्वथीवतरी आंबानीछायायेंबेठा तेआंबानीचेफलपमचादेखी राजानेघणादिवसें अ जिलापथयो प्रधानेघणुवार्यो तोपणतेफलखांधु एटलेतत्काल मृत्युअवस्थातुल्यथ योथको घणुशोचवालागो जेमतेराजा आम्रनास्वादेंलुब्ध्योथको प्रधानेवार्योथकोप ण ते फलखाइ राजा जीव्यत्वनी आशातजीने मरतांमहाशोकपाम्यो तेमइहांपण विषयलुब्धकजीव विषयने परवशथको जिनाज्ञाअणमानतो कामजोगासक्तथयी संयम अने मनुष्यजन्म बेहुहारीने पछे पश्चात्ताप करशे.

हवेपाचमुंवणिकनुं दृष्टांतकहेले एकवणिकनेत्रणपुत्रहता तेत्रणेनेहजार हजार सौनैया थापणआपीनेकह्युजे एटलाद्रव्यंतमेव्यापारकरीने अवधिउपरेआववु हवे तेत्रणेजण नीमे नीमे मूललेइने जुदेजुदेनगरेचाल्या तेमापहेलोजाइसर्वव्यसनरहित अल्पव्ययकरतो थको व्यापारकरवालागोतेमा घणोकमाणु अनेबीजो हजारसौनै याकायमराखीने लाजआवेतेवावरे एरीतेंते मूलद्रव्यनेराखीरह्यु अनेत्रीजेव्यापारकी धुनही अनेवेश्यादिकनाव्यसनमा सर्वमूलद्रव्यवावरीनाख्यु अनुक्रमेंतेत्रणेजण पा तानाघरेआव्या तेहोनुव्यतिकरजाणीने त्रीजापुत्रनें मूलनीमेंपणनराख्योमाटे पि तायें घरचीवारकाढीमूक्यो लोकमानिंदनिकथयो दासपणुपाम्यो जेमतेत्रीजोपुत्र नीमेंमूलनेहारीने निंदाअवस्थापाम्यो तेमआत्माविषयलुब्धथको पूर्वजन्मपुण्यरूप मूल नीमेंहारीने जन्मांतरेंदुर्गतिना दुःखपाम्योथको घणुशोचपामेछे

हवेछठो शाकटनु दृष्टांतकहेछे जेमकोइक गामानुवाहक सम विषम मार्गेजाणतो थको पण विषममार्गे गाडानेलेइगयो पछेधुसरूभांगेथके शोचकरवामाण्यु तेमइ हांपण जीवपुंण्यपापादिक मार्गेनेजाणतोथको पण प्रमादना परवशपणाथकी कु मार्गे चालतो कुगतीमांपडसे तेवारेशोच पामसे

हवेसातमुं भिक्षुकनु दृष्टांतकहेछे कोइकगामडीआनो रहेवासी पुरुषदालिद्रीपरा भव्योथको देशांतरेंजइ भिक्षामागे पणपुण्यरहितपणाथकी भिक्षानपाम्यो तेवारे फरीपोतानां घरतरफचालवानिकल्यो मार्गमाकोइकगामे पाण पाटकपासे एकदेवळछे तेमां रात्रेजइसुतो तेदेवळमांथी एकसिद्धचित्रेलुकामकुंभहाथमांलेइ निकल्यो पछेएक बाजुयेंजइभोरही घडानेकहेवालागो हेकुंभइहांमदिरकर एटलेतिहां मदिरथयु एम तिहांशय्यादिक भोगसामग्रीसर्वकीधी पछेस्त्रीसहित रात्रेभोगभोगवी प्रभातेंसर्व स हरयु तेदेखीने भिक्षुकेचितव्युं जेआजलगणहु फोकट पृथ्वीमांभम्यो हवेजोहुएसि द्धनेसेवुतो माहरीसर्वआशाफले एमचितवीते पाणनीसेवाकरी एकदिवसेते पाणप्र सन्नथइबोल्यो जेतुसुमागेछे तेवारेभिक्षुबोल्यु जेताहरापसायथीहुपण एंहवोभोगपामु पाणेकह्युतुजने गमेतो एकुंभलेइजा अनेगमेतो एकुंभप्रतिष्टानी विद्यालेइजा ते वारे भिक्षुकबोल्यो जेहेस्वामीविद्यातो कष्टकरीसाधु तेनारफले तेमाटेविद्यासिद्धकु भने तेहिजमने आपो तोकष्टक्रियाविनाज भोगसिद्धिपामु पछेतेपाणेघडोआप्यो ह वेतेगामडीओघटलेइने घरेंआव्यो घटनेप्रतापें उज्वलघरनीपजावी विविधभोगसामग्री मेळवी पोतानासर्वकुटुंबसहित मनोवांछित विलास भोगववालागो पोताना सज्ज नादिकने खेतीप्रमुख आजीविकाना उपाय सर्वमूकाव्या ढोरप्रमुखचतुष्पद सर्वगो

दोमृतना मनसिजो ते ग्रामीणलत्रपाने कामदोषदने मनमां धरिधरनो तेविचारकुंन त्रोजागपरलोकने नाचयनानी मद्यपानना परवशपणाथकी घटपटीने जांगीगयो तेथी विचारे करं छुं यंतर मवंमरटीगयो पछेग्रामीणकुटुंबसहित त्राजीविकार्ये दुर्वीदशांतरो शांचरुणाजागांक दादाडनिर्वेद जोमेयटनिकिनी विद्यानीशीकती नामुर्वीथाल एरीने जेमतेग्रामिकनिंदु परिजदनरतो देवज्ञान रामकुंनरामिने वलीमद्यपाननी परवशताथकी कुलनागीनाग्गीने विद्यानुशोचपामु तेमएजीवपण दुर्लभ जिनधर्म पामिने प्रमादपरवशताथी धर्मत्यागीने कुगतीयेगयोथको धर्मसामग्रीविना शोचपामे एसातदृष्टांतना संबंधजाणवा तेमांपहेलापांचदृष्टांतनो श्रीउत्तराध्ययनना सातमां अध्ययनथी तथाछठोदृष्टांत पांचमांअध्ययनथी अने सातमोदृष्टांत छठाअध्ययनथी जाणुंने श्लोकमां आद्यशब्दकह्योने तेथीबीजापण दरिद्रिकुटुंबादिक एल्यादृष्टांत घणाने तेग्रंथांतरथी जाणवा.

पतंगभृंगैणखगादिमीनद्विपद्विपारिप्रमुखाः प्रमादैः ॥ शोच्या यथा स्युर्मृतिबंधदुःखैश्चिरायभावी त्वमपीति जंतो ॥ १४ ॥

अर्थ॥हवेवली ग्रंथकार प्रमादीजीवने दृष्टांतेकरी नावीदुःखदेखाडेछे हेत्र्यात्मा जेम पतंगीयो तथा भमरो मृग तथा खगके० पारेवाप्रमुखपक्षी तथासर्पअने माछलो तथा हस्तिव्याघ्रइत्यादिक सर्वजीवते प्रमादजे शब्दादिकविषय तेहनावशथकी मरणसंबंधीदुःखरगीने शोचनीयथायछे तेमांपतंगते नेत्रनाविषयथी दीपशिखायेंमोह्योथको मृत्युपामेछे अने भमरोघ्राणेंद्रियनाविषयथकी कमलमध्येमुआइमरेछे मृगशब्दविषयथी नादसुमोह्यो पारधीथकी मरणपामेछे पक्षीशालप्रमुखकणनेजोने रसनेंद्रियना वशथकी जालमांपडेछे सर्पकानानाविषयथी मदुअरनानादनोमोह्यो बंधनपामेछे अने मत्स्य वटिशनामांसनीजालचे रसनेंद्रियना वशथीमरेछे हस्तिहस्तणीनामोहथी स्पर्शनेंद्रियनावशे बंधनमरणादिपामेछे व्याघ्रपिंजरामारहेला बोकडानामांसनीजालचे रसनेंद्रियनावशेमृत्यु बंधनादिकपामेछे इत्यादिकबीजापण चित्राप्रमुखना दृष्टांतजाणवा तेमाटेहेआत्मा तुंपणतेपतंगादिकनीपरें प्रमादनावशथकी चिरकालजग शोचनीय थाइस. ॥ १४ ॥

पुरापि पापैः पतितोसि दुःखराशौ पुनर्मूढ करोपि तानि ॥ मज्जन्महापंकिलवारिणि [illegible] शिला निजे [illegible] ॥

अर्थ ॥ हवेआ [illegible] पा

पेकरीनेजदुःखसमूहमापडयोछे अनेफरीपण तेहिजपापनेकरेछे तेथीतुरणाकदिवस हितजजनापूरमा बुडतोथको पोतानामस्तकनेविषे अने गळानेविषे शिलाधरेछे॥१५

पुन पुनर्जीव तवोपदिश्यते बिनेषि दुःखात् सुखमीहसे चेत् ॥
कुरुष्व तत्किंचन येन वाछित भवेत्तवास्तेऽवसरोयमेव यत् ॥१६॥

अर्थ ॥ हवेजीवने प्रमादपरिहारनुएहिजअवसरछे तेकहेछे हेजीवतुजने फरीफ रीने उपदेशकरुंछु केजोतुदुःखथीबीहेछे अनेसुखनेवाछेछे तोतु एवुकाइक सुकृत करके जेथकीतादृश वाछेलुसुख तुजनेमिले अनेतेसुकृतकरवानो अवसर एहिजछे ऽ हांफरीनेउपदेशदीधो माटेपुनरुक्तदोपनही यदुक्त सज्झायझाणतवउ सहेसुउवएस थुईपयाणेसु ॥ सतगुणकित्तणेसु न हुंति पुणरुत्तदोसाउ ॥ १६ ॥

धनागमोख्यस्वजनानसूनपि त्यज त्यजैक न च धर्ममार्हतं ॥
भवति धर्माद्धि भवे भवेऽर्थिता न्यमून्यमीभि पुनरेष दुर्लभ ॥१७॥

अर्थ॥हवेधर्मनीदुर्लभतादेखाडीने धर्मविसरनेज दृढकरेछे हेजीवतु धनतथाशरीर अनेसुख तथास्वजनकुटुंब तथाप्राणजे जीवितव्यपणु तेसर्वनोत्यागकर पणएकश्रीस र्वज्ञप्रणीतजे धर्म तेहनेकोइवारेंपण त्यजीशनही केमकेएधनादिक सर्ववस्तुतेधर्मथकी जतुजनेभवभवनेविषे वांछितमलशे पणधनादिकेकरी जिनोक्तधर्ममलवु दुर्लभछे१७

दु ख यथा बहुविध सहसेप्यऽकाम काम तथा सहसि चेत्करुणादिभावे ॥
अल्पीयसापि तव तेन भवातरेस्या दात्यतिकी सकलदु खनिवृत्तिरेव १८

अर्थ॥हवेआत्माने अकामदुःखनासहेवाने बदले सकामदुःखसहेवुते भलुएमकहे छे हेआत्मातुजेम अकामके०इछारहित परवशथको बहुविध क्षुधा तृषा वध बधनादि कदु खप्रतेसहेछे तेमज जोकरुणादिक जेमैत्री प्रमोद कारुण्य माध्यस्थ एपरिणामेकरी ने सकामके० निर्जरानीबुद्धियें तुदुःखसहनकरे तो तेथोडापणदुःखने सहेवेकरीने भवातरनेविषे आत्यतिकीके० पुन प्राडुर्भावेंरहित एहवी समस्तदुःखनी निवृत्तिते नि श्चयथाय एटले मोक्षपद पामे ॥ १८ ॥

प्रगल्भसे कर्मसु पापकेष्वरे यदाः [illegible] न तद्भिनानित ॥
विभावयस्तच्च विनश्वर कुन बिभे[illegible] [illegible] द्वि॥१९॥

अर्थ ॥ हवेधर्मत्यजीने आत्माप[illegible] अरेमू

संचीवतु सुखनीआम्यायेंकरी प[illegible] माहा

पणकांगे पण ते धनस्वजन[illegible]

तादृशे जीवनव्यनो जीवकें० उत्तावलुं विनाशनीजन्दे एवीरीतेंजाएतोंयकोपण
तेंनीनाइ ख्वयीकेंमवीहितोनथी ॥ १९ ॥

कर्माणि रे जीव करोषि तानि यैस्ते भविव्यो विपदो ह्यनंताः ॥
ताभ्यो भिया तद्दधसे ऽधुना किं संभावितान्योपि भृशाकुलत्वं॥२०॥

अर्थ॥वलीग्रकारांनरेंतेंहितकहेन्दे हेजीवजोतुं तेहवाज हिंसा मृषावादादिककर्म
। जेकर्मेंकरीनुजनें अनंतिआपदाओंयाशे तेवारेंहमणाजते आपदाओसंभारेथके
अतिशेंजयेंकरीने आकुलताकेमपामेन्दे जोपापनाफलजाएतोयकोपण तुंपापक
वानेप्रवर्त्तेंन्दे तेवारेंवली नरकादिकनाइ खतांभलीनेसावान्ते भयपामेन्दे निश्चेंतु
तेदुःखनोगवाजपडशे एमांनंशयन्दुंन्दे एनावायैन्दे ॥ २० ॥

ये पालिता वृद्धिमिताः सहैव स्निग्धा भृशस्नेहपदं च ये ते ॥
यमेन तानप्यदयं गृहीतान् ज्ञात्वापि किं न त्वरसे हिताय॥२१॥

अर्थ ॥ वलीजीवने हीतायेंनेंविषेप्रेरेन्दे हेजीवजेस्वजन मित्रादिक तथापुत्रादिक
व्यापोप्या तथाजे तुजनायेंवृद्धिपाम्या महोटाथया वलीतेंतादृश अतिशयस्नेह
थया तेहुनेपण यमराजायें निर्दयपणेयह्या तेजाणीनेपणतुं आत्महितकरवानेके
जमाउतावलतुंनथी केमके तेहुनेजो यमेंग्रह्यतो तुंशीरीतेंस्थिररहिश एनावार्थ ॥२१॥

यैः क्लिश्यसे त्वं धनबंधुपत्य यशःप्रभुत्वादिभिराशयस्थैः ॥
कियानिह प्रेत्य च तैर्गुणस्ते साध्यः किमायुश्च विचारयैवं ॥२२॥

अर्थ ॥ हवेजेतुक्लेशलहेंन्दे तेहथीतुजने काइगुणनथी तेकहेन्दे हेआत्मनतुं आ
शयकें० केवलकल्पनमात्र एहवाजेधन बंधु स्वजन अपत्यकें० संतान तथा य
शकीर्ति अने प्रभुत्व स्वामिपणुं इत्यादिकनिमित्तेंकरी क्लिश्यसेकें० कष्टजोगवेन्दे ते
स्वजनादिकेंकरी तुजनेंइहभवें तथा परभवें केटलुंक गुणसाधवुंन्देएटले ते तुजने
एकरस्ये अनेंआकपोते केटलुंकन्दे एमविचारी धनादिकनुं ममत्व करतां करतांज
तुय पुरोथइजाशे अने जवांतरेंकोइपण तारेंकामेआवसेनही ॥ २२ ॥

किमु मुह्यसि गत्वरैः पृथक् कृपणबंधुवपुःपरिग्रहैः॥ विमृश
स्व हितोपयोगिनो ऽवसरेऽस्मिन् परलोकपांथ रे ॥ २३ ॥

अर्थ॥ हेपरलोकजनार पंथीजीव तुं कृपण दीन सरणदेवाने असमर्थ एहवा अ
पृथग्गत्वरकें० जुदाजुदावेगइजाशे एहवाजे बंधु स्वजन तथा वपुःजेशरीर तथा ध
नधान्यादिक परिग्रह तेणेकरी मुंमुंजायन्दे एकोइपण तारेगलायें आवेनही एनावा

पेकरीनेजङ्ग खसमूहमांपडथोछे अनेफरीपण तेहिजपापनेकरेछे तेथीतुघणाकदिवस हितजलनापूरमा बुडतोथको पोतानामस्तकनेविषे अने गलानेविषे शिलाधरेछे॥१५

पुन पुनर्जीव तवोपदिश्यते बिनेपि ङ स्यात सुखमीहसे चेत् ॥
कुरुष्व तत्किचन येन वाछित नवेत्तवास्तेऽवसरोयमेव यत् ॥१६॥

अर्थ ॥ हवेजीवने प्रमादपरिहारनुएहिजअवसरछे तेकहेछे हेजीवतुजने फरीफ रीने उपदेशकहुछु केजोतुङ्ग खथीबीहेछे अनेसुखनेवाछेछे तोतु एवुकाइक सुकृत करके जेथकीतादृरु वाछेलुसुख तुजनेमिले अनेतेसुकृतकरवानो अवसर एहिजछे ५ हांफरीनेउपदेशदीधो माटेपुनरुक्तदोषनही यडुक्त सज्कायजाणतवउं सहेसुङ्गवएस छुईपयाणेसु ॥ सतगुणकित्तणेसु न हुति पुणरुत्तदोसाउं ॥ १६ ॥

धनागसौख्यस्वजनानसूनपि त्यज त्यजैक न च धर्ममार्हतं ॥
नवति धर्माद्धि नवे नवे थिता न्यमून्यमीनि पुनरेप ङ्र्लन ॥१७॥

अर्थ॥हवेधर्मनीङ्र्लनतादेखाडीने धर्मविसरनेज दृढकरेछे हेजीवतु धनतथाशरीर अनेसुख तथास्वजनकुटुंब तथाप्राणजे जीवितव्यपणु तेसर्वनोत्यागकर पणएकश्रीस र्वज्ञप्रणीतजे धर्म तेहनेकोइवारेपण त्यजीशनही केमकेएधनादिक सर्ववस्तुतेधर्मथकी जतुजनेनवनवनेविषे वांछितमलशे पणधनादिकेकरी जिनोक्तधर्ममलवु ङ्र्लनछे१७

ङु ख यथा बहुविध सहसेप्यऽकाम काम तथा सहसि चेत्करुणादिनावै ॥
अटपीयसापि तव तेन नवातरेस्या ह्यात्यतिकी सकलङु खनिवृत्तिरेव १८

अर्थ॥हवेयात्माने अकामङु खनासहेवाने बदले सकामङ्ग खसहेवुते नलुएमकहे छे हेयात्मातुजेम अकामके०इच्छारहित परवशथको बहुविध ङ्गख तृप्मा वध बधनादि कङ्ग खप्रतेसहेछे तेमज जोकरुणादिक जेमैत्री प्रमोद कारुण्य माध्यस्थ्य एपरिणामेकरी ने सकामके० निर्जरानीबुद्धिये तुङ्ग खसहनकरे तो तेवायोडापणङ्ग खने सहवेकरीने नवातरनेविपे आत्यतिकीके० पुन प्राडर्नावरहित एहवी समस्तङ्ग खनी निवृत्तिते नि अपथाय एटले मोक्षपद पामे ॥ १८ ॥

प्रगल्नसे कर्मसु पापकेष्वरे यदाशया शर्म न तद्विनानित ॥
विनावयस्तच्च विनश्वर कृत बिनेपि कि दुर्गतिङ्ग खतो न हि॥१९॥

अर्थ ॥ हवेधर्मत्यजीने आत्मापापकर्ममां निपुणताकरेछे तेआश्रीकहेछे अरेसु खजीवतु सुखनीआस्यायेकरी पापनाउत्पादकजेकर्म तेहनेविषे प्रगल्नसेके० माहा पणकरेछे पण ते धनस्वजनादिकनासुख तो प्राणितके० जीवतव्यविना नोगवायनही

ताहशो जीवतव्यतो शीघ्रके० उतावळुं विनाशशीलछे एवीरीतेजाणतोथकोपण गतीनाडःखथी केमबीहितोनथी ॥ १९ ॥

कर्माणि रे जीव करोषि तानि यैस्ते भवित्र्यो विपदो ह्यनंताः ॥
ताभ्यो भिया तद्दधसे ऽधुना किं संभाविताभ्योपि भृशाकुलत्वं॥२०॥

अर्थ॥वळीप्रकारांतरेतेहिजकहेछे हेजीवजोतुं तेहवाज हिंसा मृषावादादिककर्म छे जेकर्मकरीतुजने अनंतिआपदाओथाशे तेवारेंह्मणाजते आपदाओसंभारेथके अतिशेंभयेंकरीने आकुळताकेमपामेछे जोपापनाफळजाणतोथकोपण तुंपापक रवानेप्रवर्त्तेछे तेवारेवळी नरकादिकनाडःखसांभळीनेसावास्ते भयपामेछे निश्चेंतु तेडःखनोगवाजपडशे एमांसंशयछुंछे एभावार्थछे ॥ २० ॥

ये पालिता वृद्धिमिताः सहैव स्निग्धा भृशास्नेहपदं च ये ते ॥
यमेन तानप्यदयं गृहीतान् ज्ञात्वापि किं न त्वरसे हिताय॥२१॥

अर्थ ॥ वळीजीवने हीतार्थेनेविषेप्रेरेछे हेजीवजेस्वजन मित्रादिक तथापुत्रादिक पाल्यापोष्या तथाजे तुजसाथेंवृद्धिपाम्या महोटाथया वळीतेताहश अतिशयस्नेह पथया तेहुनेपण यमराजायें निर्दयपणेग्रस्या तेजाणीनेपणतुं आत्महितकरवानेके उजमाळथतुंनथी केमके तेहुनेजो यमेंग्रस्यतो तुंशीरीतेस्थिररहिस एभावार्थ ॥२१॥

यैः क्लिश्यसे त्वं धनबंध्वपत्य यशःप्रभुत्वादिभिराशयस्थैः ॥
कियानिह प्रेत्य च तैर्गुणस्ते साध्यः किमायुश्च विचारयैवं ॥२२॥

अर्थ ॥ हवेजेतुंक्लेशसहेछे तेहथीतुजने काऽगुणनथी तेकहेछे हेआत्मनतुं आ शयस्थके० केवळकल्पितमात्र एहवाजेधन बंधु स्वजन अपत्यके० संतान तथा य कीर्ति अने प्रभुत्व स्वामिपणुं इत्यादिकनिमित्तेंकरी क्लिश्यसेके० कष्टभोगवेछे ते नस्वजनादिकेंशे तुजनेऽहभवें तथा परभवें केटलुंक गुणसाधवुंछेएटले ते तुजने गुणकरसे अनेआकपोते केटलुंकछे एमविचारी धनादिकनुं ममत्व करतां करतांज आयुष पुरोथऽजासे अने भवांतरेंकोऽपण ताहरेकामेंआवसेनही ॥ २२ ॥

किमु मुह्यसि गत्वरैः पृथक् कृपणैर्बंधुवपुःपरिग्रहैः॥ विमृश
स्व हितोपयोगिनो ऽवसरेऽस्मिन् परलोकपांथ रे ॥ २३ ॥

अर्थ॥ हेपरलोकेजनार पंथीजीव तुं कृपण दीन सरणदेवाने असमर्थ एहवा अ ने पृथगत्वरके० जुदाजुदावेराऽजासे एहवाजे बंधु स्वजन तथा वपुजेशरीर तथा ध नधान्यादिक परिग्रह तेणेकरी सुंमुंजायछे एकोऽपण ताहरासाथे आवेनही एभावा

धर्मे माटेएधर्मकरवायोग अवसरनेविषे पोतानाहितोपयोगी परलोकना सहायभूत एटवाजे ज्ञानादिकगुण तेहोने चित्तमाराख ॥ २३ ॥

सुखमास्से सुख शेषे भुङ्क्षे पिबसि खेलसि ॥ न
जाने त्वग्रतः पुण्यैर्विना ते किं भविष्यति ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ हवे दमणातुसुखेविजशेठे पण आगलताहरी सीगतियासे तेकहेछे हेआत्मातु दमणापूर्वोपार्जित पुण्यफलना उपायथी सुसुखेबेशीरहेछे तथासुखेभोजनकरे सुखेमद्यादिकपानकरेछे सुखेद्यूतादिकेरमेछे पणआगल परभवें तुजनेपुण्यविना सुयगतुछे तेसुनथीजाणतो एटलेपुण्यविना घणुजदुःखीथइश ॥ २४ ॥

शीतातपान्मक्षिकाकत्तृणादि स्पर्शाद्युत्थात्कष्टतोऽपाद्बिभेपि ॥ ता
न्नाश्रेभि कर्मभि स्वीकरोपि श्वभ्रादीना वेदना धिग् धिय ते ॥२५॥

अर्थ ॥ हवेथोडाकष्टथी बीहतोथको घणुकष्टअंगीकारकरेछे तेकहेछे हेआत्मातु ताढथी तापथी तथामांखीप्रमुख तृण भालप्रमुखना स्पर्शादिकथी उपनुंजे अल्पमात्रकष्ट तेथीबीहेछे कायरथायछे अनेएवापापकर्मकरीने श्वभ्रके० नरकादिकना प्रकारनीजे महावेदनाओ तेप्रतेअंगीकारकरेछे तोताहरीबुद्धिने धिक्कारछे ॥२५॥

क्वचित्कषाये क्वचन प्रमादे कदाग्रहे क्वापि च मत्सराद्यैः ॥ आ
त्मानमात्मन् कलुषीकरोषि बिभेपि धिङ् नो नरकादधर्मा ॥२६॥

अर्थ ॥ वलीनेहितकहेछे हेआत्मातु क्दाक परीषहादिकमा कषायेंकरीने वली क्दाक क्रियानुष्ठानादिकनेविषे प्रमादेंकरीने वलीक्दाक उपदेशादिकमां कदाग्रहकरीने क्दाकगुणवतनी अनुमोदनानेविषे मत्सरादिकेकरीने पोतानीआत्माने मलीन करेछे पणतुधर्मरहितथको नरकथीबीहितोनथी माटेतुजने धिक्कारछे ॥ २६ ॥ इति श्रीअध्यात्मकल्पद्रुमे सामान्यतो वैराग्योपदेशाख्यो दशमोधिकार समाप्त

अथ धर्मशुद्ध्युपदेश ॥ भवेभवापायविनाशनाय तमज्ञधर्म कलुषीकरोपि किं ॥ प्रमादमानोपधिमत्सरादिभिर्न मिश्रितं ह्यौषधमामयापहं ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हवेधर्मशुद्धिउपदेशनाम अग्यारमा अधिकारकहेछे तिहांप्रथम धर्मनीशुद्धता धर्मेनु जेधर्मते भवके० संसारमाहरी अपायजे जन्ममरणादिक तेहना विनाशकरवाने समर्थछे एटवाधर्मने हेमूर्खआत्मा प्रमादजे मद्यादिक तथामान अहंकार उपधि कपट तथामत्सर इत्यादिककरीने सु मलीनकरेछे हवेतेउपर दृष्टांतकहेछे मिश्रितके० मिश्रितथयोथको आमयापहके० नस्यात एटले निश्चे मिश्रित

जे ओषध तेकांइरोगनिवारकनहोय अनेतेमजतेऔषधनीपरें धर्मपणजोप्रमादादि के मिश्रितहोयतो संसारना अपायजे डुःखतेनो निवारकनहोय ॥ १ ॥

यतः॥ शैथिल्यमात्सर्यकदाग्रहक्रुधोनुतापदंभाविधिगौरवाणि च ॥
प्रमादमानौ कुगुरुः कुसंगतिः श्लाघार्थिता वा सुकृते मला इमे ॥२॥

अर्थ ॥ हवेधर्मनेविषे मलसरिखाजेटलादोषछे तेटलापूर्वाचार्यना वचनथीदेखाडे छे सुकृतजेधर्मकार्यतेमां शैथिल्यके० धर्मनेविषे अनादरता मात्सर्यके० गुणवंतनेविषे द्वेषनुंधरवुं तथाकदाग्रहके० जूगवचननुंहठ क्रुधके० क्रोध वली अनुतापके० सुकृतकरीनेपछे हाऽतिखेदेमें फोकटदानदीधुं फोकटतपस्याकीधी इत्यादिकपश्चात्तापनुं करवुं तथादंभके० कपट अने अविधिके० शास्त्रोक्तविधिये रहित क्रियानुंकरवुं तथागौरवके० हुंमहाधर्मिष्ट इत्यादिक महोटाइनुंचिंतववुं वलीप्रमादजे धर्ममां असावधानपणुं अने मानजेअहंकार वलीकुगुरुजे लोहशिलातुल्य अने कुसंगतिजे उत्सूत्रभाषी एहवामिथ्यात्वी प्रमुखनोसंग तथा श्लाघार्थिताके० लोकनामुखथी पोतानी कीर्तिनुंवांछवुं एटलाप्रकारेंकरी धर्ममलीनथाय धर्मनुंयथोक्तफलनथाय ॥ २ ॥

यथा तवेष्टा स्वगुणप्रशंसा तथा परेषामिति मत्सरोज्झी॥
तेषामिमां संतनु यल्लभेथास्तां नेष्टदानादिविनेष्टलाभः॥३॥

अर्थ ॥ हवेआत्मापोतानागुणनी प्रशंसावांछेछे तेआश्रीउपदेशछे हेआत्माजेम तुजने पोतानागुणनी प्रशंसावल्लभछे तेमपरजे अन्यजन तेहनेपणपोताना गुणनीप्रशंसावल्लभछे एहवुंजाणीने मत्सररहितथको तेअन्यजननी इमांके० गुणनीप्रशंसाप्रते विस्तारीनेकहे जेमतुंपणतेप्रशंसाप्रतेपामें केमके कोइने वांछितदानदीधाविनापोतानेपण वांछितलाभनथाय एटलेपारकागुणनी प्रशंसाकरीयेंतो पोतेंपण प्रशंसनीयथैयें

जनेषु गृह्णत्सु गुणान् प्रमोदसे ततो भवित्री गुणरिक्तता तव॥गृह्णत्सु
दोषान् परितप्यसे चरे भवंतु दोषास्त्वयि सुस्थिरास्ततः ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवेकेटलाक काव्यनेविषे गुणप्रशंसानीवांछायकी अवगुणदेखाडेछे हे आत्माजोताहशागुण लोकेंग्रहणकरयाथकां तुहर्षपामेछे तोतेहर्षपामवाथी ताहरे गुणनी रिक्तताथासे अनेजोलोके अवगुणलेजतेछते तु परितापके० खेदपामेछे तो तेखेदपामवाथी ताहराविषे अवगुणते निश्चलथइरहेसे तेमाटे गुणकह्याथी हर्ष नेदोषकह्याथी खेद एवेहुवाना तुंकरीसनही ॥ ४ ॥

प्रमोदसे स्वस्य यथाऽन्यनिर्मितैः स्तवैस्तथा चेत्प्रतिपंथिनामपि ॥
विगर्हणैः स्वस्य यथोपतप्यसे तथा रिपूणामपि चेत्ततोसि वित् ॥५॥

अर्थ ॥ हेआत्मातु जेमलोकनामुखें पोतानागुण स्तवसांजलीने प्रमोदपामेछे तेम शत्रुनापण गुणस्तवसांजलीने जोप्रमोदपामें अने पोताने विगर्हणे के० अवर्णवादे करीने जेमपरीतापकरेछे तेमजजो शत्रुनापण अवर्णवाद सांजलीने तुपरीताप को तेवारे एम जाणियेंजे तुज्ञाताछो ॥ ५ ॥

अथवा ॥ स्तवैर्यथा स्वस्य विगर्हणैश्च प्रमोदतापौ जजसे तथा चेत् ॥
इमौ परेषामपि तैश्चतुर्ष्वप्युदासतो वासि ततोऽर्थवेदी ॥६॥ इतिवापाठ

अर्थ ॥ वली पाठांतरेकरी एहिजअर्थकहेछे हेआत्मातुजेम पोतानीस्तुतिवडे ने तथापोतानेविगर्हणेकरीने प्रमोदतापौके० हर्षअनेशोकप्रतेजजेछे तेमज पोतानी स्तवना तथा निंदा अने परनीस्तवना तथा परनीनिंदा एचारेनेविषेजो उदासताके० मध्यस्थजावनेजजे तेवारेतु अर्थवेदीके० परमार्थनुजाणछो एमनाणिवें एकाव्य पहेलाकाव्यनुं पाठांतरजाणवु ॥ ६ ॥

जवेन्न कोपि स्तुतिमात्रतो गुणी ख्यात्या न बह्व्यापि हितं परत्र च ॥
तदिच्छुरीर्ष्यादिजिरायतिं ततो मुधाजिमानग्रहिलो निहंसि किं ॥७॥

अर्थ ॥ हेआत्माकेवल एकजीस्तुतिमात्रथीज कोइगुणवतनथाय अनेवली अत्यंतमा ख्यातिकीर्तिजोवणीहोय तोपण तेथी काइपरजवनु हितनथाय तेमाटेपरजवने हितनुवांछक एहवुजेतुंते मुधाके० फोकट अजिमानेकरी घहेलोथयो थको ईर्षादिकेकरीने आयतिजे उत्तरकाल तेहने सावास्ते बगाडेछे एटलेईर्षा करवाथी ताहरु परजवनुहित विणसीजायछे इतिजाव ॥ ७ ॥

सृजति के के न बहिर्मुखा जना प्रमाटमात्सर्यकुबोधविह्वलाः ॥
दानादिधर्माणि मलीमसान्यमू न्युपेक्षशुद्धं सुकृतं चराणवपि ॥८॥

अर्थ ॥ हवेदानादिककर्मने जे मलीनकरेछे तेहनेकहेछे हेआत्मा प्रमादिक पांचप्रकारें तथामात्सर्य एटले पारकीसपदानी अदेखाइ तथाकुबोधने मिथ्यादर्शननु दृष्टिराग तेणेकरी विह्वलके० पराजव्या एहवा बहिरमुखजे सर्वज्ञकथित मार्गनास्थापक कुतीर्थकतोकते मलीमसके० महाआरंजादिके दूषित एहवा दानप्रमुख ते धर्मकार्यमा कोए कोणनथीकरता अर्थात्मिथ्यात्वीजोकपण सर्व

तपोताना मननीरुचियें दानप्रमुख धर्मकार्यकरेछे पण तेप्रमादादिके दूषितथका य थोक्तफलदायकनथाय तेमाटेतेमलीन धर्मकार्य उवेषीने थोडुंपण शुद्धधर्मकर ॥८॥

आच्छादितानि सुकृतानि यथा दधंते सौभाग्यमत्र न तथा प्रकटीकृतानि ॥ व्रीडाननाननसरोजसरोजनेत्रा वक्षःस्थलानि कलितानि यथा दुकूलैः ॥ ए ॥

अर्थ ॥ हवेप्रशंसारहित धर्मनुं विशेषफलदेखाडेछे इहांश्रीजिनशासननेविषे आ छादितके० प्रशंसानेढांक्याथका एटलेजेप्राणी प्रशंसायेरहित थका एहवाजे सुकृत के० धर्मकार्य तेथीजेहवी सुजगतानेपामे तेहवी प्रकटितके० जेसुकृतकरीने लोक आगलें प्रशंसाकरावे ते सुजगतानेनपामे तेहनुंदृष्टांतकहेछे जेम व्रीडाजेलज्जा ते णेकरीने नतके० नम्रछे आननसरोजके० मुखकमलजेहनुं एहवीजे सरोजनेत्राके० कमलनयना एटले उत्तमस्त्री तेहना वक्षःस्थलजे स्तनमंडलते दुकूलजे वस्त्रतेणेकरी सहितथका जेहवी सुजगताप्रतें पामे तेहवा उघाडाथका सुजगताप्रतेंनपामे ॥ए॥

स्तुतैः श्रुतैर्वाप्यपरैर्निरीक्षितै र्गुणास्तवात्मन् सुकृतैर्न कश्चन ॥ फलंति नैव प्रकटीकृतैर्नवो द्रुमा हि मूलैर्निपतंत्यपि लघ. ॥१०॥

अर्थ ॥ हेआत्मा ताहरासुकृतजे धर्मकार्य ते अन्यलोके स्तुतके० वखाणेथके तथा अन्यलोके सांजलेंथके तथा अन्यलोकेदेखेथके तेथीतुजने कोइगुणनथी तेउ परदृष्टांतकहेछे जेमजूमीमांहेंथी मूलप्रगटकरेछते डुमजेवृक्षतेफलेनहीपण उलटाहे ठापडे तेम सुकृतपण उघाडाकस्याथका फलदायक न थाय ॥ १० ॥

तपःक्रियावश्यकदानपूजनैः शिवं न गंता गुणमत्सरी जनः ॥ अपथ्यजोजी न निरामयो जवेद्रसायनैरप्यतुलैर्यदातुरः ॥११॥

अर्थ ॥ हवेगुणवतनुं मत्सरकरवुंनिषेधेछे गुणजेधारका तपसंयमदानादिक तेह नेविषे मत्सरनुंकरनार एहवोजे मनुष्यते तपतथाक्रिया जे आवश्यक दान तथापूजन जे जिनबिंब पुस्तकप्रमुखनीपूजा इत्यादिक सर्वप्रकारेंकरीपण मोक्षपामेनही तेउपर दृष्टांतकहेछे जेम आतुरजे रोगीपुरुषते अपथ्यजोजन करतोथको अनोपम महामू ला एहवाजे रसायन पारदादिक औषध तेणेकरी रोगरहितनथाय इहां रोगीतेआ त्मा अने तपप्रमुखते रसायण अनेगुणवंतउपर मत्सरते अपथ्यजोजन तथा मुक्ति ते निरोगता जाणवी एउपनयकह्यु ॥ ११ ॥

मत्रप्रभारत्नरसायनादि निदर्शनादल्पमपीह शुद्धं ॥ दाना
र्चनावश्यकपोषधादि महाफलं पुण्यमितोन्यथाऽन्यत् ॥१२॥

अर्थ ॥ वलीप्रकारांतरे तेहिजकहेछे इहांश्रीजिनशासनमां दान देवपूजा आवश्य क पोसहप्रमुखजे पुण्य तेथोडुपण शुद्ध दोषरहितकीधोहोयतो मन्त्रजे जांगुलीप्र मुख तथा रत्नजे सूर्यकांत चंद्रकातादिक तथा रसायनजे पारादिक तेहनीपरे म हाफलकारीथाय जेममन्त्रथोडाअक्षरनुहोय तोपण विषप्रहारादिकनेहरी महागुणक रे तथासूर्यकांतादिक रत्नन्हानुहोयतोपण महाप्रकाशकरे अने रसायणथोडुपण म होटारोगहरे तेमदोषरहितपुण्यजो थोडुहोयतोपण महाफलदायकथाय अनेतेहथी विपरीतजे अशुद्धपुण्यकार्य तेअन्यथाके० घणुहोयतोपण अल्पफलदायकथाय॥१२॥

दीपो यथाल्पोपि तमांसि हंति लवोपि रोगान् हरते सुधाया ॥
तृणं दहत्याशु कणोपि चाग्नेर्धर्मस्य लेशोप्यमलस्तथांह ॥१३॥

अर्थ ॥ जेमदीपक अल्पके० न्हानोहोयतोपण अंधकारटालेछे वलीजेम अमृ तनो एकबिंदुमात्रतेपण सर्वरोगनेहरे वलीजेम अग्नीनुएककणीयुमात्रतेपण तृण नेबालीनाखे तेमनिर्मलदोषरहित एहवोधर्मनु लेशमात्रतेपण पापनेटाले ॥ १३ ॥

भावोपयोगशून्याः कुर्वन्नावश्यकीः क्रियाः सर्वाः ॥
देहक्लेशं लभसे फलमाप्स्यसि नैव पुनरासां ॥ १४ ॥

॥ हवेसर्वक्रियानी सफलताते भावसहितकरवाथीजहोय तेकहेछे हेयात्म भ्रा तेहनाउपयोगेकरी शून्यके० रहित एहवासर्वए अवश्यकरवा पडिलेहणप्रमुखक्रिया तेप्रते करतोथको पणतेथीकेवल शरीरने तेहिजफलपामेछे पणतेक्रियानु मुख्यफलजे मोक्षलक्षण तेसर्व भावथकी शून्यक्रियाजो घणीकरीतोपण निःफलथाय ॥ १४

धर्मशुध्युपदेशाख्य एकादशोऽधिकार समाप्त ॥ ११ ॥

॥अथ गुरुशुद्धिमधिकृत्य किंचिदुपदेश ॥
प्रधान हितार्थधर्मा हि तद्भक्तिसाध्या ॥
धर्मप्रयासान् कुरुषे वृथैव ॥१॥

धर्म एत्रणतत्वनीशुद्धिकहेछे तिहांप्रथमतो ...ये तेमाटेप्रथम गुरुतत्वनी शुद्धि गुरुछे केमके हितार्थके० मोक्षनेअर्थ धर्म

मां स्त्रीलोलुपनो ते गुरुना वचनथकीनथाय तेमाटेनुं सुदृढको परीक्षाकर्याविनाज गु रुने आश्रयनांपणो धर्मनेनिमित्ते प्रयासकर्यो तेतृथा० फोकटछे ॥ १ ॥

भवी न धर्मैरविधिप्रयुक्तैर्गमी शिवं येषु गुरुर्न शुद्ध ॥
रोगी हि कल्पो न रसायनैस्तैर्येषां प्रयोक्ता भिषगेव मूढः ॥२॥

अर्थ ॥ देवगुरुअशुद्धहोयतो सर्पण अशुद्धथाय तेकहेछे जवीजे संसारीजीव तेणे अविधियेंकरीशास्त्रवाजे दानादिकधर्म तेथकीजीव मोक्षगामीनथाय केमकेजे धर्मनेविषे शुद्ध० निर्दोषपणुं नथी तेधर्मवृथाछे तेउपरदृष्टांत कहेछे जेमरसायनवुं करनार वैद्यते गुणागुणनुं अजाणमूर्खहोयतो रोगीपुरुष ते रसायनेकरी निरोगीन थाय तेमहेआंरोगी तेआत्मा अंतरद्यातेधर्म मूर्खवैद्य ते कुगुरु जाणवो ॥ २ ॥

समाश्रितस्तारकबुद्धितो यो यस्यास्त्यहो मज्जयिता स एव ॥
ओघं तरीता विषमं कथं स तथैव जंतुः कुगुरोर्भवाब्धिं ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हवेकुगुरुअने बुडतारकतुंदृष्टांतकहेछे जेप्राणियें तारकबुद्धियेंकरीने तार कनेआश्रयोछे अनेतेतारपज आश्रीतप्राणीने बुडाडनारहोय तोतेप्राणी विषमडु स्तर एहवो उपजे समुद्रनापाणीनो प्रवाह तेशीरीतेंतरसे तेमज जेथकी तरवानीआ शागविये तेहिज ज्यारें बोडे त्यारें समुद्रनुं पारते केमपामियें तेमज कुगुरुथी भवसमुद्रपण जाणवु केमके जेगुरुप्रतें तारकजाणीने संसारसमुद्र तरवानी आशा यें तेहने आश्रयियें अनेतेगुरुतो उन्मार्गने देखाडवेकरी आश्रीतप्राणीने संसारसमु द्रमां बोडे त्यारें ते प्राणी संसारसमुद्रनो पारकेमपामे एजावार्थछे ॥ ३ ॥

गजाश्वपोताक्षरथान यथेष्टपदाप्तये भद्र निजान् परान् वा ॥
भजंति विज्ञाः सुगुणान भजैवं शिवाय शुद्धान् गुरुदेवधर्मान् ॥४॥

अर्थ ॥ तेमाटेशुद्धदेवगुरुधर्मने आदरवुंतेकहेछे जेमविज्ञजे निपुणपुरुष तेवां छितस्थानके पहोचवानेअर्थें पोताना अथवापारका हाथी घोडा तथा वाहण उंट व लद रथ तेआपआपणेगुणेंसहितसुलक्षणाजोइने आदरे केमकेजो निर्लक्षण वाहन होयतो तेहथीवांछित स्थानकेंपहोचायनही माटेहेसरलप्राणी एरीतेंतुंपण मोक्षस्था नक पामवानेअर्थें शुद्धगुणोपेत एवाजे देव गुरु धर्मनेप्रतेंभज जेथकीमोक्षपदपामे

फलाद्वृथाः स्युः कुगुरूपदेशतः कृता हि धर्मार्थमपीह सूद्यमाः ॥
तद्दृष्टिरागं परिमुच्य भद्र हे गुरुं विशुद्धं भज चेद्धितार्थ्यसि ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवेकुगुरुना उपदेशथायधर्म फलदायकनहोय तेकहेछे श्रीजिनप्रवचनने

विषे कुगुरुनाउपदेशथकी धर्मनेअर्थेपणजे नज्ञाउद्यमकरेलाहोय तेफलदायकनथाय माटेहेनरकजोतु मोक्षफलनोअर्थीहो तोदृष्टिरागठामीने शुद्धपरुपकगुरुनेनज ॥५॥

न्यस्ता मुक्तिपथस्य वाहकतया श्रीवीर ये प्राक् त्वया लु
टाकास्तद्दतेऽभवन् बहुतरास्त्वच्छासन ते कलौ ॥ विभ्रा
णा यतिनाम तत्तनुधिया मुष्णाति पुण्यश्रिय फूत्कुर्म
किमराजके ह्यपि तलारक्षा न किं दम्यव ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हवेदृष्टांतेकरी [illegible] उदताकहेछे हेश्रीमहावीर पूर्वेतुमेजे सुधर्मास्वा
[illegible] मूक्यादता तेपछे कलियुगमा तुजविना तादरासा

णीनायकोऽ ह्युपजापेनही वळीदेवतत्त्वविषमअवस्थानेपाम्यो जेगजातेने नजीवनंने ध्यायकोपण लक्ष्मीनआपे तेमकुगुरुनेपण सेव्योथको धर्म अथवा मोक्षप्रतेनआपे॰

कुलं न जातिः पितरौ गणो वा विद्या च बंधुश्च गुरुर्धनं वा ॥
हिताय जंतोर्न परं न किंचित् किंत्वादृताः सद्गुरुदेवधर्माः ॥९॥

अर्थ ॥ हवेसर्वपदार्थथी देवगुरुधर्मअधिकछेतेने रुडेछे जंतुने॰ जीवने कुलजेऽ इक्ष्वाकुकुलप्रमुख तथाजातिजे मातानुपक्ष पितरौ॰ पितामातप्रमुख तथागणजे स स्वामनस्वामिप्रनीटोली तथाविद्याने पंडीप्रमुख तथाबंधुजे सजन नथीगुरुजे कुलविद्यानुंअध्यापक अने धनतेसुवर्णादिक तथावीजाऽपरोऽ देश ग्राम मंदिरप्रमुख तेसर्वे हितायके॰ परलोकना हितनेअर्थेथोडापणनथी[illegible] करिने॰ [illegible] देव गुरुअनेधर्म एत्रणनेआदरवाथकां परलोकनाहितने अर्थेथाय ॥ ९ ॥

माता पिता स्वः सुगुरुश्च तत्त्वात् प्रबोध्य यो योजति शुद्धधर्मे ॥
न तत्समोऽरिः क्षिपते भवाब्धौ यो धर्मविघ्नादिकृतेश्च जीवं ॥१०॥

अर्थ ॥ हवेजेशुद्धधर्ममांजोडे तेपुरुषनीप्रशंसाकरेछे तेपुरुषकेहने नत्वेनाटी प्र तीबोधपमाडी अनेशुद्धधर्ममांजोडे तेरुनेतेहितकारक माता तेहितपिता तेहितस्वज न अनेतेहित गुरुजाणवु अनेजेजीव हरेकप्राणिने धर्मनुंअंतरायादिक करीने संसा रसमुद्रमांनाखेतो तेसरिखोतेनोकोई बीजो शत्रुनथी ॥ १० ॥

दाक्षिण्यलज्जे गुरुदेवपूजा पित्रादिभक्तिः सुकृताभिलाषः ॥
परोपकारो व्यवहारशुद्धिः नृणामिहामुत्र च संपदे स्युः ॥११॥

अर्थ ॥ [illegible]

[illegible]

जिनेष्वभक्तिर्यमिनामवज्ञा [illegible] ॥
पित्राद्युपेक्षा परवंचनं च [illegible] ॥१२॥

अर्थ ॥ [illegible]

धर्मविरुद्धधर्मिते मिथ्यात्वी कुमतिप्रमुख तेहनीमित्राइते विवाह्व्यापार प्रमुखेंकरी परिचयकरवु तथापिताप्रमुखनी अवगणना अनेपरने कुमालेख कुमानामा कुडा माप कुडातोलप्रमुखेंकरीने ठगवु एटलासर्वप्रकारेंकरी पुरुषनेआपदाउपजे ॥१२॥

भक्त्यैव नार्चसि जिन सुगुरोश्च धर्म नाकर्णयस्यविरत विरतिर्न धत्से॥
सार्थं निरर्थमपि च प्रचिनोष्यघानि मूल्येन केन तदमुत्र समीहसे शं॥१३

अर्थ॥ वलीप्रकारातरेकहेछे हेआत्मातु भक्तियेंकरी जिनपूजाकरतोनथी अने कदापिपूजेछेतोपण कुलकर्मादिक परवशपणायकी पूजेछे पणभक्तियीपूजतोनथी तथासद्गुरुपासेथी धर्मसाभलतोनथी तथानिरंतर अढारपापस्थानक पन्नरकर्मादान प्रमुखथीनिवरतुंनथी इत्यादिकनिरतीपणु तेपणनथीआदरतो तथासार्थकके० पोताने अर्थवापरुवादिकनेअर्थे अनेनिरर्थकके०स्वार्थविनापण अपध्य अनाचरित पापोपदेश हिंसाप्रदान प्रमादाचरित एपाचप्रकारेंकरी कारणविना पापनेमेलवेछे तोपरलोकेतुं शामूलेंकरी सुखनी वांछाकरेछे इहा मूलरूपते पुण्यजाणवु ॥ १३ ॥

चतुष्पदैः सिंहइव स्वजात्यैर्मिलन्निमांस्तारयतीह कश्चित्॥
सहैव तैर्मज्जति कोपि दुर्गे शृगालवच्चेत्यमिलन् वरं सः ॥१४॥

अर्थ ॥ हवेसुगुरुनेसिंहनीउपमा अनेकुगुरुने सीयालनीउपमाकहीने उपदेशेछे पोतानीजातीनाजे चतुःपदमृगप्रमुख तेसाथेमल्या सिंहनीपरें एससारमांजे सद्गुरु तेपोतानी जातीना पचेंद्रियसज्ञीमनुष्यइत्यादिकसाथे मल्योथको आश्रीतजीवनेतारे जेमसिंहनिजाश्रितचतुःपदने कूपगर्त्तादिकथीतारे तेमसुगुरुपण निजाश्रितने [illegible] अनेकुगुरुतेसीयालनीपर स्वजातीयजे मनुष्यादिक अनेविजातीयजे चतुःपद तेहनेसाथेलइने दुर्गजेनरकप्रमुख वलीदुर्गजे कूपादिकतेमाबुडाडे तेमाटेंकुगुरुनेनमल्योथकोनसारो जेमपचाख्यानमां काइकवनमां बीजावाघसिंहादिकनुंनथटानयाने अर्थे सर्वचतुःपदमली एकवखतसिंहने राजाकर्यो अनेसर्वचतुःपद तेहनीसेवाकरवालागा एकदिवसेतेवनमां अग्नीलागी तेवारेंसर्वचतुःपद सिंहनेसरणेगया तेसर्वनेसिंहेपोतानेपुछडेवलगाडी एकफालेकरी कोइकमहानदी उत्तरीनेपार पोहोचाड्या वलीकेटलाकदिवसे दावानलमिटया वनमां सर्वचतुःपद तेवारेंसर्वचतुःपदने पाछापोतानेगामे पहोचाड्या एहवोतेसिंहनोपरमउपगारी कोइक कुबुद्धिसीयालनेपण केटलाक हीनसत्व निर्भाग्य ससलाप्रमुखजीव [illegible] तेसीयालनांपरें दरनागो तेवारें सीयालने निजाश्रित सर्वचतुःपदने

पुंडरीकवनगामी फालनरीनदी उतरवा लागो तेवारे सर्वजीवसहित पोतेंपण अ गाधजलमांबुमो इहांसिद्दते सुगुरु अनेसीगालते कुगुरु महानदीते दुर्गति अने आश्रितजीवते धर्मार्थी मनुष्य एमउपनयलेवो ॥ १४ ॥

पूर्णे तटाके तृषितः सदैव भृतेपि गेहे क्षुधितः स मूढः ॥ क
ल्पद्रुमे सत्यपि ही दरिद्रो गुर्वादियोगेपि हि यः प्रमादी ॥१५॥

अर्थ ॥ हवेगुर्वादिकनुं योगछतेप्रमाद करवुंनही तेदृष्टांतदेइनेकहेछे निश्चेंकरीजे प्राणी देवगुरुधर्मनुं योगछतेपण प्रमादवंतथायछे तो हाहाइतिखेदेतेप्राणी भरायतला वपण तृषाइतरस्योछे वली ते पुरुष सुखडी प्रमुखे भरायका घरमां पण भुख्योछे वली घरमांछतें कल्पवृक्षें पण दरिद्रीछे तेमाटे गुर्वादिकनो योगछते प्रमादत्यजीने धर्मसाधनकरवु तेहिजसार्थकछे ॥ १५ ॥

न धर्मचिंता गुरुदेवभक्ति र्येषां न वैराग्यलवोपि चित्ते ॥ तेषां
प्रसूक्लेशफलः पशूना मिवोद्भवः स्यादुदरंभरीणां ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ हवेप्रकारांतरेंतेहिजकहेछे आजमेंशुं धर्मकीधो अनेहवे नित्य प्रत्येंशोधर्म करवानुंछे एहवीजेने विचारणानथी यदुक्तं उत्थायोत्थाय चिंतेयं किमद्य सुकृतं कृतं॥ आयुषः खंडमादाय रविरस्तमय गतः ॥१॥ तथा जेने गुरुअने देवनीभक्तिनथी वली वैरागनुंलेशमात्रपणनथी एहवाजेपेटभराप्राणी तेहोनुंजन्मते पशु जेम कुतराप्रमु खनीपरे केवल माताने गर्भधारणादिकक्लेश करवामात्रज फलहोय ॥ १६ ॥

न देवकार्ये न च संघकार्ये येषां धनं नश्वरमाशु तेषां ॥ तदर्ज
नाद्यैर्वृजिनैर्भवाब्धौ पतिष्यतां किं त्ववलंवनं स्यात् ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ हवेप्रकारांतरे सुपात्रेंधनवावरवानी सफलतादेखाडेछे जेधनवंतप्राणीनुं धन देवकार्यजे प्रासादकरावचा अथवाजीर्णोद्धार बिंबप्रतिष्ठा इत्यादिकनेविषे तथा संघकार्यजे चतुर्विधसंघनुंपोषवुं तथासाधर्मिनीवत्सलताते हीन अने दीनजे साधर्मि कहोयतेनीचिंताकरवी तथा पुस्तकलखववा इत्यादिक कार्योमांउपयोगीनहोय तेप्रा णीनुं विनाशशील एहवुंजेधन तेउपार्जनादिकनापापेकरी संसारकूपमापडताने तेधन सुंकांइ आधारभूतथाय अर्थातकांइनथाय एटलेसुपात्रेव्ययविना अन्यथाकोइकामेंना वे॥१७॥इति श्रीअध्यात्मकल्पद्रुमेदेवगुरुधर्मशुद्धीनामा द्वादशोधिकारः समाप्तः॥१७॥

ते तीर्णा भववारिधिं मुनिवरास्तेभ्यो नमस्कुर्महे येषां नो विषयेषु गृध्यति मनो नो वा कषाये प्लुतं ॥ रागद्वेषविमुक् प्रशांतकलुषं साम्याप्तशर्माद्वयं नित्यं खेलति चात्मसंयमगुणाक्रीडे भजद्भावनाः ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हवेयतिशिक्षोपदेशनामा तेरमोअधिकारकहेछे तेमांप्रथमयतिनुंस्वरूपकहेछे जेमुनीनुंमन विषयमां आसक्तपामतुंनथी तथाक्रोधादिककषायमां व्याप्तनथी एहवाजेमहानुभाव संसारसमुद्रथीतस्या तेहनेनमस्कारकरियेछैये जेमुनिराजरागद्वेषरहित थइने कलुषताजे पापाचरणतेहने शांतपमाडयोछे वलीसमतायेंकरी अनुपमसुखपाम्योछे एहवुथइने पांचमहाव्रतनी पचवीसभावना तथा अनित्यादिकबारभावनानेभजेछे वलीजिनप्रणीतजे संयमनागुण क्षमादिकरूप उद्याननेविषेरमेछे एहवुजेहनुंमनहोय तेहनेज तत्वथकी मुनिकहियें एभावार्थछे ॥ १ ॥

स्वाध्यायमाधित्ससि नो प्रमादैः शुद्धा न गुप्ती समितीश्च धत्से ॥ तपो द्विधा नार्जसि देहमोहा दल्पेऽपि हेतौ दधसे कषायान् ॥२॥ परीषहान्नो सहसे न चोप सर्गान्न शीलांगधरोऽपि वाऽसि ॥ तन्मोक्षमाणोऽपि भवाब्धि पारं मुने कथं यास्यसि वेषमात्रात् ॥३॥ युग्मं ॥

अर्थ ॥ हेसाधु तारेवेषमात्रथकीज अर्थसिद्धिनथाय तेकहेछे हेमुनितुंप्रमादेकरीस्वाध्यायनेकरतो नथी तथाशुद्धनिर्मल मनादिकत्रणगुप्ति अने ईर्यादिकपांचसमितिनें धारणकरतोनथी वलीशरीरनामोहथी बाह्यअभ्यंतर बेप्रकारेंतपपण करतोनथी तथाथोडाकारण कषायनुंकारणछतांपणकषायधरेछे ॥ २ ॥ तथाक्षुधादिक बावीसपरिसह अने देवता प्रमुखनाकरेला उपसर्ग तेप्रतेनथीसहेतो तथा अढारहजाररूप शीलांगरथने पणधरतोनथी अनेवलीतुं वेषमात्रथीज मोक्षनेवांछेछे परंतुतेवांछतुं संसारसमुद्रनापारनेंसपामीस ॥ ३ ॥ एनेकाव्यनोअर्थ एकठाछे

आजीविकार्थमिह यद्यतिवेषमेष धत्से चरित्रममलं न तु कष्टभीरुः ॥ तद्वेत्सि किं न न बिभेति जगज्जिघृक्षुर्मृत्युः कुतोऽपि नरकश्च न वेषमात्रात् ४

अर्थ हवेतेहिजकहेछे हेसाधुतुंआसंसारमां आजीविकानेअर्थे जे यतिनावेषनेधरेछे अनेकष्टथकीबीहतोथको निर्मलनिरतिचार जेचारित्रतेप्रतें धरतोनथी ता तेरीसेतुं एमजाणतोनथी जे जगतनुंग्रासकरनार एहवोजेमृत्युतेकोइथीवीहतोनथी वलीनरकनुंदुःखपणकोइथी नाशथतुंनथी एटले मृत्यु अने नरकवेषमात्रथी पण नाशथतानथी तेमेंनथी इतिभाव ॥ ४ ॥

वेषेण माद्यसि यते चरणं विनात्मन् पूजां च वांछसि जनाद्बहुधोपधिं च॥
मुग्धप्रतारणभवे नरके ऽसि गंता न्यायं बिभर्षि तदजागलकर्तरीयं॥५॥

अर्थ ॥ हेआत्मातुंचारित्रविना यतिनेवेषेकरीदर्पपामेछे अनेलोकथकी बहुप्रकार नीपूजा वंदन सत्कारप्रमुख तथाउपधिजे वस्त्रपात्र पुस्तकादिकप्रतेंवांछेछे पणपछेतुं एमुग्धलोकने प्रतारणके० कपटक्रियायें ठगाइकरी तेहथीउपार्ज्योजेनरकतिहांज रहीश तेमाटेतुं अजागले कर्त्तरीना न्यायप्रतेंधरेछे जेमकोइ खाटकियें एकबकरीहण वानेअर्थें वधकरवानेस्थानकेंआणी कातीयेंधारचढावी सज्जकरी तेबकरीनेपासेका तिमूकी एटलामांकोइकामनेअर्थें पोतेंघरमांगयो पछवाडेबकरीयें पोतानापगेंकरीनू मीखोदितेमांकातिदाटी नेविचार्युंजे रखेखाटकीआवेतिवारेंदेखे एमजाणीतेहनाउ परलुती दैवयोगथी कंठतलेकातीनीधारआवी तेथीगलुंदवाइगयुं अनेमृत्युपामि तेमहे आत्मातुंपण तेबकरीनीपरें अज्ञानीथइने कातीरूपनरकने ढांकिराखेछे पणतेअवश्य नाविपणाथी उदयआव्याविना रहेसेजनही तेमाटेप्रथमथीज अज्ञानत्यजीने साव धानरहेजे एन्यायग्रंथांतरें बीजेप्रकारेंपण लख्युंछे ॥ ५ ॥

जानेऽस्ति संयमतपोभिरमीभिरात्मन्नस्यप्रतिग्रहभरस्य न निष्क्रियोपि ॥
किंदुर्गतौ निपततः शरणं तवास्ते सौख्यं च दास्यति परत्र किमित्यवेहि॥६

अर्थ ॥ हेआत्माएलोकरंजन निमित्तेंजे संयमतथातप तेणेकरीने गृहस्थोपा सेथी अहार औषध वस्त्रपात्रादिकनुंलेवुं ते तो संयमतपादिकना समूहनुं वक्रयके० मूलपणनथयुं तेवारेंतुजने दुर्गतिमांपमतां शरणतेसुंछे अनेपरलोकें सुखतें कोणआ पसे तेविचारीजो एतोलोकोनाप्रतिग्रहनुं मूलमात्रपण ताहरुंसुकृतनथी माटेतुजने नरकेपडतां उद्धार अनेपरलोकनेविषे सुखतेशायकीथासे एभावार्थछे ॥ ६ ॥

किं लोकसत्कृतिनमस्करणार्चनाद्यै रे मुग्ध तुष्यसि विनापि विशुद्धयोगान्
कृंतन् भवांधुपतने तव यत्प्रमादो बोधिद्रुमाश्रयमिमानि करोति पर्शून्॥७

अर्थ ॥ हवेलोकसत्कारादिकदेखी राचवुंनहीतेकहेछे हेमूढआत्मा शुद्धनिर्मल दोषरहित एहवाजे मनवचनकायानायोग तेविनालोकोनो सत्कारजे अभ्युत्थाना दिक तथानमस्कारवंदना अर्चना जेनवांगपूजा विलेपनादिक तेणेकरीने सुंदर्पपामे छे केमकेएप्रमादते ताहरेंसंसारकूपमां पडतावोधरूप वृक्षनाआलंबनने छेदवाने ए लोकसत्कारते कुहाडारूपछे एटलेताहरोप्रमादरूपवैरीतें तुजने संसाररूपकुवामां

नाखवातारुं वोधआलबनरूपवृक्षने लोकसत्काररूप कुहाडेकरीनेंदेछे एटलेहमणा तो सत्कारपामिमनमा हर्षधरेछे पणआगले वोधपामशो दुर्जनथासे ॥ ७ ॥

गुणास्तवाश्रित्य नमत्यमी जना ददत्युपध्यालयनैक्षशिष्यकान् ॥
विना गुणान् वेपमृपेर्बिभर्पि चेत् त तप्टकाना तव भाविनी गति ॥८॥

अर्थ॥हेसाधो धर्मार्थिलोकतो तहारागुणआश्रीने तुजनेनमेछे तथा उपधि वस्त्र पात्रादिक आलय वस्ति नेपज अन्नपानादिक अनेशिष्य तुजनेआपेछे अनेतुजागुण विनाज मात्र वेपधरेछे तेवारे ताहरीवृत्तिनी गति थाशे जेमठगारा कृत्रिम नवानवा वेप करीलोकना धनठगीलिये पछेकोइकदिवसे तेहनाविपाकथी वध बधनादिक पा मे तेम ताहरा हवालपण तेहनीपरे थासे ॥ ८ ॥

नाजीविकाप्रणयिनी तनयादिचिता नो राजभीश्च भगवत्समय च वे त्सि॥ नो राजभीर्थरसि वाऽऽ गमपुस्तकानि इत्यपि पाठ ॥शुद्धे तथा पि चरणे यतसे न भिक्षो तत्ते प्रतिग्रहभरो नरकार्थमेव ॥९॥

अर्थ ॥ हवेसाधुपणातु सुखदेखाडेछे हेभिक्षुकतेंघरबारपरिग्रहतोमूक्या माटे आजीविका तथापुत्रादिकनी चितानथी तेमराजासबधीभयपणनथी वळीजिनप्रणी त सिद्धातपणजाणेछे अथवाजैनसिद्धातना पुस्तकधरेछे तोपणशुद्धचारित्रनेविषे उद्यमकरतोनथी तेवारेताहरु वस्त्रपात्रादिकनुलेवु तेहनुभारते नरकनेअर्थेजछे ॥९

शास्त्रज्ञोपि दृढव्रतोपि गृहिणीपुत्रादिबधोज्झितोप्यगी यद्यतते प्रमादवशगो न प्रेत्य सौख्यश्रियै॥तन्मोहद्विपतस्त्रिलोकजयिन काचित् परा दुष्टता बद्धायुष्कतया स वा नरपशुर्नून गमी दुर्गतौ॥१०

अर्थ ॥ हवेठतेयोगेपणजीव धर्मकरतोनथी तेहनाबेकारणदेखाडेछे लौकिकअ ने लोकोत्तरशास्त्रने जाणतोथको तथा पचमहाव्रतधारीथको तथास्त्रीपुत्रादिकना प्रतिबधेरहितथको पण जेप्राणीप्रमादवशे पम्यथोयको परलोकनासुखनी सपदारूप ध र्मकार्यनेविपेउद्यम करतोनथी तोतिहा त्रणलोकनु जीपनारजे मोहरूपशत्रु तहनी ज कोइक अलक्ष्यमहादुष्टताजाणवी अथवाते नररूपपशुआपडो पूर्वेनरकादिकना आयुपाना बाधवायकी दुर्गतिमाज जनारछे एमजाणीयेछैयें ॥ १० ॥

उच्चारयस्यनुदिन न करोमि सर्व सावद्यमित्यसकृदेतदथो करोपि ॥
नित्य मृपोक्तिजिनवचनभारिता तत्सावद्यतो नरकमेव विभावये ते॥११

अर्थ ॥ त्यैयतिनाविषमां निर्ग्रंथपणानाविषणं देखाडीने तेनिर्वीना लोकोने ठगवा मांडे गृहस्थनामाथाथरवेंलडी ए कृत्यकरीनेपछे चारचार भावकर्म सचित्तभक्षणप्रमुखकरीने तेमांहेनिर्ग्रंथपणावर्णवें तोतेमांकेटलुं एकवृथे सावद्यभक्षणादिककर्मे तेथकी तुजने नरके जवुजथसे जेथीजीवोने सावद्यवध्यावी निरंतरकर्मनिचार ॥ ११॥

येषां पदेज्ञाप्यपि धिक्षनाशिता ददत्यभीष्टान्नजलं धुना जनाः ॥
भूतं च वेषं च गुरुं विचिंत्य से भवांतरे ज्ञास्यसि तत्फलं पुनः ॥१२॥

अर्थ ॥ वलीहेजयते जे तेनापुरुषमणाभावमात्र राजाजेनाकरमाप्रमुखना देवे तपाजोकजनप्रमुखनेअर्थे चपलताथी पराडवेंगगरोवीने धर्मकथाकरवें इत्यादिककपटेकरी अंगोजानोरते तुजने वांछित अन्न पान वस्त्र पात्र वसति लिलादिकआपेछे तेथीतुंगर्यापणे मृगतृष्णे तुंसंतोषकिंचे परंते तुंभोगव्यातुं फल परजवे नरकादिकनाडुःखनिना वीजोकाइजाणीसनहीं ॥ १२ ॥

आजीविकादिविविधार्तिभृशानिशार्ताः कृच्छ्रेण केपि महतैव सृजंति धर्मान्
तेभ्योपि निर्दय जिघृक्षसि सर्वमिष्टं नो संयमे च यतसे भविता कथं ही॥१३

अर्थ ॥ वलीप्रकारांतरे तेहेजयतेजे केटलाकश्रावको आजीविकाजे उदरवृत्ति आदिशब्दथी वस्त्र आलरण राजदंड पुत्रादिकविवाह इत्यादिकचिंतायेकरी सदा काजआकुलथका घणीकष्टेंकरीने धर्मजेदानप्रमुख तेकरेछे अने हेनिर्दयवेषनाधरनार तुंतेवापासेथीपण अन्नपानादिक सर्ववांछितवस्तु लेवानेवांछेछे अनेसंयममां उद्यमकरतोनथी माटे हाइतिखेदेंताहरी तेशीगतीथासे ॥ १३ ॥

आराधितो वा गुणवान् स्वयं तरन् भवाब्धिमस्मानपि तारयिष्यति ॥
श्रयंति ये त्वामिति भूरिभक्तिभिः फलं तवैषां च किमस्ति निर्गुण ॥१४॥

अर्थ ॥ एगुणवंतछे एसंयमगुणसहितछे एमहानुजावछे एनेआराध्योथको पोतेसंसारसमुद्रतरेछे तेम आपणनेपण तारसे एहवीबुद्धियें घणीभक्तियेंकरी तेप्राणियें तुजनेआश्रयोछे अनेतुंतोपोतेनिर्गुणछो माटेतुजने अथवाते आश्रयकरनारने एमांगो फलछे एटलेतुंकुमताथको तेप्राणीनेपण बोडेछे एजावार्थ ॥ १४ ॥

स्वयं प्रमादैर्निपतन् भवांबुधौ कथंस्वभक्तानपि तारयिष्यसि ॥ प्र
तारयन्स्वार्थमृजून् शिवार्थिनः स्वतोन्यतश्चैव विलुप्यसेंऽहसा॥१५॥

अर्थ ॥ हेमुनितुंपोते प्रमादेंकरीने बुडतोथको पोतानाजक्तजे सेवकलोक तेने शीरीतेंतारीश केमके पोताने अन्नपानादिकमले तेनेअर्थे सरलजे मोक्षार्थिलोक ते

ह्नेवचतोथको तुफरेछे एटलेपोताना प्रमादाचरणथी थनेबीजोजोकने ठगवाथी एवन्नेप्रकारना पापेकरीने तुलोपायछे ॥ १५ ॥

गृह्णासि शय्याहृतिपुस्तकोपधीन् सदा परेभ्यस्तपसस्त्वियं स्थिति ॥
तत्ते प्रमादाद्भरितात्प्रतिग्रहै ऋणार्णमग्नस्य परत्र का गति ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ हे वेपना धरनारयति तु लोकोपासेथी शय्या वस्ति अहार तथापुस्तक ज्ञानोपकरण तथाउपधि वस्त्रपात्रादिकजे नित्यजियेछे तेतो तपसीलोकनी स्थिति छे परतु तुतो प्रत्यक्षप्रमादमा मग्नथको काइपणतपस्यादिक करतोनथी तेमाटे प्रतिग्रहने निग्रवेकरी नारीथयु एहवुजेप्रमाद तेथकीउपार्ज्युजे लेणो ते लेणानेविषे मग्नथको खुतोथोएहवुछतो ताहरीपरजवें सीअवस्थाथासे एटलेप्रथमतु चारित्रछे इने प्रमादसेवेछे तेलेणोकरेछे तेवारपछे तपसयमादिकविना लोकोपासेथीशय्यादिक प्रतेंलीयेछे तेवीजोलेणो एमएवेप्रकारना लेणामाखूतोथको ताहरीसी अवस्थाथासे अर्थात इष्टअवस्थाज पामीस इतिजाव ॥ १६ ॥

न कापि सिद्धिर्न च तेतिशायि मुने क्रियायोगतप श्रुतादि ॥ तथा
प्यहकारकदर्थितस्त्व ख्यातीच्छया ताम्यसि धिङ् मुधा किं ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ हवेतथाविधगुणविना कीर्त्तिनेसुवाछेछे हेमुनिताहरेविपेकोइ विद्यामत्रादिक सिद्धिनथी वलीवादणा खमासमणाप्रमुख उत्कृष्टक्रियानथी तथामनवचन कायाना योगनी शुजप्रवृत्तिनथी तथावाह्याभ्यतरतपनथीकरतो तथाश्रुतज्ञान आदिशब्दथी प्रजाविकपणु राजाप्रमुखवु प्रतिवोधवु इत्यादिकगुणतेपणनथी तापणतु अहकारे कदर्थितथको ख्यातिजे प्रसिद्धितेहनी वाछायेकरीने फोकटशोपरीतापकरे छे माटेतुजने धि कारथाउताहरामा जो कोइअतिशयगुणहोय तेवारेंतो ख्यातिनी वांछापणयुक्तछे अनेतेविनाज प्रख्यातीनेवाछेछे माटेतु धिक्कारवायोग्यछो ॥ १७ ॥

हीनोप्यरे भाग्यगुणैर्मुधात्मन् वाछस्तवार्चाद्यनवाप्नुवश्च ॥
ईर्ष्यन् परेभ्यो लभसेऽतितापमिहापि यातो कुगतिं परत्र ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ फरीतेहिजकहेछे अरेनिर्भाग्य नि पुण्यकआत्मातु गुणरहितथको फोकटस्तवनापूजाप्रमुखने वाछतो जोपूजास्तवनानथायतो वलीलोकोउपरक्रोधकरतो थको इहलोकेपण अतिशय तापसतापपामेछे अनेपरलोकेपणदुर्गतियेंजइश ॥ १८ ॥

गुणैर्विहीनोपि जनानतिस्तुति प्रतिग्रहान् यन्मुदित प्रतीच्छसि ॥
लुलायगोश्वोष्ट्रखरादिजन्मभि विना ततस्ते भविता न निष्क्रय ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ हवेकुगतिमांपडवाविषे उपदेशकरीने प्रतिबोधेछे हेयतिवेषनाधारक तुं गुणरहितथको पणहर्षवंतथयीने लोकथी नमस्कारादिक स्तवना वस्त्रपात्रअन्नादि कलेवावांछेछे तेहथीतुजने कुलायजे पाम्नोपाणीवहेवायोग्य अथवागोजेवलदीओ हल गाडा यंत्र कोल प्रमुख वहेवायोग्य अथवाअश्वते असवारीकरवायोग्य तथा उंट खररासभ अनेकविधभारवहेवायोग्य इत्यादिकअवतार पाम्याविना तेप्रतिग्रहादि कनुं मूलनथाय केमकेगुणविनापण लोकोपासेथी प्रतिग्रहादिक कल्पेछे तेहनुंलेणो पामाप्रमुखना अवतारपामि भारवहीनेछूटवुंछे एभावार्थ ॥ १९ ॥

गुणेषु नोद्यच्छसि चेन्मुने ततः प्रगीयसे यैरपि वंद्यसेऽर्च्यसे॥जुगुप्सितां प्रेत्य गतिं गतोऽपि तैर्हसिष्यसे चाऽभिभविष्यसेऽपि वा॥२०॥ दानमाननुतिवंदनापरैः मोदसे निकृतिरंजितैर्जनैः ॥ नत्ववैपि सुकृतस्य चेल्लवः कोपि सोपि तव लुंठ्यते हितैः॥२१॥

अर्थ ॥ वलीतेहिजप्रकारांतरेकहेछे हेमुनिजोतुंगुणनेविषे उद्यमकरतोनथी ते वारेइहभवेंजे तुजने श्रावकादिक गीतभासप्रमुखेकरीगायछे तथावलीद्वादशावर्त्त वांदणायेंकरीवांदेछे सुगंधलेपनादिकेकरीपूजेछे तेतुपरभवें निंदनीक कुरूप दरिद्रतादि क पाम्याथका तेहिजताहराउपर हससे तथानानाप्रकारनीपीडा उपजावसे एटले ते स्वामिपणे अवतरसे अनेतुदासपणेथाइस तिहांलातो लाठीप्रमुखना प्रहारेंकरी तुजनेपीडसे ॥ २० ॥ हेमुनितुं कपटक्रियायेंकरी लोकरीजवीने तेहोने दानसन्मान स्तवन वंदनानेविषे तत्परदेखीने हर्षपामेछे पण एम नथीजाणतो जे ताहरो लेश मात्रसुकृतछे तेहनेएलोकलुंटेछे ॥ २१ ॥

भवेद्गुणी मुग्धकृतैर्नहि स्तवै र्न ख्यातिदानार्चनवंदनादिभिः ॥ विना गुणान्नो भवदुःखसंक्षय स्ततो गुणानर्जय किं स्तवादिभिः॥२२

अर्थ॥हवेस्तवनादिकनी वांछामूकीने गुणनुंपोषकरवुंतेकहेछे हेमुनितुं विशेषाविशे षनाअजाण एहवामुग्धलोकनीकरेलीजे स्तुतितथाख्याति प्रशंसादिक तेणेकरीगुणवं तथाय वलीगुणजे ज्ञानादिक तेहनीप्राप्तिविना संसारनोविनाश अनेमुक्तिनीप्राप्तिन थाय तेमाटेकेवल गुणनेजउपार्जनकर पणस्तुतिकरावववायी कांइअर्थसिद्धिनथी२२

अध्येपि शास्त्रं सदसद्विचित्रा लापादिभिस्ताम्यसि वा समायैः॥येषां जनानामिह रंजनाय भवांतरे ते क मुने क च त्वं॥२३॥

अर्थ ॥ हवेलोकरीजववामाटेतुं शास्त्रभणेछे पणभवांतरेतुंक्यहां

कल्हि तेदेखाडेछे हेमुनितुजे लोकरीजववानिमित्ते सतुके० नजोजिनागम तथा असत्के० विरुद्ववौध्धादिकनुशास्त्रते प्रतेनणेछे अनेवली कपटसहित नानाप्रकार नाआलापसंलापादिक तेणेकरीने घणुप्रयासकरेछे पणजगतरे तेजोकल्हिागनिमा जगे अनेतु केइगतियेजइश एटलेआनवे जावजीवघणुकीजे जीव तें रीजव्याहशे तेपरनवेकोइपण ताहरे कामेआवेसेनही ॥ १३ ॥

परिग्रह त्व्यजहाकृहादे स्तत्कि न धर्मोपकृतिछलात्त ॥
करोपि शय्योपधिपुस्तकादे र्गरोपि नामांतरतोपि हता॥१४॥

अर्थ ॥ हवेपरिग्रहत्यजवा आश्रीउपदेशछे हेमुनितेपूर्वे घरप्रमुखनुपरिग्रहछां डयु अनेवली धर्मोपकरणने मीसेकरीने शय्या वस्ति उपधि वस्त्र पात्रादिक पुस्त क आदिशब्दथी पाटा चाबखी पोथी बावणा जपमाला प्रमुखउपकरणनो परिग्रह सुकरेछे धर्मोपकरणजेकाइ बहुमूलो ममतानावशथकी वधारेराखियेंते परिग्रहजजा णवो केमके० गरके० विष तेहनेनामांतरकरवाथकी एटलेनामफेरवीनाख्यायीप ण हताके० मृत्युकारकहोयज जोविषने साकर अमृत इत्यादिककहियेंतोपण खांधु थकु प्राणहरणकरे तेमपरिग्रहने धर्मोपकरण निमित्ते राख्योथकोपण दुर्गतिआपे

परिग्रहात्स्वीकृतधर्मसाधनाभिधानमात्रात्किमु मूढ तुष्यसि ॥
न वेत्सि हेम्नाप्यतिभारिता तरी निमज्जयत्यगिनमंबुधौ द्रुत॥१५॥

अर्थ ॥वजीतेहिजकहेछे हेमूर्खसाथेतु स्वीरुतके० प्रमाणकिधुंछे धर्मसाधनके० धर्मोपकरण एहवुनाममात्रजेहनु एहवोपरिग्रह पाम्याथी सुहर्षपामेछे हेमूर्खतुन थीजाणतोजे अतिशयभारी एहवोजेसुवर्ण तेणेकरीभरी एहवीतरीजे होडी तेजेम अगीनेंके० वेशनारमनुष्यने बोडेछे तेमतुजनेपण धर्मोपकरणनेमीसे मल्योएहवो जे अतिपरिग्रहतेभवसमुद्रमा बोडशे इतिभाव ॥ १५ ॥

येह कषायकलिकर्मनिबधभाजन स्यु पुस्तकादिभिरपीहितधर्मसाधनै ॥
तेषा रसायनवरैरपि सर्पदामयै रार्त्तात्मना गदहते सुखकृतु कि भवेत्॥१६

अर्थ ॥ जेमुनिये हितके० वाछ्युछे धर्मनुसाधनजेथकी एहवाजे पुस्तकादिकते णेकरीनेपण अहजेपाप तथाकषायजे क्रोधादिक तथा कलिजेकलहतेना करवा थकी कर्मजे ज्ञानावरणियादिक तेनानिकाचितुबधनुभाजनथाय तेहनेबीजोकोइ सुखकार्य निवृत्तिनुकरनारनथाय एटलेजेहनेधर्मोपकरणतेहिज ममत्वनावशथकी परिग्रहपणे परिणम्याने तोतेहनेअर्थ्ये क्लेशकषायादिकने करवेकरीकर्मवृद्धिकरेछे

तोतेह्नेसंतोपते पठे फरीबीजागायकीथासे एजावाथी तेह्नुंदष्टांतकहेठे जेम रसायनजे मृगांगपारादिक तेह्नोसेवनकरवाथीज उलटोमांदापडयो एटलेरसायनथकीपण जेह्नेरोगवध्यो नोपछेतेह्नारोगनुं निवारकबीजोसुखकारी कोइनथी ॥७६॥

रक्षार्थं खलु संयमस्य गदिता येऽर्था यतीनां जिनैर्वासःपुस्तकपात्रकप्रभृतयो धर्मोपकृत्यात्मकाः ॥ मूढन्मोहवशात्त एव कुधिया संसारपाताय धिक् स्वं स्वस्यैव वधाय शस्त्रमधियां यद्दुःप्रयुक्तं भवेत् ॥७७

अर्थ ॥ निश्चेकरीनेजे वस्त्रपुस्तकप्रमुख पदार्थतेश्रीजिनेश्वरें साधुनेसंयमनी रक्षानेअर्थे धर्मोपकरण स्वरूपेकह्याठे तोहाहा इतिखेदे तेहिजपदार्थ कुबुद्धिनाधणीने अतिशय मोहनावशथकी उलटासंसारमांबूडावनारनाकारण थइपडेठे तेह्नुंदष्टांत जेम बुद्धिहीनपुरुषनुं पोतानुं अस्त्रजेखड्गादिक तेविपरीतपणे राख्युंहोय तोपोतानेजवधकारीथाय तेह्नीपरे जाणवुं ॥ ७७ ॥

संयमोपकरणच्छलात्परान् भारयन् यदसि पुस्तकादिभिः ॥
गोखरोष्ट्रमहिषादिरूपभृत्तच्चिरं त्वमपि भारयिष्यसे ॥७८॥

अर्थ ॥ हेमुनितुं जे परप्राणीनारवाह्क पोटी बलद उंटप्रमुखने संयमनाउपकरणनमीसेकरी पुस्तकादिकनुं भारवह्वरावेछे तेमाटेतेप्राणीतुजनेपण बलद उंट रासभ पाडाप्रमुखना अवतारपाम्याथका चिरकालजगें भारवह्वरावशे ॥ ७८ ॥

वस्त्रपात्रतनुपुस्तकादिभिः शोभया न खलु संयमस्य सा ॥
आदिमा च ददते भवं परा मुक्तिमाश्रय तदिच्छयैकिका ॥७९॥

अर्थ ॥ हवेवस्त्रपात्रादिकथी संयमनीशोभानथीतेकहेछे हेमुनि वस्त्रपात्रतथाशरीर पुस्तकइत्यादिकनी शोभाकीधेथके निश्चेकरी संयमनीशोभानथाय एटलेवस्त्रादिकनीशोभाते संयमने अशोभाकारणीछे तेमांपणवली आदिमके० पहेलीज वस्त्रादिकनीशोभाते भवभ्रमणजआपे अने परके० बीजीजे संयमनीशोभाते मोक्षजआपे तेमाटेजोसंसारनी वांछाहोयतो वस्त्रादिकनी शोभाआदर अनेजो मुक्तिनीवांछा तुजनेहोय तो संयमनीशोभाआदर ॥ ७९ ॥

वस्त्रपात्रतनुपुस्कादिभि शोभया न खलु संयमस्य सा ॥ तां तदत्र परिहाय संयमे किं यते न यतसे शिवार्थ्यपि ॥ इतिचोत्तरार्द्धपाठ ॥८०॥

अर्थ ॥ वस्त्रपात्रेति एपाठांतर एश्लोकनुंपूर्वार्द्ध पूर्वनीपरेजाणवुं अनेउत्तरार्द्धनी

व्याख्याकहेछे तस्मात्कारणात् तेकारणमाटेहेसाधो ते वस्त्रादिकनी शोनागमीने जोमुक्तिनोअर्थीछोतो जिनप्रणीत चारित्रनेविषे केमउद्यमकरतोनथी ॥ ३० ॥

शीतातपाद्यान्नमनागपीह परीषहांश्चेत्क्षमसे विसोढु ॥
कथ ततोनारकगर्भवास दुःखानिसोढासि भवांतरे त्व ॥३१॥

अर्थ ॥ हवेपरीषह सहेवाआश्री उपदेशआपेछे हेमुनिजोतु सयमनेविषे टाढाउ तापप्रमुख थोडापणपरीषह सहेवानेसमर्थनथी अनेकायरथायछे तोनवातरेनेविषे नरकतथा गर्भवासनादुःख केम सहीस एटले नरकादिकना दुःखसहेवाथीतो परीषहनादुःखनु सहेवुनजुछे एमजाण ॥ ३१ ॥

मुने न किं नश्वरमस्वदेह मृत्पिंडमेन सुतपोव्रताद्यै ॥ निपी
डय भीतीर्भवदुःखराशे र्हित्वात्मसाच्छैवसुख करोषि ॥ ३२ ॥

अर्थ ॥ हवेसाधुने तपप्रमुखनु उद्यमकरवुकहेछे हेसाधु एविनाशशीक तथा आखरपोतानुनही एहवोजेदेहरूप माटिनुपिंड तेहने भलाजिनाज्ञासहित तपव्रतप्रमुखे करी दमीने ससारनादुःखसबधी सर्वभयछांडिने मुक्तिसबधी सुखते पोतानेवश केमनथीकरतो ॥ ३२ ॥

यदत्र कष्ट चरणस्य पालने परत्र तिर्यड्नरकेषु यत्पुन ॥तयोर्मि
थ सप्रतिपक्षता स्थिता विशेषदृष्ट्यान्यतर जहीहि तत् ॥३३॥

अर्थ ॥ हेसाधुजेइहा श्रीजिनशासनेविषे चारित्रपालवानीकष्टछे अनेपरभवे तिर्यचनरकादिकनेविषेजे कष्टछे तेबेहुकष्टने परस्परे प्रतिपक्षपणुरहेछे एटलेजिहां चारित्रकष्टछे तिहातिर्यचनरकनु कष्टनथी अनेजिहा तिर्यचनरकादिकना कष्टछे तिहां चारित्र कष्टनथी तेमाटेविशेषदृष्टियें विचारी तेबेमाथी एककष्टनेमूक ॥ ३३ ॥

शमत्र यद्विंदुरिव प्रमादज परत्र यच्चाब्धिरिव द्युमुक्तिग ॥ तयोर्मि
थ सप्रतिपक्षता स्थिता विशेषदृष्ट्यान्यतरद्गृहाण तत् ॥३४॥

अर्थ ॥ हवेसुखनुग्रहवुकहेछे हेसाधोइहा चारित्रमाप्रमादकरवाथीजे सुख तेबिदुजेटलुछे अनेसयमना पालवायकीजे देवलोकमुक्तिनासुख तेसमुद्रसरखाछे तेबन्नेसुखने परस्परप्रतिपक्षपणुछे जिहाप्रमादसुखतिहा मुक्तिसुखनथी अने जिहां मुक्तिसुख तिहाप्रमादसुखनथी माटेविशेषेविचारी बेमाथी सारजाणेतेने आदर॥३४॥

अथवा॥नियंत्रणायाचरणेऽत्र तिर्यक् स्त्रीगर्भकुंभीनरकेषु या च ॥
तयोर्मिथः सप्रतिपक्षभावा द्विशेषदृष्ट्याऽन्यतरां गृहाण ॥३५॥

अर्थ ॥ हवेगुरुपारतंत्रआश्रयीकहेछे हेसाधु!इहांजिनशासनमां चारित्रनेविषेजे गुरुपारतंत्र्यादिकत्रणप्रकारनो परवशपणुंछे अने तिर्यंचनाअवतारमां तथास्त्रीनागर्भमा तथा कुंभीतेयणोजसांकडामुखवाळुंनारकीने उपजवानुंस्थानकतेमां उपनाजेनारकीते खंडोखंडथयी बाहेरनिकळेछे तेहनेविषेजे परवशतापणुंछे तेबेहुने परस्परेंप्रतिपक्षीपणुंछे एटले जिहांचारित्रनी नियंत्रणाहोय तिहांतिर्यंच स्त्रीअने नरकादिकनी नियंत्रणानहोय अनेजिहां तिर्यंचस्त्रीनरकादिकनी नियंत्रणाहोय तिहां चारित्रनी नियंत्रणानहोय माटेविशेषदृष्टियेंविचारीने तेबेमांथी एकनियंत्रणानेआदर ॥३५॥

सहतपोयमसंयमयंत्रणां स्ववशतासहने हि गुणो
महान्॥शिवं गुण इति वा पाठः॥ परवशस्त्वतिभूरि स
हिष्यसे न च गुणं बहुमाप्स्यसि कं च न ॥ ३६ ॥

अर्थ ॥ हवेपरवशेदुःखसहेवाकरता पोतानावशेंदुःखसहेवुंभलुंछे तेकहेछे हेसाधु!तुं चोथप्रमुखतप तथा नियमअभिग्रहादिक ते यम तथासत्तरभेदें संयमसंबंधी एत्रण नियंत्रणाछेतेनुंसहनकर केमके एत्रण नियंत्रणाओते पोताने स्वाधीनपणे सहनकरवीतेते महोटो गुणछे तथापाठांतरे एथकी शिवंगुणके० मुक्तिरूपीओगुण होय अने जे अतिपरवशपणे एकेंद्रियादिकमां पराधीनथको घणीजनियंत्रणाओ सहीस तिहां अकामनिर्जरासिवाय अधिकुंगुणमात्र कांइपणपामीसनही॥ ३६ ॥

अणीयसासाम्यनियंत्रणाभुवा मुनेऽत्र कष्टेन चरित्रजेन च॥ यदि
क्षयो दुर्गतिगर्भवासगा सुखावलेस्तत्किमवापि नार्थितं॥ ३७ ॥

अर्थ ॥ वलीप्रकांतरेतेहिजकहेछे हेसाधो! आजन्ममां समतारूपनियंत्रणातेसंबंधीकष्ट तथाचारित्रसंबंधीजे अल्पमात्रकष्ट तेणेकरी दुर्गति अने गर्भावाससंबंधी असुखनासमूह क्षयथायछे तोतेथी सुवांछितपणुंतुंनपाम्यो अर्थात्पाम्योज ॥३७॥

त्यज स्पृहां स्वः शिवशर्मलाभे स्वीकृत्य तिर्यङ्नरकादि दुःखं ॥
सुखाणुभिश्चेद्विषयादिजातैः संतोष्यते संयमकष्टभीरुः ॥ ३८ ॥

अर्थ ॥ हवेप्रमादवंतने रीतेकरीकहेछे हेसाधु!तुं जो विषयादिकथीउपनोजे सुखनोलेश तेणेकरी संतोषपामेछे अने संयमनाकष्टथीबीहेछे एरीतेंतो तें नियंत्र ...

नरकनुउ खरूबुजकरीने स्वर्गमोक्षनासुखपामवानो वांछामूकीदीधी एटलेअणुमात्र सुख उपर राच्योथको स्वर्गमोक्षनु अतुल्यसुखहारेछे एनावार्थछे ॥ ३८ ॥

समग्रचिंतार्तिहतेरिहापि यस्मिन् सुखं स्यात्परमं रतानां ॥
परत्र चेंद्रादिमहोदयश्री प्रमाद्यसीहापि कथं चरित्रे ॥३९॥

अर्थ ॥ हवेचारित्रथी इहलोकेतथा परलोकेसुखछे तेकहेछे चारित्रमारक्तथयना एहवाजेनावसाधु तेहने सर्वचिंताना निवारवाथकी इहलोकेपणं परमअनुपमसुख होय अनेपरलोकेपण इंद्रादिकनीसंपदा तथा मोक्षनीसंपदाहोय तोहेसाधो एहवुजे चारित्रतेनेविषे रह्योथकोतु सुप्रमादकरेछे यत देवलोकसमाणोअ परियाउमहेसि ण ॥ रयाणअरयाणच महाणरयसारिसा ॥ १ ॥ पुन नच राजभयं नच चोरभयं न च वृत्तिभयं न वियोगभयं॥इह लोकसुखं परलोकहितं श्रमणत्वमिदं रमणीयतरं॥२॥

महातपोध्यानपरीषहादि न सत्वसाध्यं यदि धर्तुमीश ॥ तद्भावना
किं समितीश्च गुप्ती धत्से शिवार्थिन् न मनःप्रसाध्या ॥ ४० ॥
अनित्यताद्या भज भावना सदा यतस्व दुःसाध्यगुणेऽपिसंयमे॥जि
घत्सया ते त्वरते ह्ययं यमः श्रयन् प्रमादान्न भवाद्बिभेषि किं॥४१॥

अर्थ॥ हवेजेबहुकष्टकरीशकेनहीतोते सुखसाध्यधर्मकरे तेकहेछे हेसाधु तु पराक्रमतपुरुषने साधवायोग्य एहवाजे मासखमणप्रमुख महातप तथा प्राणायामादिक ध्यान तथाक्षुधादिकपरिसह धरवानेसमर्थनथी तोहेमोक्षनावांछक केवलमनेकरीने साधिसकीयेंएहवीजे अनित्यादिकभावनातेनुसेवनकर ॥ ४० ॥ तथावलीप्रकारांतरेकहेछे हेसाधोतुअनित्यताप्रमुख वारभावना ने सदाभज अनेदुःखें साधवायोग्य मूलोत्तरगुणछे जेना एहवासंयमनेविषेपण सुकुमालपणुछांमीउद्यमकर केमके मृत्युते तुजने ग्रासकरवानीवांछायें उतावलुथायछे दिनदिनप्रते ढुकडुआवेछे मा टेप्रमादसेवतोथकोपण मनेकरीससारथकी बीहितोरहेजे ॥ ४१ ॥

हतं मनस्ते कुविकल्पजालैर्वचोप्यवद्यैश्च वपुः प्रमादैः ॥ लब्धी
श्च सिद्धीश्च तथापि वांछन् मनोरथैरेव हहा हतोसि॥४२॥हतं
मनो मे कुविकल्पजालैर्वचोप्यवद्यैश्च वपुः प्रमादैः ॥लब्धीश्च सि
द्धीश्च तथापि वांछन् मनोरथै रेव हहा विहन्ये ॥ इतिवापाठ ॥४३॥

अर्थ ॥ हवेसामग्रीविनापण महोटामहोटा मनोरथकरवा अफलछे तेकहेछे ह

साधुताहरोमनतें मागविकल्पनासमूहें विणसाडयुं अनेवचनपण मृषाजापणादि क पापेकरीविणसाडयुं वलीशरीरपण प्रमादजेमद्यादिकतेणेकरी विणसाडयुं एरीतें मनवचनकायारूप त्रणगुप्तिविणसाडी तोपण आमोसहीप्रमुखलब्धि तथामंत्रवि द्यादिकसिद्धिने वांछेछे माटे हाइतिखेदे मनोरथेकरीज पीडायछे जेमगाली दुध खां मप्रमुख सामग्रीविनापण कोइमूर्खक्षीरनाभोजननुं मनोरथधरतो अहर्निशविकल्पें ज पीडाय तेमतुपणपीडायछे ॥ ४१ ॥ तथावलीपागांतरें माहस्मन कुविकल्पजालें विणास्युं तथा अवद्यके० मृषाजापणादिकपापें वचनविणास्युं अनेप्रमादेकरीशरीर विणास्युं तोपण लब्धि अने सिद्धि प्रतें वांछतो थको हाइतिखेदे हुं मनोरथमात्रें ज सुंपीमाउंछुं इत्यादिक पहेलाकाव्यनुं पागांतर काव्यजाणवुं ॥ ४२ ॥

मनोवशस्ते सुखदुःखसंगमो मनो मिलेद्यैस्तु तदात्मकं भवेत् ॥
प्रमादचोरैरिति वार्यतां मिलच्छीलांगमित्रैरनुपंजयानिशं ॥ ४४ ॥

अर्थ ॥ हवेमननेसततसंगमांजोडवुं तेकहेछे हेसाधुताहरे सुखअने दुःखनोजे मि लाप तेमननेवशछे केमकेमनजेहनीसाथेमिले तेरूपीथाय जेम तैलने जेहवाफूलनो संगमिले तेहवीवासनामयथाय माटेमननेप्रमादरूपचोरसाथेंमलतो वारीने नित्ये शी लांगरथरूपजेमित्र तेनीसाथेंमेलव जेथकीतुजने सर्वथासुखसाथेंज मिलापथाय ॥ ४४

ध्रुवः प्रमादैर्भववारिधौ मुने तव प्रपातः परमत्सरः पुनः॥ गले न बद्धोरुशिलोपमोस्ति चे त्कथं तदोन्मज्जनमप्यवाप्स्यसि॥४५॥

अर्थ ॥ हवेयुक्तिविशेषेंकरी प्रमादनोपरिहारकहेछे हेसाधुप्रमादनाहेतुयेंकरी तु जनेसंसारमांपडवुंतो निश्चय थकीछे केमकेप्रमाद अनेसंसारने अग्निधुमादिकनीपरें नित्यबंधछे अनेवलीजो गलेबांधिमोटी शिलासरिखुं परप्राणीउपरमत्सरतुजनेछे तेवा रे संसारसमुद्रमांथी तरीनिकलवु केमपामिस माटेप्रमादअने मत्सरवेहुत्यज॥४५॥

महर्षयः केपि सहंत्युदीर्या प्युग्रातपादीन्यदि निर्जरार्थं ॥
कष्टं प्रसंगागतमप्यणीयोपीछन् शिवं किं सहसे न भिक्षो॥ ४६ ॥

अर्थ ॥ हवेकष्टसहेवाआश्री उपदेशआपेछे केटलाकमहाऋषी तेजइवाहुस्वा मी दीक्षितचार व्यवहारीपुत्रनीपरें शीतादिक परिसहनासहनारा वली उग्रके० घ णोकठिण आतपके० तडकाप्रमुख कष्टने उदरीनेपण निर्जरानेअर्थेंसहेछे तेवारेहे साधुतुं मुक्तिनेतोवांछेछे तेवारें प्रसंगथी उदयआव्युं एहवोस्वल्पमात्र कष्टप्रतेकांन थीसहेतो अनेकष्टसह्याविना मुक्तिकेमपामिस एभावार्थ ॥ ४६ ॥

नरकनुड खकनुजकरीने स्वर्गमोक्षनासुखपामवानी वाग्गामूकीदीरी एटलेअणुमात्र सुख उपर राच्योथको स्वर्गमोक्षनुं अतुल्यसुखहारेछे एनावार्थछे ॥ ३८ ॥

समग्रचिंतार्तिहतेरिहापि यस्मिन् सुखं स्यात्परमं रतानां ॥
परत्र चेंद्रादिमहोदयश्री प्रमाद्यसीहापि कथं चरित्रे ॥३९॥

अर्थ ॥ हवेचारित्रथी इहलोकेतथा परलोकेसुखछे तेकहेछे चारित्रमारक्तथयेला एहवाजेनावसाधु तेहने सर्वचिंताना निवारवाथकी इहलोकेपण परमअनुपमसुख होय अनेपरलोकेपण इंद्रादिकनीसंपदा तथा मोक्षनीसंपदाहोय तोहेसाधो एहवुं चारित्रतेनेविषे रह्योथकोतुं सुंप्रमादकरेछे यत देवलोकसमाणोअ परियाओमहेसि ण ॥ रयाणअरयाणच महाणरयसारिसा ॥ १ ॥ पुन नच राजभयं नच चोरभयं न च वृत्तिभयं न वियोगभयं॥इह लोकसुखं परलोकहितं श्रमणत्वमिदं रमणीयतरं॥२॥

महातपोध्यानपरीषहादि न सत्वसाध्यं यदि धर्तुमीश ॥ तभावना
किं समितीश्च गुप्ती धत्से शिवार्थिन् न मनःप्रसाध्या ॥ ४० ॥
अनित्यताद्या भज भावना सदा यतस्व दुःसाध्यगुणेऽपि संयमे॥जि
घत्सया ते त्वरते ह्ययं यमः श्रयन् प्रमादान्न भवाद्बिभेषि किं॥४१॥

अर्थ॥ हवेजेबहुकष्टकरीशकेनहीतोते सुखसाध्यधर्मकरे तेकहेछे हेसाधु तु पराक्रमवतपुरुषने साधवायोग्य एहवाजे मासखमणप्रमुख महातप तथा प्राणायामादिक ध्यान तथाक्षुधादिकपरिसह धरवानेसमर्थनथी तोहेमोक्षनावांछक केवलमनेकरीने साधिसकीयेंएहवीजे अनित्यादिकभावनातेनुसेवनकर ॥ ४० ॥ तथावलीप्रकारांतरेकहेछे हसाधोतुअनित्यताप्रमुख बारभावना ने सदाभज अनेदु खें साधवायोग्य मूलोत्तरगुणने जेना एहवासंयमनेविषेपण सुक्रमाळपणछांडीउद्यमकर केमके मृत्युते तुजने ग्रासकरवानीवांछायें चतावलुआयछे दिनदिनप्रतें ढुकडुआवेछे मा टेप्रमादसेवतोयकोपण मनेकरीससारथकी वीहितोरहेजे ॥ ४१ ॥

हत मनस्ते कुविकल्पजालैर्वचोप्यवद्यैश्च वपुः प्रमादैः ॥ लब्धी
श्च सिद्धीश्च तथापि वाञ्छन् मनोरथैरेव हहा हतोसि॥४२॥हतं
मनो मे कुविकल्पजालैर्वचोप्यवद्यैश्च वपुः प्रमादैः ॥लब्धीश्च सि
द्धीश्च तथापि वाञ्छन् मनोरथै रेव हहा विहन्ये ॥ इतिवापाठ ॥४३॥

अर्थ ॥ हवेसामग्रीविनापण महोटामहोटा मनोरथकरवा अफलछे तेकहछे ह

नाशुताद्गेमननें मावानिरन्तनाग्रमृर्के विणमाढ्युं अनेंवचनपण मृषान्नापणादि क. पादेकरीविणमाढ्युं वलीशरीरपण प्रमादजेमयाद्क्तिपणेकरी विणमाढ्युं एरीनें मनवचनकायारूप त्रणगुप्तिविणमाडी तोपण आमोसहीप्रमुखलब्धि तथामंत्रवि द्यादिकसिद्धिने वांब्रे माटे हाइनिर्गेंद मनोरथेंकरीज पीडायने जेमगालीडुर खां ड्प्रमुख सामग्रीविनापण कोइमूर्खकीर्ग्नानोजननुं मनोरथयकी अव्हानिशविकल्पें ज पीडाय तेमनुपणपीडायने ॥ ४२ ॥ तथावलीपावांनरे मासूंमन कुविकल्पजालें विणाड्युं तथा अवयकें० मृषानाषणादिकपापें वचनविणाड्युं अनेप्रमादेकरीशरीर विणाड्युं तोपण लब्धि अने सिद्धि प्रतें वांबतो थको हाइनिर्वेदे हुं मनोरथमात्रें ज सुंपीडावंबुं इत्यादिक पदेशाकाव्यनुं पावांतर काव्यजाणवुं ॥ ४३ ॥

मनोवशस्ते सुखडुःखसंगमो मनो मिलेद्यैस्तु तदात्मकं नवेत् ॥
प्रमादचोरैरिति वार्यतां मिलच्छीलांगमित्रैरनुपंजयानिशं ॥ ४४ ॥

अर्थ ॥ हवेमननेंमतसंगमांजोडवु तेकहेने हेसाधुताहरे सुखअने दुःखनोजे मि लाप तेमननेवशबे केमकेमन जेहनीसाथेंमिले तेरूपीथाय जेम तेजने जेहवाफूलनो संगमिले तेहवीवासनामयथाय माटेमननेप्रमादरूपचोरसाथेमलतो वारीने नित्ये शी लागरथरूपजेमित्र तेनीसाथेमेलव जेथकीतुजने सर्वथासुखसाथेंज मिलापथाय ॥ ४४

ध्रुवः प्रमादैर्भववारिधौ मुने तव प्रपातः परमत्सरः पुनः ॥ गले न बद्धाश्मशिलोपमोऽस्ति च त्कथं तदोन्मज्जनमप्यवाप्स्यसि ॥ ४५ ॥

अर्थ ॥ हवेयुक्तिविशेषेकरी प्रमादनोपरिहारकहेने हेसाधुप्रमादनाहेतुयेंकरी तु जनेसंसारमापडवुतो निश्चय थकीने केमकेप्रमाद अनेसंसारने अग्निधुमादिकनीपरें नित्यबंधने अनेवलीजो गलेबांधिमोटी शिलासरिखुं परप्राणीउपरमत्सरतुजनेबे तेवा रे संसारसंमुद्रमांथी तरीनिकलवुं केमपामिस माटेप्रमादअने मत्सरबेतुल्यज॥४५॥

महर्षयः केपि सहंत्युदीर्या प्युग्रातपादीन्यदि निर्जरार्थं ॥
कष्टं प्रसंगागतमप्यणीयोपीठन् शिवं किं सहसे न भिक्षो॥ ४६ ॥

अर्थ ॥ हवेकष्टसहवाथाश्री उपदेशआपेने केटलाकमहाक्रषी तेजइवाहुस्वा मी दीक्षितचार व्यवहारीपुत्रनीपरें शीतादिक परिसहनासहनारा वली उग्रके० घ णांकठिण आतपके० तडकाप्रमुख कष्टने उदरीनेपण निर्झरानेअर्थेसहेबे तेवारेंहे साधुतुं मुक्तिनेतोवांबेने तेवारें प्रसंगथी उदयथासुं एहवोस्वल्पमात्र कष्टप्रतेकांन थीसहेतो अनेकष्टसह्याविना मुक्तिकेमपामिस एजावार्थ ॥ ४६ ॥

यो दानमानस्तुतिवंदनाभिर्न मोदतेऽन्यैर्न तु दुर्मनायते ॥ अला
भलाभादिपरीषहान् जयन् यतिः सतताढपरो विमत्वक ॥ ४७॥

अर्थ ॥ हवेअसाधुपणा तथा साधुपणानो भेददेखाडेछे जेलाभअलाभादिक प
रिषहनेजीपतोथको ग्रहस्थनुआप्यो आहारउपधिप्रमुखदान तथासत्कारस्तुतिप्रमु
खमान इत्यादिकेकरी हर्षपामेनही अनेअलाभ अपमान प्रहारादिके दुहवायनही
तेहिजपरमार्थथी यतिजाणवो अने अपरके० बीजाजेदान वंदनादिकथी हर्षपामे
तथा अलाभनदादिकथी दुहवाय तेयतिनावेषे विडंबकके० नटरूपजाणवा ॥४७॥

दधद्गृहस्थेषु ममत्वबुद्धिं तदीय तप्त्या परितप्यमानः ॥ अ
निर्वृतात्मकरणः सदा स्वैः स्तेपा च पापैर्भ्रमिता भवेसि॥४८॥

अर्थ ॥ हवेमनोगुप्तिराखवानेअर्थे यतियें ग्रहस्थनी चिंताकरवीनही तेकहेछे
हेसाधुतुग्रहस्थनेविषे ममत्वनीबुद्धिधरतोथको अनेग्रहस्थनीचितायें तपतोथको
पोतानापापें तथाग्रहस्थनापापें निरंतरव्याकुलचित्तवंतथको संसारमांभमीस॥४८॥

त्यक्त्वा गृहं स्वं परगेहचिंता तप्तस्य को नाम गुणस्तवर्षे ॥
आजीवि काऽस्ते यतिवेषतोऽत्र सुदुर्गतिः प्रेत्य तु दुर्निवारा ॥४९॥

अर्थ ॥ हेसाधु पोतानुघरमूकीने वलीपारका श्रावकादिकनाघरनी चितायेंकरी
तुजनेशोगुणछे एकघरमूकी घणाघरनीचितायें कोइगुणनथी आभवमांतोतुजने यति
वेषनाप्रतापथी आजीविकाचालेछे पणपरभवेतो तुजने अतिशयदुर्गतिदुर्निवारछे
एहवा नरकादिकछे पणपरभवें दुर्गतिनोवारनारकोइनथी एभावार्थ ॥ ४९ ॥

कुर्वे न सावद्यमिति प्रतिज्ञां वदन्नकुर्वन्नपि देहमात्रात् ॥ शय्या
दिकृत्येषु नुदन् गृहस्थान् हृदा गिरा वाऽसि कथं मुमुक्षुः ॥ ५०॥

अर्थ ॥ हवेतुकायामात्रथीसाधुछो पणमनवचनथीसाधुनथी तेकहेछे हेमुनितुं
टकसाधुतु नित्यप्रतें आवश्यककरतां सव्वं सावज्जजोगं पच्चखामि जावज्जीवाए तिविहं
तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं इत्यादिकपाठकहीने हुसर्वसावद्यकरुनही एहवीप्र
तिज्ञाकरतोथको तेसावद्यमात्र शरीरथीज अणकरतोथकोथयो पणशय्या जेउपाश्र
यप्रमुख कार्यनेविषे ग्रहस्थनेप्रेरतोथकोछो तो तेमांमनथी अनेवचनथी मुमुक्षु तेजा
नोंछे एटले मन वचन कायापेंकरी सावद्यमूके तेहनेमुमुक्षुकहियें अनेतुताकायामा
त्रथीज सावद्यकरतोनथी पणमनथी सावद्यचितवेछे अनेवचनथी सावद्यप्रेरेछे
तेमाटेमनथी तथा वचनथी मुमुक्षुनथी मात्रकायाथीज मुमुक्षुछे एभावार्थ इहांतर

[illegible] ॥ ५० ॥

कथं महत्त्वाय ममत्वतो वा मात्सर्यमिच्छस्यपि संपरेषां ॥ न वे [illegible] ॥५१॥

अर्थ ॥ [illegible] ॥५१॥

रंकः कोपि जनाभिभूतिपदवीं त्यक्त्वा प्रसादाद्गुरोर्वेषं प्राप्य यतेः कथंचन कियच्छास्त्रं पदं कोपि च ॥ मौखर्यादिवशीकृतर्जुजनतादानार्चनैर्गर्वभाग् आत्मानं गणयन्नरेंद्रमिव धिग्गंता द्रुतं दुर्गतौ ॥५२॥

अर्थ ॥ रंकथ्रात्माने हलकापणुनिवारवा उपदेशछे कोइकपुरुषपूर्वे अहस्थाव स्थाये सकलोय अनेलोकोने उपहास्यकरवायोग्य निंदाकरवायोग्य विविधप्रकारनी लोकोनीसेवा करवायोग्यलोय पछेगुरुनापसायथी तेअवस्थात्यजी यतिनोवेषपा मीनपायणाकष्ट वाडुकशास्त्रनुंभणवुपामी तथातेमावली कोइकआचार्यउपाध्याया दिकपदपामिने वाचालपणा प्रमुखकरीने भोलालोकोनेवशकरी तेहनाकरेला जे दानपूजा सत्कारादिक तेणेकरीने अहंकारधरतो थको पोताना आत्माने राजातु ल्यगणे पण एमनजाणेजे एते श्रीगणतिमात्र एनवि दानपूजादिक जे थायछे तेतो श्रीजिनेश्वरना मार्गने थायछे तेमाटेहाइनिग्येद तेप्राणी उतावलु दुर्गतिजे नरकादिक तेमाजाय माटेगर्वनकरवुं ॥ ५२ ॥

प्राप्यापि चारित्रमिदं दुरापं स्वदोषजैर्विषयप्रमादैः ॥ भवां बुधौ धिक पतितासि भिक्षो हतोऽसि दुःखैस्तदनंतकालं॥५३॥

अर्थ ॥ हवेदुर्लभचारित्रपामिने विषयप्रमादत्यजवा तेप्रकारांतरेकहेछे हेमिद्धु
दुर्लभएहवुजे चारित्रतेपामिने जोपोतानावांकथीउपना एहवाजे विषयप्रमाद तेणे
करीतुसंसारसमुद्रमांपमीश तेवारें ते अनंताकालसुधी चारगतिसंबधीनाउ खेकरीने
पीडाइश तेमाटेधि कारछेतुजने जेतुचारित्रनेविषे. उजमाजथातोनथी ॥ ५३ ॥

कथमपि समवाप्य बोधिरत्नं युगसमिलादिनिदर्शनाद्दुराप ॥
कुरु कुरु रिपुवश्यतामगच्छन् किमपि हितं लभसे यतोऽर्थितं शं॥५४॥

अर्थ ॥ हवेदृष्टांतसहित बोधनुदुर्लभपणुकहेछे हेसाधुतुयुगसमिलादिक दृष्टांत
तेकरी दुर्लभएहवु समकेतरूपरत्न तेघणेकष्टेंपामिने आगलेंवद्यमाण विषयादिक
शत्रु तेहनुआधीनपणुत्यजतुथको कांइकआत्मानुहितजे संयमादिकतेकर जेथकीवां
छितसुखपामे चुल्लग पासग धन्ने जूए रयणेय सुमिण चक्केअ ॥ चम्मजुगे परमाणु दस
दिछंता मणुयलंभे॥ १ ॥एदशदृष्टांतनानामजाणवा ॥ पुव्व तेहुजलजुग अवर ते तस्सइ
लसमिलाउ ॥ जुगछिड्डंमि पवेसो इय संसइउ मणुअलंभो ॥ १ ॥ इत्यावश्यके ॥५४॥

द्विषस्त्विमे ते विषयप्रमादा असंवृता मानसदेहवाचः ॥ अस
यमाः सप्तदशापि हास्या दयश्चबिभ्यच्चर नित्यमेभ्यः ॥५५॥

अर्थ ॥ हवेनामथकी शत्रुदेखामीने तेथीदूररहेवानो उपदेशआपेछे हेसाधो वि
षयजेशब्दादिकपांच तथाप्रमादजे मद्यादिक पांच अने असंवृतकहेता मोकला मू
क्या एवाजे मनवचनकायानायोग तथा प्राणातिपातादिक पांचअव्रत अनेपांचेंइंद्रि
यनुं अणजीतवु तथाक्रोधादिक चारकषायनो अपरिहार अनेमनवचनकाया त्र
णयोगने दु प्रवर्त्तियेप्रवर्त्तावबु एसर्वमलीसत्तर असंयमनास्थानक तथावली हास्य
रति अरति भय शोक दुगंछा ए हास्यषट्क एटला ताहाराशत्रुछे तेमाटेएथकी
सदाकाल बीहीतोथको विचरजे ॥ ५५ ॥

गुरूनवाप्याप्यपहाय गेहं मधीत्य शास्त्राण्यपि तत्ववाचि ॥
निर्वाहचितादिभराद्यभावे प्यूषे न किं प्रेत्य हिताय यत्नं ॥५६॥

अर्थ ॥ हवेसर्वसामग्री मल्याछतांपण आत्महितकानथीकरतो तेकहेछे हेऋषि तु
घरछांमीने गुरुजेधर्माचार्य तेहनेपामीने तथातत्वप्ररूपक शास्त्रजेसिद्धांत तेभणीने
पण तथानिर्वाहजेआजीविका तेहनीचिंता अनेआदिशब्दथी वस्त्रपात्र वसतिप्रमुख
नीचिंता अनेराजभय चोरभय इत्यादिकतेहनो भरजेसमूह तथावलीआदिशब्दथी
गृह राज देशांतर जलपथ प्रमुखव्यापार तेहनो अनावछतां पण परलोकना हितने

अर्थ कांइयमनथीकरतो एटले नकलसामग्रीने योगेपण जोआत्महितनथी साध तो नोपने घणोज शोचकरीश एनावार्थने ॥ ५६ ॥

विराधितैः संयमसर्वयोगैः पतिष्यतस्ते भवडुःखराशौ ॥ शास्त्रा णि शिष्योपधिपुस्तकाद्या भक्ताश्च लोकाः शरणाय नालं॥५७॥

अर्थ ॥ हवेसंयमग्रहीने संयमविराधनानकरवी तेकहेले हेयतितेविराध्या एहवा जे संयमनासर्वयोग एटले मूलगुणउत्तरगुणादिकविराध्यातेहेतुयेंकरीने संसारना डुःखसमूहमांपडतानुजने शास्त्रजेआगमादिक तथाशिष्यजे उपधीपुस्तकप्रमुख तथा वलीभक्तलोकजे श्रावकश्राविकादिक तेकोइशरणआपवाने समर्थनहीयाय पण एक संयम मात्रज अविराध्यो थको शरणदाइथाशे ॥ ५७ ॥

यस्य क्षणोपि सुरधामसुखानि पल्यकोटीर्नृणां द्विन वतीं ह्यधिकां ददाति॥ किं हारयस्यधम संयमजीवि तं तत् हा हा प्रमत्त पुनरस्य कुतस्तवाप्तिः ॥५८॥

अर्थ ॥ हवेसंयमेंजीवितनुं फलदेखाडी प्रमादनोपरिहार उपदेशेले हेसाधो संय मजीवितनुं क्षणजेमुहूर्त्तमात्र तेपणपुरुषनेनिश्चयथी साधिक बाणोकोमिपल्योपमल गें देवलोकनासुखआपे यडुक्तं प्रतिक्रमणसूत्रवृत्तौ सामाइयंकुणंतो समभावसा वउअघडियडुगं ॥ आउंसुरेसु बंधइ इत्तिय मित्ताइ पलियाइ ॥१॥ बाणवइकोडीउ लरकगुणसहिसहस्सपणवीस॥ नवसयपणवीसाए सतिहा अडभाग पलियस्स ॥२॥ इति बाणुकरोड ओगणसाठलाख पचीसहजार नवसेंपचीश एटलापल्योपम अनेएक पल्योपमना नवभागकरीयें एहवाआठनवमांश अनेतेउपरवली एकनवमांशनो एक तृतीयांश एटलुदेवायु वेंघमीना एकसामाइकथीवंधाय ते आंके करी लिखियेलैयें ९२ ५९ २५ ९ २५, ८१. तो हाहाइतिखेदे हेअधमनीचप्राणी तु संयमेंजीवितने के महारेले हेप्रमादवतफरीनेतुजने एसयमनीप्राप्ति क्यांथीथाशे ॥ ५८ ॥

नाम्नापि यस्येति जनेऽसि पूज्यः शुद्धात्ततो नेष्टसुखानि कानि॥ त त्संयमेऽस्मिन् यतसे मुमुक्षो ऽनुभूयमानोरुफलेपि किं न ॥५९॥

अर्थ ॥हवे द्वारसमाप्तिना मंगलनेअर्थे संयमनाशुभफल देखाडी शिक्षाकहेले हे मोक्षार्थीसाधु जेसयमना केवलनाममात्रथीज एटलेसंयमी एहवुंनाममात्र धराव्या थीज प्रत्यक्ष प्रकारेंकरी लोकनेविषे तुं पूजनीकथयोछो तोशुद्धनिर्मल संयमथी शाशास्वर्गमोक्षादिक वांछितसुखनहोय एटलेसंयमथी अनीष्टसुख होयज तेमाटेप्र

स्यरूद्दृश्यमान जेहनु महाफलअनुजवायने एहवाए संयमनेविषे तु काउद्यम नथ कर्तो सर्वथा उद्यमकरवोज युक्तछे ॥५७॥ इति श्री अध्यात्मकल्पद्रुमे यतिश क्षानिधानोनाम त्रयोदशोधिकार संपूर्ण ॥

अथ सामान्यतो यतीन् विशेषधर्मस्यगृहिणश्चाश्रित्य मिथ्यात्वनि वरोपदेश ॥ मिथ्यात्वयोगा विरतिप्रमादा नात्मन्सदा संवृणु सौख्य मिच्छन् ॥ असंवृता यद्भवतापमेते सुसंवृता मुक्तिरमा च दद्यु ॥१॥

अर्थ॥ हवे यतिने तथासम्यक्तमूलबारव्रतधारक श्रावकने साधारण मिथ्यात्वावि कषाय योग निरोधोपदेश तथा संवरोपदेश नामा चौदमो अधिकारकहेछे तिहांप्रथम मंबधनाहेतुजे मिथ्यात्वादिक तेहनुंसंवरकहेछे हेआत्मातु सुखनेवाछतो होयतामिथ्या त्वजे अनियग्रहिकादिकपांच तेमांअभिग्रहिक तेपोतानाशास्त्रादिकना ममत्वथी काग्र हराग्यो तेकुतीर्थिपाखंडादिक बीजुअनाभिग्रहिक ते सर्वे देवा सर्व गुरुव सर्व धर्म आराध्या एहवोअभिप्राय जेसामान्यप्राकृतलोकोनोते त्रीजुअभिनिवेशि" सुतुं यथास्थित स्वरूपजाणेथके पण कोइदुष्टाभिनिवेशना वशथी पोतानु पत्तानेअर्थ गोष्टीमाहिलादिकनीपेठे असत्यरूपणानुकरवु चोथोसांशयिक त " कतत्वनेविषे आसानूके आसानू एमसंदेहधरवो पांचमु अनाभोगिकते " नारशथकी एकेंद्रियादिकनेविषे जीवादिकतत्वनु अणजाणवु " " तथा अशुभमनोयोगादिकत्रण अनेअविरतिते प्राणातिपातादिकपांच तथाप्रमा मद्यादिक पांच एचारेनेसदाकाललगे संवरवु केमके एचारने अणसंवरवाथका रनातापप्रत्ये आपे अने संवर्याथका मुक्तिरूपिणी लक्ष्मीनेआपे ॥ १ ॥

मन संवृणु हे विद्वन्नसंवृतमना यत ॥

रे एरीतेंजीवते वचन तथाकायायें अशक्तथकोहोयतो पण मात्रएकमननाज अ
वरथकी नंडुजमत्स्यनीपेठें डुर्गतिगामीथाय ॥ २ ॥

प्रसन्नचंडराजर्पे र्मन·प्रसरसंवरौ॥नरक
स्य शिवस्यापि हेतुन्नूतौ क्षणादपि ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ वलीतेउपरज दृष्टांतकहेछे हेप्राणि मननुंप्रसरजे डुर्ध्याननीप्रवृत्तिअने सं
जे डुर्ध्यानथीनिवृत्ति तेवेहु एकक्षणमात्रमांजेम प्रसन्नचंड्राजऋषिनेनरकनां अने
किनापण कारणथया केमकेतेने मननाडुर्ध्यानथी एकक्षणमात्रमां सातमांनरकनुंद
मेजव्युं अने तेजमनना संवरथी एकक्षणमां केवलज्ञानपण उपार्ज्युं. ॥ ३ ॥
हवेसंक्षेपथीतेप्रश्नचंड्राजर्षिनोसंबंधलखीयेंछयें क्षितिप्रतिष्ठितपुरमां प्रसन्नचं
राजा राज्यकरताहता अन्यदातिहां श्रीवीरस्वामी समोसर्या प्रसन्नचंड्राजा सह
रिवारें वांदवाआव्यो देशनासांजली वैराग्यपाम्यो पुत्रनेराज्येस्थापी श्रीवीरपासे
तेदीक्षालीधी अनुक्रमेगीतार्थथयो अन्यदाविहारकरतो राजगृहनगरेंआव्यो ति
जिनकल्पीनी तुल्यनानेअर्थें स्मशानमां काउसग्गधरीरह्योछे एटलामांश्रीवीरस्वा
राजगृहनगरेंसमोसर्याछे नगरलोकसर्व जगवंतने वांदवाजायछे एटलामांकोइए
वेवणिक तेक्षितिप्रतिष्ठितनगरथीआव्याछे तेमांथीएकवणिक प्रसन्नचड्राजर्षिने
इबोल्यो केधन्यछेआपणाराजानेजे राज्यलक्ष्मीतृणनीमाफकत्यजीने ध्यानाधिरूढथ
उग्रतपकरेछे तेमांजबीजोवणिकबोल्यो केअहोधि.कारछेएनातपने एनुंमुखजो
योग्यनथी केमकेएणेआपदावालकपुत्रने राज्यआपी मूढथइनिकल्यो अनेपाछलतो
माडेवीजाराजायेंआवीनेवालकनुंराज्यहरीलेवानगरघेर्युंछे नगरतथादेशनालोकसर्व
नाथथयाथका वहुतजपेछे माटेएनाअंगमे घणुंअनर्थथाशे तेथीएनेंधुधर्मआराधेछे
सांजलीप्रसन्नचड्राजर्षि ध्यानथीचूकीने चिंतववालागो केअहोमुजवेगा माहारुं
ज्यजे एवोकोणछे एमरौड्ध्यानमां व्यासथइने मनमायेंज महासंग्रामकरवामांम्ड्यो
समयेंश्रेणिकराजा श्रीवीरने वांदवाजातांमार्गमां तेकाउसग्गधरसाधुदेखी नक्ति
केवादी तेहनीउग्रतपस्याने अनुमोदतो समोसरणेपहोंतो त्यांश्रीवीरनेवांदीनेपु
युं जेस्वामीएप्रसन्नचंड्राजर्षि ध्यानाधिरूढअवस्थामां मेंवांद्यो तेअवस्थाने समयें
ल करेतो शोगतिपामे नगवंतेंकह्युं सातमीनरकपामे तेमांजश्रेणिकसंभ्रांतथइ
हवेप्रसन्नचंड्राजर्षियें मनथीसंग्रामकरतां सर्वशस्त्रखुट्या अनेएककोइमहोटा श
नीनाघेसुभकरता आयुधनवेनष्टथयाछे त्यारेजाण्युंजे माथेंलोहनोटोपपहेर्योछे ते
इनेशत्रूनेमारुं एमचिंतवी माथेहाथनाख्यो एटलेमस्तकतल्कालनुं लो[illegible]

ने मनमांसंवेगपाम्यो पश्चात्तापकरवालाग्यो हाहायामेंछुंडुर्ध्यानचितव्यु मिथ्यामिदु डंगाड्यो एवामाफरीश्रेणीके वीरनेपुछ्यु हेस्वामीआसमये राजर्षिकाळकरेतोशी निपामे नगवतेअनुत्तरविमानकह्यु तेसांजळीविस्मितथइने श्रेणिकेपुछ्यु कहाना मी पहेलेप्रश्नेतोतमे नरककह्यो तेएतपस्वीनेकेमसनवे अनेएकमुहूर्तनेयांतरे अनु त्तरविमानकह्यु तेपणअसमजस अथवा भ्रांतिकरीनेमे अन्यथासांभ ळ्यु तेवारे नगवते यथास्थित सर्ववृत्तांतकरी श्रेणिकनोसंदेह टाळ्यो एटलामां देवदुंदुभिना नादसांभळीने श्रेणीके पुछ्यु हेस्वामि आमहोत्सवक्यांथायछे नगवतेकह्युने प्रस प्रचंद्रराजर्षिने केवळज्ञानउपन्यु त्यांदेवता महोत्सवकरेछे एमएप्रसन्नचंद्रराजर्षिने एकमुहूर्तनेअंतरे मननोव्यापार नरकहेते अनेमुक्तिहेतेपणथयो ॥

मनोऽप्रवृत्तिमात्रेण ध्यानं नैकेंद्रियादिषु ॥ धर्म्यं
शुक्लमनः स्थैर्यं नाजस्तु ध्यायिनः स्तुमः ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ कोइपवनसाधनादिकथी मननोरोधनिरर्थकछे तेकहेछे केवळमननीअप्र वृत्तिजे मनोव्यापाररहितपणु तेणेकरीने एकेंद्रियादिकजे एकेंद्रिय बेंद्रिय तेंद्रिय चौ रेंद्रिय असंज्ञिपंचेंद्रिय तेहनेविषेध्यानजे मनोरोध लक्षण तेशुनथी एटलेपवनसा धनादिक मनोरोधकरवाथी जोध्यानथायतो एकेंद्रियादिकनेविषेथाय केमकेतेहने नस्वभावे मननेअभावकरी मनोव्यापारनीप्रवृत्तिनथी तेथीपवनसाधनादिकतेरोध मात्रलक्षण ध्याननोउपयोगीनथी श्वासरोधादिक क्लिष्टकर्मथी सांहसु मनआर्त ध्यानेथाय पणजेधर्मध्यान अनेशुक्लध्यान तेणेकरीने मननीस्थिरतानेभजे एवा ध्यानवानपुरुष तेनेनमस्कारकरियेछैयें एटलेध्यानते तनुजप्रमाणछे इतिभाव ॥ ४ ॥

सार्थं निरर्थकं वा यन्मनः सुध्यानयंत्रितं ॥ विरतं
दुर्विकल्पेभ्यः पारगांस्तान् स्तुवे यतीन् ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ जेहनुंमनसार्थकते सफळछे अथवानिरर्थकते निष्फळछे तेमननुं शुभध्यानेकरीनियंत्रित एटलेरोकायुंथकुं दुर्विकल्पजे अशुभसंकल्पनामनसायथकी विरमुंछे एवायतिनेनमस्कारकरुछु जे संसारनापारगामी साधुतेहनेनमस्कारकरुंछु ॥ ५ ॥

वचोऽप्रवृत्तिमात्रेण मौनं के के न बिभ्रते ॥ निर
वद्यं वचो येषां वचोगुप्तांस्तुस्तुवे ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ कोइवचनमात्रनु मौनपणुं तेवचननीअप्रवृत्ति एटलेमात्र वा चानो व्यापाररोकवाथकी कोण कोण एकेंद्रियादिक तथा पंचेंद्रियमांपण गर्भादि

पथी तथामनुष्यमांपण मुंगाबोबडाप्रमुखप्राणी मौनपणानेनथीधरतासुं एटलेतेसर्वेमौ नपणोजधरेछे तोतेथी तेहने वचनगुप्तिवंतनकहियें पण जेहनुंवचन निरवद्यके० पाप रहितहोय एटलेवचनबोल्यानी शक्तिछतांपण सर्वथासावद्यवचननबोले तेनेवचनगुप्ति वंतकहियें तेवानेदुंसत्वुंछुं पणमात्रमौनपणोज धरवायी वचनगुप्तिवंतनकहियें ॥६॥

निरवद्यं वचो ब्रूहि सावद्यवचनैर्यतः ॥ प्रया
ता नरकं घोरं वसुराजादयोद्भुतं ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ हवेदृष्टांतेकरीने सावद्यवचननुं अनिष्टफलदेखाडेछे हेप्राणितुं पापरहि तवचनबोल केमके सावद्यवचनेकरीने वसुराजा प्रमुख ते घोररौद्र एहवोजे नरक तेने पाम्यां तेवसुराजानोसंबंध श्रीहेमाचार्यकृत रामचरित्रमांथी विस्तारेंजोइलेवो ए मजाणी असत्यवचन सावद्यवचननो परिहारकरवो ॥ ७ ॥

इहामुत्र च वैराय दुर्वाचो नरकाय च ॥ अग्निद
ग्धाः प्ररोहंति दुर्वाग्दग्धाः पुनर्नहि ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ वलीतेहिजकहेछे जेदुर्वचनो तेआभवमां अनेपरभवमांपण वैरकारीथा य अनेवलीनरकदाइपणथाय जेमाटेअग्नियेंकरीदाधाजेवृक्षादिक तेफरीनवपल्लवथा य पण दुर्वचननादाधाजेमनुष्य तेनवपल्लवनथाय एटलेस्नेहांकुर तेनेप्रगटेनही केम के दुर्वचनथी उपनोजे वैरभाव तेजन्मांतरेपणनमटे इतिभावः ॥ ८ ॥

अतएव जिना दीक्षा कालादाकेवलोद्भवं ॥ अव
द्यादिभिया ब्रूयु ज्ञानत्रयभृतोपि न ॥ ९ ॥

अर्थ॥ एटलामाटे दीक्षालीधापछे केवलज्ञानउपजेंतिहांलगें जिनजेतीर्थंकरदेव तेमति श्रुत अवधि एत्रणज्ञानना धारकछतापण अवद्यजेपाप तथाआदिशब्दथी वचनते ध्यानविघातादिकछे एमजाणी तेहनाभयथी बोलेनही यद्यपि भगवंतने छ द्मस्थपणे मनपर्यवज्ञाननी सत्ताहोय तथा पिइहात्रणज्ञानना धारककह्या तेजाणि येंछेयेंजे मनपर्यवज्ञाननुंतो मात्र मनना पर्यायजाणवानुंज सामर्थ्यछे तेमाटेआ चार्यें इहांकह्युनही अनेउपाध्यायश्री रत्नचंद्रगणिकृत एजग्रंथनी टीकामांपण एम जभरव्युंछे वलीविशेषबुद्धिवंतेविचारवुं ॥ ९ ॥

कृपया संवृणु स्वांग कूर्मा ज्ञाननिदर्शनात् ॥ सं
वृतासंवृतांगा यत् सुखदुःखान्यवाप्नुयुः ॥ १० ॥

अर्थ ॥ हवेकायसंवरकहेछे हेप्राणि तुंकरुणायेंकरीने कांचवानादृष्टांतनानि

दर्शनथकी पोतानीकायानेसवर केमके कायानासंवरवत अने असंवरवतते अनुक्रमे सुखअनेदुःखपामे एटलेकायाना संवरवततेसुखपामे अनेअसंवरवतते दुःखपामे जे मनेकाचबाहता तेमांथीएकेपोताना अंगसंवर्यातो पापीशीयालथीमृत्युनपाम्यो अने बीजेपोतानाअंगसंवर्यानही तो पापीशीयालथी अकालमृत्युपाम्यो एदृष्टांत सवि स्तरपणे श्रीज्ञातासूत्रना चोथाअध्येनथी जाणवु ॥ १० ॥

कायस्तम्भान्न के के स्यु स्तरुस्तम्भादयो यत ॥ शि

वंतु क्रिया येषा कायस्तांस्तु स्तुवे यतीन् ॥ ११॥

अर्थ ॥ केवलकायने स्थिरतामात्रथीतोतरुजे वृक्ष तथा अचेतनजे स्तंभादिक ते [illegible] अर्थातजेकोइ कायव्यापारना असमर्थछे तेसर्वकायसंवर [illegible] पणजेमनीक्रियाजे कायव्यापार तमोक्षनेअर्थेहोय तेहने कायगुप्तिवंत कहिये छैये जेकायव्यापारने नतेसामर्थ्ये पण अशुभकायव्यापारने रुधे अनेशुभक्रियानो [illegible] करे तेहने कायगुप्तिवंतकहिये इतिभाव ॥ ११ ॥

श्रुतिसंयममात्रेण शब्दान्कान् के त्यजति न ॥

इष्टानिष्टेषु चैतेषु रागद्वेषौ त्यजन्मुनि ॥ १२॥

अर्थ॥ [illegible] तेमांप्रथम श्रोत्रेंद्रियआश्री कहेछे [illegible] एकेंद्रिय बेंद्रिय तेंद्रिय चोरेंद्रिय तथापंचेंद्रिय [illegible] श्रोत्रेंद्रियेविकल होय तेशब्दनाविषयने नथी [illegible] अर्थात् [illegible] मृदंगादिकवाजित्र तथास्त्रीगायनप्रमुखना [illegible] तथा [illegible] प्रमुखनाशब्द तेविषे रागअनेद्वेषत्यजे तेवारमुनियाय

चक्षु [illegible] स्पालोकांस्त्यजति न ॥

इष्टानिष्टेषु चैतेषु रागद्वेषौ त्यजन्मुनि ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ [illegible] एकेंद्रिय बेंद्रिय तेंद्रिय [illegible] नयीयजताथु अर्थातत्यजेजन्न पणइष्ट [illegible] तथाअनिष्ट असभ्य [illegible] प्रमुख [illegible] विषय [illegible] अने द्वेष [illegible] तेवार न मुनियाय ॥ १३ ॥

[illegible] गंधान् कान् के त्यजति न ॥

इष्टानिष्टेषु चैतेषु रागद्वेषौ त्यजन्मुनि ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ [illegible] काणकाण शुभाशुभगंधने [illegible]

वेंद्रियादिक तथावीजापण घ्राणेंद्रिये विकलथयेला प्राणि नथीत्यजतां अर्थातत्य जेजछे पणइष्टजे फुलप्रमुख अनेअनिष्टजे अमेध्यादिक एवाजेगंध तेहेनेविषे राग अने द्वेषत्यजे तेवारे तेमुनिथाय ॥ १४ ॥

जिव्हासंयममात्रेण रसान्कान्के त्यजंति न ॥
मनसा त्यज तानिष्टान् यदीछसि तपःफलं ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ केवलजिव्हाना संवरमात्रथीज कोणकोणशुभाशुभ रसने पृथ्वीकायादिक एकेंद्रिय तथावीजापण भावरसनेंद्रियथी विकलथयेलाप्राणी ते नथीत्यजतासुं अर्थातत्यजेजछे पणहेआत्माजो तुं तपनुंफलवांछेछे तो तेजेइष्टवांछित मधुरादिकरस तेने मनसाकहेतां मनोयोगपूर्वक समता परिणामेकरीनेत्यज ॥ १५ ॥

त्वचःसंयममात्रेण स्पर्शान् कान्के त्यजंति न ॥
इष्टानिष्टेपु चैतेपु रागद्वेपौ त्यजन्मुनिः ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ केवलत्वचाजे स्पर्शनेंद्रिय तेहनो संयमजे स्पर्शज्ञानना नलेवानी शून्यता तेणेकरीने कोणकोणप्राणी शुभाशुभस्पर्शने नथीत्यजता अर्थातत्यजेजछे यद्यपि एकेंद्रियादिक सर्वजीवने स्पर्शनुं विपयछेयछे तथापिकुष्टादिक रोगनावशथकी त्वचानीबहिरिनाधणीने स्पर्शनुंज्ञाननजहोय एवावछे पणइष्टजेस्त्रीस्पर्शादिक तथा अनिष्टजे ताप शीत मांस ममा प्रमुखनेविषे राग द्वेषनेत्यजे तेवारेंजमुनिथाय॥१६

वस्तिसंयममात्रेण ब्रह्म के के न बिभ्रते ॥
मनःसंयमतो धेहि धीर चेत्तत्फलार्थ्यसि ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ हवेवलीस्पर्शनेंद्रियमां विशेषकहेछे वस्तिके० मूत्राशय एटलेगुह्येंद्रिय ते नासंवरमात्रथीज ब्रह्मचर्यधारणनथीकरतां सुं एटले नारकी संमूर्छिमपंचेंद्रिय प्रमुख तथा पुरुषरूपनपुंसक अने स्त्रीरूपनपुंसक इत्यादिक कोणकोणप्राणी मैथुननीअश क्तिथी शीलधारणनथीकरता एटलेतेसर्वे ब्रह्मचर्यवतजछे पणपरिणामविना असक्ति थीपालवुं तेनिष्फलछे माटेहेधीरआत्मा जो तुंब्रह्मव्रतनाफलनो अर्थीहोयतो मनने संवरेंकरीने छतीशक्ते ब्रह्मव्रतधारणकर ॥ १७ ॥

विपयेंद्रियसंयोगा भावात्के के न संयता ॥ राग
द्वेपमनोयोगभावाद्येतु स्तवीमि तान् ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ हवेसामान्यथी सर्वेइंद्रियादिक तेहनोसंयोगजे एकत्रमलवुंते तेनाअभा वथी कोणकोणसंवरवंतनहोय एटलेविषयनोयोग मल्याविनासर्वेसंवरवंतजछे पण

जेमहापुरुषछे ते तो विषयादिकनो योगछतापण रागद्वेष अने मनयोगना अनावथी एटलेजेमनथकी रागद्वेषरहितपणे संवरवतछे तेओनेहुंस्तवुंछुं ॥ १८ ॥

कषायान् संवृणु प्राज्ञ नरकं यदसंवरात्॥
महातपस्विनोप्यापु करटोत्करटादयः॥१९॥

अर्थ ॥ एमइंद्रियआश्रित संवरकहीने हवेकषायआश्रितकहेछे प्राज्ञके० हेविवेकीप्राणी कषायजे क्रोधादिक तेनुंतुसंवरकर केमकेएकषायना असंवरथकी करट अने उत्करट प्रमुख महातपस्वी महानुभाव तेपणनरकनेपाम्या एकरट अनेउत्करट बे ब्राह्मणमासीयाइ भाइहता ते वैराग्यथकी दीक्षालइ उग्रतपकरी अन्यदाकुणालनगरियें कोटनावरनाजामा चोमासुरह्या तिहानगरना जलप्रवाहनेपूरें साधुरखेतणाइजाय एमजाणीदेवतायें कुणालानगरीउपर वरसादथनाव्यो कुणालाशिवायबीजेसर्वत्रवर्षादवरस्यु केटलेक दहाडे तेवातजाणी नगरलोके ताडनातर्जनाकरी तेसाधुनेकाढ्या तेवारे क्रोधशेखर करटबोल्यो वर्षमेघकुणालायां तेवारे उत्करटबोल्या दिनानि दश पंच च वलीकरटबोल्यो मुशलप्रमाणधारानि वलीउत्करटबोल्यो यथारात्रौ तथा दिवा तेवचनथी अहोरात्रमुशलधारायें कुणालानगरीउपर मेघवूठो तेहथीकुणालानगरी लोकसहिततणाइगइ महाअनर्थथयो तेवारपछे त्रीजेवर्षे साकेतपुरेंतपापनेअणआलोइनेमृते करटअनेउत्करटबेमरीने सातमीनरके कालनामा नरकावासमां त्रीससागरोपमनेआयुषे नारकीपणे अवतर्या एमजाणी कषायनोसंवरकरव

यस्यास्ति किंचिन्न तपोयमादि ब्रूयात् स य त्ततदता परान् वा॥ य
स्यास्तिकष्टाप्तमिद तु कि न तद्भ्रशतो मदृणुते स योगान् ॥३०॥

अर्थ॥हवेयोगमनोयोगादिकनो संवरकहेछे जेप्राणिनेकाइ तपसंयमादिकनथी अनेनिवृत्ति तेप्राणिजेमतेम असत्यबोले तथाअन्यजीवनेपीडाकरे एटले अव्रती जेनथ ञ्यकरे तेनेरहेछे पणविरतिवंतप्राणितो एतपसंयमादिक घणुजकष्टेप्रातिथायछे एमजाणी तद्भ्रशतो के० एमहातपसंयमनो विनाशथाय एमवीहीतोथको मनोयोगादिकने केमनसवरे एटलेविरतिवंतने सर्वथासंवरकरवुज एभावार्थछे ॥ ३० ॥

भवेत्समग्रेष्वपि संवरेषु परं निदानं शिवसपदा य ॥ त्यजन्
कषायादिजदुर्विकल्पान् कुर्यान्मनः संवरमिद्धधीस्तं ॥ ३१ ॥

अर्थ ॥ हवेवलीमननासंवरनु श्रातिस्यतापणुकहेछे जेमननो संवरछे ते बीजा जेटला संवरछे तेसर्वमा मोक्षसपदानु परमकारणछे ते माटे विशपनुद्धिवं

पुरुषतो कषायादिकथीउपनाजे कुविकल्पते त्यजतोथको मननोसंवरकरे एटले मु क्तिनुं मुख्यकारणजाणीने विवेकीपुरुषे प्रथममननुं संवरकरवुं इतिभावः ॥ २१ ॥

तदेवमात्मा कृतसंवरः स्यात् निःसंगताभाक् सततं सुखेन॥
निःसंगभावादथ संवरस्तद्द्वयं शिवार्थी युगपद्भजेत ॥२२॥

अर्थ॥हवे ए अधिकारनो उपसंहारकहेछे तेमाटे एमपूर्वोप्रकारें कृतसंवरके० संव रवतजे आत्मा तेसदाकालें सुखेकरीने निःसंगपणानेभजे अथवा वली निःसंगपणाथी संवरथाय एटले एबेहुनो अन्योन्यकार्यकारण भावजाणवो केमके कोइकनेनिःसंग पणाथी संवरआवे अनेकोइनेसंवरथी निःसंगतापणुंआवे माटेमोक्षार्थीपुरुष तेसंव र अनेनिःसंगता एबेनेसमकालेसेवे ॥ २२ ॥ इति श्रीअध्यात्मकल्पद्रुमे मिथ्यात्वादि संवरोपदेशाख्य श्चतुर्दशोऽधिकार समाप्त ॥ १४ ॥

अथ शुभवृत्तिशिक्षोपदेशः॥आवश्यकेष्वातनु यत्नमाप्तो दितेषु शुद्धेषु त मोपहेषु ॥ न हंत्यभुक्तं हि न चाप्यशुद्धं वैद्योक्तमप्यौषधमामयापहं॥१॥

अर्थ ॥हवेशुभप्रवृत्तिशिक्षा एहवेनामे पन्नरमोअधिकारकहेछे एअधिकारमां य तियोग्यशिक्षा यतीनेजाणवी अनेश्रावकयोग्यशिक्षा श्रावकनेजाणवी इहांप्रथम आ वश्यक करवायोग्यजाणीने आवश्यकआश्रयी उपदेशकहेछे हेसाधु तथा हेश्रावक तुं पापनानिवारक अनेसर्वज्ञभाषित एवांजेशुद्धनिर्मल आवश्यक सामायिकादिक तथाअवश्यकरणीय पोसह उपवास आलोयणादिक तेहनेविषेउद्यमकर तेनाउपर दृष्टांतकहेछे जेम वैद्यनुकह्युजेऔषध तेनखाधुंथकुं तथाअशुद्धजेकाचु हरितालप्रमुख तेखाधुंथकुपण रोगनिवारक नथाय तेम सर्वज्ञभाषित आवश्यकजाणीनेपण तेह नीक्रियानकरीयें अथवाअशुद्धक्रियाकरिये तोतेहथीकर्मक्षयनथाय तेमाटेदोषरहित शुद्धक्रियायेंकरी आवश्यकादिकनोउद्यमकरवो एउपनयछे इहांप्रसंगथी सामायिकना दोषलखियेंछैये १ वस्त्रेंतथाभुजायेंकरीने पलांठीबांधे २ आसनआघुपाछुंफेरवे ३ चपलपणेसर्वदिशायेंजोवे ४ गृहसंबंधीसावद्यकर्मकरें ५ भींतीस्थंभादिकेंओठंगीबे से ६ अंगोपांगमोडे ७ आलसमोडे तथाधर्मकार्येआलसकरे ८ हास्यपणेंकरकडा व जाडे ९ शरीरनोमेलउतारे १० खाजिखणे ११ विसामणकरावे १२ निद्राकरे ए बारदोषकायथकीजाणवा तथा १ कुवचन कोइनुंमर्मनिंदादिकबोले २ सहसात्कारे अविचार्युंबोले ३ आर्त्तिमयविसंस्थुलवचनबोले ४ आपछंदेंबोले ५ सूत्रभणतो अ

थवानवकारगुणतो वचनसङ्क्षेपकरे ६ कलहविवादकरे ७ राजकथादिकविकथाकरे
८ हास्यनावचनकहे ए सपदारहितसूत्रनणे १० जावाग्रावजानाग्रवेश आवे ए
शदोपवचनथीजाणवा वली १ निर्विवेकीमनेकरे २ यशकीर्तिनीवांगायकरे ३ धनना
जनेअर्थेकरे ४ गर्वथीकरे ५ जयथीकरे ६ धनपुत्रादिनेअर्थेनियाणुकरे ७ सामायि
कनाफलनो सदेहकरे ८ रीसथरीसामायिककरे ए विनयरहितसामायिककरे १०
नक्तिरहितसामायिककरे एदशदोपमनथीउपजे एम मन वचन अने कायाना मलीने
बत्रीशदोपसामायिकनात्यजवा तथावादणाना ३२ दोप अने काउसग्गना १ए दो
प ते नाष्यादिक ग्रथथी जाणीने त्यजवा ॥ १ ॥

तपासि तन्याद्विविधानि नित्य मुखे कटून्यायतिसुन्दराणि ॥ वि
घ्नति तान्येव कुकर्मराशि रसायनानीव डुरामयान् यत् ॥२॥

अर्थ ॥ हवेतपप्रवृत्तिआश्रयीउपदेशछे मुखके० प्रथमकरतीवेलायेतो मुखदुःखदायि
कसहेवापडे तेमाटे कडवाछे पण आयतिके० उत्तरकाले सुखनाकरनार एहवाजाति
विधप्रकारना ठठ अठम दशमादिक तप तेनित्येंकरवा केमकेतेतपज कर्मनासमूहने
निवारेछे तेउपरदृष्टातकहेछे जेमरसायन पारो हरिताल सुवर्णादिक औषधिओ
तेहिज ज्वरअनेक्षयादिक डुष्टरोगोनेनिवारे तेम इहापण उपनयलेवु ॥ २ ॥

विशुद्धशीलागसहस्रधारी जवानिश निर्मितयोगसिद्धि ॥
महोपसर्गास्तनुनिर्ममः सन् नजस्व गुप्ती समितीश्च सम्यक् ॥३॥

अर्थ ॥ हवेतपकरनार प्रायेगीजवतजोइये तेमाटेशीलआश्रयीउपदेशछे हेसाधु
तुविशुद्धनिर्मलएवाजे अढारसहस्र शीलांगरथतेने धरतोथको नित्य निर्मित याग
सिद्धिके० निपजावीछे अष्टागयोगनीसिद्धिजेणे अथवायोगजे मनोयोगादिक तद
ना ३ प्रणिधानना निवारवारूप समाधिनी सिद्धिकर एटलेशीलागधरतोथको मनव
चनकायाना योगवशकर एनावार्थछे वलीदेहनेविपे ममत्वरहितथको देवादिकनाक
रेला उपसर्ग तेनेसहनकर अनेपाचसमिति तथात्रणगुप्ती तेहनेनज ॥ ३ ॥

स्वाध्याययोगेषु दधस्व यत्न मध्यस्थवृत्त्यानुसरागमार्थान् ॥
अगारवो नैक्ष्यमटानिपादी हेतौ विशुद्धे वशितेन्द्रियौघ ॥४॥

अर्थ ॥ हवेजोनारनने मनस्थिरकरवानिमित्त जेसिद्धातादिकनु स्वाध्याय अने

नणाववुं तेहनुं योगजे मनवचनकायायेंकरी नित्यअभ्यास करवानेविषे उद्यमकरे वलीआगमनाजे अर्थ तेमध्यस्थवृत्तियें कदाग्रहरहितपणे अनुसरे एटले कदाग्रहें करीने जिनवचननाअर्थनी परुपणाजूठीनकरे वली अगारवके० रुद्धिगारव रसगारव सातागारव तेणेरहितथकुं अनेविशुद्धिनिर्मलहेतुजे मोक्षसाधन तेहनेविषे विषादरहितथकु एटलेशुद्धक्रियाकरतां अविषिन्नचित्तथकुं अनेवलीवशकीधोछे इंद्रियनोसमूहजेणे एहवुंथकुं नेक्षेजेउंचनीचकुल शुद्धमानआहारतेहनी गवेषणाकरे ॥४

दृढस्व धर्मार्थितयैव धर्म्यान् सदोपदेशान् स्वपरादिसाम्यात् ॥
जगद्धितैषी नवभिश्च कल्पैः ग्रामे कुले वा विहराप्रमत्त. ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवेसज्झायनुंफलते शुभउपदेशछे तेमाटेशुभोपदेशआश्रीकहेछे हेसाधो तुं पोताना अनेपारकानेविषे समानपणे उपदेशकर एटले आमाहारोभक्तछे दाताछे धनाढ्यछे एहवानेधर्मकहुं अथवा आ मिथ्यात्वी रुपणदरिद्रीछे एहवानेउपदेशकों एकहुं इत्यादिककल्पना त्यजी केवलधर्मार्थीपणेकरीनेज पण आहारवस्त्रादिकने अर्थेनहीं एप्रकारें नित्यधर्मसंबंधीयाजे उपदेशते कहेतोरहे अनेवली सर्वसंसारीजीवने हितवांछतोथको नवकल्पेकरीने ग्रामनगरादिकनेविषे शुभ उपदेशकरतोरहे तथाविहारकरवानी अशक्तें कुलके० ग्रामनगरादिकनो एकप्रदेशतेनेविषे प्रमादरहितथकुं विहारकर इहांकल्पते मागसिरप्रमुख आठमास जेऋतुबद्धकाल तेहनाआठकल्प अनेश्रावणादिक चारमास चोमासना तेनोएककल्प एगीते सर्वमलीने नवकल्प जाणवा

कृताकृतं स्वस्य तपोजपादि शक्तीरशक्ती. सुकृतेतरे च॥ सदा
समीक्षस्व हृदाऽथ साध्ये यतस्व हेयं त्यज चाव्ययार्थी ॥६॥

अर्थ ॥ हवेशुभोपदेशनाकहेनारने कृत्याकृत्यनोविचारजोइयें तेमाटेतेआश्रयीकहे छे हेसाधु तथाहेश्रावक तुंपोतानुं तप जप प्रमुखजेकर्म ते कृत्याकृत्यकहेता एटलुंमेंकीधुं एटलुमेनथीकीधुं एहवुंविवेचन तथाशक्ति अनेअशक्ति तथापोतानुंसुकृत अनेदुःकृत एटलांवाना पोतानामनसाथेंसदायविचारीने तेवारपछे मोक्षार्थीथकुं साध्यजे साधवायोग्य तपोनुष्ठानादिक तेहनेविषेउद्यमकर अनेवली हेयकहेतां त्यजवायोग्य जेविषयकषायादिक तेहनेत्यज सत्पुरुषने चित्तरूपिणीभूमिनेविषे गुरूपदेश तेबीजवृद्धिरूपक्षेप पछेतेमां विचाररूप जलनानिंचवाथी सुकृतरूपवृक्ष विस्तारपामेतेमाटे मोक्षार्थियें हेयउपादेयहेपना विचारपूर्वक धर्मोद्यमकरवो ॥ ६ ॥

परस्य पीडापरिवर्जनात्ते त्रिधा त्रियोग्यप्यमला सदाऽस्तु ॥
साम्यैकलीनं गतदुर्विकल्पं मनोवचश्चाप्यनघप्रवृत्ति ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ हवेजेविचारवतहोयते त्रियोगीनिर्मलजोइये तेमाटेतेत्र्याश्रयीकहेने हेआ त्मात्रियोगीजे मनवचनकायाना त्रणेयोगतेणेकरी सदाइनिर्मलथा एटलेमर्वनीवउप रे हितबुद्धिराखीने मनवचनकायानायोग निर्मलकर एजावार्यछे केमके परनेपीडाव र्जवाथकी काययोगतो निर्मलथयोज अनेतेकाययोगनी निर्मलतायी मनपणसमता येलीन अनेदुर्विकल्परहितथाय तथावचनपण पापव्यवहाररहितथाय इहांत्रा यॆ काययोग सुगमछे माटे जुदोकरीने नकह्यो ॥ ७ ॥

मैत्री प्रमोद करुणा च सम्यक् मध्यस्थताचानय साम्यमात्मन् ॥
सद्भावनास्वात्मलय प्रयत्नात् कृताविराम रमयस्व चेत ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ हवेएत्रियोगीनेनिर्मलताते मैत्र्यादिभावनाथीथाय तेमाटेतेकहेने हेआ त्मातु मैत्रीतथाप्रमोद तथाकारुण्य अनेमध्यस्थता ए चारभावना तेआत्मानेविषे आण अनेवलीतेभावनायेंकरी सम्यक्प्रकारे समताआण वली प्रयत्नात्के० पर्फु तवीर्यफोरववाथी चित्तने आत्मलयके० ध्यानलीन अनेध्यानथी अविच्छिन्न एहवु थकु शुभभावनाजे अनित्यादिक तेहनेविषेरमाड ॥ ८ ॥

कुर्यान्न कुत्रापि ममत्वभाव न च प्रभो रत्यरती कषायान् ॥ इहापि
सौख्य लभसेप्यनीहो ह्यनुत्तरामर्त्यसुखाभमात्मन् ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ हवेएभावनाओते ममत्वनात्यागथीहोय तेमाटेतेआश्रयीकहेने हेसमर्थ आत्मा जोतुकोइवस्तुनेविषे ममत्वनकरे अनेवली रति अरति अनेकषाय नकरे ए हवोतु वांछनारहितथको रहेतो आभवेज अनुत्तरविमानवासी देवतानाजेवु सुखपा मे केमके अनुत्तरवासी देवतामा स्वामिसेवकनो व्यवहारनथी तेमाटे ससारिक सुख जोना अनुत्तरविमाननो सुखते सर्वोत्कृष्टजाणवु ॥ ९ ॥

इति यतिवरशिक्षा योऽवधार्य व्रतस्थश्चरणकरणयो
गानेकचित्त श्रयेत ॥ सपदि भवमहाब्धिक्लेशराशि
स तीर्त्वा विलसति शिवसौख्यानन्त्यसायुज्यमाप्य ॥ १० ॥

अर्थ ॥ हवेअधिकारनो उपसंहारकहेने एप्रकारे यतिवरजे भलासाधु तेमनी

णथी नलाश्रावकपणलेवा तेसंबंधीनीजेशिक्षा तेनेचित्तमांधरीने एकाग्रचित्तथकुं चर णकरणयोगजे चरणसित्तरी अनेकरणसित्तरीनागुण तेनेजेसेवे तेसाधु तथा ते श्रावक शीघ्रके० उतावळुं क्लेशडुःखना समूहरूपजे संसारमहासमुद्र तेथकीतरीने मोक्षसु खनुं अनंतपणुं तेहनुं साम्राज्यके० जेसह्चारीपणुं तेपामीने वलीमोक्षनाअविनाशीसु खनीपरे पोतेपणला अविनाशीनावपामी विलसतिके० सर्वदासुखनेअनुनवे ॥१०॥

इति श्रीअध्यात्मकल्पद्रुमेऽशुभप्रवृत्तिशिक्षोपदेशाख्यः पंचदशोऽधिकारसमाप्तः

अथ ग्रंथोपसंहाराय साम्यसर्वस्वं ॥ एवं सदाभ्या सवशेन सात्म्यं नयस्व साम्यं परमार्थवेदिन् ॥ यतः करस्थाः शिवसंपदस्ते नवंति सद्यो नवन्नीतिभेत्तुः ॥ १॥

अर्थ ॥ हवेग्रंथनाउपसंहारनेअर्थे साम्यसर्वस्वनामें सोलमोअधिकारकहेछे हेप रमार्थनाजाण विवेकीपुरुष तुंएमपूर्वोक्तप्रकारें अभ्यासवशेंकरीने साम्यजेसमता ते हने सात्म्यकहेतां आत्मासाथे ऐक्यपमाड जेसमताथी नवन्नीतजे संसारसंबंधी नय तेहनेन्नेदवावाळतो एवोजेतुं तेतुजने मोक्षनी संपदाओ ते तत्कालमात्र करस्था कहेतां हस्तप्राप्तथाय ॥ १ ॥

त्वमेव दुःखं नरकस्त्वमेव त्वमेव शर्मापि शिवं त्वमेव ॥ त्व मेव कर्माणि मनस्त्वमेव जहीह्यविद्या मवधेहि चात्मन् ॥२॥

अर्थ ॥ हवेआत्माने अविद्यानोपरिहार अनेसमतानुंधरवुं कहेछे हेआत्मातुंदुः खनेकारणें प्रवर्त्त्यो माटे दुःखतेतुंजछे एमआगलपण सगलीवस्तुनुं आत्माआकार पणूंपजाणवुं वलीनरकनुंकारणतेपणतुंजछे वलीसुखपणतुंछे अनेमुक्तिपणतुंछे व लीकर्मपणतुंछे अने मनोव्यापारना प्रकाशकपणाथी मनपणतुंछे तेकारणमाटे अव ज्ञाजेधर्मकार्यनेविषे अनादरकरवो एटलेह्मणा धर्मनथीथातो तोपछेकरीश इत्यादि क कल्पना त्यजीने अवधेहिकहेता धर्मकार्यनेविषे सावधानरहे ॥ २ ॥

निःसंगतामेहि सदा तदात्मन्नर्थेष्वशेषेष्वपि साम्यनावात् ॥ अवेहि विद्वन्ममतैव मूलं शुचां सुखानां समतैव चेति ॥ ३॥

अर्थ ॥ हवेसर्वत्रपणे निःसंगपणानुं आध्यात्म्यपणुंकहेछे हेआत्मा तेकारणमाटे सकलपदार्थनेविषे समताजावथी सदाय निःसंगपणाने पाम अनेवली हेनिपुणप्राणि

सकलशोकनुमूल ते ममताजछे अनेसकलसुखनुंमूलते समताजछे एहवु जाणीने ममताने त्यज अने समताने आदर इतिनाव ॥ ३ ॥

स्त्रीषु धूलिषु निजे च परे वा सपदि प्रसरदापदि चात्मन ॥ त
त्वमेहि समता ममतामुक् येन शाश्वतसुखाद्वयमेषि ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ जेनि समताते ममत्वमुकवाथीजथायछे तेमाटेममतात्यजवानु उपदेशछे हेआत्मा ते पूर्वोक्तकारणथी तुममतारहितथको स्त्रीनेविषे अनेधूलिनेविषे वली स्वजननेविषे अनेपरशत्रूनेविषे तथा वलि सपत्तिनेविषे अने विस्तारपामतीआपदानविषे समतानेपामवेकरीने सरखोपरिणामराखजे एटलेमोक्षसुखनोनोक्ताथाइश ॥४॥

तमेव सेवस्व गुरु प्रयत्ना दधीष्व शास्त्राण्यपि तानि विद्वन् ॥ न दे
वतत्त्व परिनावयात्मन् येभ्यो नवेत्साम्यसुधोपनोग ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवेसमतातेज सकलपदार्थनो सारकरीनेउपदेशेछे हेविद्वन् हेआत्मन् तुउद्यमकरीने तेहिजगुरुनेसेव अनेगुरुसेवनाकरीनेशास्त्रपण तेहिजनण तथाशास्त्रनणीने तत्वरहस्यपण तेजचित्तमांचितव केजेगुरुथी अनेशास्त्रथी तथाजेतत्वथी समतारूपीयु जेअमृत तेनोउपनोग आस्वादपामे एटलेजेजेपदार्थनेतु समतानुकारणजाणे तेतेपदार्थनुसरूपकर केमकेबीजासर्वपदार्थ तेनिरर्थकछे ॥ ५ ॥

समग्रसच्छास्त्रमहार्णवेन्य समुद्धृत साम्यसुधारसोऽय ॥ निपी
यता हे विबुधा लनेध्व मिहापि मुक्तेः सुखवर्णिका यत् ॥६॥

अर्थ ॥ हवेआचार्यग्रथने उपसहरतो ग्रथनीउपादेयतादेखाडेछे हेपंमितजनो तमेसमग्र नलांजे धर्मशास्त्र तेरूपीयो जेमहासमुद्र तेहथीउधरयुजे एसमतारूपियु सुधारसके० अमृतरसतेप्रत्यें तुमें पीयताकहेता आदरसहितसानलो तयानणाथी तमेआलोकेपण मुक्तिनासुखनी वर्णिकाकहेता वानगीनेपामो केमकेसमतारसमय जीवते आलोकेपण मुक्तिसुखने अनुनवेछे ॥ ६ ॥

शातरसनावनात्मा मुनिसुदरसूरिनि कृतो ग्रथ ॥
ब्रह्मस्पृहया ध्येय स्वपरहितोध्यात्मकल्पतरुरेप ॥७॥

अर्थ ॥ हवेग्रथनेछेहे आचार्यपोतानुनाम अनेग्रथनुनाम जणाववाकहेछे स्वपरहितकहेता ग्रथकर्त्ताने तथापरजेश्रोताप्रमुख एवेहुनेहितकारी एवोजेअध्या

ल्पद्रुमनामेग्रंथ तेनपगन्नाधिराज श्रीमुनिसुंदरसूरियेंकीधो ते एग्रंथ पंमितें व्र ज्ञान तेह्नी वांछायें जणवु अथवा व्रह्मजे मुक्ति तेह्नीवांछायें चिंतववुं ॥ ७ ॥

इममिति मतिमानधीत्य चित्ते रमयति यो विरमत्ययं नवाडाक् ॥स च नियतमतो रमेत चास्मिन् सह् नववैरिजयश्रिया शिवश्रीः॥८॥

अर्थ ॥ हवेफलोपदर्शन छारें मंगलगर्भित उपसंहार वाक्यकहेने जेमतिवंत पुरुष अध्यात्मकल्पद्रुमनामे ग्रंथनेजणि पोताना चित्तनेविषेरमाडे गत्रदिवसचिंतवे तेपुरुष संसारथकी थोडाकालमां विरक्तथाय अनेवलीएह्नाज चितनथी तेपुरुषनेविषे सं सारूपीया शत्रुनीजे जयलक्ष्मी तेणेसहित शिवश्रीजेमोक्षलक्ष्मी तेमा रमिके०आश्र यीनेरहे एटलेतेसंसाररूप शत्रुनेजीतीने मोक्षरूपलक्ष्मीपामे. इतिअध्यात्मकल्पद्रुमे साम्यसर्वस्वनामा षोडशोधिकारः समाप्त.॥ १६ ॥

ए श्रीअध्यात्मकल्पद्रुमनामे ग्रंथनो बालावबोधार्थे उपाध्यायश्री रत्नचंद्रगणिकृत तथाउपाध्यायश्री विद्यासागरगणिकृत एवेटीकाजोइने में महारीबुद्धिने अनुसारें मुज सरखा स्वल्पबुद्धिवंत प्राणिना उपकारने अर्थे लेशमात्र लख्योछे तेमा अनाभोगथी तथाअज्ञानथी तथाभ्रांतिथी जेकांइसूत्रना तथाटीकाना अनुसारथी ओछुंअधकुं अयुक्त लखाणुंहोय तेह्नुं मिछामीदुक्कडं अथवाकिहांएक सुगमपणानेअर्थे किहांएक साहचर्यथी किहांएकरूढिथी जेकांइ विभक्ति वचन लिंग कारक अन्वय प्रमुखनो विपर्यास कीधो होय तेअपराध बहुश्रुत गीतार्थेक्षमवो तथा उपकारबुद्धें शुद्ध टाळीने शुद्धकरवुं.

अथ प्रशस्ति ॥ श्रीमत्तपगणगगनां गणनाससतरुणतरणिनिभ ॥श्रीराजविजयसू रिर्विजयं भुवि भूरि वितानयता ॥ १ ॥ योन्याक्षीदिनव यतं सुविहितानुष्ठानयच्छादर्शो लोक कोकमिव प्रबोधमनयन्नास्भि गोस्वामिवत् ॥क्लिष्टाटीकिटदर्पमुख्यजपटाभक्त वि भेदोज्वलान् यो वाचाजितमालवेश्वरनितश्चत्रप्रतापोन्वल ॥२॥ रत्नत्रयग्रथितनय मनुनदीय पट्टेत्वम्नविजयाह्वयसूरिरासीत् ॥ यत्न प्रशांतरजसा प्रशमार्गवेन रत्न करायितमनंतगुणोंचयत्नेः ॥ ३ ॥ तस्यान्वये निरविलभूतलगीतकीर्ति. श्रीहीररत्न इतिसूरिवरो विरेजे ॥ स्वर्ग गतोप्यदिविजननलनीलिनानि योद्यापि मुरत्यति तथ्य इवा रद्भु. ॥४॥ तत्पट्टभूषणमणिर्जयरत्नसूरि. सर्वांगणीर्गुणिषु भूरिगुणाश्रयो भूत ॥ श्री नावरत्न इति भावविदां वरेण्य तत्पट्टभृज्जयति संप्रति सूरिराजः ॥५॥ श्रीहीरर

मुख्या शिष्या मुनिमेलानिख्या ॥ श्रीजयचन्द्ररत्नविबुधा शास्त्रार्णवपारदृश्वान ॥६॥ श्रीसिद्धिरत्ननाम्ना पाठकवर्यास्तदन्वये तदनु ॥ श्रीहर्षरत्नवाचक, वरा वरोयोगुणेर्य या ॥ ७ ॥ लक्ष्मीरत्नगणीशा आसन् दुर्वादिदनुजजलीशा ॥ श्रीज्ञानरत्नगणयम दाभवा साप्रतं जयतु चिरं ॥८॥ तच्चरणकमलसेवा भृगस्तत्सगसमयतराग ॥ मुविदित कल्याणविमल गणिवरविहितार्थिनीनुन्न ॥ ९ ॥ बालावबोधवार्त्ता मध्यात्मद्रुम माख्यशास्त्रस्य ॥ मुनिहंसरत्न एता मतनोत्तनुबुद्धिसलहित्तां ॥१०॥ शोध्य सुतर्क भिर्यथो ऽयधीरनें प्रवाच्यमानश्च॥ सज्जावमपदाढर्य रावहर्के चिर जयतात्॥११॥

इति श्रीमुनिसुंदरसूरिकृतअध्यात्म
कल्पद्रुमो बालावबोधसहित संपूर्ण

॥ अथ श्री सीतलनाथाष्टक ॥

वृषभनतुयगति वृषद सदा अजितदर्पकदर्पकभेदक ॥ अमितशनवनीतिविवर्जितं जिनमहं प्रणमामि सुशीतलं ॥ १ ॥ नृढरथाख्यकुजागजिनदन सुमतिधाम विचक्षणपुगव ॥ रविविनिर्जितपद्मप्रभ वर जिनमहं० ॥ २ ॥ यमसुपार्श्वविभूषितविग्रह विशदचंद्रप्रभाननबंधुर ॥ सुविधिरजितभव्यजनव्रज जिन० ॥ ३ ॥ विबुधमादरशीतलवाग्भर सकलश्रेयसिकामकुटोपम ॥ सुवसुपूज्यपद शिवदायक जिन० ॥ ४ ॥ विमलनीरजपत्रविलोचन गृहमनतगुणस्य रूपापर ॥ सदयधर्म्मप्रवृत्ति प्ररूपक जिन० ॥ ५ ॥ जगति शांतिवितानविपादक धृतशम किल कुंथ्यमनिदितं ॥ विगतदर्पमर नविनौमिभ ॥ जिन०॥६॥पुगकषायजयप्रतिमल्लभ कनकवर्णधर मुनिसुव्रतं नमत दानवमानवराजितं ॥ जिन० ॥ ७ ॥ विततधर्म्मरथांगकनेमिक निखिलविटरपार्श्वमदूषण ॥ सकलमोहविनाशनवीरक ॥ जिन० ॥ ८ ॥ इति स्तुत श्रीनिजशीतलाख्य स्थित पुरे रायधनानिधाने ॥ श्रीवीरचंद्रस्य मजूकचंद्र नाम्ना विनेयेन वरा श्रिये स्तात् ॥ ९ ॥ इति श्रीमच्छीतलनाथाख्यदशमतीर्थाधिपतेरष्टक समाप्तम् ॥

नेश कुशलार्थिवल्लोततिवारिधार ॥ विशदावदातावज्ञिचित्तनामा नववार्धिपोत कु
लपाकनाथ ॥१७॥ कुञ्जक॥इन्द्रवज्राछद ॥एव मया सम्स्तुत आदिदेवो नूयात् सदा
सघगणस्य नूत्यं ॥ क्षेमकरो विश्वजगत्सुदीप कल्याणमागल्यकलापकोश ॥१८॥

॥ अथ सूर्यपुरीयश्रीसन्नवजिनस्तवनप्रारम्भ ॥

वसततिलकाछद ॥ काम नमोऽस्तु सततं जिनसन्नवाय चन्द्राननाय कमनाम्न
लोचनाय ॥ देहप्रन्नास्थगितलोकचमत्कराय दुर्ध्यानपादपविनेदनसिंधुराय ॥१॥
देवै स्तुताय नवसागरपारगाय कीर्तिप्रसूनसुरन्नीकृतविष्टपाय ॥ सन्मूर्तिकान्तिनिर्जि
जितमानवाय सेनांगकुक्षिवरशुक्तिकमौक्तिकाय ॥ २ ॥ अब्जोपमाय जिनशासननंदि
काय सत्प्यांख्यबंदरमनोरममडनाय ॥ नव्याब्जकाननविन्नासनन्नास्कराय नानाय
दानहरिचदनसन्निन्नाय॥३॥आदेयनामकलिताय शुन्नाशयाय सिष्यगनामिन्ननतास
लोलुपाय ॥ राद्धांतहार्दकथनोत्तरकोविदाय तेज प्रन्नावयशसामवनीश्वराय ॥४॥
यज्ञानमोहनपसंज्वरन्नेषजाय सौन्नाग्यनाग्यगुणरत्नकरडकाय ॥ अष्टापदाननपु
र्गिरिराजिनाय निर्ज्जितहसरतिरवेञनमानसाय ॥५॥ आव्हानमत्रविनिवारितपातक
य कल्याणमागरतरंगकलाधराय ॥ डुष्टारिचकजवणांबुधरोपमाय वाचासुधाश्रवण
विननागगाय॥ ६ ॥ सद्धर्ममार्गनिविदेशनदेशिकाय दु खौघवारणमृगइपराक्रमाय
नोकानिशापिमहिमाचजनूरणाय गर्वेजठनसुशोन्नितपत्कजाय॥७॥ सत्यापद्मिदि
रणाय जितेंडियाय शुद्धान्वयोन्नतिकराय रुपालयाय॥मिथ्यात्वतापशशिचन्दनशाय
य फुन्कर्मरापुन्नुजगाय नरार्चिताय॥८॥ सकल्पकल्पनविवर्जितमानसाय गांनीर्य
धैर्यमणिमनररोहणाय ॥सज्ञानबुद्धिवरदाय गुणाकराय कौशल्यवल्लिपरिवर्द्धनमेघा
य ॥ ए ॥ इन्द्रशालद ॥ स्तोत्र चतुर्थ्यंतविनक्तिसयुतं ध्यायन्ति ये सन्नवर्ण
ए ॥ निर्यन्ति तद्वाम्नि शुना समृद्धय कल्याणमपादनकामयेनर ॥१०॥
इूनविक्रीडितछद ॥ जर्थ्वीसेनिगृहं सदायजिनतं,श्रीमन्नवाख्य जिन समार्तड
मनान्ननवरगेत्नोपे नवाख्यां तट॥ देवाधीशनरेशशोनपटल संसेवित कामद सुचिर
सुन्नाग्यनोनमनिश सेवे मुदा सिद्धये॥ ११ ॥

॥ अथ श्रीसुविधिजिनस्तवनप्रारंन्न.॥

द्रुतविलंबितछद ॥ सुविधिनाथजिन नयनामृत सुविधिनाथजिन महिमानद
सुविधिनाथजिन नर्गजन सुविधिनाथजिन वरकेवल ॥ १ ॥ सुविधिनाथजिन द
न्नकर सुविधिनाथजिन नवद परं ॥ सुविधिनाथजिन ह्यतिकीर्तिद सुविधिनाथजि

नार्जा त्रिभुवननगरे स्फारकोटीरहीर ॥ चार्वाकारे प्रणेता प्रणतहितकर काम
दो मारिवार सर्वज्ञाख्यातनामा प्रकटितमहिमा प्राप्तकर्मारिपार १ ॥ तोटकछंद ॥
सुरमानवपूजितपाणिकज कमलोदयकारकधर्मधन ॥ विगतामयदूषणनम्मनति
श्रुतसागरसोमनिभो विमल ॥ २ ॥ इति प्रथमांतविनक्तिकाव्ययुग्म ॥ भुजंगप्रयात
छंद ॥ अजय्यं विभु विश्वपूज्य प्रसन्न जिन सन्प्रच गकर देवदेव ॥ सदाज्ञानव
ल्लीततों मेघमेक स्तुवे शांतिनाथ कर्त्ता कामकुंभ॥३॥ हरिणीछंद ॥ कमनवदन प्र
मानद नताश्रुनचचज गजपतिगतिं विश्वाधार सुरेश्वरवदित॥सदयहृदय त्यक्तानंकवि
निर्जितशोचन परमपदद ज्ञातार्थोघं त्रिकालविदर्चितं ॥ ४ ॥ इंद्रवशाछंद ॥ अर्च
ति देवा नवपारग जिन कल्याणकार मुनिवृंदसेवितं ॥ छत्रादिसल्लक्षणलक्षितं वि
तावानवसदोहकर सुधामय ॥ ५ ॥ इति द्वितीयांतविनक्तिकाव्यत्रिक ॥ शार्दूलवि
द ॥ प्राज्य राज्य चक्रवर्तित्वसग त्यक्त्वा दत्वा स्वर्णरूप्यादिदान॥श्रुत्वा वाक्य ब्रह्म
लोकांतिकाना येनावाप्त सयम मुक्तियोग्य ॥ ६ ॥ द्रुतविलंबितछंद ॥ अमितपुण्य
वता जनतावता कुगतिवारणतत्परसङ्गिरा ॥ नतनरामरकिन्नरशालिना नगवता
भुवि शर्म विधायिना॥७॥इति तृतीयांतविनक्तिकाव्य द्वय॥इंद्रवज्राछंद ॥श्रीशांतिदेवाय
नमोऽस्तु नेत्रे विघ्नौघहर्त्रे शिवमार्गदात्रे ॥ चक्रांकहस्ताय समस्तनर्त्रे शरणंडहारो च
लक्षककर्त्रे ॥ ८ ॥ रथोद्धताछंद ॥ दर्शनामृतनिलीनजतवे विश्वशास्त्रनयनीतिहेत
वे॥लोजसागरसुवेलसेतवे द्वापरावलितमिस्रजानवे ॥९॥ इति चतुर्थी विनक्तिकाव्यु
ग्म ॥ उपेंद्रवज्राछंद ॥ अघानि नश्यति पुराकृतानि प्रशस्तनाम्नातिशयप्रसच ॥
अनेकससारनिबधितानि प्रगाढबधस्थितिसंचितानि ॥ १० ॥ मालिनीछंद ॥ नव
ति सुखमनंत शांतिनाथप्रसादाद्धरिणशरणदातुर्विश्वसेनांगजातात् ॥ नतनविक्र
नानां प्रीतिराजात्प्रकाम निरवधिजिनरागे लग्नसन्मानसानां ॥ ११ ॥ इति पंचम्य
तविनक्तिकाव्यद्वयं ॥ शिखरिणीछंद ॥ सदा ध्यान शांतेरखिलगुणधाम्न शुनवतो
धरंति श्रीकार सुमतिमतिकार नयद्दर ॥ नरा नव्या शक्तया विगतमदतंद्रा श्रुतप
रालिसभ्य सद्ध्यान प्रबलतरनाग्योदयमत ॥१२॥ विद्युन्मालाछंद ॥ शांते शांति
पादद्वद्व नत्वा नत्वा सश्रीका स्यु ॥ नोनो श्राद्धा आयुष्मतस्तुष्ट्यानद कृत्वा कृत्वा॥
१३ ॥ इति षष्ठीविनक्तिकाव्यद्विक ॥ वसततिलकाछंद ॥ चेतोस्ति चेन्नवपयोनिधि
पारमाप्त तीर्थंकरे जिनपतौ किल शांतिदेवे ॥ नक्तिं कुरुष्व सततं निपुनाप्तुहार्त
हत्वा प्रमादमपि कर्मविशेषजन्यं ॥ १४ ॥ दोधकछंद ॥ दुर्गतिसागरपीतसमुद्रे नि
श्चलसयमपालनमेरौ ॥ शारदशुद्धसुधाकरवक्त्र शखसमाननिरजनचित्ते ॥ १५ ॥ ना

राजछंदः ॥ कामरूपंगगंजिने वर्जितदोषवर्जिते ॥ देवाधिपेऽचिरासुते लोकोपकारक मेतं ॥ १८ ॥ इति सप्तमीविज्ञप्तिकाव्यत्रिकं ॥ वंशस्थछंदः ॥ स्वकीयवंशांबरभास्कर प्रभो विशालगंगाजलशुभ्रकीर्ते ॥ अपारसंसारजयात्र नन्वरं कृपापरस्त्वं परिरक्ष सेवकान् ॥ १७ ॥ इति संबोधनविज्ञप्तिकाव्यमेकं ॥ मंदाक्रांताछंद ॥ कल्याणोक्तं कुशलजननं सर्वसंघस्य नित्यं नानावृत्तैः प्रकटितमिदं स्तोत्रमेतत्रिकालं॥मुक्त्वाऽऽल स्यं पठति मनुजो भावितात्मा विनात्मा गेहे लक्ष्मीर्भवति दृढता तस्य दीर्घायुष श्च ॥ १८ ॥ शार्दूलविक्रीडितछंदः ॥ कल्याणोदधिवर्धनं कलिहरं कैवल्यमालास्पदं सौभाग्यायकरं विज्ञप्तिकलितं कार्यविनिर्मितः परं ॥ श्रीशांतेः स्तवनं पठति भविनः सत्पुण्यपण्यालयास्तेषां धाम्नि शुभे निवासमतुलाः कुर्वंति संपत्तयः ॥ १९ ॥

॥ अथ श्रीअंतरिक्षपार्श्वस्तवनप्रारंभः ॥

इंद्रवज्राछंद.॥विश्वेश्वरं विश्वजनैशपूज्यं सर्वार्थनिष्पादनकामकुंभं॥ प्रख्यातिमंतं महिमैघलक्ष्म्या पार्श्वं भजे संस्थितमंतरिक्षे ॥१॥ कल्याणमालागृहमंगिदेव विद्या धराधीशनुतांह्रिपद्मं ॥ सर्वत्र राष्ट्रेषु विशालकीर्त्तिं पार्श्वं०॥२॥ रोगाधिचितार्त्तिसमू हतापभंजज्ज्यमाचारविचारसारं ॥ सत्रीजरत्नाविभूषितांगं पार्श्वं०॥३॥ संसारसिंधी तरपानपात्रं मुक्तपंगनाम्रक्तहृदं शरण्यं ॥ वामांगजातं जगतीप्रदीपं पार्श्वं० ॥ ४ ॥ श्री पार्श्वयक्षाधिपसन्निहितोप श्रीशाजिनं सेरपुरावतंसं ॥ वाचासुधाकर्षिततत्त्यलोकं पा र्श्वं० ॥ ५ ॥ त्रैलोक्यकोटीरमनाथनाथं दारिद्र्यवाताद्रिमनंतशक्तिं ॥ शास्त्रार्थनैपु ण्यनिधिं दयालुं पार्श्वं० ॥६॥ पद्मावतीसेवितपादयुग्मं मंदोमरध्वांतदिनेशमाशु ॥ लावण्यसौभाग्ययशोभिराढ्यं पार्श्वं० ॥ ७ ॥ ज्ञानादिधर्माभरणं वरेण्यं सद्बोधदाना दिकमार्गपांथं आनंदवल्लीततिवारिधारं पार्श्वं० ॥ ८ ॥ कलशः ॥ स्रग्धराछंदः इत्थं ये देववंद्यं विविधसुखकरं चांतरिक्षाख्यपार्श्वं नित्यं ध्यायंति भक्त्या हृदयरति युजो भाग्यवंतो नरोपि ॥लक्ष्मीस्तेषां निकाय्ये वसति दृढतया सर्वदा कामकर्त्री क ल्याणश्रेणिकर्त्रीर्भुवि विदिततरा सर्वसंपत्तिकांता ॥९॥

॥ अथ श्रीगौडिकपार्श्वाष्टकप्रारंभः ॥

शार्दूलविक्रीडितछंद ॥वामेयं मरुदेशभूपणतरश्रीपार्श्वयक्षार्चितं कल्याणावलिवल्लि सिंचनघनं श्रीइक्ष्वाकुवंशोद्भवं॥आराद्दूरसमागतैर्नरवरैः संसेवितं नित्यशः श्रीमन्नीकर गौडिकाभिधधरं पार्श्वं सुपार्श्वं भजे॥१॥नानासाधुजनौघपंकजवने भ [illegible] वि भव्यवृंदनिवारकं कलियुगे प्रासप्रतापाजयं॥ विश्वस्यां प्रथितावदाननिकरं

ज्वल श्रीमड्डी० ॥२॥ सपक्षेणिसुदानकामकलग त्रैलोक्यचिंतामणि सद्भावामृतराजि तामरनर सद्धर्म्मबोधप्रद ॥ सौजाग्याद्भुतकांतकीर्त्तियशसा संपूरिताशांतर श्रीमड्डी० ॥३॥ मार्गे चांतरजीतिवारिनिचिते क्षेमकरं सर्वदा दारिद्याद्दिनिपातनाशकुलि श चिंतार्त्तिरोगापद् ॥ डुखत्राससमीरणायद्भुजग नागांकमहोमथ श्रीमड्डी० ॥ ४ ॥ कारुण्यांचितचारुचित्तकमल सत्वेषु ससारिषु सद्धर्यादिगुणैरलंकृततनु लावण्यनीला स्पद ॥ ससारार्णवपीतवारिधिसम मुक्त्यगनावल्लज श्रीमड्डी० ॥ ५ ॥ त्रैलोक्ये ति लकायितं निरुपमं जव्यैर्जनि पूजितं डष्टानां निजसत्वदर्शनपर क्षिप्र सता कामं नाशा ध्वस्तसमस्तवैरिनिचयं राद्धांतनिर्देशक श्रीमड्डी० ॥ ६ ॥ जूयिष्टामनजक्ति शक्तिकलितैर्देवैश्चतुर्द्धा नतं सर्वाशाकरणैककल्पफलद सर्वांगिचूडामणि ॥ शिष्टानं तचतुष्टयीवरतर श्रीमेरुतुग जिन श्रीमड्डी० ॥ ७ ॥ स्फाराकारनिराजितांगमतुल स दर्प्यहेमाकर विश्वव्याप्ततर प्रवाससदन गजीरतासागर ॥ जासोद्योतितविश्वविश्रम वनौ कल्याणसिंधौ विधु श्रीमड्डी० ॥ ८ ॥ अष्टजि कुलक ॥ अनुष्टुप्छंद ॥ जिन माले सदाश्रेष्ठे गुणवद्भव्दजूपिते॥पुष्पमालेऽतराजिख्ये नेकवीहारसयुते ॥ ९ ॥ श्रीमत पार्श्वनाथस्य स्तवन जगतोऽवन॥कल्याणसागराधीशे सूरिजी रचितं मुदा॥१०॥ ॥स्रग्धराछंद ॥ध्येय श्रीपार्श्वदेव जजत किल जना गोमिकग्रामराज शश्वत्सवार्थ सिद्ध्यै विहितशुनहितं विष्टपे चैत्रपूर्वे॥सानदोल्लासलष्टा कुशलगविबुधा सर्वलोके विशिष्टानिर्दोपाचारपुष्टा जिनपपतिषु रता श्रासकल्याणतुष्टा ॥ ११ ॥

॥ अथ श्रीगोमीपार्श्वनाथस्तवनप्रारज ॥

मालिनीछंद ॥जयति जगति चद्र पार्श्वनामा जिनेंद्रो विकचकमलदृष्ट्या नदितामर्त्यमर्त्य ॥ अकलितमहिमौघस्तीर्णससारसिंधुर्जुजगकलितपाद पुण्यपीयूषपुष्ट ॥१॥ स्रग्धराछंद ॥ श्रीपार्श्वं गोडिकाख्य जजत जविगणो कल्पवृक्षं सुगोत्र नानादेशेषु लब्धातिशयमहितताव्यूहवार सुमूर्त्तिं॥ श्रीमतं नीलरत्नाधिकतरवपुष स्फारलावण्यशाल मोहांनोराशिकुंजोजवममरनुत पार्श्वयक्षार्चितांह्रि ॥ २ ॥ पचचामरछंद ॥ नमति पार्श्वमगिनो नराजसा धृतातपत्रचामरैं सुरैं स्तुतं ॥ अनतशक्तिमालिन गतामयं विवेकरत्नरोहण दयाकरं ॥३॥ वसततिलकाछंद ॥ करीकृतं व्रतमनुत्तरमगिनेत्रा त्वा ऽद्य येन वरवार्षिकदानराशि ॥ वामोद्भवेन मुनिनायकनायकेन कल्याणकेलिनिलयेन शुजाशयेन ॥ ४ ॥ डुतविलम्बितछंद ॥ मम नमोस्त्ववते परमात्मने शिवशर्म्मविधायिने ॥ अमितशौर्य्यतिरस्कृतमेरवे शुजदशेरकमडलमौलये ॥५॥ हर्ष

णीछंदः॥ अमृतरसताविख्यातीष्टान्नरोत्तमसंगताभुवनसुनगात्पार्श्वाभिख्याच्छिनश्यति पातकं ॥ प्रसरति च वै कीर्त्तिर्दिक्षु प्रसूनवडुज्ज्वला प्रभवति पुनः शीघ्रं लीलाजयो न्नतिवर्द्धनं ॥६॥ शार्दूलविक्रीडितछंदः ॥ आकृत्या नरदेवदेवमनुषां संतुष्टिकर्तुस्सदा चेतोवल्लभकामसार्थददतः कर्मारिहर्तुर्नृशं ॥ आनंदौघसरःप्रवृद्धिकरणे पानीयदा तुर्मुदा पार्श्वस्यास्ति नतिः समृद्धिजननी कल्याणविस्तारिणी॥७॥तोटकछंदः॥नरल क्षणभूपितवछ्युपुरे सुखनीरजरंजितविश्वजने॥श्रुतदेशनदर्शितधर्मपथे जिननेतरि ति ष्ठति भाग्यरमा॥८॥भुजंगप्रयातछंदः॥ सुराधीशचक्रैः स्तुत ज्ञानसिंधो जगन्नाथ नेतः कृपालोकबंधो ॥ विभो पाहि मां सर्वदा भक्तिभाजं स्मरं तं चिरं त्वत्पदांभोजभृंगं ॥ ९ ॥ शार्दूलविक्रीडितछंदः ॥ स्तोत्रं पार्श्वजिनेश्वरस्य सततं ये प्राणिनो भा वतः सद्बुद्ध्यापि पठंति हृद्यमनसस्तेषां गृहे संपदः ॥ स्युर्नित्यं स्थिरभावशोभ नतरा धर्म्मार्थनिष्पादिकाः कल्याणार्णवसूरिनिर्विरचितं मांगल्यमालाकरं ॥१०॥ शिखरिणीछंदः॥ सदा धार्य्यं चित्ते स्तवनमनवद्यं भयहरं नरैर्नूनं सिद्ध्यै कुशलवन राजौ घननिभं ॥ अवंध्यं भक्तानां जिनगुणरतानां स्मृतिमतां समेषां भव्यानां प्रमु दकरणं कामितकरं ॥ ११ ॥

॥ अथ श्रीदादापार्श्वनाथस्तवनप्रारंभः॥

॥ इंद्रवज्राछंदः ॥ कल्याणगेहं गुणरत्नराजं सद्देहकांत्याजितनीलरत्नं ॥स्तोष्ये मुदाशंकरमंगिवंद्यं दादाभिधं श्रीवरपार्श्वनाथं ॥ १ ॥ सद्धर्मलीलाश्रयमाशु विघ्नं कर्म्माष्टदावानलवारिधारं ॥ संसारपाथोनिधिकर्णधारं दादा० ॥ २ ॥ आचारव ल्लीततिवृद्धिनीरं सत्कीर्त्तिपुष्पद्रुतवासितांगं ॥ नानार्थराद्धांतविचारदक्षं दादा० ॥ ॥ ३ ॥ वैराग्यरंगार्पितचारुचित्तं सद्बोधिदातारमनीहसेव्यं ॥ नागेंद्रसंसेवि तपादपद्मं दादा० ॥ ४ ॥त्रैलोक्यचूडामणिमृद्धिशोभं सौभाग्यभाग्यावलिपूर्ण देहं ॥ भव्यांघराजीवदिनेशमेकं ॥ दादा० ॥ ५ ॥ सर्वांगिनेतारमभीष्टवाचं विश्वे श्वरं रंजितभव्यलोकं॥लोकाग्रचिंताभयहृत्सवारं दादा० ॥६॥ हृद्याकृतिं कृत्तजरा विरोधं नरामरेंद्रैः स्तुतमर्त्यतत्त्वं॥ सन्नागचिन्हं कुशलाप्तिकारं दादा०॥७॥ सर्वत्र वि ख्याततरप्रतापं कारुण्यतत्रं भुवि शिष्टगोत्रं ॥ अज्ञानमिथ्यात्वतमिस्रदीपं दादा० ॥ ८ ॥ अथभि. कुलकं ॥ शार्दूलविक्रीडितछंदः ॥ श्रीमन्नीवटपद्रभद्रनगरे शृंगार हारोपमं कल्याणांबुजभानुचंद्रमसमं वामांगजातं परं ॥ दादाख्यं जिनपार्श्वदेवमन घं ध्यायंति ये नित्यशस्तेषां धाम्नि रमा निवासमनिशं कुर्वंति कल्याणतः ॥ ९ ॥

॥ अथ श्रीकलिकुंडपार्श्वाष्टकप्रारंभः ॥

॥ विबुधाधिराजैर्नतपादपद्मं वहुभाग्यसौभाग्यलतांघमेत्र ॥ धर्म्युंनिर्ति कलिकुंडपार्श्वं सुचिर भजेऽहं ॥ १ ॥ कमलाप्रदाने सपयोधिदेशानुतलब्धकीर्त्ति ॥ रुचिरारुतां रजितविश्वविश्व कलिकुं० ॥ २ ॥ महिमावदातोत्तमनाममंत्र समताभिराम कमलाभिनेत्र ॥ भ्रमिनाद सिद्धि विलासयत्रं कलि० ॥ ३ ॥ दुरिताधकारारुणसन्निकाश करुणाकर दुःख सु दाव ॥ नरदेवपूज्यं सुखद सुमूर्ति कलि० ॥ ४ ॥ कनकादिदातारमनर्घ्य वरनीलरत्नाधिकदेहवर्णं ॥ शिवशर्मराज जनताभिवंद्य कलि० ॥ ५ ॥ अनघ सद्गुणकेलिपालं भुजगक्रूणालरुतवर्यगात्र ॥ कुजनूदण शत्रुतृणौघदात्र कलि० ॥ ६ ॥ जगतीश्वर कर्मविमुक्तसग विषमायुधालयमन स्वरूप ॥ धरणेंद्रपार्श्वोर्ध्व पादयुग्म कलि० ॥ ७ ॥ भुजसिंधुवृद्धौ शशिन वरेण्य वचसा सुराजन सद्धर्म्यं ॥ श्रुतसूरिणा पुण्यविराजमान कलि० ॥ ८ ॥ अष्टभि कुनक ॥ इंद्रवज्रा ॥ एव स्तुत श्रीकलिकुंडपार्श्व कल्याणनाम्ना मयका नितातं ॥ ये प्राणिन स्तोत्रमिदं पठंति तद्धाम्नि लक्ष्मीर्विलसत्यवश्य ॥ ९ ॥

॥ अथ श्रीरावणपार्श्वाष्टकप्रारंभ ॥

॥ इंद्रवज्राछंद ॥ देवाधिदेव कृतपार्श्वसेव नागाधिराजेन नताङ्घ्रिपद्म ॥ पद्मावतीसंस्तुतनामधेय सेवे सदा रावणपार्श्वनाथ ॥ १ ॥ आनंदकारं ...द्धिमेधं मेघध्वनिध्यानविशेषराज ॥ जितारिवृंद विगताविमोह सेवे० ॥ २ ॥ ...गंगजातं कुलनदिकार ध्वस्तोपसर्गोत्कटदुष्टरोग ॥ प्रख्यातिमतं भुवने प्र... ०॥ ३ ॥ सन्नीलनासा हसितेंद्रनील सत्कांतकाया रमणीयरूप ॥ प्राणी...

निकातिनिकेतनमगिनुन ॥६॥ निजवशयतसकमार्तिहर रवनिर्जितमेघनद निर दयितं त्तुवि विश्वजननतम नतचूतगण जितजोननट ॥ ७ ॥ शरणाश्रितपान्हव किपद उधनं तरशातरस नवम ॥ महनेडमणिप्रनदेहधर धरणेडनिषेवितपार्श्व ॥८॥ श्रमम नुतपार्श्वजिन ततत तपसा हृतसिद्धमनतवल ॥ जननाजनतनिव मन मनगर्जितमुत्तरसौख्यधर ॥९॥ नवनि कुलक ॥ सुरराजखेचरनागपुरदर जसुसेवितं श्रीपार्श्वजिनेश्वर नमितसुरेश्वरपद्मावतीसस्तुत॥ येऽनतजनया विबु नया सस्तुवति जिन मुदा ज्ञानसागरपठनाद्भविकरमासमेत ते जनति सुख सदा॥१०॥

॥ अथ श्रीमद्धरपार्श्वाष्टकप्रारम्भ ॥

द्रुतविलंबितछद ॥ विबुधमानवमानसनदन विनवदानविग्ौ हरिवदन ॥ कि गिन्नसन्यजनं रुतवदन नजत पार्श्वजिन मद्धुरानिध ॥ १ ॥ भुवनकीर्ति स्पतगजप चुरननानुनिवासघनाश्रय ॥ विषयिवारणकेसरिसन्निभ नजत० ॥२॥ श्ररुणकोटिदिवाधिकनास्वर कुमुदबांधवशुभ्रतरानन ॥ वरगनीरगुणौघममा नजत० ॥३॥ नविकपद्मविनाशनजास्कर जगति नावप्रकाशनदीपक ॥ नयनगम पारनंतर नजत० ॥४॥ रचितकामवराविदसचर्यरविजयर्यसमन्वितचेतस॥ विर कर्मसमोगणनागिन नजत० ॥ ५ ॥ कमठनिम्मितपांशुकदबंक स्थिरतराचलनार विगजिन ॥ जगति दुर्जनसर्पविषापह नजत० ॥६॥ प्रशमन्ूपरणनूपणनूपन सुप नाम्पगुणाविनिमंदिर ॥ धवलकीर्तियशोवरघामिन नजत० ॥ ७ ॥ सकनसमसन नरवृंद निचितविस्रपराजरजंतर ॥ श्रतिशयाद्भुतचारुचरित्रक नजत० ॥ ८ ॥ ह पीन्द्र ॥ मद्धुरजिनप नित्य वदे शिरोदरिंदन शशिनमनिग किरणघात मदाप ॥ मननननणनं चिताह्लादं रुतादरसेवकेविविध नद वि व विश्व ननानतं ॥९॥ द्रुतविलबितछद ॥ मद्धुरपार्श्वजिनश्वरसस्तव पठति य सुविचार निन्दन ॥ रमति तस्य गृहे कमला ऽनिशा स्थिरतरासुमती वरदायिनी ॥ १० ॥

॥ अथ मल्यपुरीय श्रीमहावीरस्तवनप्रारम्भ ॥

द्रुतविलंबितछद ॥ त्वमसि सद्गुणनदनमदरस्त्वमसिमेरुनतावनिमन त्वमसि वैराग्याब्धिनिमृतस्त्वमसि स्ववशीकृतविष्टप ॥ १ ॥ त्वमसि यानिय विगमिस्त्वमसि कातिविकाशितदिग्गण ॥ त्वमसि जावितवनितनागर स्व सि निखिलानिमोदिन ॥ २ ॥ त्वमसि नइकर कल्याणनयस्त्वमसि नरचर निस्तकर ॥ त्वमसि दर्शनदर्शितमानवस्त्वमसि ससृतिसागरपोतक ॥ ३ ॥ त्वम नंदननदमुदस्त्वमसि धर्मरतो धनदामद ॥ त्वमसि मत्स्यगापुनव

त्वमसि दर्शितजीवदयापथः ॥ ४ ॥ त्वमसि धान्तिशीलविभूषणस्त्वमसि कामि तदामकुरक्रम. ॥ त्वमसि देवनराधिपवंदितस्त्वमसि जाड्यतमिस्त्रनभोमणि ॥ ५ ॥ त्वमसि कर्मवनावनिपावकस्त्वमसि सव्वकपूजितपंकजः ॥ त्वमसि जन्मजरामृतिवारणस्त्वमसि शाश्वतमोक्षपदस्थित. ॥ ६ ॥ त्वमसि मंजुलमंगलदीपकस्त्वमसि सर्वपदार्थविशारद. ॥ त्वमसि लोकनतो नतवत्सल स्त्वमसि देवशिलीमुखपुष्कर. ॥ ७ ॥ त्वमसि नाथमनोहरलक्षणस्त्वमसि संमतजीवगणः सदा ॥ त्वमसि संवरमार्गविधायकस्त्वमसि दानगुणाक्षिप्तकल्पक· ॥ ८ ॥ त्वमसि चित्रकरातिशयांचितस्त्वमसि सन्नतिनीश्वरसेवितः॥ त्वमसि दुःखिजनावनतत्परस्त्वमसि हारनिन. क्षितिमंडले ॥ ९ ॥ त्वमसि शिष्टनरामरसंगतस्त्वमसि लोकचमत्कृतनिर्मम. ॥ त्वमसि केवलिसाधुनतो मुदा त्वमसि कुग्रहदोषनिवारकः ॥ १० ॥ त्वमसि सद्रतनाररूपोपमस्त्वमसि वीतमदो विशदाशय. ॥ त्वमसि तीर्थपते रुचिराव्हयस्त्वमसि गुप्तिपवित्रितमानसः ॥ ११ ॥ त्वमसि बुद्धिपराजितगीःपति स्त्वमसि हाटकसन्निभविग्रहः ॥ त्वमसि भाग्यविनाशनिकेतनस्त्वमसिलोल महीयरवलक· ॥ १२ ॥ त्वमसि ससजयार्णवतारकस्त्वमसि दुर्घटसत्यनयाध्वग. ॥ त्वमसि सम्मदसंततिकारकस्त्वमसि सिद्धिकरो वरदायकः॥१३॥ त्वमसि विश्वजगज्जनवल्लभस्त्वमसि रक्षितभूतकदंबक. ॥ त्वमसि दुर्जगडुस्थहरोनिशं त्वमसि विस्तृतलोचनरंजक· ॥१४॥ त्वमसि विश्वपति. श्रितवांधवस्त्वमसि वक्रतिरस्कृतचंद्रमाः ॥ त्वमसि वैरिसमुद्भवटोद्भवस्त्वमसि तीर्थकर. प्रतिबोधद. ॥ १५ ॥ त्वमसि भव्यशिखंडिवलाहकस्त्वमसि वंधुरमूर्तिधरोऽजर· ॥ त्वमसि सर्वविशर्विंगतातुरस्त्वमसि संयममंडनमंडित. ॥ १६ ॥ त्वमसि शांतरसाश्रितचेतनस्त्वमसि पौरुषनिर्जितकार्मण· ॥ त्वमसि दुर्लभबोधिनिबंधनस्त्वमसि कामदुघाधिकदानदः ॥ १७ ॥ त्वमसि सचितपुण्यनिधिः परस्त्वमसि विघ्नसरीसृपगारुडः ॥ त्वमसि शुभ्रयशोभरमंदिरस्त्वमसि सयजयोन्नतिहर्षद· ॥ १८ ॥ त्वमसि सत्वहितो मतिवर्धनस्त्वमसि धर्म्मसरोजसर सम. ॥ त्वमसि चक्रिनतो भविशेखरस्त्वमसि पारगत परमेश्वरः ॥ १९ ॥ त्वमसि सत्यपुरामलभूषणस्त्वमसि संश्रितपादमृगाधिपः ॥ त्वमसि केवलयुग्मविराजितस्त्वमसि वीरजिनो जिननायक. ॥ २० ॥ त्वमसि शासनपोतनियामकस्त्वमसि साधुदयालुललामकः॥त्वमसि सौख्यकरस्त्रिशलांगजस्त्वमसि विश्वगुरु. शुभसागरः ॥ २१॥ हरिणीछंद.॥ जयति सततं वीर. शं शुभर्नवोदधिपारगो जगति तिलक. पापध्वांते गभस्तिरनुत्तरः ॥ कुशलनिलयस्तीर्थस्वा

मी सुरासुरसस्तुतो विदितमहिमा विश्वे विश्वेश्वरार्चितपत्कज ॥२२॥ वज्रशरावनं कुत्रावनंस यतिधर्म्मदेशक कलादिकापारगमगिपालक ॥ नवीमि वीर मतिद हित वद मनोर्थसपादनकामकुनक ॥ २३ ॥ भुजगप्रयातछद ॥ प्रभु देववय त्रिनेत्र श्वनाथ जगन्नारुचूडामणि वीरनाथ ॥ स्तुवेऽहं जितारिं नतस्वर्गिनाथ सदा श्री कार नरेशाधिनाथ ॥ २४ ॥ स्रग्धराछद ॥ श्रीराज वीरदेव प्रणतसुरमणि देवमन्त्र धिरार्म कल्याणांभोधिचन्द्री विमलशशधर भाग्यसौभाग्यकार ॥ ये नत्या सन्तु नि प्रतिदिनमनय चारुभक्त्या त्रिसध्य प्रख्याति ते लभते त्रिभुवनविदितां कीर्तिश्च गुणारकर्त्री ॥ २५ ॥ तुभ्य नम समयधर्म्मनिवेदकाय तुभ्य नमस्त्रिभुवनेश्वरांय राय ॥ तुभ्य नम सुरनरामरसेविताय तुभ्य नमो जिनजनार्चितपत्कजाय ॥१॥ तु भ्य नमोऽजिनवते हरिचिह्नाय तुभ्य नमो वरकुलाबरभास्कराय॥तुभ्य नम प्रथम वनगधिपाय तुभ्यं नम प्रवररूपमनोहराय ॥ २ ॥ तुभ्य नमो हरिणनायकना थाय तुभ्य नमो यतिततिप्रतिपालकाय ॥ तुभ्य नमो विकचनीरजलोचनाय तुभ्य नमम्ननितनादगिराजिताय ॥ ३ ॥ तुभ्य नम कुशलमार्गविधायकाय तुभ्य नमो ष्टकष्टनिर्वेदकाय ॥ तुभ्य नमो दुरितरोगचिकित्सकाय तुभ्य नमस्त्रिजगतो हित भूरणाय ॥ ४ ॥ तुभ्य नमो दलितमोहतमोभराय तुभ्य नम कनकसन्निभतुग्म य ॥ तुभ्य नमोप्यगिनमद्गुणमंदिराय तुभ्य नमो सुखकलादिऽतचद्रिकाय ॥ ५ ॥ तुभ्यं नमोऽनिशपरगिरिविभूषिताय तुभ्य नम कुमतितापसुभजनाय ॥ तुभ्य न मो भुवपयोजिरविजिराय तुभ्य नमो विगतकैतवमन्मथाय ॥ ६ ॥ तुभ्य नमो विर ननभ्यजनाग्पाय तुभ्य नमो निखिलसशयवारकाय ॥ तुभ्य नम प्रथितकीर्ति गोचिनाय तुभ्य नमो जितदनीरमुनीश्वराय ॥ ७ ॥ तुभ्य नमाप्रमितपुण्यनिधि ताय तुभ्य नम मकगाद्मपपारगाय ॥ तुभ्य नमो नविकचातकनीरदाय तुभ्य नमधर्मारनिरतापहाय ॥ ८ ॥कृतकम् ॥ योगाष्टक पठति य सतत त्रिसय स्व श्री मरा प्रणनमीदजन्तु प्रमाद ॥ तद्गाम्नि मकु कुम्ते कमला निवास कल्याण गा सुखमनामनीट ॥ ९ ॥

॥ अथ श्रीलोढणपार्श्वनाथस्तवनप्रारभ ॥

श्रीकर कम्प्राणि विविधाद्भुतावक ॥ त्रियां तर्जितरागीश परमात्मानम दद ॥१॥ कमा स्मार्त गनादिध्यादिदूषण ॥ तेर नु मसैरायनु श्रीप्रद दनिनामय ॥ दनम्ग नी स्मारेन्दिद परं ॥ मर्मनामदमानोनमृर्गनादापगजन ॥ ३ ॥ श्रमन्नमवकैर श्रुश्रेणिशिरोमणि ॥ शिवमार्गमार्ग मणिनाथनिषेवित ॥ ४ ॥

तेजसां मंदिरं रम्यं वारिताशेषडर्जनं ॥ निःसीमं सर्वगोत्राणां श्रीमंतं गुणसागरं ॥ ५ ॥ कथिताचारमार्गौघं कल्याणकमले विधुं ॥ प्रणताशेषदेवेशं शासनं कांतनूष नं ॥ ६ ॥ गदितागमसंदोहं रसनामृतसुंदरं ॥ सूराधिकप्रतापाग्निं रिक्थदं दमितेंद्रि यं ॥ ७ ॥ नागेंद्रविबुधैः सेव्यं लोकानां शांतिकारकं॥ जडताया विछेत्तारं नयनाल्हा दकारणं ॥८॥ पालकं सर्वसत्वानां पार्श्वयक्षेण पूजितं ॥ नाकिमानववंद्यांन्हिं नाथं जगत्प्रभुं ॥ ए ॥ क्रियासंततिनेतार त्रासितानेकदोपकं ॥ कृतांतार्थविचारज्ञं नारतारुण्यराजित ॥ १०॥ संसारसागरे पोत घस्मराविविवर्जित ॥ सर्वज्ञं मेघगंभी : हित विश्वस्य सर्वदा ॥ ११ ॥ तेजोनिधि मुदा पार्श्व नवीमि लोमणाभिधं ॥ क प्राणसागराख्येन संस्तुतं ह्यादिमाक्षरैः ॥ १२ ॥ द्वादशभि कुलकं ॥ श्रीमल्लोडण र्श्वनाथमवनौ विख्यातगोत्राभिधं ये भव्या वरभावभक्तिसहिताः पूजंति सौख्या नः ॥ ते सत्वा. सुखमानकीर्त्तिकलिताः कल्याणतुंगाः परा जायते भुवने प्रतापरु रा आदेयवाचः सदा ॥ १३ ॥

॥ अथ श्रीसेरीशपार्श्वाष्टकप्रारंभः ॥

कामोवकर्त्तारमशेषदेवाधीशैस्सदार्चितपादपद्मं॥ कल्याणकारं वरनीलवर्णं सेरी शपार्श्वं भुथ लोडणाख्यं ॥ १ ॥ सत्पुण्यवल्लीवनवारिधारं निःशेषभव्यावलिपूरिता शं ॥ त्रैलोक्यछत्रं भुवनाधिनाथं सेरी० ॥२॥ सारगवाणीजितचित्तदार्ढ्यं सारंगगंभी रनिनादकांतं ॥ सारंगसारांबकयुग्मराजं सेरी० ॥३॥ विश्वेषु सत्वेषु कृपानिधानं स म्यक्त्वरत्नाभरणाकितांगं॥ दुःस्वांगपशुं दलितारिवर्गं सेरी० ॥४॥ अपारसंसारसमुद्र योर्न सर्वज्ञमाचारपवित्रवंशं॥रादांतशास्त्रार्थरहस्यदक्षं सेरी०॥५॥ वाणीरसानंदितवि वविश्वं तीर्थंकरं नागपुरेशपूज्यं ॥ सर्वत्र विख्यातयशोभिरामं सेरी० ॥६॥ तेजोनिधिं ामितकामकुंभं सौजन्यसौहार्दविलासपात्रं ॥ कल्याणसूर्यादिवितानहेतु सेरी० ॥ ७ ॥ आदित्यचंद्राधिकदेहभानं सत्प्रातिहार्याष्टकराजिराजं ॥ स्फाराकृतीं मोहि देवदेव सेरी० ॥८॥ कलश ॥ एव कल्याणवर्यं त्रिभुवनतिलक लोडणार्ह सुपार्श्वे लैकाग्र्यं स्वचित्ते भवसफलकृते ज्ञानसंपत्तिसिद्ध्यै॥नित्य ध्यायति भव्याजिनसमय ाः शुभ्रलेश्यानिरामास्तेषां हर्षान्प्रकामं भवति च सदने मंजुपद्मानिवासः ॥ ए ॥

॥ अथ श्रीसंभवनाथाष्टकप्रारंभः॥

लावण्यगेहं कलहेमवर्णं दयोज्झितं सुंदरवाहचिन्हं ॥ लक्ष्मीकलापार्णवधि नाथं देवैर्नतं संभवनाथमीडे ॥ १ ॥ श्येनांगजं दारुणकर्मशत्रौ वीर वरं पु रित्रगोत्रं ॥ क्षेमास्पदं सद्गुणरत्नखानिं देव० ॥२॥ इक्ष्वाकुवंशं वरतिग्मरश्मि

राकेडुवक्र गतवक्रमांय.॥ अज्ञानवश्वानरशातिनीर देवै० ॥ ३ ॥ इ खोदये
समुइमिन्द ॥ सत्प्रातिहार्याष्टकराजिराज ॥ क्षमानिधि विस्तृतपुण्यमूर्ति ॥ दे
वं० ॥ ४ ॥ नव्यैर्मुदा सेवितपादपद्मं सज्ञानवज्राहतमोहनूधर ॥ ससारदावाम्बु
मर्त्यमेघ देवै०॥५॥सत्कीर्त्तिपात्र दुरितारिसेव्य जगज्ज्ञनानंदकर शरण्य ॥ कारुण्य
युक्तपवित्रचित्त देवै० ॥६॥ कुदाईदतं कजलोचन यं वपु श्रियातर्जितसूर्यकांति ॥
पापाधकारे ऽमलदीपक त देवै० ॥ ७ ॥ प्रसादनात्तत्परसेवकस्येप्सितार्थदाने सु
देवगृह्न ॥ सुर्खरनेकैर्युतचारुदेह देवै० ॥८॥ कुलग ॥ इत्यष्टक श्रीजिनभक्तिभ
पठति ये भजुननावयुक्तया॥तेषा गृहे पुण्यनिधानजव्या कल्याणकाराश्च नवति र
न्दय ॥ए॥इति श्रीमज्जिननायकस्य श्रीसूर्यपुरभूपणस्य श्रीसनवनाथस्याष्टक सपूर्ण

॥ अथ श्रीसूक्तमुक्तावली प्रारम्भ ॥

मालिनी छद ॥ सकलसुरुतवल्लीवृन्दजीमूतमाला निजमनसि निधाय श्रीजि
नदस्य मूर्त्ति ॥ ललितवचनलीलालोकनापानिबन्धैरिह कतिपयपद्यै सूक्तमाला
तनोमि ॥ १ ॥ अथक्रमसग्रहकाव्य ॥ शार्दूलविक्रीडितछद ॥ तत्त्वज्ञानमनुष्य
सज्ञानगुणान्यायप्रतिज्ञाक्षमा चित्ताद्य च कुल विवेकविनयो विद्योपकारोयमा ।
दानक्रोधदयादितोषविषया साक्षात्प्रमादस्तथा साधुश्रावकधर्मवर्गविषये देवा
प्रसगाद्धमी ॥ २ ॥ अथदेवतत्त्वविषे मालिनीछद ॥ सकल करमवारी मोक्षमार्गा
धिकारी ॥ त्रिभुवनउपगारी केवलज्ञानधारी ॥ नविजन नित सेवा देव ए नक्तिना
वे ॥ इहिज जिन नजता सर्व सपत्ति आवे ॥ ३ ॥ जिनवरपदसेवा सर्वसपत्तिदा
ई ॥ निशिदिन सुखदाई कल्पवल्ली सहाई ॥नमि विनमि लहीजे सर्व विद्या वडाई।
ऋषन जिनह सेवा साधता तेह पाई ॥ ४ ॥ अथगुरुविषे ॥ स्वपरसमयजाणे व
मैराणी वखाणे ॥ परम गुरुकह्यायो तत्व नीरक माणे॥ नविकर्कज विकाशे
नुन्पू तेज नासे ॥ इहज गुरु नजो जे शुद्धमार्ग प्रकाशे ॥ ५ ॥ सुगुरुवचनतग
निस्तरेजीवरगे ॥ निरमल नर थाए जेम गगाप्रसगे ॥ सुणिय सुगुरु केशी॥ वाणि
रायप्रदेशी ॥ लहि सुरनव वासी जे हसे मोक्षवासी ॥ ६ ॥ अथधर्मविषे ॥ नवनि
धि जलवेला चद्रथी जेम वाधे ॥ सकल विनवलीला धर्मथी तेम साधे ॥ मनुष्य
जनमकेरो सार ते धर्म जाणी ॥ नविनवि नवि नावे धर्म ते सौख्य खाणी ॥७॥
इह धरम पसाये विक्रमे सत्त्व साध्यो ॥ इह धरम पसाये शालिनो साक वाध्यो।
जस नर गज वाजी मृत्तिकाना त्रिकेई ॥ रणसमय थया ते जीव साचा निर्के।
॥ ८ ॥ अथज्ञानविषे ॥ तन धन ठकुराई सर्व ए जीवनेठे ॥ पण इक दुहि

ज्ञान संसारमां वे ॥ नवजननिधि तारे सर्व जे डुःख वारे ॥ निजपरहित
ज्ञान ते का न धारे ॥ ए ॥ यवक्रपि एक गाथा बोधथी जे निवास्यो ॥ एक पद
चिलातीपुत्र संसार वास्यो ॥ श्रुतजणत सुज्ञानी मास तुसादि थावे॥ श्रुतथि श
य हाथे रोहिण्यो चोर नावे ॥ १०॥ अथमनुष्यजन्मविषेः ॥ नवजलनधि नमंत
कोइ वेला विशेषे ॥ मनुजजनम लाधो डुलहो रत्न लेखे ॥ सफल कर सुधर्मा
न्म ते धर्मयोगे ॥ परनवसुख जेथी मोक्षलक्ष्मी प्रयोगे ॥ ११ ॥ मनुजजनम प
मी आलसें जे गमेवे ॥ शशिनृपतिपरे ते शोचनाथी नमेवे ॥ डुलह दश कथा श्रूं
मानुखोजन्म ए वे ॥ जिनधरम विशेषे जोडतां सार्थ ते वे ॥ १२ ॥ अथसज्जन
विषे· ॥ नदयमन सदाई डुःखियां जे सहाई ॥ परहित मतिदाई जास वाणी मि
वाई ॥ गुणकरि गहराई मेरुज्यूं धीरताई॥ सुजनजन सदाई तेह आनंददाई ॥१३॥
जइ डुरजन लोके दूहव्या दोष देई ॥ मनमलिन न थाए सज्जना तेह तेई ॥ डुप
दजनकपुत्री अंजना कष्टयोगे ॥ कनकजिम कशोटी ते तिसी शील नोगे ॥ १४ ॥
अथगुणविषे· ॥ गुणगहि गुण जेमा ते वहू मान पावे ॥ नर सुरनिगुणे ज्यूं फूल
शीशे चढावे ॥ गुणकरि बहु माने लोक ज्यूं चडमाने ॥अति कृश जिम माने पू
र्णने त्यूं न माने ॥ १५ ॥ मलयगिरि कडे जे जवुलिवादि सोई ॥ मलयजतरु संगे
चंदना तेइ होई ॥ इम लहिय वडाइयूं कीजिये संग रंगे ॥ गजशिरचडि बेठी ज्यूं
अजा सिंहसंगे ॥ १६ ॥ अथन्यायविषे ॥ जग सुजस सुवासे न्यायलक्ष्मी उपासे॥
व्यसन डुरित नासे न्यायथी लोक वासे ॥ इम हृदय विमासी न्याय अंगी करी
जे॥अनय परिहरीजे विश्ववने वश्य कीजे ॥ १७ ॥ पशु पण तस सेवे न्यायथी जे
न चूके ॥ अनयपथ चले जे नाइ ते तास मूके ॥ कपिकुल मिलि सेव्यो रामने
नीस नामी ॥ अनयकरि तज्यो ज्यूं नाइए लंकस्वामी ॥१८॥ हय गय न सहाई
ह कीर्त्ति सदाई॥ रिपुविजय वधाई न्याय ते धर्मदाई॥ धरमनय धरे जे ते सुखे
रि जीपे ॥ धरमनय विहूणा तेहने वैरि कोपे ॥ १९ ॥ धरमनय पसाये पांमवा
व तेई ॥ करि युध जय पाम्या राज्यलीला लहेई ॥ धरमनय विहूणा कौरवा
माता रणसमय विगूता पांमवा तेह जीत्या ॥ २० ॥ अथप्रतिज्ञाविषे. ॥
अशुन जिकांई आदस्युं जे निवाहे ॥ रवि पण तस जोवा व्योम जाणी
हे ॥ करिगहन तिवाहे तास निस्संत आपे ॥ मलिन तनु परवाले
मा सूर आपे ॥ २१ ॥ पुरुषरयण मोटा जे गणीजे धराये ॥ लिण जिम प
ज्यूं ते न गाडे पराये ॥ गिरिश विष धस्यो जे ते न अद्यापि नाख्यो ॥ डुर

गति नर लेई विक्रमादित्य राख्यो ॥ २२ ॥ अथ उपशमविषे ॥ उपशम हित
कारी सदा लोकमाही ॥ उपशम धर प्राणी ए समो सौख्य नाही ॥ तप
प सुर सेवा सर्व जे आदरे छे ॥ उपशमविण जे ते वारि मथा करे छे ॥ २३ ॥
उपशम रस लीला जास चित्ते विराजी ॥ किम नर नर केरी रिद्धिमा तेह ग
जी ॥ गज मुनिवर जेहा धन्य ते ज्ञान गेहा ॥ तपकरि दश देहा शांति पोष
प मेहा ॥२४॥ अथ त्रिकरणशुद्धिविषे ॥ जग जन सुखदाई चित्त एवु सदाई
मुखे अति मधुराई साच वाचा सुहाई ॥ वपु परहित हेते त्रण्य ए शुद्ध जब
॥ तप जप व्रत सेवा तीर्थ ते सर्व तेने ॥ २५ ॥ मण वच तनु त्रणे गमा
शुद्ध जेने ॥ निज घर निरसता निर्जरा धर्म तेने ॥ जिम त्रिकरण शुद्धे ईश
दी अव राख्यो ॥ घर सफल फलतो शील धर्मे सुहाव्यो ॥ २६ ॥ अथ कुलजते
सहज गुण वधे ज्यू शंखमां श्वेतताई ॥ अमृत मधुरताई चंद्रमां शीतलाई
गुरनय सुरनाई इक्षुमां ज्यू मिठाई ॥ कुलज मनुजकेरी त्यू सुजाते भलाई
॥२७ ॥ जिण घर वर विद्या जो हुवे तो न कद्धि ॥ जिण घर उप नाते ते
न सौजन्य वृद्धि ॥ सुकुल जनम योगे ते त्रणे जो लहीजे ॥ अभय कुमर पे
ना जन्म सारूस कीजे ॥ २८ ॥ अथ विवेकविषे ॥ हृदय घर विवेक प्राणि
जा दीप वागे ॥ सकल नर तणो तो मोह अधार नाशे ॥ परम धरम वस्तु
न इश्यद्ध जागे ॥ करम नर पतंगा त्याग तेने विधरो ॥ २९ ॥ विरत
करीजे ज विवेके विहीना ॥ सज्जन गुण जव्या जे ते विवेके विहीना ॥ जिम प्र
नि गुणारा भूमि गढे रमते ॥ उगति जुगति कीधी जे विवेके उगते ॥ ३० ॥
अथ विनय विषे ॥ निशिदिण शशि सावे ज्यू न शोभे कलाई ॥ विनयवि
न सोहे ज्यू न विद्या वडाई ॥ विनयवद्धि सदाई जेह विद्या सदाई ॥ विन
विन न काई लोकमां वडताई ॥ ३१ ॥ विनय गुण वहीजे जेहथी श्री वरीजे
नर नर एमि नीना नेह छेनां लहीजे ॥ पर तणय शरीरे पेशया ज सुविद्या
विनय गुणथि लाधी विक्रमे तेह विद्या ॥ ३२ ॥ अथ विद्याविषे ॥ अगम अ
नि अपूर्वे विद्यये कोन गजे ॥ रिपु दल वन भजे विद्यये जिम रज ॥ धनवि
धनर विद्या मित्र एणे नमाये ॥ गुरुमुख नलि विद्या वीसरा जय जन
॥ ३३ ॥ सुर नर मुखसमें विद्यय वैरि नाशे ॥ जगि सुजस सुवास जह
दा प्रकाशे ॥ विक्रमशि नृप रख्यो नोज याणे मयूरे ॥ जिणथी कुत्स्तौ
विद्यये दल सूर ॥ ३४ ॥ अथ दरकारविषे ॥ तन धन तरुणाई आयु ए यसना

परहित करि ले जे तादृशो ए समे छे ॥ जब जनम जरा जा लागशे अंत सांई ॥ कहि न तिण समे तो कोण थाशे सहाई ॥ ३५ ॥ नहि तरु फल खावे ना नदी नीर पीवे ॥ जस धन परअर्थे सो भले जीव जीवे ॥ नल करण नरिंदा विक्रमा राम जेवा ॥ परहित करवा जे उद्यमी दक्ष तेवा ॥३६॥ ॥अथ उद्यमविषे ॥ रयण निहितरी ने उद्यमे लक्ष्मि आणे ॥ गुरु भगति करीने उद्यमे शास्त्र जाणे ॥ दुःख समय सहाई उद्यमे छे भलाई ॥ अति आलस तजीने उद्यमे लाग भाई ॥ ३७ ॥ नृपशिर निपतंती वीज झात्कारकारी ॥ उद्यम करि सुबुद्धी मंत्रिए ते निवारी ॥ तिम निज सुतकेरी आवती दुर्दशाने ॥ उद्यम करि निवारी ज्ञानगर्भे प्रधाने ॥ ३८ ॥ अथ दानविषे ॥ थिर नहि धन राख्यो तेम नाख्यो न जाए ॥ इणि पर धन जोतां एव गत्या जणाए ॥ इह सुगुण सुपात्रे जेह दे भक्ति भावे ॥ निधि जिम धन आगे साथ तेहीज आवे ॥ ३९ ॥ नल बलि हरिचंदा भोज जे जे गवाए ॥ प्रह समय सदा ते दानकेरे पसाए ॥ इम हृदय विमासी सर्वथा दान दीजे ॥ धन सफल करीजे जन्मनो लाहु लीजे ॥ ४० ॥ अथ शीलविषे ॥ अशुभ करम घाले शील शोभा दिखाले ॥ गुणगण अजुआले आपदा सर्व टाले ॥ तस नर बहु जीवी रूप लावण्य देई ॥ परभव शिव होई शील पाले जिकेई ॥ ४१ ॥ इण जग जिनदास श्रेष्ठ शीले सुहायो ॥ तिम निरमल शीले शील गंगेव गायो ॥ कलि करण नारदा ए समां छे जिकोई ॥ परभव शिव पामे शील पाले तिकोई ॥ ४२ ॥ अथ तपविषे ॥ तरणि किरणथी ज्यूं सर्व अंधार जाए ॥ तपकरि तपथी त्यूं दुःख ते दूर थाए ॥ वलि मलिन थयुं जे कर्मचमाल तीरे ॥ किम तनु न पखाले ते तपस्वर्ण नीरे. ॥ ४३ ॥ तपविण नवि थाए नाश दुःकर्म केरो ॥ तपविण न टले जे जन्म संसार फेरो ॥ तप बलि लहि लब्धी गोतमे नंदिखेणे ॥ तप बलि वपु कीधुं विष्णु वैक्रीय जेणे ॥४४॥ अथ भावविषे ॥ मनविण मिलवो ज्यूं चाववो दंतहीणे ॥ गुरुविण भणवो ज्यूं जीमवो ज्यूं अलूणे ॥ जसविण बहु जीवी जीव ते ज्यूं न सोहे ॥ तिम धरम न सोहे भावना जो न होहे. ॥ ४५ ॥ भरत नृप इलाची जीरणश्रेष्ठि भावे ॥ वलि वलकल चीरी केवल ज्ञान पावे ॥ बलभद्र हरिणो जे पंचमे स्वर्ग जाए ॥ इहुल गुण पभावे तास निस्तार थाए ॥ ४६ ॥ अथ क्रोधविषे ॥ तृण दहन दहंतो वस्तु ज्यूं सर्व बाले ॥ गुण करण भरी त्यूं क्रोध काया प्रजाले ॥ प्रसम जलद धारा वन्हि ते क्रोध वारो ॥ तप जप व्रत सेवा प्रीतिवल्ली वधारो. ॥ ४७ ॥

धरणि परशुरामे क्रोधि निःक्षत्रि कीधी ॥ धरणि सुभूमराये क्रोधि निर्ब्राह्म ना धी ॥ नरकगति सहायी क्रोध ए दुःख दाई ॥ वरज वरज भाई प्रीति दे जड वाई ॥ ४७ ॥ अथ मानविषे ॥ विनय वनतणी जे मूल शाखा विमोडे ॥ सुगुरु नककेरी शृंखलाबंध तोडे ॥ जनमद करि दोडे मान ते मत्त हाथी ॥ निनय करि ले जे अन्यथा दूर एथी ॥ ४९ ॥ विषद विष समो ए मान ते सर्प जाणो मनुज विकल होवे एण मके जडाणो ॥ इह न परिहस्यो जो मान दुर्यापने तो निज कुल विणसाड्यो मानने जे वहतो ॥ ५० ॥ अथ मायाविषे ॥ निपुण निवारी हीयडे हेज धारी ॥ परिहर जन माया जे असनोपकारी ॥ मधुर मधुर बोले तोहि विश्वास नाणे ॥ अहि गिलण प्रमाणे मायिने लोक जाणे ॥ ५१ ॥ म कर म कर माया दत्त दोषत्र नाया ॥ नरय तिरिय केरा जन्म दे जेह माया ॥ बलि नृप छलवाने विष्णु माया वहंता ॥ लघुयपण लह्यू जे वामनारूप मेल ॥ ५२ ॥ अथ लोभविषे ॥ सुण वयण सयाणे चित्तमा लोभ माणे ॥ सकल सनकेरो मार्ग ए लोभ जाणे ॥ इक खिण पण एने संग रंगे म लागे ॥ नव दुख दे ए लोभने दूर त्यागे ॥ ५३ ॥ कनकगिरि कराया लोभथी नंदराये ॥ निज अरथ न आया ते हस्या देवताये ॥ सयल निधि लही जे स्वाय ते विभ कीजे ॥ मन तनह वरीजे लोभ तृष्णा न छीजे ॥ ५४ ॥ अथ दयाविषे ॥ सुरत लप वेली लच्छि विद्या सहेली ॥ विरतिरमण केली शांति राजा महेली ॥ गुण नलेरी जे दया जीव केरी ॥ निज हृदय धरी ते साधिए मुक्ति सेरी ॥ ५५ ॥ निज सरण परेवो जेनथी जेण राख्यो ॥ षट दशम जिने ते ए दया धर्म दाख्यो ॥ तिह हृदय धरीने जो दया धर्म कीजे ॥ भवजलधि तरीजे दुःख दूरे करी जे ॥ ५६ ॥ अथ सत्यविषे ॥ गरल अमृत वाणी साचथी अग्नि पाणी ॥ रिपु सम अहिराणी साच विश्वास खाणी ॥ सुपसन सुर कीजे साचथी त तरीजे ॥ त्रिण अनिक तजीजे साचवाणी वदीजे ॥ ५७ ॥ जग अपजश वाधे कूडवाणी वदंतां ॥ वसु नृपति कुगत्यें साख कूडी भरंतां ॥ असत वचन वारी साचने धारी ॥ वद वचन विचारी जे सदा सौख्यकारी ॥ ५८ ॥ अथ चोरीविषे ॥ पर धन अपहारे स्वार्थपें चोर हारे ॥ कुल अजस वधारे वध घातादि धारे ॥ निर्गुण हेते सर्प ज्यूं दूर वारी ॥ जग जन हितकारी होय संतोष धारी ॥ ५९ ॥ निशिदिन नर पामे जेहथी दुःख कोडी ॥ तज तज धन चोरी कष्टनी जेह ओरी ॥ पर विभव हरतो रौहिणी चोर रंगे ॥ इह अभय कुमारे ते ग्रह्यो बुद्धि संग ॥ ६०

अथ कुशीलविषे ॥ अयश पमह वागे लोकमां लीह लागे ॥ दुरजन वहु जागे जे कुले लाज लागे ॥ सज्जन पण विरागे मां रमे एण रागे ॥ परतिय रस रागे दो पनी कोडि जागे ॥ ६१ ॥ परतिय रसरागे नाश लंकेश पायो ॥ परतिय रस त्या गे शील गंगेव गायो ॥ द्रुपद जनक पुत्री विश्व विश्वे विदीती॥ सुर नर मिलि सेवी शीलने जे धरंती ॥ ६२ ॥ अथ परिग्रहविषे ॥ शशिउदय वधे ज्यूं सिंधु वेला चलेरी॥ धनकरि मन साए तेम वाधे घणेरी ॥ दुरित नरग सेरी तूं करे ए परेरी॥ ममकर अधि केरी प्रीति ए अर्थकेरी॥ ६३ ॥ मनुज जनम हारे ॥ दुखनी कोडि धारे ॥ परिग्र ह ममता ए स्वर्गना सौख्य वारे ॥ अधिक धरणि लेवा धातकी खंम केरी ॥ सुभूम कुगति पामी चक्रिराये घणेरी ॥ ६४ ॥ अथ संतोषविषे ॥ सकल सुख नराए विश्व लावण्य थाए ॥ भवजलधि तराए दुःख दूरे पलाए ॥ निज जनम सुधारे आपदा दूर वारे ॥ निज धरम वधारे जेह संतोष धारे ॥ ६५ ॥ सकल सुखतणो ते सार संतोष जाणे ॥ कनक रमणिकेरी जेह इछा न आणे ॥ रजनि कपिल वांध्यो स्व र्णनी लोलताए ॥ भमर कमल वांध्यो ते असंतोषताए॥ ६६ ॥ अथ विषयविषे ॥ शिवपद यदि वांछे जेह आनंद दाई ॥ विषसम विषया तो छांमि दे दुखदाई ॥ मधुर अमृत धारा दूधनी जो लहीजे ॥ अति विरस सदा तो कांजिका संग्रही जे ॥ ६७ ॥ विषय विकल ताणी कीचके भीम मार्या ॥ दशमुख अपहारी जा नकी रामनार्यां ॥ रति धरि रहनेमी क्रीडवा नेमि नार्यां ॥ जिण विषय न वर्ज्यां तेह जाणो अनार्यां ॥ ६८ ॥ अथ इंद्रियविषे ॥ गज मगर पतंगा जेह भृंगा कुरं गा ॥ इक इक विषयार्थे ते लहे दुःख चंगा ॥ जस परवश पांचे तेहनुं शूं कही जे ॥ इम हृदय विमासी इंद्रि पांचे दमीजे ॥ ६९ ॥ विषय वन चरंतां इंद्रि जे उंदडा ए ॥ निज वश नवि राखे तेह दे दुखडा ए॥अवश करण मृत्यू ज्यूं अगुत्तें द्रि पामे ॥ स्ववश सुख लह्या ज्यूं कूर्म गुप्तेंद्रि नामे ॥ ७० ॥ अथ प्रमादवि षे ॥ सहु मन सुख वांछे दुःखने को न वांछे॥ नहि धरम विना ते सौख्य ए संपजे वे ॥ इह सुधरम पामी कां प्रमादे गमीजे ॥ अति अलश तजीने उद्यमे धर्म की जे ॥ ७१ ॥ इह दिवस गया जे तेह पाछा न आवे ॥ धरम समय आले कां प्र मादे गमावे ॥ धरम नवि करे जे आयु आले गमावे ॥ शशि नृपतिपरे त्यूं सोच ना अंत पावे ॥ ७२ ॥ अथ साधुधर्मविषे ॥ शार्दूलविक्रीडितछंद. ॥ जे पंच व्रत मेरु भार निवहे. निःसंग रंगे रहे ॥ पंचाचार धरे प्रमाद न करे. जे दुःपरिस्सा सहे ॥ पांचे इंद्रि तुरंगमा वश करे. मोक्षार्थने संग्रहे ॥ एवो दुष्कर साधु धर्म धन ते, जे

ज्यूं मदे त्यूं वदे ॥ ७३ ॥ मालिनीछंद ॥ मयण सरस मोमी कामिनी सप्त नारी। तजिय कनक कोडी मुक्तिसू प्रीति जोडी ॥ नव नव जय पामी शुद्ध चारित्र धामी॥ इह जग शिवगामी ते नमो जंबु स्वामी ॥ ७४ ॥ अथ श्रावकधर्म विषे ॥ शार्दूलविक्रीडितछंद ॥ जे सम्यक्त लही सदा व्रत धरे, सर्वज्ञ सेवा करे ॥ सध्या वश्यक आदरे गुरु भजे, दानादि धर्माचरे ॥ नित्ये सद्गुरु सेवना मनधरे एवो जिनाधीशरे ॥ भाख्यो श्रावकधर्म दोय दशधा, जे आदरे ते तरे ॥ ७५ ॥ मालिनीछंद ॥ निशिदिन जिनकेरी जे करे शुद्ध सेवा ॥ अणु व्रत धरि जेत काम आनंदेवा ॥ चरम जिन वखाणे जे सुधर्मे सुवास्या ॥ समकित सतवंता श्रावका तप्रशस्या ॥ ७६ ॥ इम अरथ रसाला जे रची सूक्तमाला ॥ धरम नृपति बाला मालिनी छंद शाला ॥ धरम मति धरता एहवा पुण्य वाध्यो ॥ प्रथम धरम केरा सार ए वर्ग साध्यो ॥ ७७ ॥ इति श्रीमत्सूक्त मुक्तावल्या धर्मवर्ग प्रथम समाप्त ॥ १ ॥

॥ अथ अर्थवर्ग प्रारंभ ॥

उपेंद्रवज्राछंद ॥ अथार्थवर्गे हितचिंतन श्रीभिनपत्राघ्यंस्व मदीशसेवा ॥ खलादिमैत्री व्यसनादि चैव, मिहावधार्या कतिचित्प्रसंगा ॥ १ ॥ अथ अर्थ विषे मालिनी छंद ॥ अरथ अरजि जेणे स्वापते विश्व होवे ॥ जिण विण शुण विद्या रुपने कोण जोवे ॥ अभिनव सुखकेरो सार ए अर्थ जाणी ॥ सकल धरम एथी साधिए चित्त आणी ॥ २ ॥ अरथ विण कवन्नो जेह वेश्याइं नख्यो ॥ अरथ विण वसिष्टे राम जातो उवेख्यो ॥ सुकृत सुजस कारी अर्थ तेह उपाजों ॥ कुवणज उपजतो अर्थ ते दूर वर्जो ॥ ३ ॥ अथ हित चिंतन विषे ॥ परहित करवा जे चित्त उच्छाह धारे ॥ परकृत हितहीये जे न काई विसारे ॥ प्रति हित परथी ते जे न वांछे कदाई ॥ पुरुष रयण सोई वंदिए सो सदाई ॥४॥ निज दुख न गणीने पारकूं दुख वारे ॥ तिहतणि बलिहारे जाइए कोडि वारे ॥ जिम विषभर जेणे मुक पीडा सहीने ॥ विषधर जिनवीरे बूझव्या ते वहीने ॥ ५ ॥ अथ लक्ष्मीविषे ॥ हरि सुत रति रंगे जे रमे रात सारी ॥ शिवतनय कुमारी ब्रह्म पुत्री कुमारी ॥ हितकरि हरलीला जेहने लच्छि जोवे ॥ सकल सुगुण तेहे सो सोहि विख्यात होवे ॥ ६ ॥ लखमि बलि यशोदा नंदने विश्व मोहे ॥ लखमि विण विरूपी सत्तु निकूं न सोहे ॥ लखमि लहिय रांके जे शिलादित्य नाख्यो ॥ लखमि लहिय शाके विक्रमे विश्व रख्यो ॥ ७ ॥ अथ कृपणविषे ॥ कृप

कण जिम संचे कीटिका धान्यकेरो ॥ मधुकर मधु संचे जोगवे को अनेरो ॥ तिम धन कृपणकेरो नोपकारे दिवाये ॥ इमहि विलय जाए अन्यथा अन्य खाए ॥ ८ ॥ कृपण पण धरंता जे नवे नंद गया ॥ कनक गिरि करया ते तिहां अर्थ नाया ॥ इम मनत करतां दुःख वारे वमीजे ॥ कृपण पण तजीजे मेघज्यूं दान दीजे ॥ ९ ॥ अथ याचनविषेः ॥ निरमल गुण राजी त्यां लगे लोक गाजी ॥ तब लग कहि जीजी त्यां लगे प्रीति ताजी ॥ सुजन जन सनेही त्यां लगे मित्र तेही ॥ मुख थकि न कहीजे ज्यां लगे देहि देही ॥ १० ॥ जड वडपण वांछे मांगजे तो न कांई ॥ लहु पण जिण होवे केम कीजे तिकांई ॥ जिम लघु थइ सोजे वीरथी दान लीधुं ॥ हरि बल नृप आगे वामना रूप कीधूं ॥ ११ ॥ अथ निर्धनविषे ॥ धनविण निज बंधू तेहने दूर छंडे ॥ धनविण गृह नारी तेह सेवा न मंडे ॥ निरजल सरजेवो देह निर्जीव जेवो ॥ निरधन तृण जेवो लोकमें ते गणेवो ॥ १२ ॥ सरवर जिम सोहे नीर पूरे भरायो ॥ धन करि नर सोहे तेम नीते उपायो ॥ धनकरिय सुहंतो माय जे जाण हूतो ॥ धनविण पग सूजी तेह दीठो मरंतो ॥ १३ ॥ अथ राज सेवाविषेः ॥ सुजनसुं हित कीजे दुर्जना सीख दीजे ॥ जग जन वश कीजे चित्त वांछा वरीजे ॥ निज गुण प्रगटीजे विश्वना कार्य कीजे ॥ प्रभु सम विचरीजे जो प्रभूसेव कीजे ॥ १४ ॥ भगतिकरि वडानी सेव कीजे जिकांई ॥ अधिक फल न आपे कर्मथी ते तिकांई ॥ जलधि तरिय लंका सीत संदेस लावे ॥ हनुमत करमे ते राम कच्छोट पावे ॥ १५ ॥ अथ खलताविषे ॥ रस विरस भजे ज्यूं अंब निंब प्रसंगे ॥ खल मिलण हुवे त्यूं अंतरंग प्रसंगे ॥ सुण सुण रससनेही जाणि ले रीति जेही ॥ खल जन निसनेही तेहशूं प्रीति केही ॥ १६ मगर जल वसतो ते कपीराय दीठो ॥ मधुर फल चखावी ते कस्यो मित्र मीठो ॥ कपि कलिज भखेवा मत्स खेली खलाई ॥ जलमहिं कपि बुद्धी गंभि दे ते भलाई ॥ १७ ॥ अथ अविश्वाशविषे ॥ उपजाति छंद ॥ विश्वासिसाथे न छले रमीजे ॥ न वैरि विश्वास कदापि कीजे ॥ जो चित्त ए धीर गुणे धरीजे ॥ तो लछि लीला जगमां वरीजे ॥ १८ ॥ इंद्रवज्राछंद ॥ चाणायके ज्यूं निज काज सारयो ॥ जे राज भागी नृप तेह मारयो ॥ जो घूअडे काक विश्वास कीधो ॥ तो वायसे घूकने दाह दीधो ॥ १९ ॥ अथ मैत्रीविषे ॥ मालिनीछंद ॥ करि कनक सरीखी साधु मैत्री सदाई ॥ घसि कसि तप वधे जास वाणी सवाई ॥ अहव करहि मैत्री चंद्रमां सिंधु जेही ॥ घट घट वध वाधे सारखा बे सनेही ॥ २० ॥ इह सहज सनेहे जे वधे मित्रताई ॥ रवि प

रि न चले ते काजज्यूं वंधुताई ॥ हरि हलधर मैत्री रुलने जे तमासे ॥ हलधर जि
ज खधे ले फिखो जीवि श्वासे ॥२१॥ अथ व्यसन विपे ॥ नलिन मनिन ओला श्रौ
कथी जेम थाए ॥ इह कुवसनथी त्यूं सपदा कीर्त्ति जाए ॥ कुविसन तिए हेते स
र्वथा दूर कीजे ॥ जनम सफल कीजे कीर्त्ति कांता वरीजे ॥ २२ ॥ अथ द्यूतविषे ॥ द्रु
तविलंवित छंद ॥ सुगुरु देव जिहां नवि लेखवे॥ नविणा सद्गुए जिए खनवे ॥ ज
नवे नमवू जिए कवटे ॥ कहिनि कोण रमे तिए जूवटें ॥ २३ ॥ अथमांस भक्षण
विपे ॥ उपजातिछंद ॥ जे मास लुब्धा नर ते न होवे॥ते राक्षसा मानुषरूप सोवे॥अथ
चोरीविपे ॥ जे लोकमां नर्ग निवास करी॥ निवारीए ते परद्रव्यचोरी ॥ २४ ॥ अथ म
द्यविपे ॥ भुयगप्रयातछंद ॥ सुरापानथी चित्त सभ्रात थाये ॥ गमे लाज गभीरता श्री
ल जाये ॥ जिहां ज्ञान विज्ञान सूझे न बूझे ॥ इश्र् मद्य जाणी न पीजे न दीजे।
॥२५॥ अथ वेश्याविपे ॥ कहो कोण वेश्या तणो अग सेवे॥ जिणे अर्थनी लाजनी
हाणि होवे॥ जिणे कोश सिंहा गुफाये निवासी॥ छल्यो साधु ने पालग्यो वत्र नासी
॥२६॥ अथ खेटकविपे ॥ छंद ॥ मृगयाने तज जीव घात जे ॥ सघले जीव दया तहां
भजे ॥ मृगयाथी दुख जे लह्या नवा ॥ हरि रामादि नरेंद्र जे हवा ॥ २७ ॥
परस्त्रीविपे चौपाईछंद ॥ स्वर्ग सौख्यभणि जो मन आशा ॥ छांडे तो परनारि
विलासा ॥ जेण एण निज जन्म दुखए ॥ सर्वथा न परलोक सूखए ॥ २८ ॥
अथ ए विषयोना उदाहरणो ॥ शार्दूलविक्रीडितछद ॥ जूवा खेलण पांडवा वन
गम्या, मद्ये बली द्वारिका ॥ मांसे श्रेणिक नारकी दुख लह्या, वांध्या नरे चारि
का ॥ आखेटे दशरत्थपुत्र विरही, केवल्न वेश्या घरे ॥ लकास्वामि परत्रिया स
रमे, जे ए तजे ते तरे ॥२९॥ अथ कीर्त्तिविपे ॥मालिनी छद ॥ दिशिदिशि पसर
ती चद्रमा ज्योति जैसी ॥ श्रवण सुणत लागे जाण मीठी सुधासी ॥ निशिदिन
जनगाये रामराजिंद जेवी ॥ इणि कलि वहु पुण्ये पामिये कीर्त्ति एवी ॥३०॥ अथ
प्रधानविपे ॥सकल व्यसन वारे स्वामिसू भक्तिधारे॥ स्वपरहित वधारे राज्यना का
ज सारे ॥ अनय नय विचारे दुष्टता दूर वारे॥ निजसुत जिम धारे राज्य लक्ष्मी
वधारे ॥ ३१ ॥ अथ कलाविपे ॥ चतुर कर कलानो सग्रहो सौख्यकारी ॥ इण
गुण जिण लाधी डोंण सपत्ति सारी ॥ त्रिपुर विजय कर्त्ता जे कलाने प्रसगे ॥ हि
मकर मनरगे ले धखो उत्तमांगे ॥३२॥ अथ मूर्खताविपे ॥ वचन रस न नेर मूर्ख
वार्त्ता न वेदे ॥ तस कुवचन खेदे तेहने सोख जे वे॥ नृपशिर रज नाखी जेणमू
रेंं वहीने ॥ हित कहत हणीज्यु वानरे सुग्रहीने ॥३३॥ अथ लज्जाविपे ॥ निज

वचन निवाहे लाज रघुराज्य वाले ॥ व्रत नय कुलरीतें मातज्यूं लाज पाले ॥ सकल गुण सुहावे लाजथी नावदंवे ॥ व्रत नियम लह्यो जे नाऽ लज्जा प्रभावे ॥३४॥ शालिनी छंद ॥ एवा जे जे रुयडा भाव राजे ॥ एणेविश्वे अर्थथी तेह छाजे ॥ एवुं जाणी सार ए सौख्य केरो ॥ ते धीरा जे अर्थ अर्जे भलेरो ॥ ३५ ॥ इतिश्री सूक्तमुक्तावल्यां अर्थवर्गो द्वितीयः समाप्तः ॥ २ ॥

॥ अथ कामवर्ग प्रारंभः ॥

उपजाति छंदः॥ आहाः कियतः किल कामवर्गे कामो नृनार्यो गुणदोषभाज. ॥ सुजक्रुणं योगवियोगयुक्तं समातृपितृप्रमुखाः प्रसंगाः ॥ १ ॥ अथ कामविषे ॥ कंदर्प पंचानन तेज आगे ॥ कुरंग जेवा जगजीव भागे ॥ स्त्रीशस्त्र लेई जग जे व दीता ॥ तिएण देवा जनवृंद जीता ॥ २ ॥ मालिनी छंद. ॥ मनमथ जगमांहे दुर्जयी जे अद्यापी ॥ त्रिभुवन सुरराजी जासशस्त्रे सतापी ॥ जलज विधि उपासे वा द्विजा विष्णु सेवे ॥ हर हिम गिरिजाने जेण अर्द्धांग देवे ॥ ३ ॥ शार्दूलविक्रीडित छंदः ॥ भिल्लीभाव चल्यो महेश उमया, जे काम रागे करी ॥ पुत्री देखि चल्यो चतुर्मुख हरी. आहेरिका आदरी ॥ इंद्रे गोतमनी त्रिया विलसिने. संभोग ते ओलव्या ॥ कामे एम महंत देव जग जे, ते भोलव्या रोलव्या ॥ ४ ॥ मालिनी छंद. ॥ नल नृपद वदंती देखि चारित्र चाले ॥ अरह नरहनेमी ते तपस्या विटाले ॥ चरम जिन मुनी ते चिल्लणारूप मोहे ॥ मयण सर व्यथाना एह उन्माद सोहे ॥ ५ ॥ अथ गुणदोषोद्भावनविषे ॥ रथोद्धताछंदः ॥ उत्तमा पण नरा न संभवे ॥ मध्यमा तिम न योषिता हुवे ॥ एह उत्तमिक मध्यमी पणो ॥ बेहुमांहि गुणदोषनो गिणो ॥६॥ तत्र पुरुषगुणा यथा ॥ शार्दूलविक्रीडितछंद.॥ जे नित्ये गुण वृंद ले परतणा. दोषां न जे दाखवे ॥ जे विडवे उपगारिने उपकरे, वाणीसुधा जे लवे ॥ पूरा पूनिम चंद जेम सुगुणा, जे धीर मेरुसमा॥गंभा जेह गंभीर सायर जिस्या, ते मानवा उत्तमा ॥७ ॥ अनुष्टुप् छंद.॥रूप सौभाग्य संपन्नाः सत्वादिगुणशोभना. ॥ ते लोके विरला धीरा· श्रीराम सदृशा नराः ॥ ८ ॥ अथ पुरुष दोषा यथा ॥ शार्दूलविक्रीडितछंद· ॥ लंकासामि हरंति राम तजि जे, शीतातणी एवकी ॥ स्त्रीवंची हरिचंद पांमव नृपे, कृष्णा न राखी सकी ॥ रात्रें छांमि निज त्रिया नल नृपे, ए दोष मोटा भणी॥ जोवां उत्तम मांहि दोष गणना, का वात बीजातणी ॥ ९ ॥ अथ स्त्रीगुणा यथा ॥ उपजातिछंदः ॥ सुसीख आले प्रिय चित्त चाले ॥ जे शील पाले गृह चिंत टाले ॥ दाना

दि जेणे गृहधर्म होई ॥ ते गेहि नित्ये घरजति सोई ॥ १० ॥ अथ स्त्रीनाश वर्ण
॥ उपजातिछंद ॥ नर्त्त हण्यो जे पति मारकाये ॥ नाख्यो नदीमां मुक मानिका
ये ॥ सुदर्शनश्रेष्ठि सुशीन राख्यो ॥ ते आज देई अनयाय दाख्या ॥ ११ ॥ वस
ततिलका छंद ॥ मार्यो प्रदेशि सुरिकाति विषयारजीए ॥ राजा यशोधर दास्या न
यनारजीए ॥ दुःखी कर्यो ससुर नूपुर पंडिताए ॥ ठोपी त्रिया इम नर्थ
इण दोषताए ॥ १२ ॥ अथ सुलक्षणी स्त्रीविषे —शार्दूलविक्रीडितछंद ॥ हडी
रूपवती सुशीन सुगुणी, लावण्य अगे लसे ॥ लज्जालु प्रियवादिनी प्रियतणे, चित्त
मदा जे वसे ॥ लीला योवन उल्लसे उरवसी, जाणे नृलोके वशी ॥ एवी पुण्यतणे
पसाय लहिये, रामे रमा सारशी ॥१३॥ उपजाति०द ॥ सीता सुनंदा नमराव
णी ॥ जे द्रोपदी शीलवती वखाणी ॥ जे एहवी शीलगुणे समाणी ॥ सुलक्षणा ते
जगमाही जाणी ॥१४॥ अथसयोगविषे ॥ मालिनी छंद प्रियसरि प्रिययागे उल
से नेत्र रगे ॥ हसित मुख शशीज्यु सर्वे रोमाच अगे ॥ कुच इक मुक वैरी नमना
जे न दाखे ॥ प्रिय मिलण समे जे अतरो तेह राखे ॥ १५ ॥ अथ वियागविषे
दिन वरस समाणे रैणि कल्पात जाणे ॥ हिम रज कदली जे तेह ज्वाला प्रमाणे
॥ शशिरसिकरसो जे स्वरसो सोइ लागे ॥ प्रिय विरह प्रियाने दुःख शूं शूं न थाय
॥१६॥ अथ माताविषे॥ इद्रवज्राछद ॥ जे मातनो बोल कदा न लोपे॥ जे विश्वमां सु
रज जेम ओपे ॥ ज्यां धर्म चर्या बहुधा परीखी ॥ त्यां मातपूजा सहुमां सरीखी
॥१७॥ जे मात मोह जिन एम कीधो ॥ गर्भे वसता व्रत नेम लीधो ॥ जे मात न
दा वयणे प्रबुद्धो ॥ शील तपते अरहन्न सीधो॥१८॥अथपिताविषे ॥ जे बाल ला
वे सुतने रमाडे॥ विद्या भणावे सरसू जमाडे॥ते तातनो प्रत्युपकार एही॥जे तेह
नी भक्ति हिये वहेही ॥ १९ ॥ मालिनीछंद ॥ निषध सगर राया जे हरीनंद च
दा ॥ तिम दशरथ राया जे प्रसन्ना मुनिंदा ॥ मनक जनक जेते पुत्रने माह रा
ख्या ॥ स्वसुत हित करीते तेहना काज साख्या ॥२०॥ अथ पुत्रविषे ॥स्वागताछद
मात तातपद पकज सेवा ॥ जे करे तस सुपुत्र कहेवा॥जेह कीर्त्ति कुलनाच वधा
रे ॥ सूर्य जेम जगि तेज सधारे॥ २१ ॥ शालिनीछंद ॥ गगापुत्रे विश्वमां कीर्ति
रोपी ॥ आज्ञा जेणे तातकेरी न लोपी ॥ ते धन्या जे अजनापुत्र जेवा ॥ जेणे की
धी जानकी नाथ सेवा ॥ २२ ॥तोटकछद ॥ इम काम विलास उलास तए ॥ १
सरीति हदे अनुनावतए ॥ जिमचदन अग विलेप तए ॥ हिय होय सदा सुख
सपतए ॥ २३ ॥ इति श्रीसूक्त मुक्तावल्या काम वर्गस्तृतीय समाप्त ॥

अथ मोक्षवर्ग प्रारंभ.

उपजातिछंदः ॥ यात्रा क्रियंतः किल मोक्षवर्गं कर्मक्षमासंयमभावनाद्याः ॥ विवेकनिर्वेदनिजप्रबोधा इत्येवमेते प्रवरप्रसंगाः ॥ १ ॥ मोक्षार्थविषे मालिनीछंदः ॥ इह भव सुख हेते के प्रवर्ते भवेग ॥ परभव सुखहेतें जे प्रवर्ते अनेग ॥ अवर अरथ छंडी मुक्ति पंथा अराधे ॥ परम पुरुष सोई जेह मोक्षार्थ साधे ॥ २ ॥ तजिय भरत केरी जेण षट्खंड भूमी ॥ शिवपथ जिण साध्यो सोलमे शांति स्वामी ॥ गजमुनि सुप्रसिद्धा जेम प्रत्येक बुद्धा ॥ अवर अर्थ छंडी धन्य ते मोक्ष लुद्धा॥ ३॥ अथ कर्मविषे ॥ करम नृपति कोपे दुःख आपे घणेरा॥ नरय तिरय केरा जन्म जन्मे अनेरा ॥ शुभ परिणति होवे जीवने कर्म तेवे ॥ सुरनरपतिकेरी संपदा सोइ देवे ॥ ४ ॥ करम शशि कलंकी कर्म भिक्षु पिनाकी ॥ करम वशि नरेंद्र प्रार्थना विष्णु रांकी ॥ करम वश विधाता इंद्र श्रयादि होई ॥ सबल करम सोई. कर्म जेवो न कोई ॥ ५ ॥ अथ क्षमाविषे ॥दुर्गति भर निवारे जे क्षमा कर्म वारे ॥ सकल तप सधारे पुन्य लक्ष्मी वधारे ॥ श्रुत सकल अराधे जे क्षमा मोक्ष साधे ॥ जिण निज गुण वाधे ते क्षमा को न साधे ॥ ६ ॥ सुगति लहि खिमाए खंध सूरीस सीसा ॥ सुगति दृढ प्रहारे कूरगडू मुनीशा ॥ गज मुनिस खिमाए मुक्ति पंथा अराधे ॥ तिम सुगति खिमाए साधु मेतार्य साधे ॥ ७ ॥ अथ संयमविषे स्वागता छंद ॥ पूर्व कर्म भवि संयम वारे ॥ जन्म वारिनिधि पार उतारे ॥ तेह संयम न केम धरीजे ॥ जेण मुक्ति रमणी वश कीजे ॥ ८ ॥ तुग शैल बलदेव सुहायो ॥ जेण सिंह मृग बोध वतायो ॥ तेम संयम लहीय अरायो॥ जेण पंचम सुरालय पायो ॥ ९ ॥ अथ द्वादश भावनाविषे.॥तत्र प्रथम अनित्य भावना ॥मालिनी छंद॥धण कण तनु जीवी वीज झात्कार जेवी ॥ सुजन तरुण मैत्री स्वप्न जेवी गणेवी ॥ अहमत ममताए मूढता कांइ माचे ॥ अथिर अरथ जाणी एणशुं कोण राचे ॥ १० ॥ धरणि तरु गिरिंदा देखिए भाव जेई ॥ सुर धनुष परे ते भंगुरा भाव तेई इम हृदय विमासी कारमी देह छाया॥तजिय भरतराया चित्त योगे लगाया॥ ११॥ द्वितीय असरण भावना ॥ परम पुरुष जेवा संहर्या जे कृतांते ॥ अवर सरण केतुं लीजिये तेह अंते ॥ प्रिय सुहृद कुटंबा पाश बेगा जिकोई ॥ मरण समय राखे जीवने ते न कोई ॥ १२ ॥ सुर गण नर कोडी जे करे जास सेवा ॥ मरण भय न छूटा तेह इन्द्रादि देवा ॥ जगत जन हरंतो एम जाणी अनाथी ॥ व्रत ग्रहिय विछूटा जेह संसारमांथी ॥ १३ ॥ तृतीय संसार भावना ॥ शार्दूलविक्रीडितछंदः ॥

तिर्यंचादि निगोद नारकितणी, जे योनि योनी रह्यां ॥ जीवे डुःख अनेक जोगवि ता, कर्मप्रजावे लह्यां ॥ या संयोग वियोग रोग बहुधा, या जन्म जन्मे डुखी ॥ ते संसार असार जाणि इह्वो, जे ए तजे सो सुखी ॥ १४ ॥ इंडवज्रा छंद ॥ जे श्री ते उत्तम जाति जाए ॥ जे उच्च ते मध्यम जाति थाए ॥ ज्यूं मोक्षमेतार्य मुनीइ जाए ॥ त्यूं मगु सूरी पुरपक्ष थाए ॥ १५ ॥ चतुर्थ एकत्वजावना पुण्ये अकेलो जिव स्वर्ग जाए ॥ पापे अकेलो जिव नर्क जाए ॥ ए जीव जा आव करेअकेलो ॥ ए जाणिने ते ममता महेलो ॥१६॥ उपजाति छंद ॥ ए एकनो जीव कुटंब योगे ॥ सुखी डुखी ते तस विप्रयोगे ॥ स्त्री हाथ देखी वलयो अकेला ॥ न मी प्रबोध्यो तिणथी वहेलो ॥१७॥ पंचम अन्यत्वजावना ॥ जो आपणो देहज ए न होई ॥ तो अन्यको आपण मित्त कोई ॥ जे सर्व ते अन्य इहां जणीजे ॥ केहो ति हां हर्ष विषाद कीजे ॥ १८ ॥ देहादि जे जीवथकी अनेरा ॥ इयो डुःख कीने तास केरा ॥ ते जाणिने वाघणिने प्रबोधी ॥ सुकोसले स्वांगन सारकीधी ॥१९॥ षष्ठ अशुचिजावना ॥ काया महा एह अशूचिताई ॥ जिहां नव द्वार वहे सदाई ॥ कस्तू रिकर्पूर सुइव्य सोई ॥ ते काय संयोग मलीन होई ॥२०॥ अशूचि देही नर नारि केरी ॥ म राच जे ए मलमूत्र सेरी॥ए कारमी देह असार देखी॥चतुर्थ चक्रिय पण ते उवेखी ॥२१॥सप्तमी आश्रवजावना॥मालिनीछंद ॥ इह अविरति मिथ्या योग पापादि तावे इण उण जव जीवा आश्रवे कर्म बांधे ॥ करम जनक जेने आश्रवा जे न रुंधे ॥ स मर समय आत्मा संवरी सो प्रबुद्ध ॥२२॥ इंडवज्राछंद ॥ जेकुंडरीके व्रतगाडि दीधुं ॥नाईतणूं तेवत्ति राज्य लीधुं॥तेडुःख पाम्या नरके घणेरा॥तेहेतु एआश्रव दोषकेरा॥२३ अष्टमी संवरजावनाजे सर्वथाआश्रवने निरुंधे॥ तेसंवरी संवरजाव साधे ॥ ते जावथी गुरुवज्र स्वामी॥जेणे त्रिया कंचन कोडिवामी ॥२४॥ नवमी निर्जरा जावना ॥ मालिनी छंद ॥डुयदस तपजेदे कर्म ए निर्जराए॥उतपति थिति नाशे लोक जावा नराए॥डुरलज जग बोधीडुर्लजा धर्मबुद्धी॥जव हरणि विजावो जावना एह शुद्धी॥२५॥उपजातिछंद॥ बे निर्जरा काम सकाम तेही ॥ अकाम जे ते मरुदेवि जेही ॥ ते ज्ञानथी कर्मद्द निर्ज रीजे ॥ दृढ प्रहारी परि तो तरीजे ॥२६॥ दशमी लोकजावना ॥ मानिनी छंद॥ जिम पुरुष विलोये ए अधो लोक तेवो ॥ तिरिय पण विराजे थाल स्योहन जे वो ॥ उरध मुरज जेवो लोकनाले प्रकास्यो ॥ तिमज जवन जानू केवली ज्ञान जास्यो ॥ २७ ॥ एकादश बोधिदुर्लजजावना ॥ स्वागता छंद ॥ बोधि बीन लहि जेह अराधे ॥ ते इलासुत परे शिव साधे ॥ धर्म जावन लही नवि जावो ॥ रान

संपत्ति परे सुख पावो ॥ ३० ॥ अथ रागविषे ॥ इंद्रवज्रा छंदः ॥ रागे म राचो भव बंध जाणी ॥ जे राग ते राग वडो अनाणी ॥ तोरी नयो राग महेन्द्र रागी ॥ अधोग वेता नि जबुद्धि त्यागी ॥ २९ ॥ अथ द्वेषविषे ॥ रे जीव विद्वेष मने म आणे ॥ विद्वेष संसार निदान जाणे ॥ सान्नू नणंदे मिलि कूड कीधुं ॥ जुवो सुनंदा शिर आल दीधुं ॥ ३० ॥ अथ संतोषविषे ॥ वसंततिलका छंद. ॥ संतोष तृप्त जनने सुख होय जेवुं ॥ ते इच्छ लुब्ध जनने सुख नाहि तेवुं ॥ संतोषवंत जनने सहु लोक सेवे ॥ राजेंद्र रंक तरि त्या वरि जेह जोवे ॥ ३१ ॥ अथ विवेकविषे ॥ उपजाति छंद. ॥ जो जेह चित्ते सुवि वेक जागे ॥ तो मोह अंधार विकार नाशे ॥ विवेक विज्ञानतणे प्रमाणे ॥ जीवादि जे वस्तु स्वभाव जाणे ॥ ३२ ॥ इंद्रवज्रा छंदः ॥ बाला पणे संयम योग धारी ॥ वर्षाकले कायत्रि जेण नारी ॥ श्रीवीरकेरो अयमत्त तेइ ॥ सुज्ञान पाम्यो सु विवेक लेइ ॥ ३३ ॥ अथ निर्वेदविषे ॥ शार्दूलविक्रीडितछंद. ॥ जे बंधूजन कर्म बंधन जि स्या, भोगा भुजंगा गिणे ॥ जाणंतो विषसारिखी विषयता, संसारता ते हणे ॥ जे सं सारह रागहेतु जनने, संसार भावा हुवे ॥ भावो तेइ विरागवंत जनने, वैराग्यता दाखवे ॥ ३४ ॥ वसंततिलकाछंद ॥ निर्वेद ते प्रबल दुर्नर वंदिखाणो ॥ जे छोडवा मनथकी बुध तेह जाणो ॥ निर्वेदथी तजिय राज विवेक लीधो ॥ योगींद्र भर्तृहरि सं यम योग लीधो ॥ ३५ ॥ अथ आत्मबोधविषे ॥ ए मोहनींद तजि केवल बोध हेते ॥ ते ध्यान शुद्ध कहि भावनि एक चित्ते ॥ ज्यूं निप्रपंच निज ज्योति स्वरूप पावे ॥ निर्बाध जे अखय मोक्ष सुखार्थ आवे ॥ ३६ ॥ मालिनी छंद ॥ भवि विषयतणा जे चंचला सौख्य जाणी ॥ प्रियतम प्रिय योगा संगुरा चित्त आणी ॥ करमदल खपे इ केवल ज्ञान लेइ ॥ धन धन नर तेइ मोक्ष साधे जिकेइ ॥ ३७ ॥ इति मोक्षव र्ग चतुर्थ समाप्तः ॥

उपजाति वृत्तं ॥ इत्येवमुक्ता किल सूक्तमाला विभूषिता वर्गचतुष्टयेन ॥ तनोतु लीला मधिकं जनानां कंठस्थिता मौक्तिकमालिकेव ॥ १ ॥ शार्दूलविक्रीडितं वृत्तं ॥ आसीत्सद्गुणसिंधुपार्वणशशी श्रीमत्तपागछप सूरि श्रीविजयप्रभाभिधगुरुर्बुध्या जितस्वर्गुरु ॥ तत्पट्टोदयभूधरो विजयते भास्वानिवोद्यत्प्रभ. सूरिश्रीविजयादिर त्नसुगुरुर्वि द्वज्ञानानंदभू. ॥ २ ॥ आर्यावृत्तं ॥ विख्यातास्तद्राज्ये, प्राज्ञा श्रीशांतिवि मलनामान. ॥ तत्सोदरा बभूवु. प्राज्ञा. श्रीकनकविमलाव्हा ॥ ३ ॥ तेषामुभौ विनेयौ विद्वान् कल्याणविमल इत्याव्ह. ॥ तत्सोदरो द्वितीय. केसरविमलाभिधो ऽवरज ॥ ४ ॥ तेन चतुर्जि वैं गे, रचिता भाषाभिरुरुचिरेयं ॥ सूक्तानामिह माला, मनोविनोदाय

बालाना ॥ ५॥ वेदेंद्रियर्षि चंद्र, प्रमिते श्रीविक्रमाहृते वर्षे ॥ अयंयि सुक्तमाना केसर विमलेन विबुधेन ॥ ६ ॥ इति श्रीसूक्तमुक्तावली सपूर्ण.

॥ श्री शखेश्वरपार्श्वनाथाय नम ॥

अथ

श्री विनयविजयजी उपाध्यायकृत शांतसुधारस ग्रथ अर्थसहित प्रारंभ

शार्दूलविक्रीडितछद ॥ नीरध्रे भवकानने परिगलत्पचाश्र
वाम्भोधरे नानाकर्मलतावितानगहने मोहाधकारोद्धुरे ॥
भ्रातानामिह देहिना स्थिरकृते कारुण्यपुण्यात्मनिस्तीर्थ
शै प्रथितास्सुधारसकिरो रम्या गिर पातु व ॥ १ ॥

अर्थ ॥ प्रथमग्रथकर्त्ता ग्रथनेआर्वे श्रीतीर्थकरदेवनी वाणीनी स्तुतिकरी मगलाचरणकरेछे हेभव्यो जेमा कोइछिद्रनथी एटलेनिकलवानो वारणोनथी वनीनेमा समस्तप्रकारें पाचआश्रवरूप मेघ वरसीरह्युछे तथानानाप्रकारेना ज्ञानावरणीयादिक कर्मोनीप्रकृतिरूप वेलियेकरीव्याप्त अनेमोहरूप अधकारेकरीयुक्त एहवोआ ससाररूपवन तेमाफिरनाराजे प्राणीओ तेने स्थिरकरवानेअर्थे करुणायेंकरीपवित्रछे अत करणजेहनो एहवा चतुर्विधसघरूप तीर्थनाईश्वरजे श्रीतीर्थकरदेव तेणेउपदेसेली अमृतरसने वरसती एहवीरमणीयजेवाणी ते तमारु रक्षणकरो ॥ १ ॥

द्रुतविलवित वृत्तत्रय॥स्फुरति चेतसि भावनया विना न वि
डुपामपि शातसुधारस ॥ न च सुख कृशमप्यमुना विना
जगति मोहविषादविपाकुले ॥ २ ॥ यदि भवभ्रमखेदप
राङ्मुख यदि च चित्तमनतसुखोन्मुख ॥ शृणुत तत्सुधि
य शुभभावनामृतरस मम शातसुधारस ॥ ३ ॥ सुम
नसो मनसि श्रुतपावना निदधता द्व्यधिका दश भावना ॥
यदिह रोहति मोहतिरोहिताद्भुतगतिर्विदिता समतालता॥४॥

अर्थ ॥ हवेजेशांतसुधारसते भावनाओविना स्फुरतोनथी तेकहेछे विद्वाननाहो

ना अंतःकरणमांपण शांतिरूपअमृतनोरस तेन्नावविना स्फुरतोनथी अने मोह तथा खेद तद्रूपविपेंकरीव्याप्त एहवोजेजगत तेमां शांतसुधारसविना किंचित्‌मात्र थोमोपणसुखनथी ॥ १॥ माटेआशांतसुधारसनामा ग्रंथसांन्नलवानो उपदेशकरेछे हेबुद्धिमंतो जोतमारुंमन संसारन्रमणकरवाना खेदेंकरी पराङ्मुख उपरांठूं थयोहोय अनेजेमां अनंतसुखछे एहवोजेमोक्ष तेनासुखपामवानेविपे सन्मुखथयो होय तोजेमां मनोहरन्नावनानो रसन्नरेलोछे एवोमारो आशांतसुधारसनामा ग्रंथसांन्नलो ॥ ३ ॥ हवे न्नावनाथी समताप्रगटथायतेकहेछे हेपंमितजनो आसंसारमां जेनुंश्रवणमा त्रकरवाथीज पवित्रतानेकरनारी एहवीवारन्नावनाछे तो तेने धारणकरनारो जेजीव तेनाहृदयमां मोहजेअज्ञान तेने आछादितकरनारी अनेजेहनी अद्भुतगतिछे एहवी प्रख्यात समतारूप वेलीप्रगटथशे ॥ ४ ॥

रथोद्धतावृत्तं॥आर्तरौद्रपरिणामपावक प्लुष्टन्नावुकविवेकसौष्ठवे॥
मानसे विपयलोलुपात्मना क्व प्ररोहतितमां समांकुरः ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवेसमतापामवाने जे अयोग्यहोयतेकहेछे जेनुंमन पांचेंद्रियना त्रेवीस विपयोनेविपे लोलुपछे एहवाप्राणीओने आर्त्त रोद्रध्यानेकरीने उत्पन्नथयेली एह वीजे माठापरिणामरूप अग्नि तेणेकरीने न्नावनाना रसनेविपे जे चतुरपुरुपोछे तेना विचाररूप रुडापणुं जेमांथीबलीगयुंछे एहवाप्राणीओना मनमां समतानोअंकुर किहांथी उत्पन्नथाय अर्थातनजथाय ॥ ५ ॥

वसंततिलकावृत्तं॥यस्याशयं श्रुतकृतातिशयं विवेकपी
यूपवर्परमणीयरमं श्रयंते ॥ सन्नावना सुरलता नहि
तस्य दूरे लोकोत्तरप्रशमसौख्यफलप्रसूतिः ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हवेसमतापामवाने योग्यहोयतेकहेछे सिद्धांतश्रवणादिकेकरीने अत्यं तपणे संपूर्णन्नरेला वृद्धिपामेला तथा विवेकरूप अमृतवृष्टीनी रमणीयजेक्रीडा ते णेकरीने रम्यके० मनोहर शोन्नायमान एहवांजेनां अंत करणछे तेवांअंत करणो मां सन्नावनाओ श्रयंतेके० प्रवेशकरेछे तेथीतेपुरुपने लोकोत्तरजे प्रशमके० शांतर सनासुख अर्थात्‌मोक्षसुख तेनाफलनं प्रसवनारी एहवीज सुरलताके० कल्पलता ते दूरनथी अर्थात् तेहने मोक्षदूरनथी ॥ ६ ॥

अनुष्टुब्वृत्तद्वय॥ अनित्यताशरणते नवमेकत्वमन्यता ॥ अशौच माश्रव चात्मन् संवरं परिन्नावय ॥७॥ कर्मणो निर्जरा धर्म सुकृता लोकपद्धति ॥ बोधिडुर्लनतामेता नावयन्मुच्यसे नवात् ॥८॥

अर्थ ॥ हवेबे श्लोकेकरी आग्रथमांनाववानी बारनावनाओनां नामकहेछे । अनित्यनावना २ अशरणनावना ३ संसारनावना ४ एकत्वनावना ५ अन्यत्वनावना ६ अशुचिनावना ७ आश्रवनावना ८ संवरनावना॥हेआत्मातुं एनावनाओनो विचारकर ॥ ७ ॥ ए कर्मनिर्ज्जरानावना १० धर्मनावना ११ हडाप्रकारनो लोकस्वरूप नावना १२ बोधिडुर्लन नावना॥हेआत्मातुं एबारनावनाओ नो विचारकरतोथको संसारथकीमुक्तथइस ॥ ८ ॥

पुष्पिताग्रावृत्त ॥ वपुरवपुरिदं विदभ्रलीलापरिचितमप्यतिनंगुरं नराणां ॥ तदतिनिडुरयौवनाविनीतं नवति कथं विडुषा महोदयाय ॥ए॥

अर्थ ॥ हवेप्रथमअनित्यनावना नावतां शरीरनु अनित्यपणुदेखाडेछे हेनिरंजन आजगतमां अभ्रनीनानीपरें क्षणनंगुर अनेजेहनो जयकरवो अत्यंतकठिणछे एहवो तरुणअवस्थायेंकरी उन्मत्त मदनजे कामदेव तेनाजेहवु सुंदर एवां जे मनुष्योनुंशरीरते विद्वान्जे पंमितलोक तेनापण महोटा उदयकरवानुं कारण केमथाय अपितुनहीनथाय ॥ ए ॥

शार्दूलविक्रीडित वृत्तद्वय॥ आयुर्वायुतरत्तरंगतरलं लग्नापद संपदः सर्वेपींडियगोचराश्च चटुलाः संध्याभ्ररागादिवत्॥ मित्रस्त्रीस्वजनादिसंगमसुखं स्वप्नेंडजालोपमं तत्किं वस्तु नवे नवेदिह मुदामालंबनं यत्सतां ॥ १० ॥ प्रातर्भ्रातरिहावदानरुचयो ये चेतनाचेतना दृष्टा विश्वमनःप्रमोदविडुरा नावा स्वतः सुंदराः ॥तांस्तत्रैव दिने विपाकविरसान् हा नश्यतः पश्यतश्चेतः प्रेतहतं जहाति न नवप्रेमानुबंधं मम॥११॥

अर्थ ॥ हवेबेकाव्यैंकरी संसारनो अनित्यपणुंदेखाडेछे हेप्राणी आसंसारनें विषे हेकरी ब्रहनबहन्तु पहवाने पाणीनातरंग तेहनीपरे आयुष्यपणचंचल छे विविधप्रकारनी संपत्तियोतो तेरुग विपत्तियेंकरीयुक्तछे अने समस्त रूपादि

विषयछे ते संध्याकालना आकाशजेवासुंदरछे एटले संध्याना अभ्ररागनीपरें सुंदर तोछे पण अभ्ररागनीपरें थोडीवारपछि विनाशशीलछे तथा मित्र स्त्री स्वजन इत्यादिकोनोजे समागम तेणेकरीने थयेलुंजेसुख तेस्वप्नसरीखुं किंवाइंद्रजालसरखुंछे ते वारें आसंसारमां सत्पुरुषोने आश्रयकरवायोग्य कइवस्तुछेवारुं, अर्थात्कोइजनथी सर्वविनाशशील अनित्यछे इतिभाव ॥ १० ॥ वली भ्रातके० हेभाई आजगतमां जे प्रभातसमयें स्वछकांतिवान तथा अत्यंतपणे जगतने आनंद आपनारा अने स्वतासुंदरजे चेतनपदार्थ अने अचेतनपदार्थना भावदीठाहोय तेपदार्थोनो काल परिपाक थयाथी तेहिजदिवसे शोभायेंकरी हीन थईजायछे अने नाशपामेछे ए हवापदार्थोने जोनारो एहवो महारुं हतके० नष्टथयलुं जे अंतःकरण ते संसार संबंधने मूकतुंनथी ए कहेवी महोटी खेदनीवातछे ॥ ११ ॥

॥ प्रथमभावनाष्टकं रामगिरिरागेण गीयते ॥

मूढ मुह्यसि मुधा ॥ मूढ मुह्यसि मुधा ॥ धुवपदं ॥ विभव
मनुचिंत्य हृदि सपरिवारं ॥ कुशशिरसि नीरमिव गलद
निलकंपितं ॥ विनय जानीहि जीवितमसारं ॥ मू०॥ १ ॥

अर्थ ॥ हवेवलीविशेषें अनित्यभावना भावतोथको संसारनुं अनित्यपणुं देखाडे छे हेमूर्खशिष्य तु परिवारसहित पोतानीसंपत्तिनुं चिंतनकरीने शुंव्यर्थमोहपामेछे वायुयें हलाव्योथको कंपायमानथयीने गलीजनारो एहवो दर्भनाअग्रभागें रहेना रोजे पाणीनुं बिंदुओ तेनीपरें हेविनय आ तहारुंजीवितव्य असारछे एमजाण एरीतें विनयविजयजीउपाध्याय पोतेपोताने प्रतिबोधकरतो बीजानेपण उपदेशकरेछे॥१॥

पश्य भंगुरमिदं विषयसुखसौहृदं पश्यतामेव नश्यति सहासं ॥
एतदनुहरति संसाररूपं रयाज्ज्वलज्जलदबालिकारुचिविलासं॥मू०॥२

अर्थ ॥ वलीहेमित्रतु जो के आविषयसुखते क्षणभंगुरछे जेमकोई हाथतालीदेई ने हसतांहसतांज नाशीजायछे तेनीपरें विषयसुखपण जोतांजोतांज नहता एह वाथईजायछे वली आ संसारनुं स्वरुपते वेगेकरीने जनारी एहवीजे वीजली तेना जधुकानी कांतीनुं अनुकरण करेछे एटले एसंसारनुं स्वरुपते वीजलीनीपरें चंचलछे॥२

हंत हतयौवनं पुछमिव शौवनं ॥ कुटिलमति तदपि लघु दृष्टनष्टं ॥ तेन
वत परवशापरवशा हतधियः॥ कटुकमिह किं न कलयंति कष्टम्॥मू०॥३

अर्थ ॥ आ एकमहोटी खेदनीवातछे के इष्टतारुण्यपणुंते कुतरानी पुंछडीनरिखो वांको अने जेहने जोतावारज तुरतनहीएवोथईजायछे अर्थात् नाशपामीजायछे वा तारुण्यपणाने परवशाके० पराधीनथयला हतवियके० नष्टबुद्धिवतजे पुरुषोछे ते ससारमां परवशाके० स्त्रीओ ते कष्टकारी कडवाफलनीआपनारीछे एहवु जाण तानथी माटे वतइतिखेदे एपणएकमहोटु खेदनोज कारणछे ॥ ३ ॥

यदपि पिण्याकतामगमिदमुपगत ॥ भुवनदुर्जयजरापीतसारं ॥ तदपि गतलज्जमुज्झतिमनो नांगिना वितथमतिकुथितमन्मथविकार॥मू०॥४॥

अर्थ ॥ जोपण त्रणेलोकना प्राणीओ जेने जीतवाने अत्यतअसमर्थ एहवीजे जराअवस्था तेणेकरीने जेपुरुषनु सारके० सत्वपणु जतुरह्युछे एटले जरायेंकरी शरीरक्षीणपणेंगयुंछे एहवु एशरीर दुर्बल थयु होय तोपण निर्लज्जप्राणीओनां मन निष्फल बुद्धिथी उत्पन्नथयला कामविकारने मूकतानथी ॥ ४ ॥

सुखमनुत्तरसुरावधि यदतिमेदुरं ॥ कालतस्तदपि कलयति विरामं॥ कतरदितरत्तदा वस्तु सांसारिकं॥स्थिरतरं भवति चिंतय निकामं ॥मू०५

अर्थ ॥ वळीरे पांचअनुत्तरविमाननां घणाज पुष्टकारीसुखछे तेनीपण मर्यादा छे ते पणकालेंकरी मर्यादापुरीथयाथी विरामपामेछे तो पांच अनुत्तरविमान करतां एवी बीजीकईवस्तुछे जेससारमां वधारेस्थिरीभूतथशे एवातनो तु महोटोविचारकर ॥

यैः सम क्रीडिता ये च भृशमीडिता यैः सहाकुर्महि प्रीतिवादं॥तान् जनान्वीक्ष्य बत भस्मभूयगतान्निर्विशंकाः स्म इति धिक्प्रमादं॥

अर्थ ॥ जेनीसाथें आपणे उत्कमेम रमता खेलता क्रीडाकरता तथा जेनीआ पणे अत्यत स्तुतिकरतां अने जेनीसाथें आपणेप्रीतीयेंकरी वातचीतकरता तेविजनो ने भस्मभूत थएलाना देखीने पण जोअम निशक रहियेंछयें तो वतइतिखेदे एवोने अमारो प्रमाद तेप्रमादने धिक्कारहाजो ॥ ६ ॥

असकृदुन्मिष्य निमिषंति सिंधूर्मिवच्चेतनाचेतनाः सर्वभावाः ॥ इंद्रजालोपमाः स्वजनधनसगमास्तेषु रज्यंति मूढस्वभावाः ॥ मू० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ जेम समुद्रना कल्लोल वारवार उत्पन्नथईने नाशपामेछे तेमज जगत मां जडचेतन अने जगमस्थावरोना भावने एमजाणवु अने जगतमां इन्द्रजालिया जेम शंबरछे तेमज इन्द्रजाल सरिखोछे तो एहवा पदार्थोउपर मूर्खप्राणीनुं मुंझाईजायछे

कवलयन्नविरतं जंगमाजंगम जगदहो नैव तृप्यति कृतांतः ॥ मुखग
तान् खादतस्तस्य करतलगतैर्न कथमुपलप्स्यतेऽस्माभिरंतः ॥ मू० ॥८॥

अर्थ ॥ वली स्थावर अने जंगमात्मक जगतने निरंतर भक्षणकरनारो एहवोजे कृतांतके० यमते तृप्तथातोनथी एमहोटोआश्चर्यछे तोमुखमां आव्याप्राणीनो भक्षणकरनारोजे कालतेनाजहाथमां रहेनारा अमेछैयें ते अमारोमृत्यु केवीरीतेनथाय॥८॥

नित्यमेकं चिदानंदमयमात्मनोरूपमभिरूप्यसुखमनुभवेयं ॥
प्रशमरसनवसुधापानविनयोत्सवो भवतु सततं सतामिह भ
वेऽयं ॥ ९ ॥ इतिमहोपाध्यायश्रीकीर्तिविजयगणिशिष्योपा
ध्यायश्रीविनयविजयगणिविरचिते शांतसुधारसगेयकाव्ये
अनित्यभावनाविभावनो नाम प्रथमः प्रकाशः ॥

अर्थ ॥ तेमाटे नित्य एकचिदानंदमय जे महारोआत्मा तेहनुं स्वरुपजोईने सुखनो अनुभव हुंकरीश इहां विनयविजयजी उपाध्यायकहेछेके आ मनुष्यभवमां शांतिरसरूपजे नूतनअमृत तेहनेपानकरवानो उत्साह सत्पुरुषोने निरंतरहोजो ॥९ इतिश्रीमन्महोपाध्याय श्रीकीर्त्तिविजयगणिशिष्योपाध्याय श्रीविनयविजयगणि विरचिते शांतसुधारसेगेयकाव्ये अनित्यभावनाविभावनोनाम प्रथमःप्रकाशः ॥

शार्दूलविक्रीडितं वृत्तं॥ये षट्खंडमहीमहीनतरसा निर्जित्य बभ्राजिरे ये च
स्वर्गभुजो भुजोर्जितमदा मेदुर्मुदामेदुराः ॥ तेपि क्रूरकृतांतवक्त्ररदनैर्निर्द
ल्यमाना हठादत्राणाः शरणाय हा दश दिशः प्रेक्षंत दीनाननाः ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हवेबीजी अशरणभावना भावेछे आसंसारमां मृत्युआवेथकेकोईने कोईनुं शरणनथी एमदेखाडेछे हाइतिखेदे जेपुरुष महोटापराक्रमेकरी छखंडपृथ्वी जीति शोभानेपाम्या एहवा चक्रवर्त्ती तथा जेहर्षेकरीपुष्टथयला अने जेहनी भुजाओमां उत्कृष्टबलछे एटले स्वर्गनासुखभोगवीने आनंदपाम्याछे एहवा देवताओ तेपण जेवारें क्रूरहृदयवंत जे यम तेपोताना मुखमांलेई दांतोनाबलात्कारेकरी भक्षणकरे तेवारे तेअशरण थयाथका दीनमुखकरी कोईनुंशरणलेवानेअर्थे दशे दिशायें जूएछे तोपणतेने कालनादांतमांथी मूकाववाने कोई समर्थनथाय ॥ १ ॥

स्वागतावृत्तं ॥ तावदेव मदविभ्रममाली तावदेव गुणगौरवशा
ली ॥ यावदक्षमकृतांतकटाक्षैर्नेक्षितो विशरणो नरकीटः ॥ २ ॥

अर्थ ॥ माटेजेनो रक्षणकरनार कोईनथी एह्वो एमनुष्यरुपीओ कीटजेकीडो ते ह्नेजिहांसुधि सह्नकरवाने डुर्जन एह्वोजेकाल तेणे पोताना कटाक्षेंकरी जोयुंन थी तिहांसुधी मदजे अह्कार तेनाविलासेकरी शोनेछे अने तिहांसुधीज गुणोनो गौरवपणु धारणकरेछे ॥ २ ॥

शिखरिणीवृत्त ॥ प्रतापैर्व्यापन्नं गलितमथ तेजोभिरुदितैर्गत धैर्योद्योगै श्लथितमथ पुष्टेन वपुषा॥प्रवृत्त तद्रव्यग्रहणविषये बाधवजनैर्जने कीनाशेन प्रसभमुपनीते निजवश ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ पण जेप्राणीने जेवारे यमराजायें पोताने स्वाधीनकर्यो तेवारें तेप्राणी नो प्रतापपण नाशपाम्यो अने उदितथयलुजेतेज हतु तेपणगलीगयु तथा धैर्य अ ने उद्योग पण जतुरह्यु वली शरीरपुष्टहतो तेपण शिथिलथईगयु अनेतेपुरुषतुं एकठुं करेलु द्रव्य लेवाने अर्थें बाधवजन जे भाईओ प्रमुख हता ते प्रवर्तथया ॥ ३ ॥

द्वीतीयभावनाष्टक मारुणीरागेण गीयते

स्वजनजनो बहुधा हितकाम प्रीतिरसैरभिराम॥मरणदशावशमुपगत वत रक्षति कोपि न सत ॥१॥ विनय विधीयता रे श्रीजिनधर्म शरण॥ अनुसधीयता रे शुचितरचरणस्मरण ॥ वि० ॥ २ ॥ ध्रुवपद ॥

अर्थ ॥ फिरि सम्यक्दृष्टीजीवे विशेषेकरी अशरणभावनाने ... कहेछे जेपोताना स्वजनलोकछे तेपणुज हितनावाछक तथा प्रीतिनाराखनार दिकरीते घणाप्रकारे रुडाछे पणतेसर्व स्वार्थनिमित्तेजाणवा ए तात्पर्यछे परतु त्पुरुषो जेवारे जीव मरणअवस्था पामवाने तैयारथयो तेवारेंतेनु सरक्षण र कोईनथी ॥ १ ॥ तेमाटेंग्रथनाकर्त्ता श्रीविनयविजयजी उपाध्यायकहेछे के नय तु श्रीजिनधर्मनुं शरणकर अने पवित्र एह्वुजे चारित्रतेनु स्मरणकर ॥ २

तुरगरथेभनरावृतिकलित दधत बलमस्खलित ॥ हर ति यमो नरपतिमपि दीन मैनिकइव लघुमीन ॥ वि० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ घोडा रथ हाथी पायदल एचतुरगणी सेनायेकरीयुक्त तथा पोतेपण अस्खलित बलने धारणकरनारो एटलेकोईकालें खलनापामेनही एह्वो महापरा क्रमवत राजा तेनेपण जेरीतें मैनिकके० माछलानोमारनार जटवेईने लघुमी नके० न्हाना दीनमाछलाओने पकडीलियेछे तेरीतें यम पकडीलियेछे॥ ३ ॥

प्रविशति वज्रमये यदि सदने तृणमथ घटयति वदने ॥
तदपि न मुंचति हतसमवर्ती निर्दयपौरुषनर्ती ॥ वि० ॥ ४ ॥

अर्थ॥जो वज्रमय एटले वज्रनाज परमाणुयें बनावेला घरमांप्रवेशकरे अथवा मुखमां तृणपलाधारणकरे परतु निर्दय अने पराक्रमेंकरी नाचनारो तथाजेह्नी सर्वनेविषें समानघातकरवानीजवृत्तिछे एह्वोजेयम ते तेनेपण मूकतोनथी ॥४॥

विद्यामंत्रमहौषधिसेवां सृजतु वशीकृतदेवां ॥ रसतु
रसायनमुपचयकरणं तदपि न मुंचति मरणं ॥ वि० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हेप्राणी जो देवताउंसाधनकरी पोतानेस्वाधीनकरो अथवा महोटीम होटी विद्याओ साधनकरो मंत्रसाधनकरो तथा महोटी औषधिओसाधी शरीरपु ष्टी करवानेअर्थे आरोगो तोपण मरण मूकतुंनथी ॥ ५ ॥

वपुषि चिरं निरुणद्धि समीरं पततु जलधिपरतीरं ॥ शिर
सि गिरेरधिरोहति तरसा तदपि स जीर्यति जरसा॥वि०॥६॥

अर्थ ॥हेनव्यो जो समाधीचडावी शरीरने घणाकालसुधी वायुनोरोधकरो अथ वा समुद्रने पहेलाकांठे जईनेशो अथवा बलात्कारें पर्वतनाशिखरउपर चडीनेशो तोपण जराअवस्याथी क्षीणथवुं ते कांईबंधथतुनथी ॥ ६ ॥

सृजतीमसितशिरोरुहललितं मनुजशिरोवलिपलितं ॥ को
विदधानां नूघनमरसं प्रनवति रोद्धुं जरसं ॥ वि० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ कालाकेशेकरीने घणोजसुंदर एह्वो मनुष्यनो कालोमस्तक तेने सपेतप णानी करनारी तथा शरीरना मांसनोनाशकरनारी खोखरासरीखोकरी नशोनसने जूदी करीदेखाडनारी पृथवीउपर मेघसमान शरीरतेने शुष्ककरीनाखनारी एह्वीजरा अवस्था जेवारें प्राणीने आवशे तेवारें तेनोरोधकरवाने कोण सहायनूतथसे अ र्थात् कोईपण वृद्धावस्थानो रोधकरवाने समर्थनथाय ॥ ७ ॥

उद्यत उग्ररुजा जनकायः कः स्यात्तत्र सहायः ॥ एकोऽ
नुनवति विधुरुपरागं विनजति कोपि न नागं ॥ वि० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ हेआत्मा जेवखतें ताह्रुंशरीर उग्ररोगेकरी व्याप्तथाशे तेवखतें तुजने कोणसहायथाशे ! जूओ जेमचंद्रमा एकलोपोतेज राहुना ग्रहणनी पीडानोगवेछे प

रतु नक्षत्र अथवा ताराकोईपण तेनाड खमांविजागलेतानथी तेम

रोगादिक ड खप्राप्तथशे तेवारे ताहरोकोईपण सबंधी तेड खमाविजागलेनारनथी

शरणमेकमनुसर चतुरगं परिहर ममतासग ॥ विनय रचय शिव सौख्यनिधान शांतसुधारसपान ॥ वि० ॥ए॥ इति श्रीशांतिसुधारस गेयकाव्ये अशरणजावनाविजावनो नाम द्वितीय प्रकाश ॥

अर्थ ॥ माटे दान शील तप अने जाव एचार अग जेह्नाछे एह्वाएक तु शरणकर अने ममत्वनो सग परिहर हेविनय तु शिवसुखनो निधान जे शातसुधारस तेनुंपानकर ॥ ए ॥ इति श्री शातसुधारसगेयकाव्ये वना विजावनोनाम द्वितीय प्रकाश ॥

शिखरिणीवृत्तत्रय ॥ इतो लोज्ज क्षोज्ज जनयति डरतो दवइवो ल्लसल्लाजाजोनि कथमपि न शक्य. शमयितु ॥ इतस्तृष्णाऽक्षा णा तुदति मृगतृष्णेव विफला कथ स्वस्थै स्थेय विविधजयजी मे जववने ॥ १ ॥ गलत्येका चिता जवति पुनरन्या तदधिका मनोवाक्काये हा विकृतिरतिरोपात्तरजस ॥ विपज्जर्तावर्ते फटिति पतयालो प्रतिपद न जतो ससारे जवति कथमप्यार्तिविरति ॥ ॥ २ ॥ सहित्वा सतापानशुचिजननीकुक्षिकुहरे ततो जन्म प्राप्य प्रचुरतरकष्टक्रमहत ॥ सुखाजासैर्यावत्स्पृशति कथमप्यार्तिवि रति जरा तावत्काय कवलयति मृत्यो सहचरी ॥ ३ ॥

॥ हवे त्रीजी ससारजावना जावेछे आ ससारमा डुरतके० घणोमहोटो जेह्नो अतनथी अनेदावानल सरिखो अर्थात् वनअग्नीसरखो एह्वोजेलोज तेनेकोईपणरी तें उदयनेपामनारो जे लोजरूप अजोजि के० उदकते शातकरी शक्तोनथी पणउलटो क्षोजने उत्पन्नकरेछे वलीइहां ससारमा मृगतृष्णा जेवीरीतेविफलछे तेवीरीतेइंडियानी तृष्णा प्रेरणाकरेछे तेपणनिष्फ[...] तोएह्वा अनेकप्रकारना नानाविधजयेंकरी विह [...]णा ससाररूप अरण्यमा[...] स्वस्थपणे रहिशकिये ॥ १ ॥ आससारमां एक अस्तजटिजायछे तोफरी[...]ण अधिक वीजीचिताआवी उत्पन्नथायछे वलीम क्रमवत अने काया[...] विकारथायछे तथाअत्यतक्रोधना योगेंकरी रजो नके० न्हानापणुं[...] [...]ॅससारमां विपत्तिरूप खाईनापाणीनी भ्रमरीमां

मजने

पगलेपगले पडनारा प्राणीओने कोईवारेडुःखनो अंतआवतोनथी ॥१॥ वली पहे लातो अपवित्रमाताना उदरनेविषे नानाप्रकारना उदरसंबंधी संतापोने सहनकर तो कष्टनीपरंपरायेंकरी ताम्रनतर्जनायेयुक्तथको रहेले अने जन्मपाम्यापछे जेटलामां सुखनाग करवानेअर्थें कोइपणपोताने यतीपीमाओ दूरकरेछे परंतु एटलामांतो मृ त्युनी सहचारिणी एह्वीजे जराअवस्था ते आवीने प्राणीनादेहनो ग्रासकरेछे ते वारें मंसारमां सुखनेसुंछे अर्थात् काईजनथी ॥ २ ॥

उपजातिवृत्तं ॥ विभ्रांतचित्तो बत बंभ्रमीति पक्षीव रुद्धस्तनु पंजरऽगी ॥ नुन्नो नियत्याऽतनुकर्मतंतुसंदानितः सन्निहितांतकौतुः ॥ ४ ॥ अनुष्टुब्वृत्तं ॥ अनंतान् पुद्गलावर्ताननंतानं तरूपभृत् ॥ अनंतशो भ्रमत्येव जीवोऽनादिभवार्णवे ॥५॥

अर्थ ॥ प्रारब्धें प्रेरणाकरेलो महोटाकर्मरूप तंतुयेंकरी बांधेलो कालरूप बिल्ला डानीपासें बेठेलो एह्वोप्राणी बतइतिखेदे शरीररूप पिंजरामां पक्षीनीपरें रुंध्योथ को भ्रांतिवंत चित्तेकरीफिरेछे ॥ ४ ॥ एरीतेंअनंतानंत शरीरोनोधारणकरनारो एजी वअनंतीवार अनादिकालनो संसारसमुद्रमां अनंता पुद्गलपरावर्त्तरूप पाणीनी भ्र मरीमां प्रतिभ्रमण करतोथको फिरेछे ॥ ५ ॥

॥ तृतीयभावनाष्टकं केदारारागेण गीयते शांतसुधारसकुंभेमां एदेशी ॥

कलय संसारमतिदारुणं जन्ममरणादिभयभीत रे ॥ मो हरिपुणेह सगलग्रहं प्रतिपदं विपदमुपनीत रे ॥ क० ॥ १ ॥

[illegible] ीविशेषप्रकारें संसारभावनाभावतो संसारनीबीकदेखाडेछे मोहरूप [illegible] पकडयुंछे तेणेकरी पगले पगले विपत्तीनेपामेला अरेजीव आ [illegible] ना भयेंकरी अत्यंतभयंकरछे एवुं तुं जाण ॥ १ ॥

[illegible] रिचयगुणैरिह मुधा बध्यसे मूढरे ॥ प्रति पद नवनव [illegible]: परिभवे रसकूडपगूढ रे ॥ क० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हेमूर्खआत्मातुं स्वजन अने पुत्र इत्यादिकोनां परिचयगुणेकरीने शुंआ संसारमां व्यर्थेंबंधायछे वली पगलेपगले नवानवा अनुभवेकरी अने नवानवा परा भवेकरी वारंवारतुं आलिंगितछो एटले युक्तछो ॥ २ ॥

घटयसि क्वचन मदमुन्नते क्वचिदहो हीनताहीन रे ॥ प्र
तिभव रूपमपरापर वहसि वत कर्मणाधीन रे ॥क० ॥३॥

अर्थ ॥ हेआत्मातु किहाकतो राजलक्ष्मीप्रमुख सपत्तीनामदने पा.. वलीकिहाकतो हीनतापामी रांकजेवो भीखारीथई दीनतापणाने धारणकरेछे वाआश्चर्य हेजीवतु कर्माधीनथको जन्मजन्मप्रतें अपरअपरके० नवानवाज रूपध रेछे कोईभवेभीखारी कोईभवेराजा कोईभवेतिर्यंच कोईभवेनारकी वलीएकभवमांपण राजारंकपणुप्रमुख अनेकरूपधारणकरेछे ए केहेवो महोटो खेदनोहेतुछे ॥ ३ ॥

जातु शैशवदशापरवशो ॥ जातु तारुण्यमदमत्त रे॥ जातु
दुर्जयजराजर्जरो ॥ जातु पितृपतिकरायत्तरे ॥क०॥ ४ ॥

अर्थ ॥ अरेजीवतु एकजभवमापण कोईकवारेंतो बालकअवस्थाने आधीनर हेछे अने कोईकवारेंतो तारुण्यअवस्थाना मदेकरी उन्मत्तथायछे वलीकोईकवारें दुर्जय जरा अवस्थाये करी दुःखवतथायछे अनेकोईकवारे यमराजाना हाथमां सप डाईजायछे एहवी अवस्थाओने पामेछे ॥ ४ ॥

व्रजति तनयोपि ननु जनकता ॥ तनयता व्रजति पुनरेष रे ॥ भाव
यन् विकृतिमिति भवगते ॥ स्त्यजतमा नृभवशुभशेष रे॥क०॥५॥

अर्थ ॥ हेआत्मा आससारमा कोईभवमातो दीकरोते बापथायछे फरीकोईक भवमां बापतेदीकरो थायछे एहवी ससारी पुरुषोनी गतिओनी फजेतीजोईने मनु ष्यजन्ममां जेना पुण्यशेषरह्याछे एहवो तु आससारने मूकीआप ॥ ५ ॥

यत्र दुःखार्तिगददवलवैरनुदिन दह्यसे जीव रे॥ हंत
तत्रैव रज्यसि चिरं मोहमदिरामदक्षीब रे ॥ क०॥ ६ ॥

अर्थ ॥ अरेजीव आससारमा दुःख तथा आरतिजेचिता अने रोगरूप दावान लेंकरीने तुं नित्यनित्यप्रते दाजेछे तोपणमोहरूप मदिराना मदेकरी उन्मत्तथईने तेमां जपणाकालसुधी अनुरक्तथायछे माटेबतऽतिखेदे मोहनाफदेज जीवदुःखीथायछे॥६

दर्शयन् किमपि सुखवैभव ॥ सहरस्तदथ सहसैव रे ॥ विप्र
लभयति शिशुमिव जन ॥ कालबटुको ऽयमत्रैव रे ॥क०॥७॥

अर्थ ॥ अरेजीव जेमकोइलघुबालकने ठगवासारु कोइकचीजतेनाहाथमां आ पीपाछी लीनवीनइयें तेम हतऽतिखेदे आजगतमां कालरूपीओ बटुकके० धार ते

तुजने कांइकसुख ऐश्वर्यादिक देखाडीने अकस्मात् तेसुखने जाणेनजहता करीनाखेछे एम ठोकराने ठगवानी रीतें कालरूपनट्टक लोकोने ठगेछे ॥ ७ ॥

सकल संसारन्नयन्नेदकं ॥ जिनवचो मनसि निवधान रे ॥ विनय परिण मय निःश्रेयसं ॥ विहितशमरससुधापान रे ॥ ८ ॥

इति श्री शांतसुधारस गेयकाव्ये संसारन्नावना विन्नावनो नाम तृतीयः प्रकाशः ॥

अर्थ ॥ तेमाटे अरेविनयतुं शांतिसुधारसनुंपानकरी समस्तसंसारिकन्नय नाशकरनार एहवा जिन श्री वीतरागनावचनने मनमांधारणकर अने मोक्षपा एरीतें विनयविजयजीउपाध्याय पोतेजपोताना आत्मानेसीखामण आपेछे ॥

इतिश्रीशांतसुधारसगेयकाव्ये संसारन्नावना विन्नावनोनाम तृतीयःप्रकाशः ॥ ३ ॥

स्वागतावृत्तं॥एक एव न्नगवानयमात्मा ज्ञानदर्शनतरंगसरंगः ॥ सर्वमन्यडुपकल्पितमेतत् व्याकुलीकरणमेव ममत्वम् ॥ १ ॥

अर्थ॥ हवेचोथी एकत्वन्नावना न्नावेछे एकज न्नगवानते आआत्माछे अने ज्ञानदर्श न तथा चारित्ररूप तरंगेकरीने सरंगके० विलासीछे पणते आत्मासिवाय बीजाजे कांइ कल्पितपुज्ञलादिकछे तेसर्व ममतास्पदमांज व्याकुलकरनाराछे ॥ १ ॥

प्रबोधतावृत्तत्रयं॥अबुधैः परन्नावलालसालसदज्ञानदशा वशात्मन्निः॥ परवस्तुषु हा स्वकीयता विषयावेशवशाद्वि कल्प्यते ॥ २ ॥ कृतिनां दयितेति चिंतनं परदारेषु यथा विपत्तये॥विविधार्त्तिन्नयावहं तथा परन्नावेषु ममत्वन्नावनं॥ ३ ॥अधुना परन्नावसंवृतिं हर चेतः परितोवगुंठितं॥ क्षण मात्मविचारचंदनद्रुमवातोर्मिरसाः स्पृशंतु मां॥ ४ ॥

अर्थ ॥ परवस्तुउपर रहेलीअत्यंतइछाना योगेकरी उपनीजे अज्ञानअवस्थानी पराधीनता ते जेना अंत.करणमां व्यापीछे एहवामूर्खोने जे परकीयवस्तुउपर स्वकी यपणुंकल्पेछे तेमात्र शब्द रूप रसादिकविषयोना आवेशेंकरीजकल्पोलापछे ए ए महोटुं खेदनुंकारणछे ॥ २ ॥ पुण्यवानपुरुषें परस्त्रीने पोतानीस्त्रीकरी चिंतवनक तेजेमविपत्तीनुं कारणथायछे तेमज परकीयवस्तुउपर जे ममत्वकरवुं तेपण नाप्रकारनीपीडानुं अने अनेकप्रकारना न्नयनुं कारणथायछे ॥ ३ ॥

त्मा हवे चारेबाजुयेंविटेली परवस्तुनी संवृति जे आछादन तेनेदूरकर अने चाररूप चंदनवृक्ष उपरना वायुनीलहेरीनुंजे रस तेनुंएकक्षणमात्र स्पर्शकर

अनुष्टुव्वृत्त ॥ एकता समतोपेतामेनामात्मन् वि
भावय ॥ लभस्व परमानंदसंपद नमिराजवत् ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ अरेजीव आसमतायेंकरीयुक्त एहवुजे एकत्वपणु तेने तु पोताना त्मामा विचारीजोईशतो नेमिराजऋषीनाजेवी परमानंद संपदानेपामिश ॥ ५ ॥

॥ चतुर्थभावनाष्टक परजीयारागेणगीयते ॥

विनय चिंतय वस्तुतत्व जगति निजमिह कस्यकिं ॥ भवति
मतिरिति यस्य हृदये दुरितमुदयति तस्य किं ॥ वि० ॥ १ ॥
एक उत्पद्यते तनुमानेक एव विपद्यते ॥ एक एव हि
कर्म चिनुते ॥ सैकक फलमश्नुते ॥ वि० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवेवलीविशेषें एकत्वभावनाभावेछे ऽहाश्री विनयविजयजी पोतेज पोतानीआत्माने उपदेशेछे के हेविनय तु वस्तुतत्वजे आत्मज्ञान तेबु वनके० विचारकर आजगतमा कोइनोसकीयपणुछेकेशु एहवीबुद्धि उत्पन्नथायछे तेप्राणीने दुरितपापादिक उदयपामेछेसु अपितुतेने पो० नथी ॥ १ ॥ हेआत्मा ताहरोजीव एकलोज उपजेछे एकलोज मरणपामेछे लोज कर्मनेबांधेछे अने तेबधायला कर्मोनाफलनेपण एकलोज भोगवेछे ॥ २ ॥

यस्य यावान्परपरिग्रह ॥ विविधममतावीवध ॥ जलधि
विनिहितपोतयुक्त्या पतति तावद सावध ॥ वि० ॥ ३ ॥
स्वस्वभाव मद्यमुदिते भुवि विलुप्य विचेष्टते ॥ हश्यता प
परभावघटनात्पतति विलुठति जृंभते ॥ वि० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ जिहांसुधी जेप्राणीनेमाथे परपरिग्रहउपर नानाप्रकारनी जे ममत्व रूपभारपडयोछे तिहांसुधी तो पथराप्रमुख वजनदारवस्तुयेंभरेलो जिहाज जेम् भातरियामां जइबेसेछे तेम तेप्राणी पण संसाररूप समुद्रना तळियामा बुडे ॥ ३ ॥ जेम मदेकरी उन्मत्तथयलो पुरुष स्वकीयस्वभाव एटले मूल वने लोपी जमीनउपरपमी चेष्टाकरेछे तेमज परवस्तुनी घटनायेंकरी उन्म पुरुष संसाररूप जमिनमांपडेछे लोटेछे अने जम्रायमान थयोथकोरहेछे ॥ ४ ॥

पश्य कांचनमित्तरपुजलमिलितमंचति कां दशां ॥ केवलस्य तु तस्य रूपं विदितमेव नवादृशां ॥वि० ॥५॥ एवमात्मनि कर्मवशतो नवति रूपमनेकधा॥कर्म मलरहिते तु नगवति नासते कांचनविधा॥वि०॥६॥

अर्थ ॥ जेमसुवर्णमां बीजाधातुनी मिश्रताथवाथी विपरीतदशानेपामेछे अने तेसुवर्णना शुद्धस्वरूपनीतो हेजीव तद्दाराजेवाने खबरजछे ॥ ५ ॥ तेमजआत्मानेविषे कर्मरूप अन्यधातुना वशेंकरी नानाप्रकारना रूपथायछे पणकर्ममलरहित शुद्धज्ञानस्वरूपी आत्मातो सुवर्णसरखो देदीप्यमाननासेछे ॥ ६ ॥

ज्ञानदर्शनचरणपर्यवपरिवृतः परमेश्वर· ॥ एक एवानुनवसदने स रमतामविनश्वरः॥वि०॥७॥इति रुचिरसमतामृतरस क्षणमुदितमास्वादय मुदा॥विनय विषयातीतसुखरसरतिरुदंचतु ते सदा॥वि०॥८॥इतिश्री शांतसुधारसगेयकाव्ये एकत्वनावनाविनावनोनाम चतुर्थः प्रकाशः

अर्थ॥तेआत्मा ज्ञान दर्शनअने चारित्रना पर्यायेंकरीयुक्त एहवो अविनाशीजे एकपरमेश्वर तेमहारा अनुनवगृहमां रम्यमाणथजो॥७॥माटेहेआत्मा प्रसन्नथयलो एहवो अतिसुंदर समतारूप अमृतरस तेनोएकक्षणमात्र पण संतोषेंकरी आस्वादनकर अने हे विनय सर्वकाल विषयसुखथी अतीत एटलेजूदा एहवाजे शांतिसुख रस तेनाउपर ताहरेप्रीतिहोजो॥८॥ इ०शांतसुधारसगेयकाव्येएकत्वनावनाविनावनोनामचतुर्थःप्रकाशः

उपजातिवृत्तं ॥ परः प्रविष्टः कुरुते विनाशं लोकोक्तिरेषा न मृषेति मन्ये॥ निर्विश्यकर्माणुनिरस्य किं किं ज्ञानात्मनो नो समपादि कष्टं॥ १ ॥

अर्थ॥ हवे पांचमी अन्यत्वनावना नावतोथको श्रीविनयविजयजी उपाध्यायकहेछे एकनाघरमां बीजायेंप्रवेशकर्यो एटले पहेलानोनाशकरेछे एहवु लोकोनुं बोलवुं मने खोटुंलागतुनथी केमके महारोआत्मा ज्ञानस्वरूपीछे तेमां कर्मरूप परमाणुये प्रवेशकरीने आत्माने कोणकोण कष्टोनथीआपी अर्थात् सर्वकष्टोआपीजछे ॥ १ ॥

स्वागतावृत्तम्॥खिद्यसे ननु किमन्यकथार्तः सर्वदैव ममतापरतंत्रः॥ चिंतयस्यनुपमान्कथमात्मन्नात्मनो गुणमणीन्न कदापि ॥ २ ॥

अर्थ ॥ अरेजीवतु सर्वकाल ममताने स्वाधीनथई अन्यजे पुत्रादिक तेनीजगोष्ठीये पीडितथको कांखेदपामेछे अने जेहनीकोइउपमाजनथी एवा तारी आत्माना गुणरूपजे मणीरत्न तेनुंकोइवारेंपण चिंतन केमकरतोनथी एकेटलुं अयुक्तछे २॥

शार्दूलविक्रीडितं वृत्तद्वयम् ॥ यस्मै त्व यतसे बिभेषि च यतो यत्रा
निश मोदसे यद्यच्छोचसि यद्दिच्छसि हृदा यत्प्राप्य पेप्रीयसे ॥
स्निग्धो येषु निजस्वभावममल निर्लोठ्य लालप्यसे तत्सर्वं पर
कीयमेव भगवन्नात्मन्न किंचित्तव ॥ ३ ॥ दुष्टा कष्टकदर्थना क
तिन ताः सोढास्त्वया संसृतौ तिर्यङ्नारकयोनिषु प्रतिहतच्छिन्नो
विभिन्नो मुहुः ॥ सर्वं तत्परकीयदुर्विलसित विस्मृत्य तेष्वेव हा
रज्यन्मुह्यसि मूढ तानुपचरन्नात्मन् न किं लज्जसे ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हेआत्मातु जेनेवास्ते घणीयत्नकरेछे अने जेनायकी घणे
तथा जेथकी सर्वकाल आनंदपामेछे वली जेनाअर्थेघणुशोचकरेछे अथवा
ताहरारुदयमां हरहमेस इछेछे वली जेनादेखवाथी अत्यंतप्रीतिपामेछे जेनेविषे
घणुस्नेहराखी पोतानानिर्मल ज्ञानादिक स्वभावनो नाशकरी लालनपालनकरेछे
त्यादिकक्रियाते सर्वपरकीयजछे पण हेआत्मस्वरूपी भगवन् एमां तकांप
इनथी ॥ ३ ॥ अरेजीवतुपूर्वोक्तप्रकारेकरतोथको आससारमा तिर्यंच अने
योनीमा अत्यंतदुष्ट एहवी अनेककदर्थनाओ तेंभोगवीनथीकेसु अपितु
ज केमके मुहुके० वारवार नरकादिकयोनीओमा हणाणु छेदाणु भेदाणु
वी तहारी अवस्थाओथइ तोपणहेमूर्ख तेसर्व परकीय एटले स्वरुपविना
थी दुर्विलासथया तेनेविस्मृतकरी फरितेनाउपरज प्रेमधरीने मोहपामेछे
ज सेवनकरतोथको केमलज्ञातोनथी माटे हाइतिखेदे एपणमहोटो खेदनीज

अनुष्टुब्वृत्त ॥ ज्ञानदर्शनचारित्रकेतनाचेतना विना ॥
सर्वमन्यद्विनिश्चित्य यतस्व स्वहिताप्तये ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हेआत्मातु ज्ञान दर्शन अने चारित्रनी आश्रयभूतजे चेतना तं
बीजाजे विनाविक पदार्थोछे तेसर्वने निश्चयथकी तहाराथी अन्यके० जुदाजा
पोताना हितने अर्थेयत्नकर ॥ ५ ॥

॥ पचमभावनाष्टक श्रीरागेण गीयते ॥ तुजगुणपारनहिरुअणोएदेशी ॥
विनय निभालय निजभवन तनुधनसुतसदनस्वजनादिषु किं नि
जमिद कुगतेरवन ॥वि०॥१॥ येन सहाश्रयसे ऽतिविमोहादिदमहमि
त्यविभेद तदपि शरीर नियतमधीरं त्यजति भवत धृतखेद॥वि०२॥

अर्थ॥ हवेविशेषें अन्यत्वभावनाभावता श्रीविनयविजयजी उपाध्याय पोतानेउप देशकरेछे के हेविनय तुंतहारापोताना आत्मारूपघरने जो अने आसंसारमां शरीर द्रव्य-पुत्र घर स्वजनादिकमां कोणतुजने दुर्गतिथी रक्षण करवालोछे अर्थात्कोइज नथी एटलेतुं स्वजनादिकनेअर्थें माठाकर्मकरेछे तेकर्मनायोगथी जेवारें नरकादिक दुर्गतिमांजइस तेवारें तहारोहायपकमीने तुजने कोइदुर्गतिथी वारीराखशेनही ॥१॥ बीजातोदूररह्या पणजेनीसाथें तुं अत्यंतमोहनावशथकी ऐकपणुंकरेछे एहवुंजे शरीरतेपण निश्चयथीअथीरोछे सेवट खेदकरावी तुजने मूकीचाल्योजसे अथवा खेद नोकरनारतुंछो एहवा तुजनेमूकी चाल्योजसे ॥ २ ॥

जन्मनि जन्मनि विविधपरिग्रहमुपचिनुषे च कुटुंबं॥ तेषु भवं तं परभवगमने नानुसरति कृशमपि सुवं ॥ वि० ॥३॥ त्यज ममतापरितापनिदानं ॥ परपरिचयपरिणामं ॥ भज निस्संगत या विशदीकृतमनुभवसुखरसमभिरामं ॥ वि० ॥ ४ ॥

॥ हेप्राणीतुं जन्म जन्मने विषे विविधप्रकारना परिग्रहने संपादनकरेछे कुटुंबने संपादनकरेछे परंतु जन्मांतरेंजाता ते पूर्वोक्तपरिग्रह एकदोकडो पण ताहरीसाथेंआवतोनथी ॥ ३ ॥ माटे ममतानायोगेंकरी अ ंु मुख्यकारण एवो परकीयवस्तुनो परिणाम तेनोत्यागकर अने निःसंग स्वभावपणुं आल्हादनोकरनार एहवुंजेअनुभवसुख तेनुंसेवनकर ॥ ४॥

पथि पथि विविधपथैः पथिकैः सह कुरुते कः प्रतिबंधं ॥ निजनिजकर्मवशैः स्वजनैः सह किं कुरुषे ममतावंधं॥वि०॥५॥ प्रणयविहीने दधदभिषंगं ॥ सहते बहुसंतापं ॥ त्वयि निः प्रणये पुद्गलनिचये वहसि मुधा ममतातापं ॥ वि० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जेमपंथीमाणसने जूदेजूदेस्थानकें मार्गमार्गमां वाटाखुलोकनुं मिलाप पणाते वाटमार्गुनीसाथें कोइप्रतिबंधकरतोनथी तेमजपोतपोताना कर्मने वशें आवीमल्या एहवावाटमार्गुतुल्य जे तारास्वजनलोक तेनीसाथेंतुं ममत्वनो प्रतिबंधकांकरेछे ॥५॥ जेमकोइ स्नेहशून्यपदार्थहोय अथवामनुष्यहोय तेनाउपर स्नेहधरनाराप्राणी बहुसंतापने सहनकरेछे तेमज तुंपण ताहाराउपर निस्नेही ए हवोजे पुद्गलनोसमुदाय एटलेपोतानुंशरीर तेपणपुद्गलछे अनेजेस्वजनादिक शरीरी

जीवने तेपणपुज्जजने तथा नवविधपरिग्रह तेपणपुज्जले एहवापुज्जनना समुः
र व्यर्थ ममता रुप ताप धारण करीने संताप सहन करेछे ॥ ६ ॥

त्यज संयोग नियतवियोग ॥ कुरु निर्मलमवधान ॥ नहिविद
धान कथमपि तृप्यसि॥मृगतृष्णाघनरसपान॥वि०॥७॥ भज
जिनपतिमसहायसहाय ॥ शिवगतिसुगमोपाय ॥ पिब गद
शमन परिहृतवमन॥शांतसुधारसमनपाय ॥ वि० ॥ ८ ॥
इ०शांतसुधारसगेय काव्ये अन्यत्वभावनाविभावनो नाम पंचम प्र०

अर्थ ॥ माटेनिश्चयेकरी जेहनो वियोगथवानोछे एहवापुज्जादिकसाथे जे सं
योगथयुछे तेनोत्यागकर अनेनिर्मल एहवोजेपोतानो शुद्धात्मभावतेनेविषे
हे० मस्थय० एकाग्रपणोअंक्षराख केमकेकोइपणप्राणी मृगतृष्णारूप जलपु
रीने कदापिकालें तृप्तथयानोनथी तेमतुपण परवस्तुउपर ममत्वराखी कोइ
थानमंतिमां तृप्तिपामनारनथी ॥ ७ ॥ माटेरेआत्मा तु असहायने सहा
नार एटलेअशरणने शरणभूत एहवातीर्थंकरदेव तेनुसेवनकर अनेनिरदोष
गतिमांजवानु जे सुगमोपाय अथवा जेमांथी परिहृतके० नाशपाम्युछे वमनके
मोहनामुयना वमवापणु तथी गदशमनके० संसाररूप रोगनो समावनार ए
जे शांतनामा सुधारसके० अमृतरस तेनो पिबके० पानकर ॥ ८ ॥ इतिश्री
धारसगेयकाव्ये अन्यत्वभावनाविभावनो नाम पंचम प्रकाश

शार्दूलविक्रीडित वृत्त ॥ सच्छिद्रो मदिराघट परिगलत्तल्लेश
सगाशुचि शुच्या मृत्यमृदा बहि स बहुशो धौतोपि गंगो
दकै ॥ नाधत्ते शुचिता यथा तनुभृता कायो निकायो महाबी
भत्सास्थिपुरीषमूत्ररजसा नाय तथा शुद्ध्यति ॥ १ ॥
अर्थ ॥ जेमछीद्री अशुचि भावना भावेछे जेम मदिरा गांळानुघट कांणीमां
करी छिद्रोकरी मदिरास्रावयुक्त नेछिद्रमांथी मदिरागळनारोछे तथी तेछिद्रमां मदिराना
कणियानु अशुचीनायवने तेनेनमात्र पण मदिरानामगेरनीने अपवित्रपण
एवारुप मदिराना भाजनना छिद्र तेनेपवित्रकरवाने अर्थं बाहिरथी माटीमाथे मा
ने एक गंगानदीना पाणीएकरी घणावखत धोइयोछे माफकरवामांवि वार
मदिरानाभाजन छिद्र काइपण पवित्र थायनही तेमज मनुष्यना अ यन शीव

उगंछाकरवायोग्य हाम रक्त मज मूत्रनोस्थानकरूप शरीर तेने माटीयेंगसवाथी अथवा गंगादिकनापाणीये नवगव्याथी पणपूर्वोक्त दृष्टांतेकोडवारें शुद्धथातुनथी।

मंदाक्रांतावृत्तं॥स्नायं स्नायं पुनरपि पुनः स्नांति शुद्धाभिरद्भि र्वा
रं वारं वत मलतनुं चंदनैरर्चयंते॥ मूढात्मानो वय मपमलाः प्री
तिमित्याश्रयंते नो शुध्यंते कथमवकरः शक्यते शोद्धुमेवं ॥ २ ॥

अर्थ ॥ माटेजगतमां जेनुंअंतःकरण मूढथयुंछे एहवालोक स्नानकरीने वारंवार शरीरशुद्धि करवानेअर्थे फरिपण स्नानकरेछे तथा वारंवार मलनास्थानकरूप शरीरने चदनेकरीचर्चेछे अने अमेंनिर्मलथया एवुंकहीने प्रीतिकरेछे पण एम नथी जाणताजे एशरीर तो किवारेपण शुद्धथातुंनथी केमके खात्रनुं उकरडो तेको डरीने शुद्ध थायकेसुं अर्थातूनजथाय ॥ २ ॥

शार्दूलविक्रीडितं वृत्तं ॥ कर्पूरादिभिरर्चितोपि लशुनो नो
गाहते सौरभं नाजन्मोपकृतोपि हंत पिशुनः सौजन्यमा
लंबते॥ देहोप्येष तथा जहाति न नृणां स्वाभाविकीं विस्र
तां नाभ्यक्तोपि विभूषितोपि वहुधा पुष्टोपि विश्वस्यते॥३॥

अर्थ ॥ जेमलसणमां कर्पूरादिकपदार्थोनो भेलकरयो तोपण लसणकांइ सुगंधीवत थायनही तथा जन्मपर्यंत उपकारकरयोहोय तोपण दुर्जनपुरुप कांइ सौजन्यताने धारणकरतोनथी तो हंतइतिखेदे आमनुष्यनुंशरीर तेपण स्वभावसिद्ध दुर्गंधने मूकतुंनथी आशरीरने विविधप्रकारनासुगंधीतेलेंकरीमसल्यो अनेवस्त्रालंकारेकरी भूपितकरयो तथा खवरावी पीवरावीने अत्यंतपुष्टकरयो तोपण विश्वासनोपात्र थायनही एटले एशरीर हवेसारुंथयुं एहवोविश्वास कदापिआवेनही ॥ ३ ॥

उपेंद्रवज्रावृत्तं ॥ यदीयसंसर्गमवाप्य सद्यो भवेच्छुचीनामशुचित्वमु
च्चैः॥अमेध्ययोनेर्वपुषोस्य शौचसंकल्पमोहोयमहो महीयान्॥४॥

अर्थ ॥ शरीरनोसंबंधपामिने पवित्रपदार्थोने पण अपवित्रतापणुं आवेछे केमके आशरीरने उत्तमजातिना चंदनादिके मर्दनकरो तो तेचंदनादिक थोडीजवारमा पोतानुं सुगंधतापणुंमूकीने दुर्गंधतानेधारणकरेछे तेमज उत्तमप्रकारनाभोजन खवराव्याथी तेपण तुरत नरगमय थयीजायछे एवो आ अपवित्रवस्तुने उत्पत्तिनुकारण जेशरीर तेनेपवित्रपणुं करवाना संकल्पनो मोहराखवुं एमहोटोआश्चर्यकारीछे४

स्वागतावृत्त॥इत्यवेत्य शुचिवादमतथ्यं पथ्यमेव जगदेकपवित्रं॥
शोधनं सकलदोषमलानां धर्ममेव हृदये निदधीथा ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ एरीते शरीरने पवित्रकरवानोवाद खोटोजाणीने जगतमां ए० पथ्य तो समस्तदोषरूपमलनो शोधक एहवोजे धर्म तेहनेहृदयमांधरो ॥ ५ ॥

॥ षष्टभावनाष्टक आसावरीरागेण गीयते कागारेतनुचुनिचुनिजावे एदेशी ॥

भावय रे वपुरिदमतिमलिनं विनय विबोधय मानसनलिनं॥
पावनमनुचिंतय विभुमेकं॥परममहोमयमुदितविवेकं॥भा०॥१॥
दम्पतिरेतोरुधिरविवर्त्ते किं शुभमिह मलकश्मलगर्ते॥ भृशम
पि पिहितं स्रवति विरूपं को बहु मनुतेऽवस्करकूपं ॥भा०॥२॥

अर्थ ॥ श्रीविनयविजयजी उपाध्याय पोतेंपोताने उपदेशकरतो थकोकहेछे हेविनय आशरीरनेतु घणुजमलीनजाणीने पोतानुमनरूपकमल तेने विकस्वर करजेतेवारपछी ते परमतेजस्वी अनेजेनायकी उत्तमविचार उत्पन्नथाय एहवो एकपवित्र परमात्मानु चिंतवनकर ॥ १ ॥ स्त्रीनोरक्त अने पुरुषनो रेत तेनापरिणाम रूपथकी उत्पन्नथयु एहवु मलमयजे कश्मलके० चीखलतेनी गर्तकेo खाड रूप आ शरीर तेमांशुसारुछे जोआशरीरने अत्यंतढाकीराख्यु तोपणतेमांथी विरूप जे माठोदुर्गंधरस स्रवेछे तोएवांअशुचिगना कूवाने कोणरुडोकरी माननारछे अर्थात् कोइपण डाह्योमाणस एनेसारुंकरी मानेनही एतो कूवाने नहि मानसेनही ॥ २ ॥

भजति सचन्द्रं शुचि ताम्बूलं॥ कर्तुं मुखमारुतमनुकूलं ॥तिष्ठ
ति सुरभि कियन्तं कालं॥मुखमसुरभि जुगुप्सितलालं॥ भा०
॥३॥असुरभिगंधवहोंतरचारी॥आवरितुं शक्यो न विकारी॥
वपुरुपजिघ्रसि वारंवारं॥हसति बुधस्तव शौचाचारं ॥भा०४॥

अर्थ ॥ सुदरनाकपुरनमा कर्पूरप्रमुखनाखीने मुखमाहेरीताबु अनुकूलकरवानअर्थे खायछे परन्तु निदान्तथोग्य अनेवणीज दुर्गंधकरनायारुपछे ते ताजुनी रनी आ शिररनी गर एहवा तहागमुखनी सुगरीते केटलोक वखतरहसे ॥३॥ शरीरमांरहेनारो विविधप्रकारना विकारेकरीसहित असुरभिगंधनो वहेनारो जे तादृशमुखनोवा युतेने दुर्गंधभूलवाने तुसमर्थथयोनथी तोतारुंगरअगने सुगंधीपदार्थोना सेवाकरी वार वार केहवो सुवासलियेछे एतारो पवित्रतानो आचारजाइने पंडितहासकरे॥४॥

द्वादश नव रंध्राणि निकामं॥ गलदशुचीनि न यांति विरामं॥
यत्र वपुषि तत्कलयसि पूतं॥मन्ये तव नूतनमाकूतं॥भा०॥५॥
अशितमुपस्करसंस्कृतमन्नं जगति जुगुप्सां जनयति दन्नं॥ पुं
सवनं धेनवमपि लीढं भवति विगर्हितमति जनमीढं॥भा०॥६॥

अर्थ ॥ अतिशयेंकरी जेमांथी रात्रदिवस अपवित्रवस्तुश्रवेछे पणकोइवारें विरामपामतिनथी एहवास्त्रीना बारछिद्र अने पुरुषनानवछिद्र तेछिद्रेंकरीसहित एहवा शरीरने तुंपवित्रपणेजाणेछे माटेए ताहरोकोइ नवोज आचारजणायछे ॥ ५ ॥ नानाप्रकारे वघारप्रमुखना संस्कारेकरी संस्कृतकरेलुं पचावेलुं एहवुंजे अन्न तेपण आ शरीरमां आरोग्याथकी दन्नके० विष्टारूपथइजायछे तेणेकरी जगतमां जुगुप्सा के० दुगंछाउत्पन्नकरेछे वली आशरीरने वीर्यनीवृद्धिकरनारुं गायनुंदुध प्राशनकरीने फरीतेपुरुषे मूत्रितकस्योथको तेपणअत्यंत निंदाकरवायोग्य थइपडेछे ॥ ६ ॥

केवलमलमयपुजलनिचये अशुचीकृतशुचिभोजनसिचये ॥ वपु
पि विचिंतय परमिहसारं शिवसाधनसामर्थ्यमुदारं॥ भा०॥७॥
येन विराजितमिदमतिपुण्यं तच्चिंतय चेतननैपुण्यं॥विशदागमम
धिगम्य निपानं विरचय शांतसुधारसपानं ॥ भा०॥८॥इतिश्री
शांतसुधारसगेयकाव्ये अशौचभावनाविभावनोनाम षष्ठः प्रकाशः

अर्थ ॥ माटे केवलमलरूप पुजलनोसमूह अने पवित्रभोजनने अपवित्रपणु आपनार एहवाशरीरमां मात्रएक मोक्षसाधन करवानुंजे सामर्थ्यछे एहिजमहोटो सार भूतजाण ॥ ७ ॥ मोक्षसाधनेकरी भूपितकस्योथको ए शरीरपवित्रथायछे तेचेतना नीज चातुर्यताजाणवी पणजेमा निर्मलसिद्धांतरूप जलमिलेछे एहवो जलस्थान कजोइने शांतसुधारसनोपानकर ॥ ८ ॥ इतिश्री शांतसुधारसगेयकाव्ये अशुचिभावनाविभावनोनाम षष्ठः प्रकाशः

भुजंगप्रयातं वृत्तं॥यथा सर्वतो निर्झरै रापतद्भिः प्रपूर्येत सद्यः पयोभिस्त
टाकः॥तथैवाश्रवैः कर्मभिःसंभृतोगी भवेद्व्याकुलश्चंचलः पंकिलश्च ॥१॥

अर्थ ॥ हवेसातमी आश्रवभावना भावेछे जेम सर्वबाजुथी पडता पाणीना निजरणायेंकरी तत्कालतलाव भराइजायछे पछे पाणीनातरंगेंकरी चचलथायछे ते

मज गादयरोगे इत्यादिके व्याकुलथायछे तेम आश्रवेकरीयुक्तप्राणी
पी नगपुरयई व्याकुल अने चचलपको पापरूपकादवे सहितथायछे ॥ १ ॥

शार्दूलविक्रीडित वृत्त ॥ यावत्किंचिदिवानुभूय तरसा कर्मेह
निर्जीर्यते तावच्चाश्रवशत्रवोऽनुसमय सिंचति भूयोपि तत् ॥
हा कष्ट कथमाश्रवप्रतिभटा शक्या निरोद्धुं मया ससा
रादतिभीषणान्मम हहा मुक्ति कथ भाविनी ॥ २ ॥

अर्थ ॥ ते जेटलामा अनुभवलेइने बलात्कारेकरी महारा अल्पमाथी कांइक
मने ए छुटकरनु तेटलामांवली आश्रवरूपशत्रु समयसमयप्रते कर्मोने फरी
पनरेने माटे लाडतिगेछे मने एवु कठणलागेछे के हुं आश्रवरूपशत्रुने
जीतिश अने एणीनतो अत्यतभयकर ससारथकी महारोछूटको थशे

प्रहर्षणीवृत्त॥ मिथ्यात्वाविरतिकषाययोगसंज्ञाश्चत्वार
सुकृतिभिराश्रवा प्रदिष्टा ॥ कर्माणि प्रतिसमय
स्फुटैरमीभिर्बध्नतो भ्रमवशतो भ्रमति जीवा ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ पुण्यवानपुरुषोए १ मिथ्यात्व २ अव्रति ३ कषाय ४ योग
ए चार आश्रव कह्याछे ते समयसमयप्रते एचारआश्रवना योगेकरी कर्माने
बाधता जीवो ते भ्रमेकरी चारगतिरूप ससारमाभमेछे ॥ ३ ॥

रथोद्धतावृत्त ॥ इंद्रियाव्रतकषाययोगजा पच पच चतुरन्वितास्त्र
य ॥ पचविंशतिरसत्क्रिया इति नेत्रवेदपरिसंख्यया ऽप्यमी ॥४॥

अर्थ ॥ पाचइंद्रियो तथा प्राणातिपातादिक पाचअव्रत अने क्रोधादिक चार
कषाय तथा मनादिक त्रणयोग तथा कायिकादिक पचीस असत्क्रिया एरीत सर्व
मलीने आश्रव बेताळीस प्रकारनुछे ॥ ४ ॥

इंद्रवज्रावृत्त॥ इत्याश्रवाणामधिगम्य तत्त्व निश्चित्य सत्त्व श्रुतिसन्निधा
नात् ॥ एषा निरोधे विगलद्विरोधे सर्वात्मना द्राग् यतितव्यमात्मन ॥५॥

अर्थ ॥ एरीतनु आश्रवनु तत्त्वजाणीने निश्चयकरी शास्त्रसन्निधानपणु एटले
शास्त्रने निकटपणे शास्त्रनु जाणपणु तेणेजाणीने विरोधरहितछे एवा आश्रवना
समूहने निरोधकरवाने विषे हे आत्मा तु सर्व प्रकारे ॥ ५ ॥

सप्तमभावनाष्टकं धनाश्रीरागेण गीयते ॥ जोजीमारेहंसारेविषयनराचियें एदेशी ॥

परिहरणीया रे सुकृतिभिराश्रवा हृदि शमतामवधाय॥प्रभवं
त्येते रे मृशमुच्छृंखला विभुगुणविभववधाय ॥ परि० ॥ १ ॥
कुगुरुनियुक्ता रे कुमतिपरिप्लुताः ॥ शिवपुरपथमपहाय
प्रयतंतेऽमी रे क्रियया दुष्टया प्रत्युत शिवविरहाय ॥ परि०॥२॥

अर्थ ॥ सुकृतवंतपुरुषें हृदयमां समताधारणकरी आश्रवनोपरिहारकरवो थरे जीव आ लोखंडना शांकलनीपरें बांधीराखनारो जे आश्रव ते विभुजे परमात्मा तेनागुणरूप ऐश्वर्यतानो नाशकरवाने समर्थथायछे ॥ १ ॥ कुगुरुयेंकरेलीप्रेरणा अने कुमतियेंकरी युक्तथयला हेदुष्टजीव तुं कायिकादिक दुष्टक्रियाउंमां प्रवर्त्तवे करी मोक्षपुरीयें जवानो मार्गमूकीने उलटोमोक्षमार्गनो नाशकरवानुंज यत्नकरेछे॥२॥

अविरतचित्ता रे विषयवशीकृता विषहंते विततानि ॥ इह
परलोके रे कर्मविपाकजान्यविरलदुःखशतानि ॥ परि०॥ ३ ॥
करिझषमधुपा रे शलभमृगादयो विषयविनोदरसेन ॥ हंत
लभंते रे विविधा वेदना बत परिणतिविरसेन ॥ परि० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ जेनाचित्तमां वैराग्यनथी एहवा विषयने पराधीनथयलाप्राणी इहलोकें तथा परलोकेपण निरंतरपणे कर्मनापरिणामोथी उत्पन्नथयलां शैंकडोदुःखोनुं सहनकरेछे ॥ ३ ॥ हस्ति मत्स्य भ्रमर पतंग अने मृग एवा पांचजातना प्राणीयो अनुक्रमेंस्पर्श रस गंध रूप शब्द ए एकेकाविषयना विनोदरसेंकरी नानाप्रकारनी वेदनाओने एविषयोना परिणाम जे विरस एटले माठारस तेणेकरीपामेछे ए महो टुंखदनुं कारणछे ॥ ४ ॥

उदितकषाया रे विषयवशीकृता यांति महानरकेषु परिव
र्तंते रे नियतमनंतशो जन्मजरामरणेषु ॥ परि० ॥ ५ ॥
मनसा वाचा रे वपुषा चंचला दुर्जयदुरितभरेण ॥ उपलि
प्यंते रे तत आश्रवजये यततां कृतमपरेण ॥ परि० ॥६ ॥

अर्थ ॥ जेने क्रोधादिक कषाय उदयमांआव्याछे तेप्राणीओ पांचइंद्रिओना विषयोने स्वाधीनथयलाछे तेणेकरी महोटा नरकमां जायछे अने अनंतिवार जन्म जरामरणकरेछे ॥५॥ आश्रवेंकरी चंचल थयला प्राणी मन वचन अने कायाना

योगे डुर्जय एहवुजेपाप तेणेकरी युक्तथायछे माटे चतुरपुरुषे आश्रवन प्रयत्नकरवु अने नवा कर्म बांधवानहीं ॥ ६ ॥

शुद्धायोगा रे यदपि यतात्मना स्रवते शुन्नकर्माणि ॥ कांचन निगडास्तान्यपि जानीयात् हतनिर्वृतिशर्माणि ॥ परि० ॥ ७ ॥ मोदस्वैव रे साश्रवपाप्मना रोधे धियमाधाय ॥ शांतसुधारसपा नमनारत विनय विधाय विधाय ॥ ८ ॥ इतिश्री शांतसुधा रस गेयकाव्ये आश्रवन्नावनाविन्नावनोनाम सप्तम प्रकाश

अर्थ ॥ जेणेपोतानु मनस्वाधीनकखु तेनाशुद्धयोगजेछे ते शुद्धयोग जे शुन्नकर्मोनेज स्रवेछे एटले शुन्नकर्मोनीज प्राप्तिकरावेछे परंतु तेकर्मोपण ना नाशकरवाने शोनानीबेडीसरखा जाणवा ॥७॥ माटे [illegible] पोते पोतानेकहेछे के अरेविनय आवाप्रकारेकरी आश्रवसहित जेपाप तेना रोधकरवा उपर बुद्धिराखी वारवार शांतिसुधारसनो पानकरीकरीने [illegible]
इतिश्रीशांतसुधारस गेयकाव्ये आश्रवन्नावनाविन्नावनो नाम सप्तम प्रकाश

स्वागतावृत्तद्वय ॥ येन येन य इहाश्रवरोध सन्नवेन्नियतमौ पयिकेन ॥ आद्रियस्व विनयोद्यतचेतास्तत्तदांतरदृशा परिन्ना व्य ॥ १ ॥ संयमेन विषयाविरतत्वे दर्शनेन वितथान्निनिवे शा॥ध्यानमार्तमथ रौद्रमजस्र चेतस स्थिरतया च निरुंध्या ॥२॥

अर्थ ॥ हवेआठमी संवरन्नावनान्नावेछे अरेविनय आजगतमा जे जे निश्चयथी आश्रवनोरोध थतोहोय ते ते उपाय ताहरी अंतरदृष्टियेजोइ तेनां चित्त लगामीने तेनेस्वीकारकर ॥ १ ॥ एटले संयमेकरीने विषयउपर [illegible] सम्यक् दर्शनेकरीने अनिनिवेशके० मिथ्यात्वनो आग्रहमूकीआप अने [illegible] स्थिरपरिणाम पणे करीने आर्त तथा रौद्र ए बे ध्याननु निरंतर रुंधनकर ॥ २ ॥

शालिनीवृत्त ॥ क्रोधं क्षांत्या मार्दवेनान्निमानं हन्या मायामार्जवे ज्वलेन॥लोन्नं वाराराशिरौद्रं निरुंध्याः संतोषेण

अर्थ ॥ क्षमायेंकरी क्रोधनो जयकर मार्दवेकरी अन्निमाननो जयकर [illegible] करी मायाजेकपट तेने हणीनाख वलीसमुद्रजेवो डुष्कर जे लोन्न तेहनो उंधो सरिखोजे संतोष तेणेकरी रोधकर ॥ ३ ॥

स्वागतावृत्तं॥ गुप्तिभिस्तिसृभिरेवमजय्यान् त्रीन् विजित्य तरसाऽधमयोगान् ॥ साधुसंवरपथे प्रयतेथा लप्स्यसे हितमनीहितमिद्धं ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ एमज मनगुप्ति वचनगुप्ति अने कायगुप्ति एत्रण गुप्तियेकरीने जे जीतवाने घणाजडुर्जन निंदनीक एह्वा त्रण डुष्टयोग्य तेने जीती रूडासंवर मार्गनेविषे यत्नकर एटले प्रकाशवंत देदीप्यमान अने कोइकालें विनाशने न पामनारा एह्वा जे हितार्थ तेने पामीस अर्थात् मोक्षसुखने पामीस ॥ ४ ॥

मंदाक्रांतावृत्तं ॥ एवं रुद्धेष्वमलहृदयैराश्रवेष्वाप्तवाक्यश्रद्धाचंचत्सितपटपटुः सुप्रतिष्ठानशाली ॥ शुद्धैर्योगैर्जवनपवनैः प्रेरितो जीवपोतः स्रोतस्तीर्त्वा भवजलनिधेर्याति निर्वाणपुर्यां ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ एवाप्रकारेंकरी स्वछहृदयवंत पुरुषें आश्रवनो रोधकरवो पछे आप्तके० पोतानाहितवांछक तीर्थंकरादिक पुरुषोना वाक्योउपर जेश्रद्धाराखवी तेजाणीयें वाहणनेविषे एकसुंदर अनेउज्वल वावटोचडाव्यो एह्वो नूतनपीठबंध थयो थको शुद्धमनोयोग शुद्धवचनयोग शुद्धकाययोग एत्रणयोग तेहिज जाणियें कोइक वेगवानवायरो तेणेकरी प्रेर्योथको जीवरूपीओ जहाज तेसंसारसमुद्रनो प्रवाहतरीने तुरत मोक्षरूप नगरियें जइपहोचेछे ॥ ५ ॥

॥ अष्टमभावनाष्टकं नटरागेण गीयते महावीरमेरो लालन एदेशी ॥

शृणु शिवसुखसाधनसदुपायं सदुपायं रे सदुपायं॥ शृणु शिवसुखसाधनसदुपायं ॥ ज्ञानादिकपावनरत्नत्रयपरमाराधनमनपायं ॥ शृ० ॥१ ॥ ॥ विषयविकारमपाकुरु दूरं क्रोधं मानं सहमायं॥ लोभं रिपुंच विजित्य सहेलं॥ भज संयमगुणमकषायं॥ शृ० ॥२॥

अर्थ ॥ हे विनय तुं मोक्षसाधननो रुडोउपाय सांभल एकतो निर्दोषपवित्र ज्ञानादिक रत्नत्रयनुं आराधनकर बीजो पांचेइंद्रियोना विषयसंबंधीजे विकारोछे ते हनेदूरकर त्रीजोमायासहित क्रोध मान अनेलोभरूप शत्रुओनी हेलनाकरी सहेजमां श्रमविना एचारेकषायने हलकटजेवा जाणी जीतीजेइने कषायथी शून्यथयलो एह्वोजे संयमरूप गुण तेनुंसेवनकर ॥ २ ॥

उपशमरसमनुशीलय मनसा रोपदहनजलदप्राय ॥ कलय विराग धृतपरभाग हृदि विनयं नाय नाय ॥ शृ० ॥ ३ ॥ आर्त रौद्र ध्यान मार्जय ॥ दह विकल्परचनानाय ॥ यदियमरुद्धा मानसवीथी॥ तत्वविद पथा नाय ॥शृ० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ क्रोधरूपअग्नीने शमाववा मेघनीपरें शांतिनोकरनार एहवोजे उपशम रस तेहने तु मनमा धारणकर हे विनय हृदयमा धारणकरेलोजे पर्‍ड सबधी भाग तेहने तहाराहृदयमांथी नीलानीलाके० काढीकाढीने अत्यत उ नजे वैराग्य तेने धारणकर वली आर्त्तध्यान अनेरौद्रध्यानने धारणकरीसनही॥ तथा सकल्प विकल्पनीजेजालछे तेने वाली भस्मकरीनाख कारणके योगना मार्गने रुधी न राखवो एवोकांइ तत्व वेत्तानो मार्गनथी तत्ववेत्ता नेतो मनोयोग मोकलो राखवुज नही ॥ ४ ॥

सयमयोगैरवहितमानसशुद्ध्या चरितार्थयकाय ॥ नानामत रुचिगहने भुवने निश्चिनु शुद्धपथ नाय ॥ शृ०॥५॥ ब्रह्म व्रतमगीकुरु विमल विभ्राण गुणसमवाय ॥ उदित गुरुवदनादुपदेश सगृहाण शुचिमिव राय ॥ शृ० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ सयमनायोगथी यत्नजीजेमननीशुद्धि तेणेकरीने कांइपण नानाप्रकारनी रुचिसहीत विचित्रप्रकारना मतेंकरी गहन एटलेव्याप्त एहवो गतमां नयरूप शुद्धमार्ग एटले स्याद्वाद शैलीरूपजे जैनमार्ग तेनोशोधकर ॥ वली गुणना समुदायने धरनार अत्यतनिर्मल एहवाब्रह्मचर्यव्रत ने स्वीकारकर अने गुरुयेंकरलाउपदेशने जेरीतें शुद्धद्रव्यनो सग्रहकरियें तेरीतेंसग्रहकर ॥६ ॥

सयमवाङ्मयकुसुमरसैरति सुरभय निजमध्यवसाय ॥ चेतन मुपलक्षय कृतलक्षणज्ञानचरणगुणपर्याय ॥ शृ० ॥ ७ ॥ वदन मलकुरु पावनरसन जिनचरित गाय गाय ॥ सविनय शांतिसु धारसमेन चिर नद पाय पाय ॥ शृ० ॥ ८ ॥ इति श्रीशांतसुधा रसगेयकाव्ये सवरभावनाविभावनो नाम अष्टम प्रकाश

अर्थ ॥ सयमना प्रतिपादन करनारा एहवा परमेश्वरनी वाणीमय जेपुष्प ते पुष्पोना रसनीसुगधी पोताना अध्यवसायनेअत्यतपणेकर अने ज्ञानादिक गुणपर्या

स्वरूप लक्षणनो करनारुं एहवोजे तहारुं चैतनछे तेने तुं ओलख ॥ ७ ॥ पवित्र अने नजाररसेंकरी सहित एहवुं परमेश्वरनाचरित्रोनुं गायन करीकरीने पोताना मुखने अलंकृतके० शोभितकर (जूषितकर) वली विनयसहित आ शांतिसुधारसनो पान करी करीने घणाकाल सुधी आनंद मग्नमां रहे ॥ इतिश्री शांतिसुधारस गेयकाव्ये संवरजावनाविजावनो नाम अष्टमः प्रकाशः ॥

इंद्रवज्रावृत्तं॥यन्निर्जरा घादशधा निरुक्ता तत् घादशानां तपसां विजेदात्॥ हेतुप्रजेदादिह कार्यजेदः स्वातंत्र्यतस्त्वेकविधैव सा स्यात् ॥१॥

अर्थ ॥ हवे निर्जरा जावनाजावेछे निर्जराजे बारप्रकारनी कहीछे तेबारप्रकारना तपने जेदेंकरीथाय इहां कारणनेजेदें कार्यनो जेदथाय तेणेकरी बारप्रकार कहेवाय नहींकां सर्वत्रपणेतो निर्जरा एकप्रकारनीजछे ॥ १ ॥

अनुष्टव्वृत्तद्वयं॥काष्टोपलादिरूपाणां निदानानां विजेदतः॥वन्हिर्यथैकरूपोपि पृथग्रूपो विवक्ष्यते॥२॥ निर्जरापि घादशधा तपोजेदैस्तथोदिता॥ कर्मनिर्जरणात्मा तु सैकरूपैव वस्तुतः ॥ ३ ॥

अर्थ ॥जेम कारणरूप काष्ट अने पाखाणना जूदाजूदा जेदछे तेनाजेदेंकरी यद्यपि अग्निएकरूपछे तथापि जिन्नजिन्नरूप देखायछे एटले आ अमुक काष्टनीअग्नि अथवा आ अमुक पाखाणनी अग्नि इत्यादिक अग्निना जेदकहेवायछे ॥ २ ॥ तेमज तपनाजेदेंकरी निर्जरा बारप्रकारनीकहीछे पण वस्तुतत्वें विचारतां कर्मनिर्जरा स्वरूप जे छे तेतो एक रूपजछे ॥ ३ ॥

उपेंद्रवज्रावृत्तं॥ निकाचितानामपि कर्मणां यजरीयसां जूधरदुर्धराणां॥ विजेदने वज्रमिवातितीव्रं नमोस्तु तस्मै तपसेऽद्भुताय ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ पर्वतजेवा दुर्धर एहवा महोटा निकाचितकर्मोनो जेदकरवाविषे वज्रनी अत्यंततीव्र एहवुंअद्भुतजे तप तेने महारो नमस्कार होजो ॥ ४ ॥

उपजातिवृत्तं ॥ किमुच्यते सत्तपसः प्रजावः कठोरकर्मार्जितकिल्बिषोपि ॥ दृढप्रहारीव निहत्य पापं यतो ऽपवर्गं लजतेऽचिरेण॥५॥ यथा सुवर्णस्यशुचि स्वरूपं दीप्तः कृशानुः प्रकटीकरोति ॥ तथात्मनः कर्मरजो निहत्य ज्योतिस्तपस्तद्विशदीकरोति ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ तपना रूमाप्रजावनुं केटलुं वखाण करियें जेटलुं वखाणकरियें

थोमुंजने केमके दृढप्रहारी जेवा पुरुषोए महोटा कठोर कर्म करीने अत्यत सपादान कयुहतो तेपण तपस्याना प्रभावे समस्त पापोनो नाशकरीने क्षमा मोक्ष प्रतें पाम्या ॥ ५ ॥ जेम प्रदीप्तअग्नि सुवर्णनु पवित्रस्वरूप तेमज तपजेने तेपण आत्मामाथी कर्मरूप रजनो नाशकरीने साक्षात् ज्योतिस्वरूप प्रगटकरेछे ॥ ६ ॥

स्रग्धरावृत्त॥ बाह्येनाभ्यतरेण प्रथितबहुभिदा जीयते येन
शत्रुश्रेणी बाह्यातरगा भरतनृपतिवत् भावलब्धद्रढिम्ना॥
यस्मात्प्राडुर्भवेयु प्रकटितविभवा लब्धय सिद्धयश्च वं
दे स्वर्गापवर्गार्पणपटु सततं तत्तपो विश्ववद्य ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ जेना बाह्य अने अभ्यतर भेदेकरी घणाभेद प्रख्यातछे एहवा ऊपर विशेषभावना योगेकरी जेहने दृढपणु लब्धके० प्राप्तथायतो ते तपकरी मनादिक बाह्यशत्रु अने रागादिक अतरग शत्रु तेनीजे श्रेणीके० पक्ति तेने राजानीपरे जीतीजवायछे वली जेतपथकी ऐश्वर्यताने प्रगटकरनारी लब्धीओ अने आठसिद्धिओ प्रगटथायछे तथा जे स्वर्ग अने मोक्षना सुख आपवा समर्थ तथा जगतने पूजवायोग्य एहवोजेतप तेहनेहु निरतर नमस्कारकरुं ॥ ७ ॥

अथ नवमभावनाष्टक सारगरागेण गीयते ॥ जिणदरायसरण तिहारे ॥

विभावय विनय तपोमहिमान ॥ ध्रुवपद ॥ बहुभवसंचितदु
ष्कृतममुना ॥ लभतेलघुलघिमान ॥ वि० ॥ १ ॥ याति
घनापि घनाघनपटली ॥ खरपवनेन विराम ॥ भजति त
था तपसा दुरितालि ॥ क्षणभगुरपरिणाम वि० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ विनयविनयजी पोताने उपदेशकरेछेके अरेविनय तुं तपना महिमाने भावनाभावके जेनायोगथकी घणाभवनु संचितकरेलु पाप तुरतज दूर थायछे ॥ १ ॥ जेम तीक्ष्णवायुथे करी महाटी महाटी मेघनीपंक्तिओ नाशपामेछे तेम तपेकरीने महाटीमहोटी पापनीपंक्तिओ एक क्षणमात्रमां नष्टथइजायछे ॥ २ ॥

वाञ्छितमाकर्षति दूरादपि रिपुमपि व्रजति वयस्य॥ तप इदमाश्र
य निर्मलभावादागमपरमरहस्य॥३॥अनशनमूनोदरता वृत्तिह्रा
स रसपरित्याग भज मालीन्य कायक्लेश तप इति बाह्यमुदार॥४॥

अर्थ ॥ वली जे वांछितार्थ घणुंदूरहोय तेनेपण नजीकआणीआपेछे तथाशत्रु नेपण मित्रकरेछे एहवाएतपने शास्त्रनुं परमरहस्य जाणीने निर्मलनावें आदर ॥ ॥ ३ ॥ तेतपनाबारजेदछे १ अनशन २ ऊनोदरी ३ वृत्तिन्हास एटले वृत्तिसंक्षेप ४ रसपरिहार ५ सांलीन्यता एटले इंद्रियोनोरोधवुं एकांतेवेसवुं ६ कायक्लेश एछप्रकारनुं महोटुं बाह्यतपछे तेनुं तुं सेवनकर ॥ ४ ॥

प्रायश्चित्तं वैयावृत्यं स्वाध्यायं विनयं च ॥ कायोत्सर्गं शुनध्यानं आभ्यंतरमिदमंच॥वि०॥५॥शमयति तापं गमयति पापं रमयति मानसहंसं॥हरति विमोहं दूरारोहं तप इति विगताशंसंः॥वि०॥६॥

अर्थ ॥ १ प्रायश्चित्त २ वेयावच्च ३ स्वाध्याय ४ विनय ५ कायोत्सर्ग ६ शुन ध्यान एछप्रकारना आभ्यंतर तपछे तेनेसेव ॥ ५ ॥ एतप अनेकप्रकारना संसारीकतापनी शांतिकरेछे अनेपापनोनाशकरेछे तथा मनरूपहंसने रमाडेछे वली निःसंशयपणे आजगतमां दुःखोनेदूरकरवा असमर्थ एहवोजे मोहतेनो नाशकरेछे ॥६॥

संयमकमलाकार्मणमुज्वलशिवसुखसत्यंकारं चिंतितचिंतामणिमाराधय तप इह वारं वारं ॥वि०॥७॥ कर्मगदौपधमिदमिदमस्य च जिनपतिमतमनुपानं॥विनय समाचर सौख्यनिधानं शांतिसुधारसपानं॥वि०॥८
इतिश्रीशांतसुधारसगेयकाव्ये निर्जरानावनाविनावनोनामनवमःप्रकाशः

अर्थ ॥ वलीएतपते चारित्ररूप लक्ष्मीने वशकरवानी विद्याछे तथा सुंदर मोक्षना सुखआपवाने विशारदछे वली चिंतितार्थ देवाने चिंतामणीरत्नसरखोछे एहवा तपने आजगतमां हेविनय तुं वारंवार अंगीकारकर ॥ ७ ॥ हेविनय कर्मरूप रोगनु औषध अने तीर्थंकरोनो जे मत तेछे अनुपानजेहनुं तथा समस्त सुखनुं निधान एहवोजे शांतसुधारस तेनुंतुंपानकर ॥ ८ ॥ इतिश्रीशांतसुधारस गेयकाव्ये निर्जरानावनाविनावनो नाम नवमः प्रकाश.

उपजातिवृत्तं ॥ दानं च शीलं च तपश्च नावो धर्मश्चतुर्धा जिनबांधवेन॥निरूपितो यो जगतां हिताय स मानसे मे रमतामजस्त्रं॥१॥

अर्थ ॥ हवेदशमी धर्मनावना नावेछे तीर्थंकरदेवें लोकहितार्थे दानशील तप अने नाव एरीतें चारप्रकारनो धर्मकह्योछे तेधर्ममारामनमां सर्वकालरहो ॥ १ ॥

ऽज्ववज्रावृत्त त्रयं॥सत्यक्षमामार्दवशौचसंगत्यागार्जवब्रह्मविमुक्तियु
क्त ॥ य सयम किच ततोपगूढश्चारित्रधर्मो दशधायमुक्त ॥ २ ॥ य
स्य प्रनावादिह पुष्पदंतौ विश्वोपकाराय सदोदये ते॥ ग्रीष्मोष्मनी
ष्मामुदितस्तमिलान् काले समावासयत्ति क्षिति च ॥ ३ ॥ उल्लो
लकल्लोलकलाविलासैर्नोष्लावयत्यंबुनिधि क्षिति यत् ॥ न
घ्नति यत् व्याघ्रमरुद्दवाद्या धर्मस्य सर्वोप्यनुनाव एप ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ १ सत्य २ क्षमा ३ मार्दव ४ शौच ५ तपधर्म ६ संगत्याग ७ ब्रह्मचर्य
विशेषप्रकारे मुक्तिएटले निर्लोनतापणु ९ सयम १० अकिंचनता तेऐकरी
रीतें दशप्रकारनु चारित्रधर्म कह्युंछे ॥ २ ॥ जे धर्मनापसायेंकरी जगतमां
पण सर्वप्राणीमात्रने उपकारकरवाने अर्थे नित्यउदयपणु पामेछे वलीअ
नी अत्यंत ततपयली जमीनने वर्षाऋतुमां मेघ वर्षादकरीने ठंकिकरेछे ॥ ३ ॥
या समुद्रपोताना महोटाकल्लोलेंकरी पृथ्वीनेबुडावतोनथी अने व्याघ्र तथा
नल अने पवन इत्यादिकोकोइने मारतानथी एप्रतापसर्व धर्मनोजछे ॥ ४ ॥

शार्दूलविक्रीडित वृत्तद्वय ॥ यस्मिन्नेव पिता हिताय यतते
भ्राता च माता सुत सैन्य दैन्यमुपैति चापचपल यत्रा
फल दौर्बल ॥ तस्मिन्कष्टदशाविपाकसमये धर्मस्तु सर्वाम
त मज्ज मजन एप सर्वजगतस्त्राणाय बद्धोद्यम ॥ ५ ॥
त्रैलोक्य मचराचर विजयते यस्य प्रसादादिद योत्रामु
त्र हितावहस्तनुनृता सर्वार्थसिद्धिप्रद ॥ येनानर्थकदर्थ
ना निजमह स्सामर्थ्यतो व्यर्थिता तस्मै कारुणिकाय ध
र्मविनवे नक्तिप्रणामोऽस्तु मे ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जेवखत पोतानाहितनेअर्थे बाप जाइ माता पुत्र
तेवखत धर्मनां नवलाप्रपाणथो अनेवली धनुष्यनायोगकरी चपलपणो जे शिष्य
... तेवखत दैन्यके ॰ दीनपणाने पामेछे तथा जेवखतपोतानी ...
... एवी कष्टअवस्थाना परिणामकालें पण सज्जनएहवुजे आधर्म
... पोतानाउपायमां ... जाणो एक धर्मरूप वगतज ...

ने आगममां वरतरूपहेथ्या नीपरेंथयीने सर्वजगतना रक्षणार्थं उद्योगकरेछे ॥ ५ ॥ वळी जेहनापसायथकी स्थावर अने जंगमसहित जगत शोभेछे तथा जे आलोकें प्राणीओने हितकरवाने योग्यथयीने सर्वअर्थनी सिद्धताने पमाडेछे जेणेपोताना तेजसीतामयंकरी पापरूपविटंबनानो नाशकरीनाख्युंछे एहवो जे दयावंत धर्मरूप प्रभु तेने महारो नमस्कार होजो ॥ ६ ॥

मंदाक्रांतावृत्तं ॥ प्राज्यं राज्यं सुभगदयिता नंदनानंदनानां रम्यं रूपं सरसकविता चातुरी सुस्वरत्वं ॥ नीरोगत्वं गुणपरिचयः सज्जनत्वं सुबुद्धिं किंतु ब्रूमः फलपरिणति धर्मकल्पद्रुमस्य ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ महोटुंराज्य सुंदरस्त्री पुत्र पुत्रीओ रमणीकरूप घणीज सरस कविता करवानी चतुराइ सुस्वरपणुं आरोग्यतापणुं गुणोनोपरिचय तथासज्जनपणुं अने रुडीबुद्धि एसर्वेवाना ते धर्मरूप कल्पवृक्षना फलछे ॥ ७ ॥

॥ अथ उपशमभावनाष्टकं वसंतरागेण गीयते भवितुमेवंदोरेहीरविजयसूरिराया एदेशी ॥

पालय पालय रे पालय मां जिनधर्म ॥ मंगलकमलाकेलिनिकेतन करुणाकेतन धीर ॥ शिवसुखसाधन भवभयबाधन जगदाधार गंभीर ॥ पा० ॥ १ ॥ सिंचति पयसा जलधरपटलीभूतलममृतमयेन ॥ सूर्याचंद्रमसावुदयेते तव महिमातिशयेन ॥ पा० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हे जैनधर्म तुं महारुंरक्षणकर महारुं रक्षणकर तुं मांगलिकरूप लक्ष्मी तुं क्रीडागृहवो वळीकरुणानो स्थानकछो तथा मोक्षसुखनुं साधनछो अने संसारना समस्तभयनो नाशकरनारछो तेमज जगतना जीवोने आश्रयभूतछो अनेअतिगंभीरछो ॥ १ ॥ जे मेघनो समूहते पृथ्वीतलने अमृत सरखा पाणीयें करीने सिंचन करेछे अने चंद्र सूर्य जे नित्य उगेछे तेसर्व ताहरोज महिमाछे ॥ २ ॥

निरालंबमियमसदाधारा तिष्ठति वसुधा येन॥तं विश्वस्थितिमूलस्तंभं तं सेवे विनयेन॥पा०॥३॥ दानशीलशुभभावतपोमुखचरितार्थीकृतलोकः ॥ शरणस्मरणकृतामिह भविनां दूरीकृतभयशोकः ॥पा० ४॥

अर्थ ॥ निरालंब पृथ्वीनेकोइ आधार नछतां जेनाआधारथकी रहेछे एहवो जगतनीस्थितीनो मूलस्तंभ जे धर्म तेने हुं निश्चयसेतें विनय एटले भक्तिये करी सेवुंछुं॥३॥ दान शील शुभभाव अने तप एचारप्रकारेकरी लोकोने चारित्रार्थीनो करनारो अने

जे प्राणी आ जगतमा ए धर्मनो स्मरण करेछे तथा आश्रय करेछे ते
नय तथा शोकने दूर करनारो एह्वो ए धर्मछे ॥ ४ ॥

क्षमासत्यसंतोपदयादिकसुन्नगसकलपरिवार ॥ देवासुरनर
शासन कृतबहुन्नवपरिहार ॥पा०॥५॥वधुरवधुजनस्य दिवानि
हायस्य सहाय ॥भ्राम्यति नीमे न्नवगहनेगी त्वा बाधवमपहाय
अर्थ ॥ जेनो क्षमा सत्य सतोष दया आदेदेइने समस्तपरिवार
देवता दैत्य अने मनुष्योए जेनी आज्ञामान्यकरीछे तथा अनेक जन्म
नो परिहार करनारो ते ए धर्मजछे ॥५॥ वलीहे धर्मतु जेनेकोइ नाइनर्थ
इ तथा जेनेकोइ सहायनथी तेने रात्रदिवस सहायनो करनार बांधव
छता बाधवरूप तुजने मूकीने प्राणीओ ससाररूप अरण्यमा फिरेछे॥ ६

झगति गहन जलति कृशानु स्थलति जलधिरचिरेण॥तव कृप
कामितसिद्धिर्बहुना कितु परेण ॥पा०॥७॥ इह यछसि सुखमु
प्रेत्येन्द्रादिपदानि॥क्रमतोज्ञानादीनि च वितरसि नि सुसुख
अर्थ॥हे धर्मरूपमित्र तहारीरुपाथकी आरण्य ते महोटा नगर जेवो
अग्नि ते पाणीसरखोथाय अने समुद्रते स्थल सरखो तुरतयइजायछे वधा
तहारी रुपायकी प्राणीमात्रना सर्व मनोरथ पूर्णथायछे ॥ ७ ॥ आलोक
जगनेविषे दयारूप धर्म उदयआव्योछे तो तेने इहापण पूर्वोक्तप्रकार
अने परनवे इन्द्रादिक देवताओनी पदवीआपेछे वली क्रमेकरी मोक्षसुख
नारा एहवा ज्ञानादिक गुणआपेछे ॥ ८ ॥

सर्वतत्रनवनीतसनातन सिद्धिसदनसोपान ॥ जय जय
नयवता प्रतिलवितशातसुधारसपान ॥पा०॥ ए ॥ इतिश
सुधारस गेयकाव्ये धर्मन्नावनाविन्नावनो नाम दशम प्रक
अर्थ ॥ सर्वशास्त्रोमा नवनीत एटले माखणजेवो सारनूत अने सनातन
श्वत तथा सिद्धिरूपगृहनो सोपान एटले निसरणीरूप अने जे विनयव
ने शातिसुधारसनु पान करावेछे एहवोजे धर्म ते जयपामो जयपामो ॥ ए
इतिश्री शांतसुधारस गेयकाव्ये धर्मन्नावनाविन्नावनो नाम दशम प्रका

सप्ताधोधो विस्तृता याः पृथिव्यश्छत्राकाराः संति रत्नप्रभा
न॥ वृत्तं ॥ ताभिः पूर्णो योऽस्त्यधोलोक एतौ पादौ यस्य व्यायतौ सप्तरज्जुः॥१
ः॥ अर्थ ॥ हवे ड्यारमी लोकस्वरूप नावनानावेछे सातअधोअधो एटले एकत्री
तान नीचेंनीचें विस्तीर्ण छत्राकारें रत्नप्रनादिक सातपृथ्वीओछे तेणेकरी परिपू
एवा अधोलोकरूप सातरज्जुप्रमाणे जेना महोटावेपगछे ॥ १ ॥
तिर्यग्लोको विस्तृतो रज्जुमेकां पूर्णो द्वीपरर्णवांतैरसंख्यैः ॥ यस्य
ज्योतिश्चक्रकांचीकलापं मध्ये कार्श्यं श्रीविचित्रं कटित्रं ॥ २ ॥
॥ अने एक रज्जु प्रमाण विस्तारवंत असंख्याता द्वीपसमुद्रेंकरी व्याप्त एह
तिर्यग्लोकमां कृशपणानी शोनायेंकरी युक्तछे वली ज्योतिष चक्ररूप कांचीक
लापयें युक्त जेनुं सुंदर कणदोरोछे ॥ २ ॥
लोकोऽथोर्ध्वं ब्रह्मलोके द्युलोके यस्य व्याप्तौ कूर्परौ पंच रज्जू ॥ लोक
विस्तृतो रज्जुमेकां सिद्धज्योतिश्चित्रको यस्य मौलिः ॥ ३ ॥
॥ जेनो ऊर्ध्वलोक ब्रह्मनामा देवलोक पांचरज्जुप्रमाणे व्याप्त ते कोपरा स
कूर्परछे अने जेनुं लोकनेअंते एकरज्जुविस्तारपणेजे सिद्धशिला तेमस्तकछे॥३
यो वैशाखस्थानकस्थायिपादः श्रोणीदेशे न्यस्तहस्तद्वयश्च ॥ का
लेऽनादौ शश्वदूर्ध्वंदमत्वाद्बिभ्राणोपि श्रांतमुद्रामखिन्नः ॥ ४ ॥
अर्थ ॥ जेना मथनकरवाना दंडने स्थानकेंपगछे एटले गसमथन करवाना दंमनी
परें जेना पगपसरेलाछे जेणे पोतानी कटीउपर वेहाथ राखेलाछे एहवोथको अना
दिकालनुं निरंतर ऊर्ध्वदमपणे जितेंद्रियथको शांतमुद्रा धरीरह्योछे पण खिन्नथी॥४
सोयं ज्ञेयः पूरुषो लोकनामा षड्द्रव्यात्माऽकृत्रिमोनाद्यनंतः ॥
धर्माधर्माकाशकालात्मसंज्ञैर्द्रव्यैः पूर्णः सर्वतः पुद्गलैश्च॥ ५ ॥
अर्थ ॥ षटद्रव्यरूप जेना आत्मानुं स्वरूपछे जेनेकोइयें कर्योनथी जेनो जन्
अथवा मृत्युथयोनथी वली धर्म अधर्म आकाश काल जीव अने पुद्गल एपांच
व्यकरी सर्वस्थले परिपूर्ण एवो आ चउदराज लोकनामा पुरुषजाणवो ॥ ५
रंगस्थानं पुद्गलानां नटानां नानारूपैर्नृत्यतामात्मनां च ॥ का
लोद्योगस्वस्वनावादिनावैः कर्मातोद्यैर्नर्तितानां नियत्या॥ ६
अर्थ ॥ वली जे काल उद्योग स्वस्वनावादिकनावें कर्मरूपवाजित्रें नियति

री नानाप्रकारना रूपेकरी नचावेला जीवोनु अने नाचनारोजे पुद्गलरूप
ओ तेनुं रंगस्थान एटले रंगमंडपछे एवो एचउदराज लोकनामा पुरुषछे ॥ ६ ॥

एवं लोको भाव्यमानो विविक्तया विज्ञानां स्यान्मानसस्थैर्यहेतुः ॥
स्थैर्यं प्राप्ते मानसे चात्मनीना सुप्राप्यैवाऽध्यात्मसौख्यप्रसूतिः ॥७॥

अर्थ ॥ एरीतेलोकने विवक्त एटले जुदोजुदो स्पष्टपणे भाव्यो थको विज्ञानी,
नामनने स्थिरकरवानो कारण तेहीजथायछे जेवारे मनस्थिरथयो तेवार
हितकरनारी अध्यात्मिक सुखनी प्राप्तिसुलभथायछे ॥७॥ सप्तनिर्माजनीरत्नं ॥

॥ अथ एकादशभावनाष्टक काफीरागेणगीयते आजसखीमनमोहनो ॥ एदेशी

विनय विभावय शाश्वत ॥ हृदि लोकाकाश ॥ सकलचराचरधा
रणे परिणमदवकाश ॥ वि० ॥१॥ लसदलोकपरिवेष्टितं गणनाति
गमान ॥ पचभिरपि धर्मादिभि सुघटितसीमान ॥ वि० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ विनयविजयजी उपाध्याय पोताने समजावेछेजे अरेविनय
चिरकाल रहेनारो एहवो लोकाकाशतु ताहरा हृदयमा धारणकर जेमां
स्थावर अनेजंगमपदार्थोने धरवाविषे पूर्णअवकाशछे ॥ १ ॥ वलीलोनावभाग
लोकेकरी वेष्टितके० विंटयुछे तथा जे गणनाके० परिमाण मूकीने रह्योछे
असख्यातो लोकाकाशछे माटे, वली जेनीसीमाधर्मादिक पांचद्रव्येकरी सुघटितके०
रूडीरचनायें करी रचितछे एहवो ए चउदराज लोकनामा पुरुषछे ॥ २ ॥

समवघातसमये जिनै परिपूरितदेह ॥ असुमदणुकविविधक्रिया
गुणगौरवगेह ॥ वि०॥३॥ एकरूपमपि पुद्गलैः कृतविविधविवर्त ॥
काचनशैलशिखरोन्नत क्वचिदवनतगर्त ॥ वि० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ वली लोकनामा पुरुषनेविषे श्रीतीर्थंकरदेव समुद्घातना समयें पोताना
आत्माना प्रदेशेकरीने चउदेराजलोकना समस्तभाग परिपूर्णकरेछे तथा असुमंतुके०
प्राणी अने अणुके० परमाणु तेमनी नानाप्रकारनी जेक्रिया अनेगुण
एानु स्थानकजाणवु ॥ ३ ॥ वली ए लोकाकाश पुरुषमा यद्यपि रूपने धारण
नार एक पुद्गलद्रव्यछे तेणे नानाप्रकारना करेला एहवा किहांक मेरुना शिखर
माणेउचा सुवर्णमयपर्वतोछे वलीकिहांकतो गर्ता एटले खाडाओछे ॥ ४ ॥

क्वचन तविपमणिमंदिरैरुदितोदितरूपं ॥ घोरतिमिरनरकादिभिः क्वचनातिविरूपं ॥ वि० ॥ ५ ॥ क्वचिदुत्सवमयमुज्वलं जयमंगल नादं ॥ क्वचिदमंदहाहारवं ॥ पृथुशोकविषादं ॥ वि० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ वली किहांक तो देवताओना भुवन तेनी सूर्यकांत मणीरत्ननी शोभायें करी सुंदररूप पणाना उदयने पाम्योछे एटले उदितोदित रूपनेपाम्योछे वली किहांक भयंकर अंधकार अने नरकादिके अत्यंत विरूप एटले मागरूप पणाने पाम्योछे ॥ ५ ॥ वली किहांकतो उत्सवमयछे एटले उज्वल जयमंगलना वाजित्र ना नादेंकरी युक्तछे तथा किहांकतो अत्यंतशोक अने खेदे करीयुक्त जेमांथी महो टो हाहाकार शब्द निकलीरह्योछे एहवुं पुद्गल द्रव्यछे ॥ ६ ॥

बहुपरिचितमनंतशो निखिलैरपिसत्वैः जन्ममरणपरिवर्तिभिः कृतमुक्तममलैः ॥ वि० ७॥ इहपर्यटनपराङ्मुखाः ॥ प्रणमत भगवंतं ॥ शांतसुधारसपानतो धृतविनयमवंतं ॥ ८ ॥ इतिश्रीशांतसुधारसगेयकाव्ये लोकस्वरूपभावनाविभावनो नामैकादशः प्रकाशः

अर्थ ॥ वली लोकमां पुद्गलनो स्वरूप विशेषें कहेछे जेने जन्म मरणाना योगेंकरी फिरनारा प्राणी पूर्वपूर्व ममत्वनी परपरायेंकरी अनंति अनंतिवार लेइलेइनेमूक्योछे अनेजेनुं सर्वप्राणीओए अनंतिवार घणुंपरिचित कर्युंछे एहवुंए पुद्गलद्रव्य छे॥ ७ ॥ माटे हेजीव तुंजो आलोकरूप पुरुषमां फिरवानेविषे पराङ्मुख थयो होय तो शांतसुधारसना पानेकरी विनय धारण करनाराओनुं रक्षण करवा वाला जे भगवत परमात्मा तेने नमस्कारकर ॥ ८ ॥ इतिश्री शांतसुधारस गेयकाव्ये लोकस्वरूपभावनाविभावनो नाम एकादशः प्रकाशः

मंदाक्रांतावृत्तं॥यस्माद्विस्मापयितसुमनःस्वर्गसंपद्विलासप्राप्तोल्लासाः पुनरपि जनिः सत्कुले भूरिभोगे॥ ब्रह्माद्वैतप्रगुणपदवीप्रापकं निःसपत्नं तद्दुष्प्रापं भृशमुरुधियः सेव्यतां बोधिरत्नं ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हवेबारमी बोधिदुर्लभ भावनाभावेछे जेनायकी देवताओपण विस्मयपामे एहवो स्वर्गसंपत्तिनो विलास पामीने जीव आनंद पामनार थायछे व लीजेनायकी अनेकप्रकारना अत्यंत भोगेंकरी युक्त एहवा उत्तमकुलमां पुनःपुनः ज

समयायछे तथा परंपरायें अद्वैत ब्रह्मपदवी पमाडवामां जेनेकोइशत्रुनथी जेने
पामवी अत्यंतकठीणछे एहवुंजे बोधरूपरत्न तेनोहेबुद्धिमंतो तमेसेवनकरो ॥ १

भुजंगप्रयातवृत्तत्रय॥अनादौ निगोदांधकूपे स्थितानामजस्रं जनुर्मृत्युदुःखार्दितानां॥परीणामशुद्धि कुतस्तादृशी स्याद्यया हंत तस्माद्विनिर्याति जीवा ॥ २ ॥ततो निर्गतानामपि स्थावरत्वं त्रसत्वं पुनर्दुर्लभं देहभाजां ॥ त्रसत्वेपि पंचाक्षपर्याप्तसंज्ञिस्थिरायुष्कवद्दुर्लभं मानुषत्वं ॥३॥ तदेतन्मनुष्यत्वमाप्यापि मूढो महामोहमिथ्यात्वमायोपगूढः॥ भ्रमन्दूरमग्नो भवागाधगर्ते पुनः क्व प्रपद्येत तद्बोधिरत्नं॥ ४ ॥

अर्थ ॥ पण अनादि कालना निगोदरूप अंधकार तद्रूप कुवामां रहेनारा निरंतर जन्म मरणना दुःखेंकरी पीडायला प्राणीओने तेवी परिणामशुद्धि केमहोय जेथकी महोटा आनंदे सहित जीव निगोद रूप अंधकार कुवामांथी नीकलेछे ॥ २ ॥ ते निगोदमांथी नीकलीने पण स्थावरमां उपजवुथाय प्राणीने त्रसपणु पामवुतो दुर्लभछे वली त्रसपणामां पण पंचेंद्रियपणु पामवुं दुर्लभछे तेमां वलीपर्याप्तिपणु पामवु दूर्लभछे तेमांपण संज्ञी पंचेंद्रियपणुं ने मनुष्यपणुं पामवुतो परमदुर्लभछे ॥३॥महामोह मिथ्यात्व तथा माया युक्तथको मूर्खप्राणी आ मनुष्यपणु पामीने संसाररूप अगाध खाडामां फिरतो बुडतोथको रहेछे तेप्राणीने बोधिरत्न फरीने शीरीते प्राप्तथशे ॥ ४ ॥

शिखरिणीवृत्त॥विभिन्ना पंथानः प्रतिपदमनल्पाश्च मतिनः कुयुक्तिव्यासंगैर्निजनिजमतोल्लासरसिकाः ॥ न देवाः सान्निध्यं विदधति न वा कोप्यतिशयस्तदेवं कालेऽस्मिन् य इह दृढधर्मा स सुकृती॥५॥

अर्थ ॥ धर्मोना भिन्नभिन्न मार्ग अने भिन्नभिन्न स्थानक कुयुक्तिना व्यासंगे एटले अभ्यासे करीने पोतपोताना मतना उदयविषेरसिक एहवा घणामतवाला था कालमांछे अनेनो देवतानेपूर्वनाजेवा देवकांइ काइपासे आवतानथी तमज कोइ अतिशयवालोपण कोइनथी जेने पूछि निर्णय करीय तो एवा आ दुःखमकालमां रहनारो धर्मविषे दृढना राखेछे तेज प्राणी पुण्यवान जाणवा॥ ५ ॥

शार्दूलविक्रीडितवृत्तं॥ यावद्देहमिदं गदैर्न मृदितं नोवा जराजर्जरं याव त्वक्षकदंबकं स्वविषयज्ञानावगाढक्षमं॥ यावच्चायुरभंगुरं निजहिते ता वद्बुधैर्यत्यतां कासारे स्फुटिते जले प्रचलिते पालिः कथं बध्यते ॥ ६॥

अर्थ ॥ जिहांसुधी आशरीर रोगाक्रांत थयोनथी तेमज जिहांसुधी आशरीर जराएकरी जर्जरीभूतथयोनथी तथा जिहांसुधी आ पांचेंद्रियनो समूह पोतपोता ना विषयो लेवाने समर्थछे अने जिहांसुधी आयुष्य क्षीणथयुंनथी तिहांसुधी हेजीव तुं पोताना कल्याणविषे यत्नकर केमके तलोफुटीने पाणी बाहेर नीकली जसे तोपछे पालते केवी बांधीस ॥ ६ ॥

अनुष्टुब्वृत्तं ॥ विविधोपद्रवं देहमायुश्च क्षणभंगुरं ॥
कामालंब्य धृतिं मूढैः स्वश्रेयसि विलंब्यते ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ आशरीर नानाप्रकारना उपद्रवेंकरी युक्तछे आयुष क्षणभंगुरछे एमछतां कोणमूर्ख तेनाउपर संतोष राखी पोताना कल्याणथवाना कार्यमां विलंब करे॥ ७

॥ द्वादशभावनाष्टकं धनश्रीरागेणगीयते ॥ हीचेरेहीचेरेपीआहिंडोलडेएदेशी ॥

बुध्यतां बुध्यतां बोधिरतिदुर्लभा ॥ जलधिजलपतितसुररत्नयु क्त्या सम्यगाराध्यतां स्वहितमिह साध्यतां ॥ बाध्यताम धरगतिरात्मशक्त्या ॥ बु० ॥ १ ॥ चक्रिभोज्यादिरिव न रभवो दुर्लभो भ्राम्यतां घोरसंसारकक्षे ॥ बहुनिगोदादिका यस्थितिव्यायते ॥ मोहमिथ्यात्वमुखचोरलक्षे ॥ बु० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ जेम समुद्रनापाणीमां पडीगयलुं चिंतामणीरत्न पाछोहाथमां आववुं अतिदुर्लभछे तेम बोधिपामवीपण अतिदुर्लभछे माटेरूडीरीतें बोधिनुं आराधनकरी पोतानुं हितसाधवु अनेपोतानी शक्तीयेंकरी दुर्गतिनो बाधकरवो ॥ १ ॥ घणी नि गोदादिक कायस्थितियें करी विशाल अने मोह मिथ्यात्वप्रमुख लाखोगमे चोरटा ये युक्त एहवो आ घोर संसाररूप अरण्यमां फिरनारा जीवोने चक्रवर्त्तिना भोजन सरखो मनुष्य जन्म पामवो दुर्लभछे ॥ २ ॥

लब्ध इह नरभवो ऽनार्यदेशेषु यः स भवति प्रत्युतानर्थकारी ॥ जी वहिंसादिपापाश्रवव्यसनिनां माघवत्यादिमार्गानुसारी ॥ बु० ॥ ३ ॥

आर्यदेशस्पृशामपि सुकुलजन्मनां ॥ दुर्लभा विविदिषा धर्मतत्वे ॥ र
तपरिग्रहभयाहारसंज्ञार्तिभि हत मग्नं जगद्दुःस्थितले ॥ बु० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ जो आ जगतमा प्राणी अनार्यदेशमा मनुष्यभव पाम्यो तो ते
धर्मनु कारणथायछे केमके जीवहिंसादिक पापाश्रवना व्यसनवाला जी
वने जे सातमी नरकादिकने तेना मार्गनुं कारण थायछे ॥ ३ ॥ वळी कुलमा
पामेलो होय अनेवळी आर्यदेशमा रहेनार होय तेनेपण धर्मतत्व जाणवानी
परीक्षा दुर्लभछे कारणके रतके० मैथुन परिग्रह भय अने अहार ए चार नामना
स्थितपणामां सर्वजगत बूडीपडयोछे ॥ ४ ॥

विविदिषायामपि श्रवणमतिदुर्लभं धर्मशास्त्रस्य गुरुसन्निधाने ॥ वित
थविकथादितत्तद्रसावेशतो विविधविक्षेपमलिनेऽवधाने ॥ बु० ॥
॥ ५ ॥ धर्ममाकर्ण्य संबुध्य तत्रोद्यम कुर्वतो वैरिवर्गोऽतरंग राग
द्वेषश्रमालस्यनिद्रादिको बाधते निहतसुकृतप्रसंग ॥ बु० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ कदाचकोइने धर्मतत्व जाणवानी इच्छाहोय अने गुरुसन्निध
थोरण वृथा विकथारसना आवेशथी नानाप्रकारना विक्षेपेकरी म
मलीन थयुंछतो धर्मशास्त्रोनु श्रवण दुर्लभहोय ॥ ५ ॥ वळी जेप्राणी
सांभळी धर्मनेपाम्यो अने धर्मनेविषे उद्योगपण करनारहोय तेना
अंतरंगना नाशकरनार जे रागद्वेष श्रम आळस निद्रा इत्यादिक अतरंग
नो समूहछे तेपीडाकरेछे तेथीतेने धर्मपामवु दुर्लभथायछे ॥ ६ ॥

चतुरशीतावहो योनिलक्षेष्विय क त्वया कर्णिता धर्मवार्ता ॥ प्राय
शो जगति जनता मिथो विवदते ऋद्धिरससातगुरुगौरवार्ता ॥ बु० ॥ ७ ॥
परमनिर्दुर्लभात्प्राप्य दुर्लभतम बोधिरत्न सकलगुणनिधानं ॥ कुरु गुरु
प्रमादविनयप्रमादोदित ॥ शांतरसमरसपीयूषपान ॥ बु० ॥ ८ ॥
इ० शांतसुधारसगेयकाव्ये बोधिभावनाविभावनो ना।

अर्थ ॥ माटे अहोइति आश्चर्य हेजीव चोराशीलक्ष जीवा
यमां तें धर्मनीवात सांभळी क्यांके अर्थात् नहीज सांभळी हवे केमके घणु
खरु जगतना ऋद्धिगारव रसगारव सातागारव एत्रण महोटा गारवेकरी पीडा
येलोको परस्पर एकबीजा साथे वादकरेछे पण धर्मनी वातो सांभळी धर्ममार्ग

नेनानथी ॥७॥ एम अनिदुर्लभ वस्तु करतां पण विशेष दुर्लभ अने समस्त
निधानरूप जे बोधिरत्न ते पामीने गुरुनो अत्यंत विनयकर्यो तेणेकरीने प्राप्त
कर्युं जे शांतिसुधारस रूप मनोज्ञअमृत तेनु तु पानकर एमाकर्त्तायें पोतानुंनाम प
कर्युं ॥ ८ ॥ इतिश्री शांतसुधारस गेयकाव्ये बोधिभावनाविभावनोनाम द्वाद
शः एरीते अनित्यादिक बारभावनाओनो अधिकार संपूर्णथयो ॥

अनुष्टुब्वृत्तं ॥ सद्धर्मध्यानसंध्यानहेतव श्रीजिनेश्वरैः ॥ मैत्रीप्रभृतयः
प्रोक्ताश्चतस्रो भावनाः पराः ॥ १ ॥ तथाहु॥मैत्रीप्रमोदकारुण्यमाध्य
स्थ्यानि नियोजयेत् ॥ धर्मध्यानमुपस्कर्तुं तद्धि तस्य रसायनं ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवे मैत्र्यादिक चारभावनाओ भावेछे श्रीतीर्थंकरदेवें सत्यधर्मध्याननी
धारानी हेतुभूत मैत्रीआदेदेइने बीजी चारभावनाओ कहीछे ॥ १ ॥ तेश्रीतीर्थंकरदेवे
कहीछे तेमज भाविचेछेये १ मैत्री २ प्रमोद ३ कारुण्य अने ४ माध्यस्थ्य एचारभाव
नाते धर्मध्यानना भूषणार्थे एटले धर्मध्याननी शोभानेअर्थे योजना करीथकी ध्या
वनारने चारभावनायुक्त जे धर्म ते रसायन (औषधी) तुल्य थायछे ॥ २ ॥

उपजातिवृत्तं॥मैत्री परेषां हितचिंतनं यत् भवेत्प्रमोदो गुणपक्षपातः॥
कारुण्यमार्त्तांगिरुजां जिहीर्षेत्युपेक्षणं दुष्टधियामुपेक्षा ॥ ३ ॥ सर्वत्र
मैत्रीमुपकल्पयात्मन् चिंत्यो जगत्यत्र न कोपि शत्रुः ॥ कियद्दिन
स्थायिनि जीविते ऽस्मिन् किं खिद्यते वैरिधिया परस्मिन् ॥ ४ ॥
सर्वेप्यमी बंधुतया ऽनुभूताः सहस्रशोऽस्मिन्भवता भवाब्धौ ॥ जी
वास्ततो बंधव एव सर्वे न कोपि ते शत्रुरिति प्रतीहि ॥ ५ ॥
सर्वे पितृभ्रातृपितृव्यमातृपुत्रांगजास्त्रीभगिनीस्नुषात्वं ॥ जी
वा प्रपन्नाबहुशस्तदेतत्कुटुंबमेवेति परो न कश्चित् ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जे बीजानाहितनुं चिंतनकरवुं ते मैत्रीभावना जाणवी गुणीनो पक्षपा
त करवुं ते प्रमोदभावना जाणवी दुखीप्राणीना दुख दुरकरवानी इच्छाराखवी ते का
रुण्यभावना दुष्टबुद्धीवंत प्राणीउपर उपेक्षाकरवी ते उपेक्षणभावना ॥ ३ ॥ हेआ
त्मा तु सर्वत्र मैत्रीतापणुंकर एटले आजगतमां कोइपण म्हारो शत्रुछे एहवो तुं
मनमां बीलकुल लावीसनही केमके थोडादिवस रहेनारो अल्पमात्र ताहरु
जीवितव्यपणुंछे तेमा बीजाउपर शत्रुबुद्धि राखीने शुं वृथा खिन्नथायछे ॥ ४ ॥

हेजीव आससारसमुद्रमा ए समस्तप्राणीसाथे हजारोवखत त नाइपणो
व्यो तेमाटे एसर्वे ताहरा नाइओजछे पण कोइ तहारो शत्रुनथी एवीरीतें
॥ ५ ॥ सर्वजीवो मात्र, ससारमा माता पिता बधु काको पुत्र पुत्री स्त्री,
गोकरानीस्त्री इत्यादिकरीते ताहरीसाथे शेकडो वखत सगपण करीचुकाछे
एसर्व ताहारो कुटुंबजछे पण एमांकोइ परकीयनथी एमविचारी सर्वजतु उपर
त्रिता पणु आदर ॥ ६ ॥

इद्रवज्रावृत्तद्वय॥ एकेंद्रियाद्या अपि हंत जीवा पचेंद्रियत्वाद्यधि
गत्य सम्यक् ॥बोधिं समाराध्य कदा लनते नूयो नवभ्रांतिनिया
विराम॥ ७ ॥या रागरोषादिरुजो जनाना शाम्यतु वाक्काय
मनोडुहस्ता ॥सर्वेप्युदासीनरसरसतु सर्वत्र सर्वेसुखिनोनवतु॥८॥

अर्थ ॥ फिरी हेजीव तु एवो विचारकर के आ ससारमां जे एकें
जीवोछे तेपण रूडाप्रकारे पचेंद्रियादिकपणु पामीने ज्ञानाराधनाकरी
ए ससारमा नमवारूप नयनु अतकरसे एवुजाणीने तेजीवोनी साथे पण
कर ॥ ७ ॥ वलीजे प्राणीओने रागद्वेषादिरूप पीडा मन वचन कायाना
गोनो डोहकरेछे तेसर्वप्राणी उदाशीनतापणु पामीने सर्वलोक सुखीयाओ
त्रीपणु तु सर्वजीवो उपर राख ॥ ८ ॥

॥ अथ त्रयोदशनावनाष्टक वेशाखरागेणगीयते रेजीवजिनधर्मकीजियें एदेशी ॥

विनय विचितय मित्रता ॥ त्रिजगति जनतासु ॥ कर्मविचित्रतया गति
विविधा गमितासु ॥वि० ॥ १ ॥ सर्वेते प्रियबान्धवा नहि रिपुरिह
कोपि ॥ माकुरु कलिकलुष मनो निजसुकृतविलोपि ॥ विन० ॥२॥

अर्थ ॥ हेविनय आ त्रणलोकमा कर्मनी विचित्रतायेकरी नानाप्रकारनी
चारिक गतिओने पामेलाप्राणी जे छे तेसर्वप्राणीमात्रना समूहउपर तु
तानाव राख केमके एसर्व ताहरा परमप्रिय बाधवजछे पण एमांकोइ शत्रु
नथी माटे फोकट मनने क्लेशेकरी कलुषता मकर कारणके क्रोधजछे ते
पोतानाज पुण्यनो नाशकरनारोछे ॥ १ ॥ २ ॥ ए बेकाव्यनो अर्थएकछे

यदि कोप कुरुते परो निजकर्मवशेन ॥ अपि नवता किं नूयते
हृदि रोषवशेन ॥ वि० ॥३॥ अनुचितमिह कलह सता ॥ त्यज
समरसमीन ॥ नज विवेककलहसता॥ गुणपरिचयपीन॥वि०॥४॥

अर्थ ॥ माटे जो बीजोकोइ पोताना कर्माधीनपणाथकी ताहराउपर क्रोधकरे छे तो तुंपण तहाराहृदयमां तेनाउपर क्रोध शावास्ते करेछे ॥ ३ ॥ अरेजीवतुं न मतारूप पाणीना तलावनुं मललथइने सत्पुरुषोने अयोग्य एहवुंजे कलह तेनेमू कीआप अनेगुणोनो परिचय करवाने पुष्टकारी एहवोजे विवेकरूप सरोवर तेमा रमण करवाने हंस जेवो था ॥ ४ ॥

शत्रुजनाः सुखिनः समे मत्सरमपहाय ॥ संतु गंतुमनसोप्यमी शिवसौख्यगृहाय॥वि०॥५॥सकृदपि यदि समतालवं हृदयेन लि हंति ॥ विदितरसास्तत इह रतिं स्वत एव वहंति ॥ वि० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हेजीवतुं समस्त शत्रुओकोनी समस्तजीउपर मत्सरताभावनो त्यागकरी ने परमसुखीया अने मोक्षरूप सुखना घरने जाणवाने ताहरुं मनकर ॥ ५ ॥ जोए कवारपण समताना लवनुं ताहरा हृदयमां आस्वादन करीस तो रसज्ञथइने सम्य कउपर पोतानी मेलेज प्रीतिकरीस ॥ ६ ॥

किमुत कुमतमदमूर्छिता दुरितेषु पतंति जिनवचनानि कथं हृदा न रसाउपयंति॥वि०॥७॥ परमात्मनि विमलात्मनां परिणम्य वसं तु ॥विनय समामृतपानतो जनता विलसंतु॥वि०॥८॥इतिश्रीशांत सुधारसगेयकाव्ये मैत्रीभावनाविभावनोनाम त्रयोदशः प्रकाशः

अर्थ ॥ हे जीवतुं शावास्ते कुमतायेंकरी मूर्छितथइने नरकमांपडेछे अने शांत रसथीज भरेला श्रीतीर्थंकरदेवना वचनोनुं केम संरक्षण करतोनथी ॥ ७ ॥ निर्म लअंतःकरणवाला जीवोनामन परमात्माना स्वरूपनेविषेज परिणाम थइ रहो अने लोकोनासमूह ते समतारूपी अमृतना पानेकरी विनयनो विलासपामो॥८॥ इतिश्री शांतसुधारस गेयकाव्ये मैत्रीभावनाविभावनो नाम त्रयोदश प्रकाश

स्रग्धरावृत्तं॥धन्यास्ते वीतरागाः क्षपकपथगतिक्षीणकर्मा परागास्त्रैलोक्ये गंधनागाः सहजसमुदितज्ञानजाग्रद्विरा गाः॥अध्यारुह्यात्मशुध्या सकलशशिकलानिर्मलध्यानधा रामारान्मुक्तेः प्रपन्नाः कृतसुकृतशतोपार्जितार्हन्त्यलक्ष्मीं ॥१॥तेषां कर्मक्षयोत्थैरतनुगुणगणैर्निर्मलात्मस्वभावैर्गायं

गाय पुनीमस्तवनपरिणतेरष्टवर्णास्पदानि ॥धन्या मन्ये र
सज्ञा जगति नवतस्तोत्रवाणीरसज्ञामज्ञा मन्ये तदन्या
वितथजनकथाकार्यमौखर्यमग्ना ॥ ७ ॥ निर्ग्रंथास्तेपि ध
न्या गिरिगहनगुहागव्हरांतर्निविष्टा धर्मध्यानावधाना
समरसमुदिता पक्षमासोपवासा ॥ येन्येपि ज्ञानवंत
श्रुतविततधियो दत्तधर्मोपदेशा शांता दांता जिताक्षा
जगति जिनपते शासनं नासयति ॥ ३ ॥ दानं शील
तपो ये विदधति गृहिणो नावना नावयति धर्मं धन्या
श्चतुर्धा श्रुतसमुपचितश्रद्धया राधयंति ॥ साध्व्य श्राध्य
श्च धन्या श्रुतविदशधिया शीलमुद्भावयत्यस्ता न्सर्वान्
मुक्तगर्वा प्रतिदिनमसकृद्भाग्यनाज स्तुवंति ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवे प्रमोद नावना नावेछे क्षपकश्रेणीना मार्गमा प्रवेशकरवाने रुपमलने जेणे क्षीणकर्युछे अने त्रणलोकमां गधहस्तिसरखा समनावमा रमण करनारा सहजउदयने पामेला केवलज्ञानेकरी जागृतथयुछे वैराग्यजेहनु एहवा श्रीवीतराग एटले तीर्थकरनेधन्यछे केमके जे आत्मशुद्धिकरीने पूर्ण चड्कलास रिखी निर्मल जे ध्यानधारा तद्रूप अनंतपुण्यना समूहेंकरी संपादनकरेली तीर्थ करनीलक्ष्मी तेनु आराधनकरी मुक्तिनेप्राप्तथायछे ॥ १ ॥ श्रीविनयविजयजी उपा ध्यायकहेछे के हु ते तीर्थकरोना कर्मक्षयथकी उत्पन्नथयाजे घणा गुणना समूह तेनी स्तुतिकरवाविषे जेहना परिणामहोयछे एवा आत्माना निर्मलस्वनाव सहित तीर्थंकरनी स्तुति करीकरीने वरणना आवस्थानकोप्रते पवित्रकरुं अने आ जग तमां तीर्थकरोनी स्तुतिना रसने जाणनारी जिव्हाने धन्यमानुं तेविना बीनी निष्फल लोकवार्ता अने कायोना वाचालपणामा वर्त्तनारी जिव्हाने मूर्खतुल्य मानुं ॥ २ ॥ वली पर्वतमा अरण्यमां गुफागुहिरमा निवासकरीने धर्मध्यान पर एकाग्रचित्त राखनारा तथा सम्यक्तरूप रसेकरी संतुष्टथयला वली पक्ष मास विगेरेना उपवास करनारा एहवा जे निग्रंथसाधु तेनेपण धन्यछे तथा वली बी जाजे ज्ञानीपुरुषो शास्त्रउपर पसरेली बुद्धियेकरी धर्मोपदेशआपेछे अने शांतगुण दानगुणी जितेंद्रिय एहवा महापुरुष जे जगतमा प्रवर्त्तावनारा श्री तीर्थंकरना

शासनने प्रकाशितकरेछे तेनेपण धन्यछे ॥ ३ ॥ वलीजे गृहस्थावासमां रह्याथका पण सुपात्रने दानआपेछे शीलपालेछे तपकरेछे भावनाओ भावेछे तथा चारप्रकारें करी धर्मध्यानने आराधेछे अने पुष्टश्रद्धायें शास्त्रनुं आराधन करेछे तेनेपण धन्यछे वलीजे साध्वी तथा श्राविकाओ शास्त्रथकी स्वछथयली बुद्धियें शीलपालेछे तेनेपण धन्यछे एरीतें हे भाग्यवंत भव्यपुरुषो तमे सर्वथा गर्वमूकीने ए पूर्वोक्त समस्त उत्तमपुरुषोनी नित्यप्रतें निरंतर स्तुतिकरो के जेथकी तमारुं कल्याणथाय॥४॥

उपजातिवृत्तं॥ मिथ्यादृशामप्युपकारसारं संतोषसत्यादिगुणप्रसारं ॥ वदान्यतावैनयकप्रकारं मार्गानुसारीत्यनुमोदयामः ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ ए पूर्वोक्त सम्यक् दृष्टी जीवनी स्तुति करवी ते तो श्रेष्ठजछे परंतु अमें मिथ्यादृष्टीनो पण उत्तम उपकार जाणीयेंछैयें कारणके जो तेमनो संतोष सत्यादिक गुणनो प्रसार तथा दातारपणुं अने विनयना प्रकार एटलावाना मार्गानुसारीछे तो एहवोजाणीने तेनीपण अनुमोदना करियेंछे ॥ ५ ॥

स्रग्धरावृत्तं ॥ जिव्हे प्रव्ही भव त्वं सुकृतिसुचरितोच्चारणे सुप्रसन्ना भूयास्तामन्यकीर्तिश्रुतिरसिकतया मेऽद्य कर्णौ सुकर्णौ ॥ वीक्ष्यान्यप्रौढलक्ष्मीं द्रुतमुपचिनुतं लोचने रोचनत्वं संसारेऽस्मिन्नसारे फलमिति भवतां जन्मनो मुख्यमेव ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हेजीवो जो तमे सरलछो अने पुण्यवान पुरुषोना पुण्यनो उच्चार करवाने प्रसन्नछो एटले आज अमारा कान बीजा पुण्यवान पुरुषोनी कीर्त्ति श्रवणना रसिकपणे करी सुकर्णरह्यो अने बीजानी प्रौढ ऐश्वर्यताजोइने अमारी चक्षु प्रकाशपणाने धारणकरो एहवा जो तमारा विचारछे तो आ संसारमा एज तमारा जन्म सफल पणानो मुख्य फलछे ॥ ६ ॥

उपजातिवृत्तं ॥ प्रमोदमासाद्य गुणैः परेषां येषां मतिः सज्जति साम्यसिंधौ ॥ देदीप्यते तेषु मनःप्रसादो गुणास्तथैते विशदीभवंति॥७॥

अर्थ ॥ बीजाना गुणो सांभली संतोषपामिने जेनीबुद्धि समतारसरूप समुद्रमां संलग्नथायछे तेप्राणीना मननो प्रसाद देदीप्यमान थायछे तेमज तेना प्राणीना गुण पण सर्व स्वछ थायछे ॥ ७ ॥

॥ अथ चतुर्दश भावनाष्टक टोडीरागेणगीयते रूपनकीमेरेमनजगति [illegible]

विनय विभावय गुणपरितोषं ॥ ध्रुवपद ॥ निजसुकृता

प्तवरेषु परेषु ॥ परिहर दूर मत्सरदोषं ॥ वि० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हेविनय तु गुणीपुरुषनागुण उपर संतोष करवु मनमाभाव अने पोताना पुन्यप्राप्तिनाअवसरते बीजाउपर मत्सरकरवापणाना दोषने दूरकर ॥ १ ॥

दिष्ट्याय वितरति बहुदान वरमयमिह लभते बहुमान ॥ किमिति

न विमृशसि परपरभाग ॥ यदिभजसि तत्सुकृतविभाग वि०॥ २॥

अर्थ ॥ अमुक मनुष्य अत्यंत दानआपेछे एबहु कल्याणकारक [illegible] वा अमुकपुरुष अमुकस्थानके बहुमानपामेछे एपणघणुजरूरुछे एहवो [illegible] हुं तेमरत्नोनथी तेणेतेकाणे लोकोना गुणोत्कर्ष करवा एहिज सुकृत [illegible]

येषा मन इह विगतविकार ॥ ये विदधति भुवि जगदुपकार॥

तेषा वयमुचिताचरिताना ॥ नाम जपामो वारवार ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ आ जगतमा जेना मननेविषे कोइप्रकारनो विकारनथी एटले [illegible] [illegible] पृथ्वीनेविषे लोकोनो उपकारकरेछे एहवा पवित्र सदाचारी पुरुषोना [illegible] वारंवार जपियेछैये ॥ ३ ॥

अहह तितिक्षागुणमसमानं ॥ पश्यत भगवति मुक्तिनिदान॥ येन

रुषा सह लसदभिमानं ॥ झटिति विघटते कर्मवितान ॥वि० ॥४॥

अर्थ ॥ जेनीबराबरी करवाने काइ समर्थनथी एहवो मुक्तिनु कारणजे क्षमा गुण ते श्रीतीर्थंकरदेव नाविषे जुओ के जेणेकरी क्रोधसहित अभिमानेकरी शानना [illegible] कर्मनो समूह ते तुरत नाशपामेछे ॥ ४ ॥

अदधु केचन शीलमुदार ॥ गृहिणोपि परिहृतपरदार ॥ यश इह

सप्रत्यपि शुचि तेषा ॥ विलसति फलिताफलसहकार ॥ वि०॥५॥

अर्थ ॥ केटलाएक पुरुषोनु [illegible] महोटु शील [illegible] ते [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] जेम [illegible] आंबाना वृक्षसरिखाछे ॥ ५ ॥

या वनिता अपि यशसा साकं कुलयुगलं विदधति सुपताक ॥

तासा सुचरितसंचितराक ॥ दर्शनमपि कृतसुकृतविपाक। वि०॥६॥

अर्थ ॥ [illegible] जे स्त्रीओ पोताना शील पालीने पोताना मातृ तथा सासरा पक्ष बे

लोने यशनी सुपताकके० ध्वजाकरेछे एवीस्त्रीओनो पुण्य परिपाके करी प्राप्तथ येलुं जंदर्शन ते पण पुण्यरुप धनपुंज संपादकछे ॥ ६ ॥

तात्विकसात्विकसुजनवतंसाः ॥ केचन युक्तिविवेचनहंसाः ॥ अलम कृपत किल भुवनाभोगं ॥ स्मरणमनीषां कृतशुभयोगं ॥वि०॥ ७ ॥

अर्थ ॥ खरेखरा सत्वगुणने धारणकरनारा सज्जनलोकोना मस्तकना भूषणस मान अने जेम हंस दूध तथापाणीनो विवेचनकरेछे तेनीपरें युक्तियेंकरी विवेचन नाकरनारा एहवा जे सर्वोत्कृष्टप्राणीछे ते आ त्रणेभुवनने शोभायमान करवाने तत्परछे तो तेवापुरुषोनुं स्मरणकरवुं ते पण शुभयोगनो करनारथाय ॥ ७ ॥

इति परगुणपरिभावनसारं ॥ सफलय सततं निजमवतारं ॥ कुरु सुविहितगुणनिधिगुणगानं॥विरचय शांतसुधारसपानं॥वि०॥८॥ इति श्री शांतसुधारसगेयकाव्ये प्रमोदभावनाविभावनोनामचतुर्दशः प्रकाशः

अर्थ ॥ हे आत्मा एपूर्वोक्तरीतें परनागुणनो विचार करवुं एहिज जेमां सार छे एवुं आ तहारो पोतानो अवतार तेने तुं निरंतर परनागुणो स्मरणकरीने सफ लकर तथा शुद्धगुणोना निधि एहवाजे मनुष्यो तेना गुणोनुं गायनकर अने शां तसुधारसनुं पानकर ॥ ८ ॥ इतिश्री शांतसुधारसगेयकाव्ये प्रमोदभावना वि भावनो नाम चतुर्दशः प्रकाशः ॥

मालिनीवृत्तं॥ प्रथममशनपानप्राप्तिवांछाविहस्ता स्तदनु वस नवेश्मालंकृतिव्यग्रचित्ताः ॥ परिणयनमपत्यावाप्तिमिष्टेंद्रि यार्थान्सततमभिलपतः स्वस्थतां क्वास्नुवीरन् ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हवे कारुण्यभावना भावेछे प्रथमतो अशनपान प्राप्तिकरवानी इछा यें व्याकुलथयला तदनंतर वस्त्र घर अलंकार इत्यादिकोनी प्राप्ति करवाने विषे जे मनुचित्त व्यग्रथयुंछे तेवारपछि लग्नकरवानी इछा तेपछि पुत्रपुत्री प्राप्त करवानी इछा अने इंद्रियार्थजे पांचइंद्रियोना त्रेवीस विषयोतेप्रतें इछनार एहवाजे संसार वासी जीवो तेकेवीरीतें स्वस्थ थाय ॥ १ ॥

शिखरिणीवृत्तं ॥ उपायानां लक्षैः कथमपि समासाद्य विभवं भवा भ्यासात्तत्र ध्रुवमिति निबध्नाति हृदयं॥ अथाकस्मादस्मिन्विकिर ति रजः क्रुरहृदयो रिपु र्वा रोगो वा भयमुत जरा मृत्युरथवा॥२॥

अर्थ ॥ हे प्राणी तुश्रा जगतमां लक्षावधि उपायोकरीने कोइपणरीतें
ता मेजरी जन्मोजन्मना अभ्यासेकरी तेहनाउपरज मनने स्थिर राखेले
उपग्तो एथीअनतर जे अकस्मातिक क्रूर हृदयवत शत्रु किंवा रोगप्राप्ति नय
अथवा मृत्यु एटलावाना धुलनाखेछे ॥ १ ॥

स्रग्धरावृत्त ॥ स्पर्धंते केपि केचिद्दधति हृदि मिथो मत्सर
क्रो धदग्धा युध्यते केरुप्यश्च धनयुवतिपशुक्षेत्रपद्मादिहेतो ॥
केचिल्लोभाल्लभते विपदमनुपद दूरदेशानटत ॥ किं कुर्म
किं वदामो भृशमरतिशतैर्व्याकुल विश्वमेतत् ॥ २ ॥

अर्थ ॥ कोइ क्रोधेकरी दग्धथयाथका द्वेषकरेछे कोइ परस्पर हृदयमां
धरने घटनाक कोइना रुप्यानठता स्वठदपणे द्रव्य स्त्री पशु खेत्र गाम इत्यादि
नामे लडने वली कोइक लोभेकरी विपत्तिये जोगित थयाथका दूर देशांतरोमां
र्भमरीने व्याकुळथायछे तो हवे सु करिये अने सु बोलिये आ जगत तो
शेकडा ग मरी व्याकुलछे ॥ २ ॥

उपजातिवृत्तत्रय ॥ स्वय रवनत स्वकरेण गर्तान्मध्ये स्वय तत्र य
था पतति ॥ तथा ततो निष्क्रमण तु दूरे ऽधोऽध प्रपाताद्विरमंति
नैव ॥ ४ ॥ प्रकल्पयन्नास्तिकतादिवादमिट प्रमाद परिशीलयत
॥ मग्ना निगोदादिषु दोषदग्धा दुरतदुःखानि दृढा सहते ॥ ५ ॥
शृण्वंति ये नैव जिनोपदेश न धर्मलेश मनसा स्पृशति ॥ रुज
स्यकथमथापनेयास्तेषामुपायस्त्वयमेक एव ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ प्राणीयात पोतानेहाथे खाडोग्वोदीने तेमां पोतेज पडनर फरीने
अगाप तेमाथी नीकलवुना दूरस्सु परतु उलटा नीचनीच जइपडेछे तेदुं ॥
अगन्त आवनार नथी एटला नडोखाडा खावछे ॥ ४ ॥ जे नास्तिकादिक
वाद प्रमादनो अभ्यासकरनार दोषेकरी दग्धथयीने निगोदादिकमां बुडी
जइ तेनाअत पामुनमालो एहवा महा क्लेशकारी दुःखोने सामेछे ता
अनत केटली दीवनोलेनेले ॥ ५ ॥ जेप्राणीजिनोपदेश सांनळतानथी अने
उपदेने ना मनेकरीथया स्पर्शी करतांनथी तेप्राणीना दुःखो रीतीने दूरकरीये
आ एकज उपायछे तेअरगतना ? नोकमां कहेछे ॥ ६ ॥

अनुष्टुब्वृत्तं ॥ परदुःखप्रतीकारमेवं ध्यायंति ये हृदि ॥
लभंते निर्विकारं ते सुखमायतिसुंदरं ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ जेप्राणी पूर्वोक्तप्रकारे बीजाना दुःखोनो प्रतीकार हृदयमां धरेछे तेएे करी जेना परिणाम सुंदरथायछे तेने निर्विकारी सुख प्राप्तथाय ॥ ७ ॥

॥ पंचदशन्नावनाष्टकं रामकुलीरागेण गीयते ॥ हमारो अंबरदेहुमुरारी एदेशी ॥

सुजना ज्जजत मुदा ज्जगवंतं सुजनाज्जजत मुदा ज्जगवंतं ॥ ध्रुवपदं ॥
शरणागतजनमिह निष्कारणकरुणावंतमवंतंरे ॥ सुज० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हेसज्जनो आ जगतमां कारणविना दयाना पालनारा अने जे पोताने शरणे आव्यो तेनीरक्षाना करनारा जे ज्जगवंतछे तेने तुमे हर्षेकरी ज्जजो ॥ १ ॥

क्षणमुपधाय मनः स्थिरतायां पिबत जिनागमसारं ॥ का
पथघटनाविकृतविचारं त्यजत कृतांतमसारं रे ॥ सुज० ॥२॥

अर्थ ॥ एकक्षणमात्र पोतानो मनस्थिरकरी जैनागमना सारनुं पानकरो अने जे स्त्योमा कुत्सित मार्गनी घटनायें करी आपणो विवेक विकारवंत थायछे एवा असार निंदनिक कृत्यनो त्यागकरो ॥ २ ॥

परिहरणीयो गुरुरविवेकी भ्रमयति यो मतिमंदं ॥ सुगुरुवचः
सकृदपि परिपीतं प्रथयति परमानंदं रे ॥ सुज० ॥ ३ ॥

अर्थ॥अविचारितगुरुनो संगमूको केमके जे गुरुओ मंदबुद्धिवंत पुरुषोने ज्रांति सहित करेछे अने सुगुरुना वचनो जो एक वखत सांज्जल्या तोपणपरमानंद उत्पन्नकरेछे ३

कुमततमोज्जरमीलितनयनं किमु पृच्छत पंथानं ॥ दधिबुध्या
नर जलमंथन्यां किमु निदधत मंथानं रे ॥ सुज० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ कुमतरुपी अंधारेकरी जेनी आंखोढकाइ गयलीछे तेवाप्राणीने मोक्ष मार्गनो रस्तोसुं पूछवुं हेलोको तमे दहीनी बुद्धियें पाणीनेविषे मथनिकाने केम नाखोछो केमके ए पाणीमांथी कांइ माखण निकलवानुं नथी ॥ ४ ॥

अनिरुद्धं मन एव जनानां ॥ जनयति विविधातंकं ॥ सप
दि सुखानि तदेव विधत्ते ॥ आत्माराममशंकं रे ॥ सुज०॥५॥

अर्थ ॥ पोतानुंमन पोताने स्वाधीन न राख्यो छता तेहिज पोताने नानाप्रकार

नाइ ग्यो उत्पन्नकरेछे अने तेहिज मनपोताने स्वाधीन राख्योछता निराकुलपणे त्रिविध प्रकारना सुखआपेछे ॥ ५ ॥

परिहरताश्रवविकथागौरव मदनमनादिवयस्य ॥ क्रियतां
सांवरसाप्तपदीनं ॥ ध्रुवमिदमेव रहस्यम् रे ॥ सुज० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हे सज्जनो तमे आश्रव अने विकथानुजे गारवपणु तथा अनादि मित्रजे कामदेव तेनी साथे मित्रतानो त्याग नाम करीने संवररूप सप्तपदीनं निज एक गुन तत्वछे ॥ ६ ॥

महयत हृदि किं नवकातारे ॥ गदनिकुरम्बमपारं ॥ अनुस
रताहितजगदुपकारं जिनपतिमगदकारं रे ॥ सुज० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ हेजीवो आ संसाररूप अरण्यमां रागद्वेषादिक अपाररोगना समूहने तेनो त्यागकरीने जगतना उपकार करनार अने संसारीजीवोने छर मद मत्सर इत्यादिक रोगोनो निवारणकरी निरोगताना आपनार एहवा तीर्थंकरदेवरूप आरयनी सेवनाकरु ॥ ७ ॥

शृणुतैकं विनयोदितवचनं नियतायतिहितरचनं ॥ रचयत सुकृत
सुखशतसंधानं शांतसुधारसपानं रे ॥सुज०॥८॥ इति श्रीशांतसु
धारसगेयकाव्ये कारुण्यभावनाविचारनो नाम पंचदश प्रकाश ॥

अर्थ ॥ माटेह भव्यो विनयविजयजीना कहेला अथवा विनयकरीने आ प्रथमांहेना वाक्या तेन एक नियम करी एटले तदाकार वृत्तिय करी ग्रहण ध्यानगर्भीत मांनना ए रचना सांनताथी उत्तरकालनी प्रातियताना कारनं हित रचनना करनारछे एहवुनामीने ए वाक्या ते एकनियमथी सांनना ॥८॥ इति श्रीशांतसुधारस गेयकाव्ये कारुण्यभावनाविचारना नाम पंचदश प्रकाश ॥

पचापि ग्रान्तिनीकृतानि॥श्रान्ता यस्मिन् विश्रमं संश्रयन्ते रुग्णाः प्री
तिं यत्समासाद्य सद्यः ॥ लभ्यं रागद्वेषविद्वेषिरोधादौदासीन्यं सर्व
दा तत्प्रियं नः ॥१॥ लोके लोका भिन्नभिन्नस्वरूपा भिन्नैर्भिन्नैः कर्म
भिर्मर्मभिद्भिः । रम्यारम्यैश्चेष्टितैः कस्य कस्य तद्विद्वद्भिः स्तूयते रुष्यते
वा ॥ २ ॥ मिथ्याशंसन्वीरतीर्थेश्वरेण रोद्धुं शेके न स्वशिष्यो जमा
लिः ॥ अन्यः को वा रोत्स्यते केन पापात्तस्मादौदासीन्यमेवात्मनीनम्

नं ॥ ३ ॥ अर्हंतोपि प्राज्यशक्तिस्पृशः किं धर्मोद्योगं कारयेयुः प्र
सह्य ॥ दद्युः शुद्धं कितु धर्मोपदेशं यत्कुर्वाणा दुस्तरं निस्तरंति॥४
तस्मादौदासीन्यपीयूषसारं वारंवारं हंत संतो लिहंतु ॥ आनंदा
नामुत्तरंगत्तरंगैर्जीवद्भिर्यद्भुज्यते मुक्तिसौख्यं ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवे सोलमी माध्यस्थ भावना भावेछे जेमकोइप्राणीने थाकचडेलो होयने प्राणी विश्रांतिनास्थानकें विश्रांतिलेछे तेमज उदासीनता जेछेते संसार रुप अरण्यमां भ्रमणकरनारा प्राणीने विश्रांतिलेवानुं स्थानकछे अने जेनेजोइ गंगीपुरुष तत्काल प्रीतिवंतथायछे एटले गमेतेवा रोगेकरी पीडितहोय तथापि जेने उदासीनता पणुं प्राप्तथयु तो तेने ते रोगनी व्याधि कांइपण जाणवामां न आवता वलटो हर्षवधेछे वली जेनीप्राप्ति राग अने द्वेषरुप शत्रुनो रोधकरवाथी थायछे एहवीज उदासीनता ते अमोने सर्वकाल प्रियछे ॥ १ ॥ आजगतमांना लोको अंतरना आशयेकरी मर्मनाजेदे भिन्नभिन्न कर्मेकरी अने रम्यारम्य व्यापारेकरी भिन्नभिन्न स्वरूपवतछे पण वधाप्राणीनी एकप्रकृति तो नथीज तिवारे हवे विद्वानपुरुषे केनीकेनी रम्यारम्य चेष्टा उपर संतुष्टथावुं किंवा रुष्टथावुं अर्थात् विद्वान पुरुषेतो सर्वप्राणी उपर संतुष्ट अथवा रुष्टनथता समदृष्टीज राखवी भलीछे ॥ २ ॥ जुओकेश्री वीरभगवान पोते तीर्थंकर छता मिथ्यासहित बोलनारो पोतानो शिष्य जमाली तेने रुधीशक्यानही तो वीजो कोण कोइने पण पाप थकी रुंधीराखनारछे माटे उदासीनपणुं राखवुंतेहीज आत्मानुं हितकारीछे एम जाणवुं ॥ ३ ॥ जुओके श्रीतीर्थंकरदेव अत्यंत शक्तिना धरनारहता तथापिते कोइने वलात्कारेकरी धर्मोद्योग करवाने प्रवर्तावताहता केसुं ते तो जेणेकरी भव्यपुरुषो दुस्तर संसार समुद्रमांथी तरी पारपामे एहवो केवल शुद्धधर्मनोज उपदेश मात्र आपताहता ॥ ४ ॥ तेकारणे हेसत्पुरुषो तमेवारवार हर्षसहित औदासीन्यतारुप सारभूत अमृतनो आस्वादनकरो के जेथकी जीव आनंदना वहेनारा मोजायेंकरी सहित मोक्षसुख भोगवे ॥ ५ ॥

॥ षोडशभावनाष्टकं प्रभातिरागेण गीयते ॥ आदरजीवक्षमागुणआदर ॥ एदेशी

अनुभव विनय सदासुखमनुभव ॥ औदासीन्यमुदारं रे ॥ कु
शलसमागममागमसारं ॥ कामितफलमंदारं रे ॥ अनु० ॥ १ ॥

परिहर परचिंतापरिवारं ॥ चिंतय निजमविकारं रे ॥ वदति को
पि चिनोति करीर ॥ चिनुतेऽन्य सहकार रे ॥ अनु० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ वली विशेषप्रकार माध्यस्थपणु जावेछे हे विनयतु सर्वकान
अनुजवकर जेम वांछित पदार्थो आपवामा कल्पवृक्षमुख्यछे तेम वांछित
रनी पमाडनारी अने सर्वशास्त्रोमा महोटी सारजूत एहवीजे उदासीनता
तुंसेवनकर ॥ १ ॥ अरेजीव तु बीजा विकारीपदार्थोनी चिंतवनानो
तादृश परिवार तेनोत्यागकर अने पोताना अविकारि स्वरूपनु चिंतनकर ॥ २

योपि न सहते हितमुपदेश ॥ तदुपरि माकुरु कोप रे ॥ निष्फ
लया कि परजनतस्या ॥ कुरुषे निजसुखलोप रे ॥ अनु० ३ ॥ सूत्र
मपास्य जडा जापते ॥ केचन मतमुत्सूत्र रे ॥ किंकुर्मस्ते प
रिहतपयसो यदि पीयते मूत्र रे ॥ अनु० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ जाकोइ हितकारी उपदेश सांजलतो नथी तोपण तेना
उपरथी निष्फल लोकोउपर संतापकरी पोताना सुखनो लोपकांकरेछे ॥ ३ ॥
नार मूर्ख सूत्र त्यजीने बोनेने केटलाक उत्सूत्र जाषणकरेछे एवी
जाणी ज्ञानिओ प्राणीने मूत्री जयुनीतनुं पान करवालागा तातेने अमेछुकरिये ॥ ४

पश्यसि कि न मन परिणाम निजनिजगत्यनुसार रे ॥ येन
जनेन यथा जवितव्य तदजवता दुर्वार रे ॥ अनु० ॥ ५ ॥
रमय हृदा हृदयगमसमता ॥ संवृणु मायाजाल रे ॥ वृथा
वहसि पुजलपरवशतामायु परिमितकाल रे ॥ अनु० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हेजीव पोतपोतानी गत्यनुसार सर्वजीवोनामनना परिणाम थायछे
ते तेत केम जाणतानथी हमर जेप्राणीने जेवी जवितव्यताछे तना मनना परिणा
म तेहवाछे ते तेहनागथी दुर्वारछे एटले तहागथी टालीशकाय तमनथी ॥ ५ ॥
माटे हृदयने आनंद आपनारीजीने समतातेने मनमां धारणकरी आनंदनेमा
अने मायाजालनो त्यागकर अने पुजलने परवश शांयायद हमर तहागथोआयु
परिमितकालनु एटले प्रमाणसहितछ तेनेवृथा गमावेछे ॥ ६ ॥

अनुसमर्ने यदि हृद हमर चेतनमनस्थिनमजिगमरे ॥ चिरजीव विश
दविचारम ॥ तनमे सुखमविगम रे ॥ अनु० ॥ ७ ॥ परजवपरि

णामनिदानं ॥ स्फुटकेवलविज्ञानं रे ॥ विरचय विनय विवेचित ज्ञानं ॥ शांतसुधारसपानं रे ॥ अनु० ॥८॥ इतिश्री शांतसुधारस गेयकाव्ये माध्यस्थ्यभावनाविभावनो नाम षोडशः प्रकाशः ॥

अर्थ ॥ हे भव्यो तमे मनमां रहेनारुं आनंदनुं कारण एहवुं अनोपम उदासीनपणारूप तीर्थनुं स्मरणकरो अने जे कोइकालेंपण विराम पामतानथी एहवा मोक्षसुखपामि चिरकाल स्वच्छपरिणामेरहो ॥ ७ ॥ अने परब्रह्मतारूप परिणामोनुं जे निदान तद्रूप विज्ञानने जे प्रगटकरेछे एहवुं विवेचननुंकरनारुंजेमां ज्ञान छे एहवा शांतसुधारसनुं पान ते हे विनयतुं निरंतरकर ॥ ८ ॥ इति श्रीशांतसुधारस गेयकाव्येमाध्यस्थ्यभावना विभावनोनाम षोडशः प्रकाशः ॥

स्रग्धरावृत्तद्वयं ॥ एवं सद्भावनाभिः सुरभितहृदयाः संशयातीतगीतोन्नीनस्फीतात्मतत्वास्त्वरितमपसरन्मोहनिद्राममत्वाः ॥ गत्वा सत्वा ममत्वातिशयमनुपमां चक्रिशक्राधिकानां सौख्यानां मंक्षु लक्ष्मीं परिचितविनयाः स्फारकीर्तिं श्रयंते ॥ १ ॥ दुर्ध्यानप्रेतपीडा प्रभवति न मनाक् काचिदद्वंद्वसौख्यस्फातिः प्रीणाति चित्तं प्रसरति परितः सौख्यसौहित्यसिंधुः ॥ क्षीयंते रागरोषप्रभृतिरिपुभटाः सिद्धिसाम्राज्यलक्ष्मीः स्याद्वश्या यन्महिम्ना विनयशुचिधियो भावनास्ताः श्रयध्वं ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवे श्रीविनयविजयजी उपाध्याय आग्रंथ समाप्तकरीने उपदेशरूप पोताना अभिप्रायनुं कथनकरेछे. आवीरीतें पूर्वोक्तप्रकारें सद्भावनाओनी सुगंधियें जेनाहृदयमां संशयरहित गायनकरवाथी तार्किककर्युंछे स्पष्ट आत्मतत्वजेणें अने जेना मोह निद्रा अने ममत्व तुरत नाशपाम्या छे एवाप्राणी ममतानुं अतिशयपणुं मूकीने चक्रवर्ति तथा इंद्रादिकोनासुखोथकी पण अधिक एवा विनयवंतनाम अनुपम सुखोनी पुष्कळ कीर्तिवंत लक्ष्मीने पामेछे ॥ १ ॥ जेहना महिमायेंकरी दुर्ध्यानरूप प्रेतनीपीडा लगारमात्रपण थातीनथी पण कोइएक अपूर्व अद्वंद्व नामनी वृद्धिथायछे अने चित्तप्रीतिवंतथायछे अने आत्माने चारे बाजुथी सौख्य तृप्तिनी नदीपसरेछे वळी रागद्वेषरूपशत्रु क्षीणथइजायछे सिद्धिरूप साम्राज्यनी

वशथायछे एहवीजे भावनाओ तेने हे भव्य लोको तमारी विनयेंकरी स्थिरछता ते भावनाओनु आश्रयकरो ॥ २ ॥

पथ्यावृत्तं ॥ श्रीहीरविजयसूरीश्वरशिष्यौ सोदरावभूतां द्वौ ॥ श्रीसोमविजयवाचकवाचकवरकीर्तिविजयाख्यौ॥३॥

अर्थ ॥ श्रीहीरविजय सूरीश्वरना शिष्यबेनाऽहता तेमा एक स क अने बीजा कीर्त्तिविजयवाचक ॥ ३ ॥

गीतिद्वयं ॥ तत्र च कीर्तिविजयवाचकशिष्योपाध्यायविनय विजयेन॥शांतसुधारसनामा सदृष्टो भावनाप्रबोधो ऽयं॥४ शिखिनयनसिंधुशशिमितवर्षे हर्षेण गंधपुरनगरे ॥ श्री विजयप्रभसूरिप्रसादतो यत्न एष सफलो ऽभूत् ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ तेमा कीर्त्तिविजय वाचकना शिष्य श्रीविनयविजयजी . । शांतसुधारस नामा भावनानो प्रबोधकर्यो ॥ ४ ॥ आ प्रयत्न संवत त्रेवीसना वर्ष श्रीगांधार नगरमा श्रीविजयप्रभसूरिना प्रसादथकी हर्षेसं सफलथयु ॥ ५ ॥

उपजातिवृत्त ॥ यथा विधु षोडशभि कलाभि संपूर्णतामेत्य जग त्पुनीते॥ग्रंथस्तथा षोडशभि प्रकाशैरयं समग्रै शिवमातनोतु॥६

अर्थ ॥ जेम चंद्रमा सोलेकलाये पूर्णतापामी जगतने पवित्रकरेछे तेम ग्रथपण सोलकलारूप सोलप्रकाशेकरी जगतनु . . . .

इंद्रवज्रावृत्त ॥ यावज्जगत्येष सहस्रभानु पीयूषभानुश्च सदोदये ते ॥ तावत्सतामेतदपि प्रमोद ज्योति स्फुरद्वाङ्मयमातनोतु॥७॥

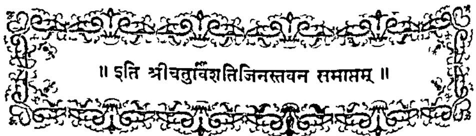
अर्थ ॥ जेकाळपर्यंत जगतमा चंद्रसूर्य उगेछे तिहांसुधी जेमांप्रकाशमान वा णी मयरूप ज्योतिछे एहवो आ शास्त्र ते सत्पुरुषोने आनंद आपो ॥ ७ ॥

इति श्रीमन्महोपाध्याय श्री कीर्त्तिविजयगणिशिष्योपाध्याय श्री विनयविजयगणिविरचिते शांतसुधारसग्रंथे षोडश प्रकाशोऽर्थस हित समाप्तिमगमत्

॥ अथ श्रीजिनप्रभसूरिकृतचतुर्विंशतिजिनस्तवनं ॥

पात्वादिदेवो दशकल्पवृक्षा यस्मादधीन्येप्सितदानविद्याम् ॥ अपूपुजन् यच्चरणौ नगान्निर्व्याजेन नूनं नवपल्लवैः स्वैः ॥ १ ॥ गत्वा विजित्य द्विरदं स्वसेवां चिन्ह च्छलाद्यद्यचीकरच्च ॥ यस्योदये हव्यभुजा नृणां वो बभूव भूमा भुवि सोऽजि तोऽव्यात् ॥ २ ॥ मुदः स दिश्याद्भवसंभवं वः श्रीसंभवो यस्य पितुर्जितारेः ॥ राजाधिराजत्वजुषोपि सेनापतित्वमेवाभिमतं बताभूत् ॥ ३ ॥ जातोपि य संवरतः स्वयं यदजीजनत् संवरमद्भुतं तत् ॥ स फीशकेतुर्जितमीनकेतुर्जितोऽभिनंदनादभिनं दनो वः ॥ ४ ॥ सुभ्रूर्जितं मेघभवस्य यस्य मुक्ताफलस्येव न दर्शनं कैः ॥ चंद्राव दात सुमतिं तमार्याः सर्वश्रियामाश्रयमाश्रयध्वं ॥ ५ ॥ न चेजिवान् वक्रगतिं कदाचित् नचातिचारं स्वतनुं च सौम्य ॥ पद्मप्रभः शोणतनुप्रभोपि नव्यश्रिये कोपि धरांगजन्मा ॥ ६ ॥ पृथ्व्यां प्रसूतः सुमनोभिरर्च्यः सुपर्णकांतिर्बहुकल्युपास्यः ॥ श्रेयःफलश्रीर्जयतादुदग्रस्कंधः सुपार्श्वद्रुरपास्ततापः ॥ ७ ॥ चंद्रप्रभोऽव्यात् वपुरं शुजालैराश्लिगितांगीजनता यदीयैः ॥ प्रसेननिर्वाणरमाविमुक्तकटाक्षलक्षस्नपितेव भाति ॥ ८ ॥ भावास्त्वे पुष्पशरं विजित्य नज्यध्वज यो मकर गृहीत्वा ॥ आरोप यत्क्रमपद्मे ध्रुवं स स्वभूत्यतां मे सुविधिर्विधेयात् ॥ ९ ॥ पित्रंगदाहप्रशमेन भाव दाहप्रमाथेपि खलु स्वशक्ति ॥ अजिज्ञपद्गर्भगतोपि विज्ञान् यस्तं स्तुम शीतलमव शीतं ॥ १० ॥ श्रेयान् श्रिये दोहदि मातुरुच्चात् गर्भस्थिते यत्र महार्हतल्पात् ॥ उच्यतगीशाक् प्रणनाशमोहराजाय पूत्कर्तुमिवाहितोऽस्थ ॥ ११ ॥ भव्यांगिनां यस्य रुचिप्रपंचैरंगानि चेतांसि च रंजितानि ॥ स वासुपूज्यो जगदेकपूज्य संपूज्यतां निर्जितदुर्जयारिः ॥ १२ ॥ क्रमाभ्ररं धर्तुमशिक्षिताकलजेन सेवां प्रतिपद्य यस्मात् ॥ धत्ते ततस्तं स किलादिकोलः कांपिल्यजन्मा विमलः स जीयात् ॥ १३ ॥ अनंत जिन्नंतुरनंतसौख्यप्रदोऽस्तु दोस्तम्भितवैरिवारः ॥ यल्लाछनं श्येनमपि प्रदश्य विश्व स्य नश्यंत्यघ वर्तिकौघाः ॥ १४ ॥ पापाद्भिभि द्वज्रमुदीक्ष्य दीप्रं यल्लक्षणं भक्तिचिकीरु पेतः ॥ तद्भंशशंकी मुहुरालुलोके शक्रः स्वपाणिं स धिनोतु धर्मः ॥ १५ ॥ अरातिरभ्ये प्यनरातिरभ्ये सन्नाभियोगेऽपि दृढाभियोगे ॥ चक्रे स्थिता यस्य सुखं जयश्री स पातु वः पंचमचक्रवर्ती ॥ १६ ॥ छागं ध्वजं यस्य तनौ विलोक्य तत्प्रेमतो हव्यभुजा ध्रुवं यः ॥ सर्वांगमाश्लिगिसुवर्णवर्णभाः सुपूरदंभात्स मुदेऽस्तु कुंथुः ॥ १७ ॥ सुदर्शना

ज्ञात इति प्रसह्य ठेद व्यधाद्यस्तमस स्ववृत्ते ॥ पितु क्रम पालयितु
स्तान्न कलार्सांप्टवरुक्ज्ञिनोर ॥ १७ ॥ यस्य प्रिया नो निहितारिलोपामुश
द्यो न पपौ नदीन ॥ निस्तारकात्मा नयमालयस्यो नव्य श्रिये कुनन्व स
॥ १९ ॥ यस्यागरोचि पटल समताल्प्रसृत्वर नृगकुञ्जानिराम ॥
वास साक्षाज्ञावह्निषा नदतु सुव्रतोऽर्सा ॥ २० ॥ यल्लोचनस्पर्द्धिविर्भोविदिला
सापराधं जगदेकनाथ ॥ यो लक्ष्मलक्ष्याह्वरण श्रितो ड्राक् नीलोत्पलेनास्तु
स नूत्यै ॥ २१ ॥ यच्चक्रयोगात्सुजग विदन् स्व महाशयोत्पन्नतया कृतज्ञ ॥
धुरन्धांकमिपात्सिषेवे तं नेमिमध्येमि षड्प्रकाड ॥ २२ ॥ यदेहदीप्ति तु
प्रजा चिर चारुनिनालयत ॥ नैर्मल्यकोटि घटयति दृष्टे शिष्टा ह्यनिष्ट स
पार्श्व ॥ २३ ॥ प्राच्य विमोच्यास्पदमुद्भवात्प्राक् स्थानातरे रोपितवान्
प्राचीकृतत्सद्गुणशाजिनूर्यं यस्याघमम्यान्नमतां स वीर ॥ २४ ॥ जयंति
जन्मदीक्षा ज्ञानापवर्गोत्सववासराणि ॥ जैनानि नाकायितनूतलानि
लोकप्रमदप्रदानि ॥२५॥ यदाप्लुवान्न शिरसाऽभिवद्य सुमेरुरक्षाऽजनि गोत्रमुख्य
तीर्थाधिनाथा प्रथयतु सेवाहेवाकिना ते कुपथप्रमाथ ॥ २६ ॥ कुवा
हातराम्र प्रयोगधूकालिरल निरेतु ॥ यस्मिंस्तपत्यस्ततम समूहे श्रीवीर
स जीयात् ॥ २७ ॥ व्यामोहनृपालवर विजित्य तस्माद्रुपात्त तु सितातपत्र
स्या करे राजति पुण्डरीक सा भारती यच्छतु वाञ्छितं व ॥ २८ ॥ इति
रिनिरीडिता जिनवराश्चतुरुत्तरविशति ॥ भरतवर्षभवा भुवनेश्वरा स्वरत
स्व वितरतु न ॥ २९ ॥ इति श्रीचतुर्विंशतिजिनस्तवन समाप्तम् ॥



॥ श्री वीतरागायनमः ॥

॥ अथ श्री आस्तिक तथा नास्तिकनो संवाद प्रारंभ ॥

१ नास्तिकः—आ जगत अने तेमांना पदार्थो सर्व शून्यछे; एने ससलानां शीगडां, आकाशनां फूल तथा वांजणीना पुत्र वगैरे जे पदार्थोनी त्रणे कालमां सिद्धता थती नथी, तेवा पदार्थोनी उपमा देवाय. कदाच तमे कहेशो के, जेम शशशृंगादिक देखातां नथी, तेम ए पदार्थो पण देखाया न जोइये, तेम तो नथी. जगततो प्रत्यक्ष देखायछे, तेने ए उपमा केम देवाय; प्रत्यक्ष प्रमाणवडे सिद्ध पदार्थने शून्य केम कहेवाय? एनो उत्तर ए के, जे ए पदार्थोने देखे छे, ते भ्रमिष्ट छे. जे पुरुषने भ्रम थयो होय, तेने एकनुं बीजुं भासे, तेम तमने पण थयुं कहेवाशे. तमे ए दृष्टांतोनो मर्म समजी शकता नथी, त्यारे तमारा ध्यानमां सहेज आवे एवो बीजो दृष्टांत कहुं छुं ते सांभलो; आ जगत स्वप्नसमान छे. जेम स्वप्न असत्य छे, तेम जगत पण असत्य छे. अने स्वप्नना पदार्थोनी पठे आ जगतना पदार्थो पण असत्य छे. जे देखाय छे ते स्वप्ननी पठे भ्रम मात्र छे; एमां संशय नथी

आस्तिकः—अरे नास्तिक, हुं तने एटलुंज पुछुं छुं के तारा सिद्धांतनो कहेनार जीव छे के अजीव छे, एनो उत्तर ताराथी शुं देवाशे? जीव अथवा अजीव कह्याविना चालशेज नही जो तु कहीश के ते भ्रमरूप छे, तो ते एक रीते व्यवहार दृष्टीए योग्य कहेवाशे खरुं, केम के जे पोते भ्रमरूप होय तेने वधुं भ्रमरूप भासे. जो एम होय तो अमारो कांई वांधो नथी; पण जो तारो सिद्धांती भ्रमरूप ठरशे नही, तो जेवो ठरशे तेवा बीजा पदार्थो पण कबूल करवा पडशे; अने कबूल कर्याविना चालनार नथी, केम के, बीजुं वधुं भ्रमरूप होय अने तारो सिद्धांतीज मात्र अभ्रम होय एम संभवे नही. त्यारे एक सिद्धांती ने एक सिद्धांत ए बे पदार्थ मानवा जोइये छे. ए बे पदार्थ जो तु माने, तो जीव अने अजीवपणुं सिद्ध थाय छे के नही! एवी रीते जगतमां पण घटपटादिक जे वस्तु छे ते वस्तुज छे अवस्तु नथी. तेमज घट ते घट छे, ने पट ते पट छे. घट पट नथी. ने पट घट नथी एक पदार्थमां बीजा पदार्थनो अभाव होय छे. पण घट घटपणे भावरूपे छे, ने पट पटपणे भावरूपे छे. इत्यादिक सर्व पदार्थोविषे जाणी लेवुं. जे भावरूप होय ने सत्यज होय छे. ए रीते आ जगत भावरूप होवाथी सत्य छे. केम के सर्व वस्तु पोतपोताना रू

पें अनादि सिद्ध छे, अने जेना अंत नथी तेने शशलाना शिगडा प्रमुखनी देवी ए केवी मूर्खता छे वारु ! माटे ए बोलवु बालकना जेवु कहेवाय

जो स्वप्नजेवु जगत मानशो, तो तमारा पोताने मह्नोडे पोते वगाशो स्व ते स्वप्नपणे भावरूप छे अने जाग्रतपणे अभावरूप छे, तेम जागृत जे छे ते भावरूप छे अने स्वप्नपणे अभावरूप छे, पण केवल अभावरूप कोई पदार्थ नही ज्यारे स्वप्नभावरूप छे त्यारे तेना जेवो जे जगत तमे कहोछो ते केम कहेवाय, अने स्वप्नने जो अभावरूप कहेशो तो देखाय छे केम ? जे खाय नही, अने स्वप्न तो रात्रे दीठु ते रात्रे दीठु कहेवायछे अने दिवसे दीठु ते दीवसे दीठु कहेवायछे, माटे जे वखते स्वप्न देखाय छे ते वखते ते देखावारूपे अने सत्य छे अने जागृत असत्य छे तेमज ज्यारे जागृत देखाय छे त्यारे एम भावाभावरूप पदार्थ होय ते साद्यंत होय छे वली विशेष एवु समजवु ये छे के, यद्यपि स्वप्न तो साद्यंत छे पण स्वप्नो जे विकल्प छे ते आद्यंतरहित अनंत छे तेमाथी कोईक समये स्वप्न उद्भव थाय छे माटे स्वप्नु देखवु कोई काले तेमज यद्यपि जगतमाना पदार्थोने पलटवापणे उत्पाद व्ययनी अपेक्षायें पणे साद्यंत छे तथापि द्रव्यरूपे सदा शाश्वत ध्रुव छे केमके पर्यायपणे धर्म, आकाश, काल, जीव अने पुद्गल ए छए द्रव्य शाश्वत छे, जो पण छेना द्रव्यना पर्याय अशाश्वत कहेवाय छे, तो पण स्वरूपे द्रव्यपर्याय सदा छे, तेने असत्य केम कहेवाय ?

अरे भ्रमिष्ट, तमे जीवने मानो छो के नही ? जो ना कहेशो तो आ बोले छे कोण छे ? अने जगत असत्य कोण ठेरावे छे ? जे पोतेज असत्य होय ते सत्यासत्य कहेवानो छे ? जे पोते सत्य होय ते बीजाने सत्य अथवा असत्य कहे समर्थ थाय माटे जीव पदार्थ नथीज एम जो कहेशो तो तमे पोतेज छो ए वात तमाराथी ना कहेवाशे नही अने जगतने असत्य मानो छो तेवारे पोते तो सत्य ठरशोज, केमके जे पोताथी अतिरिक्त वस्तुने असत्य माने ते पोते ना जेवो असत्य होतो नथी, किंतु तेनाकरता विपरीत स्वभाववालो सत्य होयछे नो आ प्रत्यक्ष दाखलो छे के जगतने तमे स्वप्नजेवु गणोछो, त्यारे तमे पोते जागृत छो के नही ? केमके तमे पोते जागृत अवस्थामा न हो तो स्वप्नने स्वप्न कहा न स्वप्नावस्थानो तमे पोते अनुभव करेलो छे, त्यारेज तेनाविषे कथन करी शका छो,

मज जगतविषे पण तमे अनुभव करीने कथन करो छो. तेथकी जगतथी जुदा अ नुभव कर्त्ता छे माटे जीव छे.

अने जो जीव न होय तो गतागतभाग, भाव, भाषा, कार्य तथा कारण इत्यादिक विषयोनो अनुभव करवो. पांच इंद्रिओनो निग्रह करवो, त्रणयोगे शरीरनी चाल ना करवी इत्यादिक चेष्टा करनारो कोण छे? ए चेष्टा चैतन्य शक्तिथी थाय छे एथी चेतना लक्षणवान जीव जाणवो. ज्यारे शरीरमांथी चेतना नीकळी जाय छे त्यारे चेष्टा थती दीठामां आवती नथी, माटे ते अजीव कहिये. एवी रीते जीव अने अजीव ए बन्ने पदार्थ छे एम सिद्ध थाय छे.

सर्व वस्तुना बे प्रकार थाय छे. एक पक्ष्यने बीजो प्रतिपक्ष्य. जीव पक्षी छे अने अजीव प्रतिपक्षी छे अथवा अजीव पक्षी छे ने जीव प्रतिपक्षी छे. अर्थात् जीव तथा अजीव ए बे पदार्थो सदा शाश्वत अविनाशी छे, एवुं केवलीनुं वचन छे, ते अवश्य मान्य करवु जोये. दोहा, खरी शीख ए मानजो, मनमां राखी भाव; सद्दहाण जिन वचननुं, करो धरी चित चाव. १

२ नास्तिकः– जीव अने अजीव नही माननारा मूर्ख छे. केमके, जीव तो पांच महाभूतोना संमेळनथी उत्पन्न थाय छे. ज्यारे पांच माहाभूतोनुं प्रथककरण एटले छुटुंथवापणुं थाय छे. त्यारे जीवनो नाश थाय छे ए वात साची छे.

आस्तिकः– पांच महाभूतोथी तो तमारा मतप्रमाणे पांच जुदाजुदा पदार्थोनी उत्पत्ति थाय छे. ते आप्रमाणे.– पृथ्वीथी अस्थि, जळथकी रुधिर, अग्निथकी जठराग्नि, वायुथकी श्वासोश्वास अने आकाशथकी शून्यता थाय छे. ए बधाथी जीवनो शुं छे, ते शाथकी उत्पन्न थायछे वारु? चैतन्यने उत्पन्न करवानी शक्ति कया भूतमां छे? चैतन्य कयाभूतना अंशथकी उत्पन्न थयुं? ते कहो. पाचे महाभूत पोते जड छे; ते चैतन्यने केम करी शकशे? माटे ए पांच महाभूतनुं संमेळन जीवनी उत्पत्ति करे छे एम तमे कह्युं छे ते पण संभवे नही; केमके, संमेळन कोई एवो पदार्थ नथी के जेथी कोई पदार्थ उत्पन्न थई शके. माटे जीवनो उत्पन्न करनारो कोई नथी, पण ए तो अनादि पंच महाभूतथकी जुदोज छे दोहा, जिनवचनाभृत पान करि, पामो अमर स्वरूप; जीव अनादी अनुभवो, ए छे शीख अनूप. २

३ नास्तिकः– सर्व जाणे छे के जीव ते शाश्वत पदार्थ छे, तेनी उत्पत्ति केम संभवे! ज्यारे उत्पत्ति कहेशो त्यारे नाश पण थशे. अने चेतन तो उत्पत्ति न

जोये. माटे ईश्वरेछाथी जीवने कर्म बंध थाय छे, अने तेज प्रेरक छे एम

आस्तिक – जगारेक हास्य करीने बोले छे ईश्वरे पोताना अंशरूप उत्पन्न कर्या छे तेथी जीव ईश्वरनो अंश कहेवाय, ए उपरथी जीव तथा अंशांशीनाव सबंध तमारा कहेवा प्रमाणे ठरे छे जो ईश्वर अंश छे, ईश्वरना जेवो जीव होवो जोये केमके, अंशाअंशीमा नेद होतो नथी नी पठे जीव पण निर्मळ छे, एम मानवु जोये त्यारे एवा निर्मळस्वरूपी कर्म लगाडीने मळसहित करवानु कारण शु हतु! आपणे कोई शुद्ध वस्तु रवाने अर्थे ज्यारे लावीए छैये, त्यारे जहांसुधी बने तहांसुधी तेने मलीन देता नथी, अने स्वछ राखवानो घणो प्रयत्न कर्या करीये छे त्यारे पोताना रुप जीवने जाणी जोईने मेल लगाडवु ए ईश्वरनेविषे सनवे नही एम साधारण मूर्ख मनुष्य पण करे नही, त्यारे ईश्वर ते तेम करे! अने जे ना अंगनो तिरस्कार अथवा नाश करे ते आत्मघाती कहेवाय तेम आत्मघाती कहेवाशे कदाच तमे एम कहेशो के, ईश्वर पोते पण कर्मक- छे त्यारे जे पोते कळंकसहित होय, ते बीजानो कळंक शु मटाडी ... अने ते ईश्वर पण शानो! माटे गमे तेवी मनकल्पना करीने निर्दोषी दोष लागु करवो ए केटली मूर्खता छे! माटे ईश्वरनी इछाथी काई पण जे थाय छे ते कर्मथी थाय छे एम जाणवु दोहा, कर्मबंध आ जीवने, इछारूप, कहे एम ते मूर्ख छे, ईश अक्रीय अनूप ८

११ नास्तिक –आ जगतनी जे अद्भुत रचना देखाय छे, तेनो ... कोई जोये केमके, एवी कृति स्वाभाविक थई शके नही तेम कर्मादिक जड पदा- पण जगतनी उत्पत्ति सनवे नही माटे जे जगतने उत्पन्न करे छे, तेनेज कहिये, अने एवी लोकवदता पण छे, के जगत सर्व ईश्वर कृत्य छे

आस्तिक – जगतनो कर्त्ता ईश्वर होय, तो सर्व प्राणीमात्रनु ईश्वर कारण शु ने सर्व पदार्थो ईश्वरना कार्य यथा पिता जेम पुत्रनी उत्पत्ति करे छे तेम ईश्वर सर्व प्राणी मात्रनी उत्पत्ति करे छे त्यारे ईश्वर पितारूप अने पदार्थो पुत्ररूप मानवा जोये पुत्रनी उपर पितानो प्यार होय ए स्वाभाविक सिद्ध छे तेम ईश्वर नो पण सर्वनी उपर प्यार होवो जोये जो एम होय तो सर्व प्राणीमात्र सुखी होवा जोये तेम तो दीठामां आवतु नथी कोई सुखी, कोई दुःखी कोई पापी, कोई पुण्यवान, कोई नरकगामी, तथा कोई स्वर्गगामी वगैरे सर्व जीवा

नी वर्त्तणुक जुदी जुदी दीठामां आवे छे. एम केम कीधुं छे? वळी जगतना जी वोने प्रवर्त्तावनारो ईश्वर छे, एम पण तमारा कह्या उपरथीज सिद्ध थाय छे. त्यारे हिंदुए गायनी पूजा करवी. अने म्लेच्छे तेनो वध करवो. ए बुद्धि पण ईश्वरे आपी कहेवाशे. जो एवी बुद्धि देनारो ईश्वर मानशो नही. तो बीजो कोई मानवो जोइशे केमके तमारा मत प्रमाणे प्रेरणा करनारो कोई जुदोज होय छे, अने जे प्रेरणा करे छे ते ईश्वर छे. त्यारे ते बीजो प्रेरणा करनारो ईश्वर मानवो पडशे. आ रीते ईश्वरनो ईश्वर तेनो ईश्वर इत्यादिक मानशो तो अनवस्था दोष प्राप्त थशे. वळी पोते पोताने दुःखी कोई पण करतो नथी सर्व पोताने सुखनी चाहना करे छे. तेमज पोताना संबंधीओविषे पण सुखनी चाहना करे छे. तमारा केहेवा प्रमाणे तो जे जीव नरके जाय छे तेपण ईश्वरनो अंश. अने जे स्वर्गे जायछे ते पण ईश्वरनोज अंश छे. एटले सुखी तथा दुःखी थाय ते सर्व ईश्वर पोतेज छे एम ठर्युं. ए प्रमाणे ईश्वर पोतेज संसारमां परिभ्रमण करेछे. ते पोताना सेवकना जन्म मरणादिक दुःख केम टाळी शके! अने जीवोने नरकथी अथवा बीजी कुगतिथी केम बचावी शके? इत्यादिक विचार करता जगतनो कर्त्ता ईश्वर नथी; किंतु स्वाभाविक सिद्ध छे. दोहा. जग कर्त्ता ईश्वर कहे, ते विद्वान न होय; ईश्वरने कर्त्तव्यनहि, स्वभाव सिद्धज जोय ॥

१२ नास्तिकः— जगतनी उत्पत्तिकर्त्ता भले ईश्वर न होय. एमा हुं कशो वांधो लेतो नथी. पण ईश्वर सर्वव्यापक छे के नही?

आस्तिकः— जो ईश्वर सर्वव्यापक होय. तो जीव शिवाय बीजो कोई पदार्थ न होवो न जोये. केमके. ईश्वरतो चेतनवत छे; ते सर्वमां व्यापक होय. तो चेतना विना कोई जगा खाली न जोइये. के जे ठेकाणे बीजो पदार्थ रही शके; अने जगतमां तो जीव अजीव पदार्थो जुदा जुदा दीठामा आवे छे. एवी स्पष्ट सिद्धता छे के. ईश्वर सर्व व्यापक नथी. वळी ब्राह्मण. क्षत्रिय. वैश्य तथा शुद्र. ए चार वर्ण अनुक्रमे श्रेष्ठता तथा कनिष्ठता केम पाम्या छे! जेम के. ब्राह्मण सर्वथी श्रेष्ठ. तेनाथी क्षत्रिय कनिष्ठ. क्षत्रियथी वैश्य. अने वैश्यथी शुद्र कनिष्ठ छे. अने सर्वथी कनिष्ठ चंडाळादिक जाति छे; तेओमां श्रेष्ठ कनिष्ठता न थवी जोइये. केमके. ईश्वर तो सर्वमां एक अने समान छे; तेमां उत्तम मध्यमता [illegible] नथी. अने उत्तम मध्यम तो प्रत्यक्ष दीठामा आवे छे. वळी बीजा पण [illegible] अनेक छे; जेम के. कोई पुरुष [illegible] करे छे. ते कोई पुरुष [illegible] छे एम न थवुं जोइये ईश्वर तो बधामां व्यापक छे. तेथी [illegible]

रु करे छे ? ए उपरथी एवो निश्चय थाय छे के, ईश्वर सर्व व्यापक नथी दोहा,
क ईश्वर जे कहे, तेह न जाणे मर्म, नर्म जूया सर्व मत, विना एक जिनधर्म ।

१३ नास्तिक – ईश्वर सर्व व्यापक हो के न हो तेनी साथे अमारे ज॰
पण आ जगतनो अधिपति ईश्वर छे, अने जगतरूप तेनु ऐश्वर्य छे, तथीन
रताने पाम्यो छे जे ऐश्वर्यवालो होय तेने ईश्वर कहिये

आस्तिक – जगतनुं आधिपत्य लेवानु ईश्वरने शु कारण हतु ? ज
रूप ऐश्वर्य पण तेने शासारु जोइतु हतु ? शु जगतनी उत्पत्तिनी पूर्वे ते
ने पाम्यो न हतो ? ऐश्वर्यविना ईश्वरता सजरे नही ए उपरथी जे जगतनी ॰
त्तिनी पूर्वे अनीश्वर हतो, ते उत्पत्ति करीने ईश्वरताने पाम्या छे, एवा तम
आशय जणाय छे नही वारु ? पण ए वनु खोटु छे ईश्वरनेविषे एवी
करवीज नही जोये जुओ के, तमारा कहेवा प्रमाणेज जेम प्रजानी ॰
राजा कहेवाय छे, अथवा धननी अपेक्षाये धनाढ्य कहेवाय छे, तेम ज
अपेक्षाये ईश्वर कहेवाय छे एटले जेवारे जगतने उपजावे तेवारे जगतनु ॰
पण कहिये, एथी जगतनी पूर्वे ईश्वर न हतो एम थयु, अने जेवारे
थाय त्यारे ईश्वरनो पण अभाव थई जवो जोये जो ए वात कबूल करशो तो जे क
कालमां होय ने कोई कालमा न होय ते क्षणिक कहेवाशे जो क्षणिक मान ॥
बीजा घणा दोष प्राप्त थशे, माटे ईश्वरने जगतनो एवी रीते अधिपति प॰
ते योग्य नथी दोहा, अधिपति जगनो जे कहे, ईश्वरने मतवादि, ते॰
कनिष्ट छे, उत्तम अनेक वादि ११

१४ नास्तिक – आटला सवाद थया, तेओमा ईश्वरनु यथार्थ कारणपणु
काइए कह्यु नथी जगतनी उत्पत्तिनी पूर्वे ईश्वरने एवो सकल्प थया के, मारु
सामर्थ्य प्रगट करु, ए वात वेदमा कही छे ते आवी रीते - 'एकोह बहुस्यामि
एटले एक हु बहु रूपे थाउं एवा कारणथी जगतनी उत्पत्ति करी छे, तेथी ईश्व
रने कारण कह्यो छे

आस्तिक – पोतानु सामर्थ्य प्रगट करवानी इच्छा तो तेने थाय के, जेनविषे
अज्ञान होय ईश्वरतो सर्वज्ञ छे, ते शु पोतानु सामर्थ्य जाणतो नहोतो ? मा
रामा केटलु सामर्थ्य छे, एवो जेने सशय होय, ते ईश्वर शानो ? साधारण मनु
ष्य प्राणी पण पोतानु सामर्थ्य जाणी शके छे, तो ईश्वर केम न जाणी शके ?

માટે એમ કહેવું તે મૂર્ખતા છે. દોહા, નિજ સમર્થને જાણવા, કર્યું ઈશ જગ એહ. કારણ વાદી જે કહે, શતમૂરખ છે તેહ. १२

१५ નાસ્તિક:-- ઈશ્વરે પોતાનું સામર્થ્ય બતાવવા સારુ જગતની ઉત્પત્તિ કરી છે; એમ જાણવું જોઇયે.

આસ્તિક:-- કોને બતાવવા સારુ જગતની ઉત્પત્તિ કરી છે? જીવ અને જડ પદાર્થો તો ઈશ્વરેજ ઉત્પન્ન કર્યા છે, એમ તમે કહો છો. ત્યારે બીજો કોણ જગતની પૂર્વે હતો કે, જેને દેખાડવા સારુ ઈશ્વરે આ જગતની ઉત્પત્તિ કરી છે! માટે એ વાત પણ અસત્ય છે. દોહા. બીજાને દેખાડવા, પોતાનું સામર્થ્ય; જગ ઉપજાવ્યું ઈશ્વરે. એમ કહે તે વ્યર્થ. १३

१६ નાસ્તિક:--જેમ માણસ સવારમાં ઉઠી વસ્ત્રાદિક પહેરીને આરીસામાં પોતાનું સ્વરૂપ દેખે છે; તે સારું દેખાય તો આનંદિત થાય છે, તેમ ઈશ્વર પણ પોતે પોતાનું સ્વરૂપ જોવાસારુ આ જગતરૂપ શૃંગાર કરી પોતાનું રૂપ વિસ્તારીને દેખે છે; એમ જાણવું જોઇયે

આસ્તિક --માણસ પોતાનું રૂપ આરીસામાં જુવે છે, તેનું કારણ એ કે, મારું રૂપ સારું દેખાશે નહી, તો લોકો હાંશી કરશે; અથવા કોઈ ખોડ કાહાડશે; તેમ ઈશ્વરે બીજા કોના ભયથી પોતાના રૂપનો વિસ્તાર કર્યો છે? ઈશ્વરના જેવો બીજો ઈશ્વર કોઈ છે નહી; ત્યારે જોનારો કોણ! માટે એ વાત પણ જૂઠી છે. દોહા, પોતે જોવા આપને, રચ્યો જગત આ ઈશ; કોના ભયથી તે કહો, મતવાદી તજિ રીશ. १४

१७ નાસ્તિક:--"એક એવહિ ભૂતાત્મા, ભૂતે ભૂતે વ્યવસ્થિતઃ; એકધા બહુધા ચૈવ, દૃશ્યંતે જલ ચંદ્રવત્" એવી રીતે આત્મા એક છતાં સર્વ પ્રાણીમાત્રમાં જુદો જુદો દીઠામાં આવે છે; જેમ ચંદ્રમા એક છતાં અનેક જલસ્થાનકોમાં પ્રતિબિંબ રૂપે જુદો જુદો દીઠામાં આવે છે; તેમ ઈશ્વર એકજ છે પણ ઘટ ઘટમાં જુદો જુદો દેખાય છે માટેજ ઈશ્વર બિંબ છે ને સર્વ જીવ પ્રતિબિંબ છે; એમ જાણવું.

આસ્તિક:-- જેમ એક ચદ્રમાના અનેક પ્રતિબિંબો હોય છે, તે જેવો ચદ્રમાં હોય તેવા દેખાય છે. તથા કાચના ભુવનમાં એક મનુષ્ય છતા અનેક પ્રતિબિંબ રૂપે દીઠામાં આવે છે. તેમાં મૂલ આકૃતિથી જુદી આકૃતિ દેખાતી નથી. જેમકે, બીજથી તે પૂર્ણિમાસુધી ગમે તેવી ચદ્રમાની આકૃતિ હોય, તેવો પ્રતિબિંબ દેખાય છે; તથા કાચ ભુવનમા મનુષ્યની જેવી આકૃતિ હોય તેવીજ તાદૃશ્ય દેખાય છે. કાણો હોય તો કાણો દેખાય, આંધળો હોય તો આંધળો દેખાય; વગેરે

છે, પણ પહેલી હોયજ નહી, તો તેનીસાથે વીજો સંવંધ સાથી કરે! તેમ જીવ પણ અનાદિનો કર્મસહિત છે. અનાદિ જીવનું એહવુંજ સ્વરૂપ ચાલ્યું આવે છે, માટે જહાંગ્રુથી કર્મ સહિત છે તહાંગ્રુથી નવાં કર્મ પણ ગ્રહણ કરે છે, પણ પ્રથમથી અમુક વખતેજ જીવ નવાં કર્મ ગ્રહણ કરી કર્મમલ સહિત થયો; એવી આદિ નથી.

૭૦ નાસ્તિક --જીવને કર્મ ક્યારે લાગાં છે? કર્મ લાગવાની કોઈ પણ આદ્ય જોયેં જે પદાર્થનો અંત થતો હોય. તેની આદિ પણ હોવી જોયે. જ્ઞાને કરી કર્મોનો અંત થાય છે એમ તમેજ કહો છો. ત્યારે આદ્ય પણ કબુલ કરવી પડશે; તે આદિનો સમય કહ્યો છેરવશો? કેમ કે, જીવ પ્રથમ નિર્મલ હોય તોજ તેને કર્મરૂપ મલ લાગ્યો કહેવાય.

આસ્તિક.--એ વચન દૂષણ સહિત છે કેમકે, જીવ પ્રથમ જ્યારે નિર્મલ હતો ત્યારે તેને કર્મ લાગવાના પરિણામ કેમ થયા? જે નિર્મલ હોય તે પોતાને મલ સહિત થવાની ઇચ્છા કરે નહી. તેમ છતાં જીવે કર્મેની વાંછા કેમ કરી? માટે જીવ અનાદિનો કર્મ સહિત છે. જીવનેવિષે કર્મ સ્વભાવે અનાદિસિદ્ધ છે. દોહા, આદિ જીવ નિર્મલ હતો, પછિ વલગ્યાં છે કર્મ, એમ કહે તે ના લહે, જિન વચનોનો મર્મ ૧૬

૭૧ નાસ્તિક.--સર્વમાં વ્યાપક આત્મા એક છે, અને શરીરો જુદાં જુદાં છે, એમ માનવું જોઇયે.

આસ્તિક --જો વધામાં આત્મા એક હોય તો માતા. પિતા. સ્ત્રી. પુરુષ, ભાઈ, બેન. પુત્ર, રાજા, પ્રજા. ચોર, સાહુકાર, ચંડાલ, ક્ષત્રિય. ઉંચ, નીચ. નરક, દેવતા, પુણ્યવાન, તથા પાપી ઇત્યાદિક ભિન્ન ભિન્ન કેમ દેખાય છે? સર્વમાં આત્મા એક હોવાથી તેજ દેખાવું જોઇયે; અને એકે કીધેલું પાપ સર્વને લાગવુ જોઇયે; તેમજ એકે કીધેલા પુણ્યના સર્વ ભાગીદાર થવા જોઇયે; એકના મુક્ત થયાથી સર્વ મુક્ત થવા જોઇયે, પ્રત્યેક માણસનું જુદું જુદું અનુષ્ટાન નિષ્ફલ થવું જોઇયે; તેમ તો થતું નથી જે કરે છે તે ભોગવે છે, એ કહેવત પ્રમાણે વધા આત્મા ભિન્ન ભિન્ન દેખાય છે. માટે સર્વમાં એક આત્મા વ્યાપકપણું કહેવુ તે સમીચીન નથી, એમ જાણવુ દોહા. આત્મ સર્વમાં એક છે. ભિન્ન ભિન્ન આ દેહ; એમ કહે અજ્ઞાન મત, અમત કહીજે તેહ. ૧૭

૭૨ નાસ્તિક --સર્વ કાર્ય અને અકાર્ય ઈશ્વરની ઇચ્છારૂપ છે; અને ઈશ્વરની ઇચ્છાધીન સર્વ થાય છે; એમ જાણવુ જોઇયે.

आस्तिक --जो एम होय, तो जन्म धारण करवामां मातापितानु शु छे ? अने विष खाधाथी मरण थाय छे, तेमां विषनु शु वांक छे ? तेमज जलथी क्षुधानी निवृत्ति, पाणीथी तृषानी निवृत्ति, अग्निथी शीतनिवृत्ति, ली तापथी खेदोत्पत्ति, वर्षाथी धान्योत्पत्ति, द्वेषथी वैरोत्पत्ति, नम्रताथी त्पत्ति, चोरी करवाथी ताडन, यारी थकी निर्लज्ज, पापथकी नरक, सर्ग, इत्यादि सर्व कारणो अने कार्यो व्यर्थ थशे अने सर्व वस्तुओ सगुण कहेवी जोइशे राग करनारो स्नेही नही, तेम द्वेष करनारो वैरी नही कहेवाश पकार प्रति उपकार करवानी काई जरुर रहेशे नही अने पाप पुण्य थशे केम के, सर्व कार्य करवानु मूल कारण एक ईश्वर इच्छा थई, माटे सर्व र इच्छारूप छे. एम कहेवु ते समीचीन नथी तमारा कहेवा प्रमाणे पुण्य कर्ता पण ईश्वर अने भोक्ता पण ईश्वर थयो दोहा, ईश्वर इच्छारूप था, र्य जगमाहि एम कहे गुणता टले, सारासार न काहि १८

२३ नास्तिक - आत्मा पच भूतो थकी थयो छे, ए वात असत्य नथी। साची छे, एवु अमने जणाय छे

आस्तिक - भूत शब्दनो अर्थ त्रणे कालमां अस्तित्व थाय छे एटले जे छे ने छे, तेने भूत कहियें भूतनो तो कोई काले छेद थतो नथी, माटे ए भूतनो अश तो सभवे नही, तेम आकाशादिक पच महाभूतनो अश पण थाय नही त्यारे पाच भूतना अशे करी शरीरनी उत्पत्ति थाय छे, त्यारे अने चेतना क्या अशथी उत्पन्न थया ? माटे भूत शब्द ए भ्रमजाल छे चिदानद ज्ञानरूप आत्मा तो शाश्वत छे ते काई समये जूना तथा नवा नथी ते जीव पूर्वोपार्जित कर्मे करी शरीर बाधे छे ते जड पुद्गलनु ग्रहण तेमा भूतनु काई प्रयोजन नथी, भूत केवी वस्तु छे ? जीव छे के जड छे ? रूपी के अरूपी छे ? ईश्वराश्रित छे के नवा प्रगट थाय छे ? छता रूप छे के थाय छे ? ए विषे काई विचार करी शकातो नथी, माटे भूत ए शब्दना अर्थे छे नाथी जीवनी उत्पत्ति केम मनाय ! दोहा, जीव ऊपजे भूतथी, ए मत छ रूप जीव चिदानद सत्य छे, अनादि ज्ञान अनूप १९

२४ नास्तिक --तमारा कह्या प्रमाणे जीवने भवांतर थाय छे भवनी प्राप्ति मानुसार छे जेवा कर्मो कर्या होय तेवा भवनी प्राप्ति थाय छे शुभ कर्मनु सारो भव छे, अने अशुभ कर्मनु फल नरसो भव छे ते वात सत्य छे, परतु

ई जीवने एक खंडमां शरीर मूकीने बीजा खंडमां बीजुं शरीर धारण करवु पडे तो एटलो दूर जतां तेने केटलो वखत लागतो हशे ! अने कोई जीवने एक शरीर मूकी तरत तेज गाममां उपजवु होय. तेने कांई दूर जवुं पडतुं नथी, तेथी कांई वधारे वखत लागतो नही हशे, पण जेने दूर जवुं पडतु हशे तेने रस्तामां चालता वधारे करवत लागतो हशे नी !

आस्तिक — नजीक अथवा दूर नवांतर करवामां वधारे वखत लागतो नथी, सरखोज वखत लागे ठे. जेम घाणी, रहेंटीओ अथवा बारणुं इत्यादिक ज्यारे फरे ठे, त्यारे तेओना माहेला तथा बाहेरना नागने फरतां सरखोज वखत लागे ठे यद्यपि अंदरनो क्षेत्र थोडो होय ठे, ने बाहेरनो घणो होय ठे, तथापि फरतां वखतमां वधघट थती नथी. वली जेम दीपकने शलगावीए ते क्षणमांज प्रकाश करेठे वचमां कांई अंतर पडतो नथी, तेम जे वखते एक नव मूके के लागलोज बीजो नव पामे ठे, तेमां लगार पण अवकाश रहेतो नथी. ते नव पठी दूर देश धारण करवो होय, के नजीक देशमा धारण करवो होय, गमे त्यां नव धारण करवांमा वखतनो वार फेर थतो नथी.

२५ नास्तिक —जीवने कर्म केवी रीते लागे ठे.

आस्तिक.—आत्माना शुनाशुन परिणामथी जीवने कर्म लागे ठे. जो शुन परिणाम होय, तो सारा कर्म लागे ठे, अने अशुन परिणाम होय, तो नरशा कर्म लागे ठे. अने तेनां फल पण तेवां थाय ठे. कर्मने कांई ज्ञान नथी, जे आ जीवे पाप कर्युं माटे हुं एने पापरूप कर्म थई लागुं.

२६ नास्तिक —कर्म तो जड ठे. तेथी तेओमां ज्ञान शक्ति नथी त्यारे जीवे नरशा अथवा सारां कर्मो कर्याथी पाप अथवा पुण्यरूप परिणाम केम थाय ठे ? ए परिणाम तो ज्ञानविना थाय नही. तेथी एवुं जणाय ठे के कर्म लागवामा [illegible] ठे. [illegible]वापणुं जीवने ठे, ने तेनुं फल देवुं ईश्वरने ठे.

[illegible]मां ईश्वरनुं कांई काम नथी. कर्मोनो एवो स्वनावज ठे [illegible]ोई पुरुष विषमिश्रित नोजन करे, ते मरण पामे ठे [illegible] विष जड पदार्थ होवाथी तेने एवु ज्ञान नथी [illegible] ते [illegible]ठतां तेथी तेवो परिणाम थायठे के नही ! [illegible]थी पुष्ट थाय ठे पण ते नोजन एम [illegible] थाय ठे. तेम ठतां तेनो परिणाम

तेवो थाय छे एतो एनो स्वनाव छे तेम शुनाशुन कर्मोने यद्यपि तोपण तेओनो एवो स्वनावज छे, के फलरूपे पोते परिणामने पामवु-नो एवो स्वनावज छे के शुन कर्याथी पुण्यकर्म बंधाईने उत्तम गतिनी छे, तेमज अशुनविषे पण जाणी लेवु एवो कर्मोनो अनंत कालनो वली जेम चमक पाषाण लोहने पोतानी तरफ खेंची लिये छे, तेनु पण ज्ञान नथी, के हु लोहनुं आकर्षण करूंछु, परन्तु ते क्रिया छे तेम जीव शुनाशुन परिणामना उपयोगे शुनाशुन कर्म आकर्षण त्मापणे लोलीनूत करे छे, एवो अनादि कालनो स्वनावज छे एमां काम नथी

२७ नास्तिक – जीव एवो कोई पदार्थज नथी, बधु शून्यज छे त्यारे कर्मो ते कोने लागवाना हता ! ए बधो नर्म छे जीव कोई छेज नही

आस्तिक – नाई, तूं पाको बुद्धिनो देखाय छे जीवनेज उराडी बधी खटपट चूकी गई के नही वारु ! अरे मूढमति विचार तो कर के जो जीव न होय, तो शरीरनी चेष्टा केम थई शके ? शरीर तो जम छे, तेमा न होय तो क्रिया केम थाय ? जो आत्मा न होय तो आ शरीर, हाथ, कान, नाक, जीन, आख, मन, बुद्धि, धन, धान्य, राज्य, तथा संपत्ति सर्व पोताथी जुदा पदार्थोमा शरीर मारु छे, धन मारु छे, वगैरे एवो कोण छे ! मारु छे, एवु कहेनार पदार्थथी जुदो होय छे एम तो कोई पण तो नथी के हु शरीर छुं, हु मन छु वगैरे, माटे शरीरादिक सर्व वस्तुनो वहार होवाथी जीव छे एवु ठरे छे शरीरमाथी जीव नीकली गया पछी करवु, बोलवु, तथा चालवु वगैरे काई पण क्रिया थई शकती नथी तेथी थकी जीव जुदो कोईक छे एम नकी जाणजे वली शरीरमा ज्यारे जीव छे बोले छे, ने घट पटादिक पदार्थोमा जीव नथी त्यारे बोलता नथी तेथी व्य ते शरीर थकी जिन्न छे एवु शिद्ध थयु तेने छेज नही एम तु छे ? जो जीव न होय तो व्यवहार केम चाले ? माटे जीव अवश्य छे ए

२८ नास्तिक – जीव समय समयनेविषे नवो थाय छे हमेश एक जीव तो नथी

आस्तिक – ए वात तदन जूठी छे जीवत्व नवु कोई समये थतुज जीवना पर्याय द्रव्य, क्षेत्र, काल, नाव, तथा उदय नावाश्रित तो जुदा

होय छे. पण जीवपणुं नवुं होतुं नथी. जीव समय समय प्रत्ये जो नवो थ तो होय, तो बाळपणनी वात यौवनावस्थामां सांभरवी न जोये. तथा गत समयनुं सांभळेलुं. दीठेलुं. भोगवेलुं. लीधेलु. तथा दीधेलुं प्रमुख कांई पण स्मरणमां आव्युं न जोये. तेनी स्मृति तो थाय छे. तेथी जीव तेहिज छे. जो जीव नवो थतो होय तो एक जीवनुं करेलुं कार्य बीजो जीव केम जाणी शके? ए तो प्रसिद्ध वात छे तेथी जीव द्रव्य सदा सरखुं छे; एमां कोई काळे पण फेर पडतो नथी. एम जाणवुं.

२९ नास्तिक – जीव जे नाना प्रकारनां कर्मो करे छे. तेओनो करावनार ईश्वर छे. ईश्वरनी प्रेरणा विना जीव थकी कर्म थाय नही. एम जाणवुं.

आस्तिक – जो जीवने कर्म ईश्वर करावतो होय, तो कर्मनो कर्त्ताज ईश्वर गणशे केमके जे क्रीयानो प्रेरक होय छे. तेज कर्त्ता होय छे. जो ईश्वर कर्त्ता ठेरावशुं तो जे कर्त्ता होय छे, तेज भोक्ता होय छे. ए रीतथी ईश्वरने भोक्तापणुं पण आवशे. भोक्ता ईश्वर थयाथी पापपुण्य ईश्वरनेज लागे छे. एम मानवुं पडशे. जेम कोई पुरुष पोताना हाथमां खड्ग लईने बीजाने मारे. तेनुं पाप खडगने लागतुं नथी, पण ते खडगना मारनारने लागे छे. तेम पुरुषे कीधेलुं पाप पण ईश्वरने लागनार छे. कर्मनो करनार तो खडगना जेवो छे; तेने कर्म लागवा न जोईए. तेथी कर्म ईश्वरने लागे छे एम सिद्ध थयुं. एम माननारने एटलुंज पूछवुं जोगे के, कर्मनो कर्त्ता तु नथी, तेम कर्मनो भोक्ता पण तूं नथी; कर्त्ता भोक्ता ईश्वर छे. त्यारे सर्व मनुष्यो पोतपोताना मत प्रमाणे क्रिया करवानी बुद्धि केम करेछे? मद्य मांसनो त्याग, अने स्नान, संध्या, स्तोत्र, तप, जप, वगेरे शासारु करेछे? पोताने कांई पाप प्रमुख लाग्युंहोय तो तेनुं निवारण शासारु करे छे? अकार्य शासारु करता नथी? पाप थकी शासारुं बीहेछे! कर्त्ता शो भोक्ता एम शासारुं करे छे? पोते करे छे, ते भोगवे छे, तेम छतां वळी कहे छे के हे प्रभु, मारो पाप टाळो. पण एम नथी कहेतो के प्रभु तमारां पाप टाळो. जे चोरी करे तेने दंड पाम ने छेद करे तेनां प्राण जाय. अने हिंसा करे ते अवश्य नरक गामी थाय. वगेरे ए सर्व व्यर्थ मानवा जोइशे. माटे कर्त्ता जीव छे ईश्वर नथी एम मानवुं जोगे.

३० नास्तिक.– अमे मान्य करेलु ईश्वर सर्वज्ञ छे एम जाणवुं. अमारे शास्त्रोमां पण "सर्वज्ञो ईश्वर." एवां घणां वाक्यो [illegible] माटे ईश्वर सर्वज्ञ जाणो छे.

आस्तिक–यद्यपि तमे कहोछो के ईश्वर सर्वज्ञ छे, ए वात सत्य छे .
ते सर्वज्ञतानी रीत काईक जूदीज छे जे तमे मानो छो ते ईश्वर सर्वज्ञ नथी
मे एटलुज पूछीए छैए के, ज्यारे ईश्वर सर्वज्ञ छे, त्यारे पोताने दुःख देनारा
णादिकने तेणे शा सारु उत्पन्न कर्या। ज्यारे ए राक्षसोनी उत्पत्ति पोते
त्यारे पोतानेज युद्ध करवु पडयु ए उपरथीज विचार करो के जो ईश्वर
जाणतो होय तो एवी भूल केम करे? जो एम कहिये, के राक्षसादिक
ओ ईश्वर थकी अजाणमा उत्पन्न थया जणाय छे, तो ईश्वरनेविषे
दूषण प्राप्त थशे अने जो एम कहीशु के जाणी जोईने उत्पन्न करया छे, तो
श्वरना भक्तने पण संग्राम उचित नथी, तो ईश्वरने ते केम संग्राम कार्य
त थयो? माटे एम कहेवु तदन असमंजस छे

३१ नास्तिक–ईश्वर ज्यारे जगतनो संहार करेछे त्यारे पोते प्रागवमना
डापर पहोढे छे, अने ज्यारे जगतनी उत्पत्ति करवानो समय होय, त्यारे ...
थाय छे, ए वात तो साची छे के नी?

आस्तिक–ए वात ते वली जूठी होय। पण हु तमने पूछु छु के ते
वड अधर आकाशमा रहे छे के, पृथ्वी उपर होय छे? तेमा अधर रहे छे,
तो तमे कबूल करशो नही, केम के तमे वली एम पण मानो छो के, बधु ज-
थई जाय छे, ने तेनी उपर मात्र प्रागवड देखाय छे, त्यारे पृथ्वी पण कबूल
रवी पडशे जो पाणी, पृथ्वी, तथा प्रागवड ए बधा पदार्थ महा प्रलय
पछी पण रहे छे, त्यारे संहार ते शानो कर्यो कहेवाय? जो एम होय तो
पदार्थो शाश्वत थया एम जणाय छे फरी ज्यारे ईश्वरे सृष्टि उत्पन्न करी, ते
हेला कह्या प्रमाणे पाच महा भूत तथा, प्रागवड हतो त्यारे नवु ते शु
ए वगेरे विचार कर्याथी एम जणाय छे के, ए बधा गपाटा छे जेना
जेम आव्यु, तेणे तेम शास्त्रोमा लखी नाख्यु जणाय छे

३२ नास्तिक–ब्रह्मा, विष्णु, अने महेश ए त्रणे सर्वज्ञ ईश्वर छे, एम अमे
निये छैये

आस्तिक–तमे गमे तेम मानो तेमा अमारु शु गयु। अमे तो जेम हशे
म मानशु तमे कह्या ते त्रणे जो सर्वज्ञ होय तो अज्ञानने केम अंगीकार
रे! जुओ के, महादेवे पोताना पुत्र गणेशनुं माथु कापी नाख्यु तेनी खबर पो
ताने केम न पडी? रावण सीतानु हरण करी गयो ते वखते राम सर्वज्ञ हतां

पण, पछी. तथा वृक्ष प्रमुखने केम पूछतो हतो? अने ब्रह्मा पासेथी राक्षसो वेद केम चोरी लइ गया? ए रीते ब्रह्मा, विष्णु अने शिव अज्ञानी ठरे छे. एवा अज्ञानी तेने ईश्वर केम कहिये?

३३ नास्तिक.—सर्व योनिओमां मनुष्य योनि उत्तम छे. एवुं शास्त्रोमां कह्युं छे ते सत्य छे. अने वळी अनुभव सिद्ध पण छे.

आस्तिक.—ना कोणे कह्यु छे? मनुष्य योनि तो उत्तमज छे. परंतु तमे तेम अंतःकरण पूर्वक मानता नथी देखाता महोडाथीज मात्र कहो छो. केम के तमारे तो एथकी पण बीजी उत्तम योनिओ मानवी जोइये छे. जे योनिने ईश्वरे अंगीकार करी छे, ते योनि तमारे पण सर्वोत्कृष्ट मानवी जोइये. मछ, कछ, तथा वराह, प्रमुख योनिओमां ईश्वरे अवतार लीधो छे; ते योनिओ मनुष्य योनिकरतां उत्तम मानवी जोइये. जो मनुष्य योनिज उत्तम होय तो ईश्वर पोते बीजी योनि केम धारण करे? माटे तमारा बोलवा प्रमाणे तो मनुष्य योनि करतां वराहादिक योनि उत्तम जणाय छे. ईश्वर ज्यारे पशुमां अवतार लिये छे. त्यारे पशुमुखी. पशुवाही. तथा पशुरूपी होय छे. तेने देव मानवो ते अयोग्य छे. आहार, अस्ति, आयुध, असवारी, तथा आवास ए पांच पदार्थ ईश्वरना भक्तने पण त्याग करवा कह्यु छे, तो ईश्वर पोते तेनुं केम ग्रहण करे? माटे वराहादि योनि धारण करनारो ईश्वर मानो, तो मनुष्य योनि करता ते योनि उत्तम कहेवी जोइशे; जो तेम नही कहेशो तो ईश्वरने अपमान लागशे.

३४ नास्तिक.—शरीरनो त्याग करीने जीव परलोके गया पछीपाछो आ लोकमा केम आवतो नथी? जे छे तेने तो आव्युं जोइये.

आस्तिक.—आ संसारनो संबंध मटी गया पछी जीवनुं फरी आववुं थतुं नथी, तेनुं कारण कर्म छे. जीवनुं आववुं जवुं कर्माधीन छे. ज्यां कर्म लइ जाय त्यां जीव जाय छे. अने जे जे भव पामे छे ते ते भवना कार्य करे छे. आ भवमा पण हमेश एक रीत रेहती नथी जेम के बाळपणानी प्रीति होय ते कोई काळे मटी जाय छे. घणा काळ लक्ष्मीनो संबंध छतां कोई काळे तूटी जाय छे. त्यारे दारिद्र आवे छे कोई कर्मना योगे प्राणी बंदीखानामां पडे, त वारे तेनां अन्यंत स्नेही होय ते पण पासे आवतो नथी कोई पुरुष एक स्त्रीउपर बीजी करे त्यारे प्रथम स्त्रीनी उपर प्रीति रेहती नथी; अने पूर्वनो संबंध पण तूटी गया जेवु थाय छे. तो पूर्व जन्मना संबंध ते केम याद आवे? ज्ञानावरणी कर्मना यो

गे बीजा जन्मनु स्मरण पण थतु नथी ए विषयने मळती प्रदेशी राजा
श्री गुरुजी प्रश्नोत्तररूप चर्चा छे ते कहु छु

प्रदेशी राजा – मारो अधर्मी दादो नरकमा गयो छे, ते तमारा मत
त्याथी आवीने मने अधर्म करतो वारे त्यारे हु मानु, के वात साची छे

केशी गुरु – तारी स्त्रीनी साथे कोई पुरुषने कामभोग करतो तने दीठामा
वे, ने ते तारा हाथमा आव्या पछी ते तारी वीनती करे के, मने थोडीक वार
आपो, तो हु मारा कुटबने कही आवु के, कामभोग करवाथी आवु डख
तो ते वात कबूल करीने तेने तू रजा आपीश ?

राजा – ना तेने एक क्षण पण छुटो मूकु नही

गुरु – तेमज तारो दादो पण पापसची, गुनेहगार थई, नरकमा गया
परमाधामी तेने केम मूके ? तेथी ते आवी शके नही

राजा – मारी दादी स्वेच्छाचारी थई, जैनधर्मने अगीकार करीने स्वर्ग गई,
पाछी केम कहेवा आवी नही, ने आवे तो तेने शु हरकत छे ?

गुरु – कोई पुरुष स्नानकरी, कुकुम तथा धूप प्रमुख लई देवनी पूजा
जेतो होय, तेने कोई चाभाल समागमा जवाने कहे तो ते त्या जाय के ? एवी
दी इच्छा पण करे ?

राजा – ना ते एवा खराब स्थले केम जाय ? कदी पण जाय नही

गुरु – तेम तारी दादी स्वर्गलोकमा गई छे, ते सेतखाना तुल्य आ मनुष्य
कमा केम आवे ! आ लोकमा आववानी इच्छा पण थाय नही

राजा – एक चोरे चोरी करी, तेनो इन्साफ करीने तेने लोढानी कोठीमां
ली दीधो तेनु मुख बध करीने उपर सारी रीते कलई करावी तेमा पवन
प्रवेश करी शके नही एवु कर्यु पछी ते चोर कोठीमा मरी गयो तेनो जीव
कोठीना क्या रस्तेथी नीकळी गयो ? तेमां तो कोई छिद्र दीठामा आव्यो
हरे जीव ते केम मनाय ?

गुरु – मोटी शाळामा एक पुरुषने भेरी सहित घालीने तेने चोतरफ बध
री लीधी होय, तेमां ते भेरी वगाडवाथी तेनो अवाज बाहार नजाय छे ते
छिद्रविना बाहार केम आवे छे ? तेम जीव पण छिद्रविना बाहार निकळी जाय .

राजा – एक चोरना कटका करी एक कुभमां में भरी राख्याहता तेनु महोडु
परथी सारी रीते बाधी लीधु हतु, के जेमा पवन पण प्रवेश करी शके नही त

पछी वधाडी जोयुं, तो तेमां अनेक क्रम पडेला देखायां. ते छिद्र क्यांथी आव्यां ?

— अग्निमां लोढानो गोळो नाख्यो होय तेमां छिद्रविना अग्नि केम प्रवेश जे वस्तु अग्निमां नाखीए तेमां छिद्र नहोय, तो पण अग्नि प्रवेश करे छे. जीवनो प्रवेश थवामां छिद्रनुं कांई काम नथी.

— एक चोरने में ते जीवतो हतो त्यारे तोळ्यो, अने मरी गया पछी तोळ्यो; त्यारे जीव नीकळी गयो छतां भारमां कांई फेर पड्यो नही. तेनुं शु होवुं जोये ?

जेम खाली मशक तथा पवनथी भरेली मशक तोळी जोतां वजनमां थतो नथी. तेम जीव वायुरूप होवाथी ते शरीरमांथी नीकळी गया प तोलमां फेर पडतो नथी.

बाळक अने यौवनना शरीरमां फेर छे पण जीवमां कांई फेर नथी. सरखी बोले छे ने तेनुं शब्द पणे कानमां सरखी रीते स्वर जाय छे; उपयोग सरखो केम थतो नथी? युवान जे क्रिया करी शके छे ते बाळ थती नथी तेनुं कारण शुं ते कहो.

— जेम जूनुं धनुष्य होय तेथी बाणनो उपयोग जुदी रीते थाय छे ने न होय तो तेथी बाणनो उपयोग जुदी रीते थाय छे; धनुष्यमां फेर होवा क्रियामां फेर पडे छे. तेम बाळक अने युवानना शरीरमां फेर होवा । क्रिया सरखी थाय नही. एटले बळ वीर्य प्रमुखमां पण फेर फारथाय छे.

—युवान अने वृद्ध माणशना शरीरमां जीव सरखो छतां युवाननी पठे म भार उपाडी शकतो नथी?

—जेम कावडवडे भार उपाडनारो पुरुष सारी नवी कावड होय तो वधा उपाडी शके छे, ने जूनी कावड होय तो कांईक थोडो भार उपाडी शके जीव तो तेज छे पण युवान शरीर होय तो वधारे भार उपाडी शके, ने थाय तो थोडो भार उपाडी शके छे.

—एक चोरने मारीने तेना अनेक खंड कीधां, पण जीव तथा जीवना ठेकाणुं दीठामां आव्युं नही; माटे जीव कोई छेज नही.

—जेम काष्टमां अग्नि रह्यो छे, तेम शरीरमां जीव रह्यो छे; ते देखाय केम ? ष्टमां अग्नि देखाय तो शरीरमां जीव देखाय. काठीआरो हमेश लाकडा

कापे छे पण तेने अग्नि कोई वखते पण दीठामा आवती नथी ने ते देवानु ठेकाणु पण दीठामां आवतु नथी तेम जाणी लेवु

राजा –मने प्रत्यक्ष जीव देखामी आपो के जेथी हु जीवने जाणु

गुरु –तमे बादर वायु कायना जीवने जोई शकशो के? तेने पण जोई शो नही तो जे अरुपी जीव छे तेंने केम जोई शकशो ?

राजा –हाथीमा अने कीमीमा जीव केम सरखो होय छे ?

गुरु –हाथीनु तथा कीमीनु शरीर महोटु नानु छे, पण जीवमा अधिक ता नथी जीव बन्नेमा सरखो छे

राजा – लोकमा जीव अने जड एक क्षेत्र अवगाही निरतरपणे केम रह्या छे ?

गुरु – जेम दूधनी नरेली कडाईमा साकर, एलची, अने केशर नाखी ते केम समाई जाय छे ? दूधसुद्धा चारे वस्तु एक क्षेत्र अवगाही नि॰ केम रहे छे ? एकज ठेकाणे चारे वस्तु अभिन्न नावे रहेली छे एना वर्ण, रस, फरश निरतर निराबाधपणे छे तेम जीव अने जड जगतमां निरतर क्षेत्र अवगाही निराबाधपणे रह्या छे

३५ नास्तिक – सर्व लोकमा जीव नरपूर छे त्यारे देखाता केम नथी ?

आस्तिक – जेम सूक्ष्म जीव सर्वत्र पूर्ण छे ते ज्यारे दिवशे तडको पडे घरमाना कोई छिद्रद्वारायें थोडोएक तडको घरमा आवे छे ते तडका ना केटला एक परमाणु जेवा दीठामा आवे छे, ते बधा सूक्ष्म जीवो छे ते मा तडको आवे त्यारे उडता देखाय छे, बीजी रीते देखाता नथी तेम ने जड सर्व लोकमा नरपूर छता छद्मस्थने देखाय नही, किंतु केवल ज्ञानरूप तपना योगे देखायछे अर्थात् केवल ज्ञानीज जाणी शकेछे

३६ नास्तिक – चद्र, सूर्य, छाया, आतप, माता, पिता, स्वर्ग, नरक, जड, घट, पट, स्तंन, तथा कुल प्रमुख सर्व भ्रममात्र छे, वस्तुरुप कईजनथी

आस्तिक – जेम अधकारमा आकाशनेविषे कोई पुरुष चाल्यो जाय, ते बाधपणे जई शके छे, पण वचमां जो नित आवीजाय तो आगल चलातु ने ते कार्यमा अपराबाधक थायछे ए प्रत्यक्ष भ्रम के सत्यछे ? तथा कोई मारे, कूटे, दानदिये, ए वस्तु गल्ये सत्यछे, असत्य अने भ्रमजाल तो स्वप्न सकल्पने कहिये

ए नास्तिकः—सर्व जगतमां एकज ईश्वर छे. इश्वर विना बीजुं कांई नथी, ए जोये.

[illegible]स्तिकः— जो सर्व जगतमां एक ईश्वर होय, तो दाननो देनार पण ईश्व[illegible] लेनार पण ईश्वर कहिये. लेनार अने देनारमां कांई नेद थयो नही. ई[illegible] पोते पोतानी पाशेथी दान लिधुं त्यारे दान दीधानुं पुण्य कोने थयुं ? एथी [illegible] तथा पुण्य व्यर्थ गयां. वली मारनार पण ईश्वर ने मरनार पण ईश्वर कहेवो [illegible] तो ईश्वरे ईश्वरने मार्यो तेनुं पाप कोने लाग्युं ? धणी पण ईश्वर ने चोर [illegible]; तो ईश्वरनो माल ईश्वरे चोर्यो कहेवाय, त्यारे चोरीनी तपाश शासा [illegible] जोयेछे ? पुण्ये करी स्वर्गमां गयो ते पण ईश्वर, तथा पापे करी नरकमां गयो ते पण ईश्वर; त्यारे स्वर्गमां पुण्यवान जाय अने नरकमां पापी जाय; एम क हेवुं व्यर्थ छे. ए उपरथी तमारुं बोलवुं असंनवित छे. जगतमां एकज ईश्वर छे एम जे कहेवुं ते असत्य छे. घटघटप्रत्ये जीव जुदा जुदा छे, अने तेओनी कर[illegible] पण जुदी जुदी जाणवी.

२ए नास्तिकः—घट पटादिक सर्व पदार्थोमां ईश्वर एकज छे. एम जाणवुं जोये.

आस्तिकः— जो सर्वमां एक ईश्वर होय तो जात, कुल, राजा, तथा चंडा[illegible] निन्नता कही न जोये; कोई श्रेष्ट तथा नष्ट कहेवाय नही. एक पुण्य करे ते नुं फल सर्वने थवुं जोये, तेमज कोईएक पाप करे तेनुं फल पण सर्वने थवुं जो ये. एके नोजन कर्याथी सर्वनी तृप्ति थवी जोये; एक नरकगामी थयाथी सगला न रके जवाजोये; एक स्वर्गगामी थयाथी सर्व स्वर्गमां जवा जोये; एकनो नोग सर्वने नोगव्यो जोये; कर्म जुदां जुदां नोगववां न जोये; तेम तो देखातु नथी, जे करे ते नोगवे एवुं स्पष्ट देखाय छे. त्यारे सर्वमां एक ईश्वर केम कहेवाय ? माटे एम क हेवुं ते समीचीन नथी; बधा जीव जुदा जुदा छे, एम कहेवुं योग्य छे.

३ए नास्तिकः—स्वर्ग, नरक, पुण्य, पाप, चंद्र, सूर्य, नदी, समुद्र, द्वीप, नर, नारी, नगर, ग्राम, तथा माता, पिता इत्यादिक चोराशी लक्ष जीवयोनि प्रमु. ख सर्व असत्य छे; एओमां सत्य पदार्थ कोई नथी.

आस्तिकः—सर्व पदार्थ सत्य छे. जलनी बुंद पण असत्य कहेवाय नही, स्वर्गादिक पदार्थो केम असत्य कहेवाय ? जे वस्तु थाय [illegible] थई

अने वणशे त्यारे नाश थई कहेवायछे ए प्रत्यक्ष प्रमाणे सिद्ध छे, ते पण जाणे छे तो हे नास्तिक तू केम जाणतो नथी!

४० नास्तिक –जगत ईश्वर रचित छे

आस्तिक –जो जगत ईश्वरकृत होय, तो जेटला ईश्वरना भक्त छे, ते सुखी होवा जोये, तेम तो दीठामा आवतु नथी हिंदु तथा मुसलमान सुखी तथा दुःखी देखायछे, तेने पण पुछिये तेवारे एम कहे जे सहु पोतानी करणी प्रमाणे पामेछे, एम कहीछूटे, त्यारे तमारा कहेवा प्रमाणे तो सुख दुःखनो देनार कर्मविना कोई बीजो होवो जोये तेनो तो विचार थई शके, माटे हे मूर्खबुद्धि आ जगतनो कोई कर्त्ता नथी, ए तो स्वभाव सिद्ध छे च जेवी करणी करे, ते प्रमाणे सुख तथा दुःख भोगवेछे

४१ नास्तिक –सुख दुःखनो देनारो ईश्वर छे, एम मानवु जोये.

आस्तिक –सुखदुःखनो कर्त्ता आपणो आत्मा छे, तेज सुखदुःखनो जाणनो माटे सुखदुःखनो देनारो बीजो कोई समजवो नहीं

४२ नास्तिक –(प्रत्यक्ष प्रमाण वादी) पुण्यथकी सारु थायछे, ने पाप नरठु थायछे, ते अमने प्रत्यक्ष दृष्टिए देखाडो तो मानीए

आस्तिक –पुण्यपाप तो सूक्ष्म पुद्गल समूहरूपछे जेम शब्दना पुद्गल वेत्यारे शब्दनुंज्ञान थायछे, माटे ते सत्य छे पण आवता देखाता नथी तेम ध, दुर्गंध, प्रमुखना पुद्गल इंद्रियो प्रत्ये आवता देखाता नथी, पण तेनु थायछे, तेथी अनुमान प्रमाण वडे जणाय छे के ए सत्य छे तथा वायु अने गरमी प्रमुख जे थायछे, ते रोगना उदयथी जाणमा आवेछे, प्रत्यक्ष दीठामा आवतानथी तेम पुण्य तथा पाप पण फल भोगव्याथकी जाणमा आवेछे तेओना पुद्गल छद्मस्थ दृष्टिए आवे नही

४३ नास्तिक –बाल्यावस्था तथा तरुणावस्थामा जीव सरखो छे ता ते अवस्थामा विज्ञान, विद्या, भाषा, तथा पराक्रम सरखा केम नथी देखातां?

आस्तिक –जेम वृक्षना बीमा अनेक वृक्ष, फल, फूल प्रमुख रहेलां छे, जेवा साधनो मलेछे, तेवी भव्यताने पामेछे जेम के, क्षेत्रनी भूमि सारी होय पाणीनी पण बराबर सानुकूलता होय, तो कृषि फलरूप धान्यनी उत्पत्ति सारी तेम सारा साधनोवडे जेम जेम शरीरनी वृद्धि थती जाय, तेम तेम भाषा पण ताने पामती जायछे, पण अवस्थांतर थयाथी बुद्धि बाहेरथी आवती नथी किंतु

...नी पछे बुद्धिनुं अवस्थांतर थायछे. सर्व आत्मगुण आत्माने विषे सदा
छे. पण योग्य समयमां उद्भव मात्र थायछे. कांई बाहेरथी नवा आव
...थी. जेम मयूरना शरीरमां अनेक रंग रहेलाछे, पण समय पामे प्रगट थाय
...म बाल्यावस्थामां पण सर्व गुण सत्ताभावे छे, परतु जेवी रीते पुरुष बलवान
...नुष्यविना बाण चलाववामां समर्थ थाय नही, गलोला, गोफण, तथा खड्ग
...बधा शस्त्र तेओना उपकरणथी उपयोगी थायछे, ते विना थाय नही; तेम
पण शरीरोपकरण अवस्थारूप सामग्री थकी सर्व कार्य साधी शकेछे. चेत
कांई फेर नथी, चेतन सदासर्वदा सरखुंज छे.

४४ नास्तिकः—जगत सर्व ईश्वरकृत होवाथी सर्व पदार्थमां तथा सर्व जीवमां ई
...कला छे.

आस्तिकः—जो एम होय तो घट, पट, स्तंभ, कुंभ, शास्त्र तथा भाषा इत्यादिक
अनेक वस्तुनुं ज्ञान कोई एक जीवने छे, ने कोईएक जीवने नथी. जे जीवने ज्ञेय
पदार्थनुं ज्ञान छे, तेने तो हे मूढमति, तूं ईश्वरनो अंश मानेछे, त्यारे श्वान, शूकर,
मांजर, व्याघ्र, प्रमुख श्वापद चोपद जीवोने घटादिक पदार्थोनुं ज्ञान नथी
...तेओमां शुं ईश्वरनो अंश नथी? तमे तो जीवमात्रने ईश्वरनो अंश मानो
तेने बाध आवशे. जे ईश्वरनो अंश होय ते अज्ञानी केम होय? एथी जगत
कर्त्ता ईश्वर अविवेकी ठरेछे. अने सर्वमां ईश्वरनी कला छे, ए बोलवुं पण अ
छे; केमके जो एम होय तो सर्व सरखा ज्ञानी होवा जोये. तेम तो देखातुं
...माटे ए वात पण मिथ्या छे. तेम सर्व जीव ईश्वरना अंशरूप छे. एम जे तमे
...वो, ते पण अज्ञानी होवाने लीधे मानोछो माटे संभवे नही.

४५ नास्तिकः— ईश्वर भक्तवत्सल छे, अने स्वेच्छाथी जन्मधारण करेछे.

...स्तकः—जो एम होय, तो भक्तोने शरीर मूकतां वेदना केम थाय छे? अ
...भजनादिकना कोलाहल शब्दो सांभलीने भक्तने वत्सलभावकारी आयुष्यवृद्धि
...नथी करतो? मरणादिक क्रिया तो सर्व ईश्वरना स्वाधीन छे. ए आदि वि
तमारुं बोलवुं बधुं पोकल छे. जीव तो कर्मने आधीन छे. जेम के
...लीधेलो प्राणी तेनी लहेरने स्वाधीन थई जायछे, तेम जीवविषे पण जाणी
...जन्ममरण पण कर्माधीन छे; तेने जे धारण करे ते ईश्वर मानो! ते तो
...रीर कहेवाय. ईश्वर तो कर्मथी मुक्त होयछे, माटे तमारुं बोलवुं बधुं व्यर्थछे.
...६ नास्तिकः—आ पंच महाभूतोथी उत्पन्न थएलुं जे विश्व, ते सदा ...

समये पोताना कारण पच महाभूतोमा लीन थशे, ने पच महाभूतो लीन थशे

आस्तिक –जो एम होय तो ईश्वर जड मिश्रित थाय अने ते समन निर्मल ए बे अवस्थावालो कहेवाशे त्यारे केवल ज्योतिस्वरूपपणु क्यां गई जे पच महाभूतोथकी जगतनी उत्पत्ति थई कहोछो ते तो सदा शाश्वत छे आमां पृथ्वी, आप, तेज तथा वायु, ए चारे भूतो पोतपोतानी क्रिया करेछे, म के, वनस्पति अने जगम त्रसनी उत्पत्ति करेछे ते क्रियाविना थाय नही रीते तो जीवनी छ खान शाश्वत सदा काल छे, त्यारे प्रलय ते शानो जो एम कहेशो, के पच महाभूतो जगत विनिर्मित क्रिया करता नथी, त्यारे ते भूतद्रव्यरुप कथन मात्रज ठरशे अने हरेक वस्तु पोतपोताना गुणविना नही एवो नियम छे वली जो कहेशो के भूत तो अनत कालना छे त्यारे ससार पण अनत कालनो ठरशे तेनी उत्पत्ति तथा प्रलय केम कहेवाय? तो जेम छे तेम छे वली ईश्वर मनसा वाचा कर्मणा करि रहित छे, अने थी अनेक थाउं एवी मननी इछा थई त्यारे जगतनी उत्पत्ति करी ए बे नो परस्पर विरोध छे, केम के, प्रथम वाक्यप्रमाणे ईश्वर इछारहित ठरे छे, बीजा वाक्यमा इछासहित कह्यो छो, एवो पूर्वापर वचनविरोध होवाथी. बोलवु सर्वे असमीचीन छे

४७ नास्तिक – सर्वे वस्तुनो ईश्वर अधिष्ठान छे ईश्वरनी इछाथी कृत अकृत सर्वे थायछे

आस्तिक – जो एमछे तो घट ते पट केम थतो नथी? पण तेम थाय केमके, घटनु कारण मृत्तिकानु पिण्ड छे, तेमाथी घटज थायछे पण पटादि नथी थता तेमज पटनु कारण ततु छे, तेथकी पटज थायछे, पण क बीजा कार्यनी उत्पत्ति थायनही जो एम थतु न होय तो कारणथी थायछे, ए प्रवृत्ति मिथ्या थाय माटे ईश्वरना अधिष्ठितपणातले ईश्वरनी ? कृत तथा अकृत सर्वे थायछे ए तमारु कहेवु सर्वे व्यर्थ छे

४८ नास्तिक – जीवने जवातर थाय छे खरु, पण वेदनो छेद थतो नथी ॰ वेद ते स्त्री वेद न थाय, स्त्रीवेद ते पुरुषवेद न थाय, तेम स्त्री तथा पुरुष ते ॰ क वेद न थाय, अने नपुसकवेद ते पुरुष तथा स्त्री वेद न थाय एम जाणवु जो

आस्तिक –पुद्गलना परिणामनो नियम नथी एना पुन पुन रुपातर थया क

छे. मात्र अवस्तुपणुं पामता नथी, वस्तुपणे गमे ते रूपे थई जायछे. जेम भेंस ना शिंगमांथी केल थायछे; काशथकी सरडी थायछे, माखीना हिंगारथकी कद ळीनी नाजी थायछे. एवी रीते कर्मना परिणामे गत्यंतर थायछे. आगामिक भव विषे कायवंद पलटाईने ते नवा भवरूपे परिणमेछे. जेम सोनीना योगे सुव र्ण नाना प्रकारना आकाररूपे परिणामने पामेछे. तेम जीव कर्मना योगे नाना विध गतिओ पामेछे. ते तो रहु, आ भवमां पण एकसरखी स्थिति रहेती न थी. जेम के, राजा ते रंक थई जायछे. ने, रंक ते राजा बनी जायछे, सुखी ते दु. खी. तथा दुःखी ते सुखवान थई जायछे. इत्यादिक आ भवमां पण पर्याय पलटाई जायछे: तो भवांतरमां केम एकरूपे रहे? कर्मना बंध सादि छे, माटे जेवो कर्म नो उदय तेवा फलनी प्राप्ति थायछे, एविषे कोई नियम थई शके नही. गमे ते वेद बदली ने गमे ते वेद कर्मना योगे थायछे एम जाणवुं.

४९ नास्तिकः—एम कह्यु छे के ब्रह्माना मुखमांथी ब्राह्मणो उत्पन्न थया, भुज थकी क्षत्रिय थया, तथा जंघा थकी वैश्य थया, माटे ए त्रणे वर्ण उत्तम छे, अ ने पादथकी शूद्र उत्पन्न थया माटे अधम छे, एम जाणवुं.

आस्तिकः— ए वात संभवित नथी. जुवो के, उंबराना वृक्षमां पेड, डाल, तथा पत्रनेविषे सरखां फल लागेछे. ते सर्व फलोनुं रूप सरखुं होयछे; तथा ते ओमां रस पण सरखोज होयछे. तेओमां कोई प्रकारे उत्तम तथा अधमता क हेवाय नहीं तेमज ब्रह्माना शरीर थकी उत्पन्न थया जे चार वर्ण, ते सर्व चेतन रूप होवाथी सर्व जीव सरखा जाणवा. उत्तम मध्यम वगेरे सर्व लौकिक कार्य थकी कहेवायछे. पण चेतनपणे तो सर्व सरखा छे. एना उपर एक दृष्टांत कहुं छुं. चार वर्णना मनुष्य एक तलावने कांठे बेशीने पाणी पिये छे; तेथी कोई वट लतो नथी पण ते तलावमांथी पाणी भरीने पोतपोताना वासणोमां लीधा पछी हलका वर्णना वासणनुं पाणी उंचा वरणवालो माणस पीए तो वटले छे. फरी ते वर्णना भरेला पाणीना वासणो मांनुं पाणी ते तलावमा नाखीने पी तो कोई वटलतुं नथी तेनुं कारण शुं? माटे पाणीमां वटलवापणुं नथी. ने वा सण तो सर्वनां सरखा छे. माटे वटलवु ए मननी मानीता छे; अने एवी लोक म नांता छे. ज्या सुधी मननो मिथ्याभाव छे, त्यां सुधी भिन्न पणुं छे एम जाणवुं.

५० नास्तिकः— समदृष्टीने विषे मिथ्याभाव होतो नथी, तेम छतां ते भिन्न भाव केम राखेछे?

आस्तिक –लोक मर्यादा लोपवी नही ए नीति छे तेनो लोप करवो जे कार्यनी जगत निंदा करे ते कार्य करवो नही एवु श्रेष्ठोनु वचन छे तेनो लोप करवो नही तेथीज समदृष्टि पण तेवु आचरण करे छे पण मनथी म दृष्टिने काइ नथी

५१ नास्तिक – सर्व कार्यनो कर्ता ईश्वर छे, एम मानवु जोये के नही

आस्तिक – एम मानवु नही जोये ए वचन प्रलाप छे ईश्वरविषे होयज नही घट, पट, रुचि, सग्राम, खान, पान, दान, मान, स्नान क्रिया, विनय तथा व्यावच इत्यादिक सर्व पदार्थोना कारण काल, स्वभाव यत, पूर्वकृत कर्म, तथा पराक्रम ए पाच छे जेम के, तंतुना पुजमाथी पटनी उत्पत्ति थवानो जे समय ते काल समजवो, ततुना पुजने पटनी उत्पत्ति करवानी योग्यता ते स्वभाव जाणवो, ततुना पुजमाथी पटनी उत्पत्तिनु जे निमित्त पूर्व कर्म समजवु, अने ततुना पुजमाथी पटनी उत्पत्ति करवानो जे उद्यम ते पराक्रम जाणवो, ए पाचमाथी एक ओछु होय तो वस्तुनी उत्पत्ति थई शके ए पाचना समुदायथी घटपटादिक सर्व कार्योनी उत्पत्ति थायछे, एशुद्ध मत

५२ नास्तिक – जो कुछ होता है, सो अल्लाहुतालाके हुकमसे होता है किसीका किया कुछ होता नही, यही बात रास्त है

आस्तिक – जो ऐसे होवै, तो अल्लाहुतालाने पैदा किये हुये, इमामे औ हुसन, काफिरोंके हातसे कैसे मारे गये ? वे तो खुदाके प्यारे बदे थे, काफिरोने मारे, ये वडी अजायबकी बात है तिनकू बचानेके वास्ते कौवत था ? इमाम किसीके गुनेह्गारभी नही थे, वे क्यू मारे गये ? जो होता है, सो तकदीरसे होता है जो जैसा करता है, सो तैसा तामें अल्लाहुतालाका कुछ वास्ता नही है यही बात रास्त है

५३ नास्तिक – अल्लाहुतालाने इमामोका दिल देखनेके वास्ते आजाव

आस्तिक – आजाव दिये शिवाय तिनाके दिलकी वात खुदा नही था ! जो कहोगे की नही जाणताथा, तो खुदामें खुदापना क्या रहा ! सब जानता है, ऐसे तुमारे कुरानेशरीफमे कह्या है एसे होके भी मारनेकी दयानत जो काफरोने करीथी सो खुदा जानके भी कैसे चुप रहा सवास्ते ये बात भी गलत है

५४ नास्तिकः— आदमी मरगये बाद जीकूं फिरस्त लेजाते हैं ये बात तो
सच है की नही?

आस्तिकः— इस बातकूं कौन जूठ कहता है? लेकीन समजमें कुछ फरक है.
कहते हो की कीयामततक जीकूं एक ठिकानेमें रखते हैं, पीछे खुदाके पास
ले जाके इन्साफ करवाते हैं; ऐसे नही होवें है. लेकीन उसीवख्त जी अपनी त
जिसे अछा या बुरा फल पावता है. तुमजी सुख. दुःख, बेहेस्त औं दोज
तो मानते हो! सो जेसी जीने करनी करी होवें तेसी गति उसकु मलती है.

५५ नास्तिकः— अल्लाहुतालाने ऐसे फरमाया है की जो किसीकूं इजा देता है
मारने लायक है.

आस्तिकः— कबू माबाप छोकरेकूं इजा देते हैं, आ कबु छोकरा माबापकूं इजा
देता है; कबू पीर मुरिदकूं इजा देता है. औं कबू मुरिद पीरकूं इजा देता है; कबू
साविंदकूं इजा देता है, कबू खाविंद नोकरकूं इजा देताहै; ऐसे खुदाकी
जहांतक जी हैं, वे सब इजा देनेवाले होनेसे तो सब मारने लायक हो
खैर महिर कैसे रहेगी! औं रहम करने लायक कोई जी नही रहेगा और
खब काफरोंने इजा दी, तब तिनोंकूं कायके वास्ते इमामोंने मारे नही इस
जो होवें है सो तगदिरसें होवे एसे जानना चाहिये.

५६ नास्तिकः—मांसाआहारी पापिष्ट कहे छे. आ दुनीआमां जलचर, स्थलचर,
खेचर, प्रमुख जे नाना प्रकारना जीव छे, तेओने बंधक मारी नाखवा, अने
मांस भक्षण करवुं. एम अमने साहेबे फरमाव्युं छे, ते प्रमाणे करवामां
तथा पाप छे?

:—तमारा कह्या प्रमाणे जीवने मारवुं ए खुदानो हुकम छे, ते कोई
जोये नही. जो फेरवीए तो गुनेहगार ठरीए. एम निश्चय थायछे; त्यारे
वाघ अथवा सिंह प्रमुख मनुष्यनो आहार करनार जीव, तमने मारवा आ
थी करीने तमे केम नाशी जाओछो? अने ते प्राणीने नाना प्रकारना ह
वगैरेनी सहायता वडे केम मारवा तैयार थाओछो? अने जो ते जीव
हाथमां आवी जाए तो केम मारीनाखो छो? जेम खुदाए तमने जीव मा
फरमाव्युं छे तेम तेओने पण मनुष्य मारवाने फरमाव्युं छे! ते प्रमाण
वातुं कृत्य करेछे; तेओने मारवुं लायक नथी. जो तेओने मारवानुं त
क हीसतुं होय, तो जे जीवोने तमे मारोछो, तेओ

स्ते कोई बीजा प्राणीए तमने मारवु पण नालायक नथी, लायकज ठे माटे वाघ वगेरे प्राणीओ जीव घातक होवाथी मारवा योग्य ठे तेम तमे पण व घातक होवाथी मारवा योग्य ठो एम तमारे कबूल करवु जोइशे जो कबूल नही करशो, तो खुदाना गुनेहगार ठरशो माटे हे महामदीयन मुसलमीनो वगेरे, जीव मारवामां खुदानोहुकम होयज नही जो एम होय तो खुदा रहम रे खुदा तो रहमदिल ठे, एवु तमारा रसूलिलाए कुरानेशरीफमां फरमाव्यु ठे वाध आवशे ए उपरथी एवु जणाय ठे के, कोई एक पुरुषने काई पे अचानक मांसनो आहार मली गयाथी, तेने तेनो स्वाद लागो तेथी, व्यसन गयुं, ने पठी लोकापवादसारु खुदाए फरमाव्यु ठे, एम कहीने बचारा खुदाने ठेरव्यो जणाय ठे तेमा केटलो गुनाह ठे ! एनो विचारतो करो ! ते प्राणीओने वाने खुदा फरमावे त्यारे बीजी अन्नादिक वस्तुओ पेदा शावास्ते करे ? ए साफ जणायठे के, अन्नादिक वस्तु खावायोग्य ठे, पण मांस खावायोग्य नथी म ठतां जे जीभना स्वादने अर्थे खायठे ते राक्षसतुल्य जाणवा

वली मुसलमीन प्रमुखने बीजु युक्तिथी समजावे ठे के, तमारा किताबोमां बने पाक वस्तु कहीठे, अने पिशाबने नापाक वस्तु कहीठे, पाक वस्तुथी जे दाश थायठे, ते पाक कहेवायठे, अने नापाक वस्तुथी जे पेदाश थायठे ते कहेवायठे जेम के, अन्न वगेरे पदार्थों जे पाणी थी पेदा थायठे, ते पाक ठे, पिशाबथी जे कीटकादिक पेदा थायठे, ते नापाक ठे एवु तमे पण मानो ठो तेम चालता नथी केमके मांसाहार करो ठो जुओके प्राणिमात्र पिशाबनी ठे ते पिशाब ज्यारे नापाक त्यारे तेथी पेदा थयेला प्राणीओ केम पाक होय ओना मांसने तमे पाक मानो ठो, ए केटली बेवकूफी ठे वारु ! जो मांसने नशो तो पिशाबने नापाक कहेवाशे नही, ने जो पिशाबने नापाक मानशो तो ने पाक मानशो नही जेवु कारण तेवो कार्य एवो दुनीयामा नियम ठे ज्यारे शाब जेवो मांस ठे, त्यारे तेनो आहार कर्याथी दोजकमा गयाविना केम एनो पाको विचार करीने मांस भक्षण मूकी द्यो, अने पाक पाणीनी पेदाश फल, तथा फूल वगेरे अनेक स्वादिष्ट पदार्थोनो आहार करोने ! परतु तमे नही केमके एतो जन्मनी आदत पडीगई ठे कह्यु ठे के, तहाड जाए रुए ने त जाय मुए, तेम तमारी आदत हमणा जनार नथी, पण याद राखजो के मतने दहाडे जवाब देवो पडशे त्यारे आंखो, फाटीने पडोला थशे हो !

स्ते कोई बीजा प्राणीए तमने मारवुं पण नालायक नथी, लायकज छे माटे
वाघ वगैरे प्राणीओ जीव घातक होवाथी मारवा योग्य छे तेम तमे पण
व घातक होवाथी मारवा योग्य छो एम तमारे कबूल करवु जोइशे जो क
नही करशो, तो खुदाना गुनेहगार ठरशो माटे हे महामदीयन मुसलमीनो क
जीव मारवामा खुदानोहुकम होयज नही जो एम होय तो खुदा रहम विनानो
रे खुदा तो रहमदिल छे, एवु तमारा रसूलिल्लाए कुरानेशरीफमां फरमाव्यु छे
वाध आवशे ए उपरथी एवु जणाय छे के, कोई एक पुरुषने कोई कारणने
धे अचानक मासनो आहार मली गयाथी, तेने तेनो स्वाद लागो तेथी, व्यसन प
गयुं, ने पछी लोकापवादसारु खुदाए फरमाव्यु छे, एम कहीने बचारा खुदाने हि
ठेरव्यो जणाय छे तेमा केटलो गुनाह छे! एनो विचारतो करो! ते प्राणीओने
वाने खुदा फरमावे त्यारे बीजी अन्नादिक वस्तुओ पेदा शावास्ते करे? ए
साफ जणायछे के, अन्नादिक वस्तु खावायोग्य छे, पण मास खावायोग्य नथी
म छतां जे जीभना स्वादने अर्थे खायछे ते राक्षसतुल्य जाणवा

वली मुसलमीन प्रमुखने बीजु युक्तिथी समजावे छे के, तमारा किताबोमां
बने पाक वस्तु कहीछे, अने पिशाबने नापाक वस्तु कहीछे, पाक वस्तुथी जे
दाश थायछे, ते पाक कहेवायछे, अने नापाक वस्तुथी जे पेदाश थायछे ते
कहेवायछे जेम के, अन्न वगैरे पदार्थो जे पाणी थी पेदा थायछे, ते पाक छे,
पिशाबथी जे कीटकादिक पेदा थायछे, ते नापाक छे एवु तमे पण मानो छो
तेम चालता नथी केमके मांसाहार करो छो जुओके प्राणिमात्र पिशाबनी
छे ते पिशाब ज्यारे नापाक त्यारे तेथी पेदा थयेला प्राणीओ केम पाक होय!
ओना मासने तमे पाक मानो छो, ए केटली बेवकूफी छे वारु! जो मांसने पाक
नशो तो पिशाबने नापाक कहेवाशे नही, ने जो पिशाबने नापाक मानशो तो
ने पाक मानशे नही जेवु कारण तेवो कार्य एवो दुनीयामा नियम छे ज्यारे
शाब जेवो मास छे, त्यारे तेनो आहार करवाथी दोजकमा गयाविना केम
एनो पाको विचार करीने मास भक्षण मूकी द्यो, अने पाक पाणीनी पेदाश
फल, तथा फूल वगैरे अनेक स्वादिष्ट पदार्थोनो आहार करोने! परतु तमे मा
नही केमके एतो जन्मनी आदत पडीगई छे कह्यु छे के, तहाड जाए स्रए ने
त जाय मुए, तेम तमारी आदत हमणा जनार नथी, पण याद राखजो के कि
मतने दहाडे जवाब देवो पडशे त्यारे आंखो, फाटीने पडोला थशे हो!

७३ नास्तिकः— याज्ञिक नास्तिको प्रश्न करे छे के, यज्ञनेविषे होम करवानारु जीवने मारवुं योग्य छे. केमके ए कृत्य शास्त्रविहित छे; माटे एमां पाप नथी; पण पुण्य छे. यज्ञनेअर्थे जे जीव मरे छे. ते स्वर्गमां जायछे; माटे ते केम न करवुं ?

आस्तिकः— यज्ञादिकने अर्थे जे जीवनी हिंसा करवी ते योग्य नथी. केमके, हिंसानो परिणाम ते पुण्य होयज नही; किंतु पाप होयछे. एवो नियम छे. जे शास्त्रोमां पशु होमवानुं कह्यु छे, ते शास्त्र नही पण कुशास्त्र छे. अने तेनी रचना करनार मनुष्य नही पण मनुष्यरूपे राक्षस छे; एम निश्चय जाणवुं. जे पापने पुण्य माने तेना करतां बीजो पापी कोण ! यज्ञमां होमायलुं जीव जो स्वर्गमां जतु होय तो यज्ञ करनारा तथा करावनारा पोते होमाईने केम स्वर्गमां जता नथी ! पोते एम करता नथी तेथीज जणाय छे के, ए कल्पित वचन छे; यज्ञमां पश्वादिकनो होम शिव, ब्रह्मा, अने विष्णु आदिक देवताओने अर्थे करेछे. अने तेनो बली लोग ते देवताओ लियेछे. ए वात जो साची होय, तो ते देवताओ मांसाहारी ठरशे. देवताओने जो मांस भक्षण करवानी आदत होय, तो तेओ मनुष्यना हाथे शा माटे लीये ! शुं तेओ पोते आहारने अर्थे मांस मेलवी शकता नथी ? तेओ तो महा सामर्थ्यवान कहेवायछे. ते सामर्थ्य केम फोरवता नथी ! जे जीवना मांसनो बलिदान तेओने आपेछे. ते जीवोनी उत्पत्ति पण तेओ पोतेज करेछे; एम तमे मानो छो. पोते जीवोने उत्पन्न करी तेने मनुष्यना हाथे मगावीने तेनो बलिदान लेवो ए शुं देवताओने योग्य छे ! एम तो कोई साधारण माणस पण करे नही. ते उत्तम देवताओने केम संभवे ? जो ते देवताओने मांस भक्षण करवानी इच्छा होय. तो पोताने माटे जुदीज जातना कोई जीव विनाना एवाज स्वादना पदार्थनी उत्पत्ति करी, ते पदार्थनो आहार करवाने शुं हरकत छे ? माटे ए वात मनकल्पित छे, उत्तम देवताओनेविषे एवी कल्पना करवी योग्य नथी. [illegible] ए वात तमारा कह्या प्रमाणे साची होय, तो ते उत्तम देव नही, पण अधम कहेवाय. याज्ञिक लोको होमादिकने अर्थे जीवघात करी, तेनो बलिदान देवा [illegible] पोताने भक्त समजे छे. पण एहवुं भक्तनुं लक्षण होय नही; [illegible] कारण शुद्ध होयछे. तेमां मलिन भावना उत्पन्न थायज नही जो मलिन भावावाळाने भक्त कहिये, तो अभक्त कोने कहीशुं ! एवं हिंसाकारक [illegible] ने भक्त मानवो नही, पण अभक्त मानवो. [illegible] मां लेशमात्र संशय आणवो नही

५८ नास्तिक — कोइ वेदधर्मी प्रश्न करे छे के, तमारा जैनमतमा जीवना स्वरूपा दिकनेविषे केवीरीते वर्णन करेलुछे ? तेने उत्तर दिये छे के, सर्वज्ञ केवलीए आवी रीते कह्यु छे —सर्व लोकनेविषे धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय, काल, जीवा स्तिकाय तथा पुद्गलास्तिकाय ए छ द्रव्य भरपूर छे ए छए द्रव्य पोतपोताना गुण तथा पर्याये करी पूर्ण छे. सदा भावरूप छे जगतनी स्थिति जेम वर्त्तमान कालमा छे, ते मज भूत कालमा हती, अने भविष्य कालमा पण एरी रीतेज जाणवी ते मध्ये जीव अने पुद्गल अनत काल लोलुपभूत छे एटले जेम क्षीर तथा पाणी अने मृत्तिका तथा धातुनु मिश्रण थयाथी एक रूप बनी जाय छे तेम जीव तथा पु द्गलोपण एकरूपे रहे छे समय समयने विषे नवा कर्म जीवबाधे छे अने समय स मयने विषे पूर्व कर्म निर्जरीने तूटी पण जाय छे कर्मोनी उत्पत्ति तथा नाशमां ईश्वरनु काइ कारण पणु नथी ईश्वर तो अकर्त्ता छे, तेने विषे कर्त्ता पणु कल्पाय नही माटे ईश्वर कोईनु कारण नथी काल, स्वभाव, नियत, पूर्व कर्म, तथा पु रुषाकार ए पाच कारणो उत्पत्तिना कह्या छे एणे करीनेज पुण्य पाप जन्य स्व र्ग नरकने विषे गमनागमन थाय छे अने दण्डकमा जे नरक, तिर्यच, मनुष्य त था देवतानी चोवीश गतिओ कही छे ते प्रमाणे भवपरपराने पामेछे अने पो ताना उपार्जेला शुभाशुभ कर्म भोगवे छे ते ते भवने विषे ज्ञानावरणादिक आ ठ कर्मने अनुसारे वर्त्ते छे जेम माटीनी भरेली तूबी जलमा नाखीए तो ते मा टीना भारने लीधे डूबी जाय छे पछी जेम जेम ते माटी, तेमाथी ओछी थती जा य तेम तेम ते तुबी उपर आवती जाय छे ज्यारे बधी माटी नीकली जाय त्यारे पा णीनी उपर तरती रहे छे पण पाणीथी उपर जाय नही तेवी रीते जीव पाप कर्मथी लेपायो थको अधोगतिने पामे छे पछी जेम जेम ते कर्मनी न्यूनता थती जाय तेम तेम ते ऊर्ध्व गतिने पामतो जाय छे, ज्यारे बधा कर्मानो नाश थ ई जाय छे त्यारे ते जीव लोकाग्रने विषे प्राप्त थाय छे, पण तेनी उपर अलोक मा गमन करतो नथी, जेवी रीते तुबी जलना योगे उची आवे छे, तेम जीव ध र्मास्तिकायना योगे लोकात रूप ऊर्ध्व गति पामेछे

वादी आशका करे छे के, मनुष्य शाना बलथी सात राज लोक सुधी ऊर्ध्व ग मन करे छे ? जीव तो चौदमे गुणठाणे अयोगी थाय छे एनो उत्तर दिये छे के, जेम मनुष्यथी जे बाण छूटे छे ते पूर्व जोरना बलथी चालेछे तेने वचमा बीजो को ई चलावनारो जोई तो नथी ज्यारे धनुष्यमाथी बाण छूटे छे, ते क्षणने विषेज नि

तेकाणे पहोंतो एम समजवुं. ए विषय उपर बीजा पण त्रण दृष्टांतो छे. चक्र, अग्निनो धूमाडो, तथा एरंडीओ ए चार दृष्टांत वडे जाणी लेवुं.

५९ नास्तिक.—कर्मक्षय थया पछी जीव अलोकनेविषे केम जतो नथी! जो अनो वखमां तेने कोण रोकनारो छे?

आस्तिक.—चलन शक्तिने सहाय आपनारुं जे धर्मास्तिकाय द्रव्य, तेवुं त्यां नथी. धर्मास्तिकाय द्रव्य लोक प्रमाणेज छे. ते थकी अधिक नथी. तेथी अलोकमां जवाने जीव तथा पुद्गलनी गति थती नथी.

६० नास्तिक.—कर्मोनो क्षय करीने सिद्धावस्थाने पामेलां जे सिद्ध जीवो ते समश्रेणीए जायछे. पण स्थानांतरनेविषे जता नथी तेनुं कारण शुं?

आस्तिक.—ते समयनेविषे कोई प्रेरक नथी प्रेरणाविना चक्रभ्रमण थाय नथी सिद्धना जीवो समश्रेणीए सिद्धसिला उपर जायछे.

६१ नास्तिक.—सिद्धने शरीरनो अभाव थायछे. त्यारे अवगाहना केम कही छे?

आस्तिक.—जेम टारानुं वासण बनाववाने अर्थे प्रथम तेना जेवो मेणनो आकार करवो पडेछे. तेमां ते रस ओत्याथी ते धातुनो तेवो आकार थायछे. ते मेणथी जुदुं कर्या पछी पण मेणनो आकार थायछे. कदाच मेण गाली नाखो तो पण ते आकारपणुं जतुं नथी, केमके वासणनो आकार जे कायम छे ते पण ते मेणना आकार जेवोज छे, तेथी आकारपणुं कायम रहेछे. जीव जे शरीराकारे थयोछे. ते शरीरनो अभाव थया पछी पण सिद्ध पुरुष आत्मा ते शरीरनी अवगाहनारूपे रहेछे. एटले आठरवाने अंते जेवो नि शरीरनो आकार रहेछे. तेवोज जीवना प्रदेशोनो अरूपी आकार रहेछे.

६२ नास्तिक.—जेम जलमां जल मले ते एकरूपे थई जायछे. भिन्नता देखाती नथी. तेम अनंत सिद्ध एकरूपे थई रहेछे के चेतन द्रव्यपणुं जुदुं जुदुं छे.

आस्तिक.—ज्यारे जलना बिंदुओ मलीने एक जलनो पिंड थाय; त्यारे एक जल कहेवायछे. पण ज्यारे जलना बिंदु जुदा जुदा होय त्यारे बिंदु कहेवाय छे. एक जल कहेवाय नही. तेम सिद्ध पणे सर्व एकज छे; परंतु चेतन द्रव्यो सर्व भिन्न भिन्न छे ते उपर दृष्टांत; जेम अनेक शीशीओनी उत्पन्न थएला अनेक मोतीओ जुदा जुदा होयछे. तेओमाना केटलाएक लईने एक मोटो ढगलो करिये ने पछी तेओ विषे विचार करिये के ए ढगलामां एकता अनेकता छे? तो तरत जणाशे के ते मोतीओ उज्वलता गुणरूपे सर्वे एक छे. पण

आकाररूपे सर्व जुदा छे तेम सिद्धो सर्व सिद्धतारूपे तो एक छे पण चेतन द्रव्य रूपे जुदा छे, एविषे धान्यना पुंज वगेरे घणा दृष्टातो छे तेथी विचारी लेवु वळी सर्व सिद्धोनु सिद्धरूपपणु एक सरखु होवाथी जाति वाचकपणे तेओ एकज कहेवाय, पण द्रव्यपणे अनता कहेवायछे, माटेज जगतमा एवी वदता छे के, "प्रभु एकमा अनेक छे, अने अनेकमा एक छे" कोई सिद्धमा मोटा नाहनापणु नथी, सर्व समान छे. मोटामा मोटापणु तेनी पोतानी अपेक्षा ए नथी थतु पण बीजा नाहनानी अपेक्षा ए थायछे, मोटो पोताना स्वरूपे करी शु मोटापणु पामेछे, जो मोटो कहेशु तो कोई काळे नाहानो थवानो सभव थशे! अने नहानो थयाथी स्वरूपमा अपूर्णता थशे, माटे सिद्ध बधा सरखा छे एम जाणवु अने सिद्ध जनना कर्मना अश सर्व क्षय थई गयाथी पुनरपि जगतमा आगमन थतु नथी जेम भुजेला अनाजना दाणाने पृथवीमा वावीए तो ते उगे नही, तेम सिद्ध पणपाछा ससारीजीव थाय नही केमके ससारमा आववु कर्म विना थतु नथी

६३ नास्तिक – ईश्वर पृथ्वीनो भार उतारवाने अर्थे अवतार धारण करेछे ए वात सत्य छे के मिथ्या?

आस्तिक – ईश्वरने तो कोई शत्रु मित्र भाव नथी तेम छता दानवने मारवावाळु तथा देवताओने निर्भय सुखी करवावाळु अवतार धारण करे तो दानव शत्रु अने देवता मित्र ठर्या के नही! जेने शत्रु मित्र भाव होय तो ते ईश्वर शानो! अने दानवोने प्रथम उत्पन्न शावाळु कर्या के जेओने मारवावाळु पोताने माताना उदरमा आवी नाना प्रकारनी वेदनाओ सहन करी सग्रामादिक आपत्ति वेठवी पडी! वळी दानव अने देवताओनो ईश्वर तो एकज छे, सर्वमा तेज ईश्वरनी कळा छे तेम छता दानवनी उत्पत्ति करी तेथी ईश्वरमा अज्ञानपणु आवशे ससारमा त्रण प्रकारना जीव होय छे एक धर्मी, बीजा पापी, त्रीजा महापापी जे कोईने मारे नही ते धर्मी कहेवायछे जे बीजा जीवने मारे ते पापी कहेवायछे ने जे पोताना जीवनो घात करे ते महापापी कहेवायछे ईश्वरे देव तथा दानव वगेरेनी उत्पत्ति करी तेमा पोते अशरूपे प्रवेश कर्यो छतां तेओने मार्याथी आत्मघाती ठरशे ने तेम ठर्याथी महापापी कहेवाशे

६४ नास्तिक –स्नाने करीने शुद्ध थवु ए मुक्तिनु अग छे

आस्तिक –पेटमा रोग होय ने शरीरनी बाहेर लेप लगाडीए तो ते रोग कदी मटे नही तेम आत्माना कर्म विकार ते शरीर शुचियी कोई काळे जाय नही ए

कहुं छुं. जेम कोई मोटी हवेलीमां बालक मूतर्यो होय ते शुद्ध करवा वगरनी होय तेटलीज धोवी जाइये. तेम शरीररूप हवेली कर्मे करी थई होय तेटलीज तपस्याये करी शुद्ध करवी. पण आरया शरीरने स्नान, सव वस्त्रादिक, तथा सुगंध्यादिक करवानुं कांई काम नथी; स्नान तो सोळ प्रथम शृंगार छे. ते सर्व शृंगारनो त्याग करे त्यारे ब्रह्मचारी कहेवाय. अर्थे मुनिने ब्रह्मचर्य व्रत पालवो कह्यो तेथी पण स्नान करवुं [illegible] थाय छे.

:—यह दुनिया सब खुदाने पैदा करी है.

—यह दुनिया सब खुदाकी करी होवे तो जो खुदाका बंदा [illegible] बंदगी करे, कुरान वांचे, नमाज करे, औ रोजा रखे, तिसी [illegible] उसकी आल औलाद औ पैसा वगेरा मिलना चाहिये; औ हिंदु [illegible] सब फकीरके माफक होना चाहिये. तैसे तो नही होता है. दूसरे [illegible] वाले आंखोके सामने मोजूद है. इस वास्ते ये बात [illegible] है सो सब तकदीरसें होवे है.

नास्तिकः— आ संसार रामे उत्पन्न कर्यो छे.

:— जो आ जगत रामनुं उपजावेलुं होय, तो जेओ हमेश [illegible] पुराण वांचेछे. वंदना करेछे. तथा एकादशी आदिक [illegible] सर्व इत्यादिक संपत्ति मलवी जोये. बीजाओने [illegible] आवतुं नथी; बीजा मुसलमानादिक पण [illegible] छे. तेथी वधुं कर्माधीन छे.

नास्तिकः— अंगदान (कन्यादान) [illegible] पुण्य [illegible] मैथुन क्रियाना [illegible] पामे छे. [illegible]

:—नाई, ताग जेवां [illegible] नाई, मैथुन क्रिया [illegible] क्रिया करेछे; [illegible] मैथुन [illegible] तेओ नापाक करेछे. [illegible] मैथुननो त्याग करेछे. [illegible] त्याग करवो. [illegible]

इति श्री आस्तिक नास्तिकनो संवाद [illegible]

आकाररूपे सर्व जुदा छे तेम सिद्धो सर्व सिद्धतारूपे तो एक छे पण चेतन द्रव्य रूपे जुदा छे. एविषे धान्यना पुंज वगेरे घणा दृष्टांतो छे तेथी विचारी लेवु वली सर्व सिद्धोनु सिद्धरूपपणु एक सरखु होवाथी जाति वाचकपणे तेओ एकज कहेवाय, पण द्रव्यपणे अनंता कहेवायछे. माटेज जगतमां एवी वदंता छे के, "प्रभु एकमां अनेक छे अने अनेकमां एक छे" कोई सिद्धमां मोटा नाहनापणु नथी, सर्व समान छे. मोटामां मोटापणु तेनी पोतानी अपेक्षाए नथी थतु पण बीजा नाहनानी अपेक्षाए थायछे, मोटो पोताना स्वरूपे करी शु मोटापणुं पामेछे. जो मोटो कहेशु तो कोई काले नाहानो थवानो संभव थशे ! अने नहाना थवाथी स्वरूपमां अपूर्णता थशे. माटे सिद्ध बधा सरखा छे एम जाणवु अने सिद्ध जनना कर्मना अंश सर्व क्षय थई गयाथी पुनरपि जगतमां आगमन थतु नथी जेम भुंजेला अनाजना दाणाने पृथ्वीमां वावीए तो ते उगे नहीं, तेम सिद्ध पणपाछा संसारी जीव थाय नहीं केमके संसारमां आववु कर्म विना थतु नथी

६३ नास्तिक – ईश्वर पृथ्वीना भार उतारवाने अर्थे अवतार धारण करेछे ए वात सत्य छे के मिथ्या ?

आस्तिक – ईश्वरने तो कांई शत्रु मित्र भाव नथी तेम छतां दानवने मारवामाटे तथा देवताओने निर्भय सुखी करवामाटे अवतार धारण करे तो दानव शत्रु अने देवता मित्र ठर्या के नहीं ! जेने शत्रु मित्र भाव होय तो ते ईश्वर नथी ! अने दानवोने प्रथम उत्पन्न शामाटे कर्या के जेओने मारवामाटे पोताने माताना उदरमां आवी नाना प्रकारनी वेदनाओ सहन करी सांसारिक आपत्ति भरवी पडी ! वली दानव अने देवताओना ईश्वर तो एकज छे, सर्वमां तत्व ईश्वरनी सत्ता छे तेम छतां दानवनी उत्पत्ति करी तेथी ईश्वरमां अज्ञानपणु आवशे संसारमां त्रण प्रकारना जीव होय छे एक धर्मी, बीजा पापी त्रीजा महापापी जे कोईने मारे नहीं ते धर्मी कहेवायछे जे बीजा जीवने मारे ते पापी कहेवायछे अने जे पोताना जीवनो घात करे ते महापापी कहेवायछे. ईश्वर देव तथा दानव वगेरेनी उत्पत्ति करी तेमां पोते अंशरूपे प्रवेश कर्या अने तेओने मारवाथी आत्मघाती ठर्या ने तेम थवाथी महापापी कहेवाशे

६४ नास्तिक – स्नान करीने शुद्ध थवु ए मुक्तिनु अंग छे

आस्तिक – जेमना रोग होय ने शरीरनी बाहेर लेप लगाडीए तो ते रोग मटे नहीं तेम आत्माना कर्म विकार ते शरीर शुचियी कांई नाश जाय नहीं.

दृष्टांत कहुं छुं. जेम कोई मोटी हवेलीमां बालक मूतस्यो होय ते शुद्ध करवा जेटली भूमि बगडी होय तेटलीज धोवी जाइये. तेम शरीररूप हवेली कर्मे करी थई होय तेटलीज तपसाये करी शुद्ध करवी. पण आवा शरीरने स्नान, सह वस्त्रादिक, तथा सुगंध्यादिक करवानुं कांई काम नथी; स्नान तो सोल प्रथम शृंगार छे. ते सर्व शृगारनो त्याग करे त्यारे ब्रह्मचारी कहेवाय. निर्जराने अर्थे मुनिने ब्रह्मचर्य व्रत पालवो कह्यो तेथी पण स्नान करवुं एवुं सिद्ध थाय छे.

६७ नास्तिक—यह दुनिया सब खुदाने पैदा करी है.

आस्तिक.—यह दुनिया सब खुदाकी करी होवे तो जो खुदाका बंदा हरवखत बंदगी करे, कुरान बांचे, नमाज करे, औ रोजा रखे, तिसीकुं दुनीयांकी जैसेकी आल औलाद औ पैसा वगैरा मिलना चाहिये, औ हिंदु व सब फकीरके माफक होना चाहिये. तैसे तो नही होता है. दूसरे भी अ मत्तीनत वाले आंखोके सामने मौजूद है. इस वास्ते ये बात रास्त नही हैं जो होवे है सो सब तकदीरसे होवे है.

६८ नास्तिक — आ संसार रामे उत्पन्न कर्यो छे.

आस्तिक — जो आ जगत रामनुं उपजावेलुं होय. तो जेओ हमेश रामनी भ क्ति करेछे. पुराण वांचेछे. वंदना करेछे. तथा एकादशी आदिक व्रत राखेछे तेओने सर्व इत्यादिक संपत्ति मलवी जोये. बीजाओने विपत्ति होवी जोये. ते तो लोकमां आवतुं नथी. बीजा मुसलमानादिक पण महा संपत्तिवान दीठा आवे छे. तेथी बधुं कर्माधीन छे.

६९ नास्तिक — अगदान (कन्यादान) दीधायी पुण्य थाय छे. केमके स्त्रीपु रुषीमली मैथुन क्रियाना सुखने पामे छे. तेनुं फल दानदेनारने थायछे

आस्तिक.—भाई, तारा जेवो पूर्वपक्षी तो एके मल्यो नथी तें तो आडो आक पण भाई, मैथुन क्रिया तो सर्व थकी अशुद्ध छे, यवन लोको पण इमाम इबादतनी क्रिया करेछे; त्यारे मैथुन सेव्याना वस्त्र पहेरीने करता नथी केमके ते वखत तेओ नापाक कहेछे. तेमज हिंदुओ देवपूजामां. व्रतने दिवसे तथा तीर्थयात्रामां मैथुननो त्याग करेछे जे मुमुक्षु (मुक्तिनी इच्छा करतो होय) तेणे प्रथम मैथुननो त्याग करवो. ए कृत्य नरकनो हेतु होवाथी सर्वथा निंदनीक छे

इति श्री आस्तिक नास्तिकनो संवाद संक्षिप्त रूपे समाप्त.

॥ ॐ श्री जिनाय नमः ॥

अथ श्रीयशोविजयजी उपाध्यायकृत सम्यक्तना सडसठ बोलनी सज्झाय प्रारंभ ॥

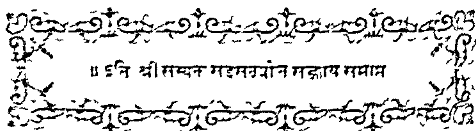
॥ दोहा ॥ ॥ सुकृत वल्लिकादंबिनी । समरी सरसति मात ॥ समकित सडसठ बोलनी । कहिशुं मधुरी वात ॥ १ ॥ समकित दायक गुरुतणो । पच्चुवयार न थाय ॥ भव कोडाकोडे करी । करता सर्व उपाय ॥ २ ॥ दानादिक किरिया न दिये । समकित विण शिवशर्म ॥ तेमाटे समकित वडुं । जाणो प्रवचन मर्म ॥ ३ ॥ दर्शन मोह विनाशथी । जे निर्मल गुणठाण ॥ ते निश्चय समकित कह्यो । तेहना ए अहिठाण ॥ ४ ॥ ॥ ढाल ॥ देऽ देऽ दरसण आपणूं, एदेशी ॥ ॥ चउ सद्दहणा तिलिंग छे । दशविध विनय विचारोरे ॥ त्रिण शुद्धि पण दूषण । आठ प्रभाविक धारोरे ॥ ५ ॥ त्रूटक ॥ प्रभाविक अड पंच भूषण । पंच लक्षण जाणियें ॥ षट् जयणा षट् आगार भावन । छविहा मन आणिये ॥ ५ ॥ षट ठाण समकित तणा सडसठ । भेद एह उदार ए ॥ एहनो तत्व विचार करता । लहीजे भवपार ए ॥ ६ ॥ ढाल ॥ चहु विह सद्दहणा तिहां । जीवादिक परमठोरे ॥ प्रवचनमां जे भाविया । लीजे तेनो अठोरे ॥ ७ ॥ त्रूटक ॥ तेहनो अर्थ विचार करिये । प्रथम सद्दहणा खरी ॥ बीजी सद्दहणा तेहना जे । जाण मुनिगुण जवहरी ॥ संवेग रंग तरंग झीले । मार्ग शुद्ध कहे बुधा ॥ तेहनी सेवा कीजिये जिम । पीजिये समता सुधा ॥ ८ ॥ ढाल ॥ समकित जेणे ग्रही वमिक । निन्हव ने अहछंदारे ॥ पासछाने कुशीलिया ते । वेषविडंबक मंदारे ॥ ९ ॥ त्रूटक ॥ मंदा अनाणी दूर छंडो । त्रीजी सद्दहणा ग्रही ॥ परदर्शनीनो संग तजिये । चोथी सद्दहणा कही ॥ हीणातणो जे संग न तजे । तेहनो गुण नवि रहे ॥ ज्यूं जलधि जलमां भल्यूं गंगा । नीर लूणपणूं लहे ॥ १० ॥ ॥ ढाल ॥ कपूर होवे अति उजलूं रे, एदेशी ॥ ॥ त्रण लिंग समकित तणारे । पहिलो श्रुतअभिलाष ॥ जेहथि श्रोता रस लहेरे । जेवो साकर द्राखरे । प्राणी धरिये समकित रंग । जिम लहिये सुख अभंग रे । प्राणी. टेक ॥ ११ ॥ तरुण सुखी स्त्री परिवर्योरे चतुर सुणे सुरगीत ॥ तेहथि रागे अति घणो रे । धर्म सुण्यानी रीत रे । प्राणी० ॥ १२ ॥ भूख्यो अटवी उतर्यो रे । जिम द्विज घेवर चंग ॥ इछे तिम जे धर्मने रे । तेहिज बीजूं लिंग रे । प्राणी० ॥ १३ ॥ वैयावच्च गुरु देवनु

रे । त्रीजुं लिंग उदार ॥ विद्या साधक तणि परे रे । आलस नविय लगार रे । प्राणी० ॥१४॥ ॥ढाल॥ प्रथम गोवालातणे नवेजी, ए देशी॥ ॥अरिहंत ते जिन विचरता जी ॥ कर्म खपी हुआ सिद्ध ॥ चेइय जिण पडिमा कही जी । सूत्र सिद्धांत प्रसिद्ध । चतुर नर, समजो विनय प्रकार । जिम लहिये समकित सार। चतुर० ॥ १५ ॥ धर्म खिमादिक नाखेओ जी। साधु तेहना गेह॥ आचारय आचारना जी । दायक नायक जेह । चतुर० ॥ १६ ॥ उपाध्याय ते शिष्यने जी। सूत्र नणावण हार ॥ प्रवचन संघ वखाणिये जी । दरसण समकित सार । चतुर० ॥ १७ ॥ नगति वाह्य प्रतिपत्तिथी जी । हृदय प्रेम बहुमान ॥ गुण थुति अवगुण ढांकवा जी। आशातननी हाण । चतुर० ॥ १८ ॥ पांच नेद ए दश तणो जी। विनय करे अनुकूल ॥ सींचे तेह सुधा रसे जी। धर्म वृक्षनूं मूल। चतुर०॥ ॥१९॥ ढाल॥ ॥धोबीडा तू धोए मननूं धोतीयू रे॥ ॥एदेशी॥ ॥त्रण शुद्धि समकिततणी रे । तिहाँ पहिली मन शुद्धि रे ॥ श्री जिनने जिनमत विना रे । जूठ सकल ए बुद्धि रे॥ चतुर विचारो चित्तमां रे । टेक ॥ २० ॥ जिन नगतें जे नवि थयुं रे । तेवीजाथि नवि थाय रे॥ एवुं जे मुख नाखिये रे। ते वचन शुद्धि कहिवाय रे । चतुर० ॥ २१॥छेद्यो नेद्यो वेदना रे । जे सहतो अनेक प्रकाररे ॥जिण विण पर सुर नवि नमे रे । तेहनी काया शुद्ध उदाररे । चतुर० ॥२२॥ ॥ढाल॥ मुनि जन मारगनी, ए देशी ॥ ॥ समकित दूषण परिहरो । तेमां पहिली छे शंका रे ॥ ते जिन वचनमां मत करो ॥ जेहने समनृप रंका रे । समकित दूषण परि हरो ॥ टेक ॥ २३॥ कंखा कुमतनी वांछना । वीजूं दूषण तजिये ॥पामी सुरतरु परगडो । किमवाऊल नजिये ॥ समकित०॥ २४ ॥ संशय धर्मना फलतणो । विति गिछा नामे ॥ त्रीजूं दूषण परिहरो । निज शुन्न परिणामे ॥ समकित० ॥ २५ ॥ मिथ्यामति गुण वर्णनो । टालो चोथो दोष॥ उन्मारगि थुणता हुवे । उनमारग पोष ॥ समकित० ॥ २६ ॥ पांचमो दोष मिथ्यामती । परिचय नवि कीजे ॥ इम शुन्न मति अरविंदनी । नली वासना लीजे ॥ समकित० ॥ २७ ॥ ॥ ढाल ॥ नोंजिटा हुंगारे विषय न राचीये, ए देशी ॥ आठ प्रनाविक प्रवचनना कह्या । पावयणी धुरि जाण ॥ वर्तमान श्रुतना जे अर्थनो । पार लहे गुण खाण ॥ धन धन शासन मंडन मुनिवरा । टेक० ॥ २८ ॥ धर्म कथी ते वीजो जाणियें । नंदिषेण परि जेह ॥ निज उपदेशे रंजे लोकने । नंजे हृदय संदेह । धन धन० ॥२९॥ वादी त्रीजो रे तर्क निपुण नण्यो । मल्लवादी परि जेह ॥ राजद्वारे जयकमला वरे । गाजंतो जिम

मेह । धन धन० ॥ ३० ॥ नद्रबाहु परि जेह निमित्त कहे । परमत जीपण काज ॥ तेह निमित्तीरे चोथो जाणिये । श्री जिनशासन राज । धन धन०॥ ३१ ॥ तप गुण ऊपर रोपे धर्मने । गोपे नवि जिन आण ॥ आश्रव लोपेरे नविकोपे कदा । पचम तपसी जाण । धन धन० ॥ ३२ ॥ छगो विद्यारे मत्र तणो बलि । जिम श्रीवयर मुणिद ॥ सिद्ध सातमोरे अजन योगथी । जिम कालिक मुनि चद । धन धन० ॥ ३३ ॥ काव्य सुधारस मधुर अर्थ नखा । धर्म हेतु करि जेह ॥ सिद्धसेन परि नरपति रीजवे । अष्टम वर कवि तेह । धन धन० ॥ ३४ ॥ जव नवि होवे प्रनाविक एहवा । तव विधि पूरव अनेक ॥ जात्रा पूजादिक करणी करे । तेह प्रनाविक ठेक। धन धन० ॥ ३५ ॥ढाल॥ सतीय सुनडानी । ए देशी॥ ॥ सोहे समकित जेहथी । सखि जिम आनरणे देह ॥ नूपण पांच ते मन वस्या । सखी मन वस्यां । तेमां नही सदेह । मुज समकित रग अचल होयो । टेक० ॥ ३६ ॥ पहिलु कुशलपणु तिहा । सखी वदन ने पच्चखाण ॥ किरियानो विधि अति घणो । सखी आचरे तेह सुजाण । मुज० ॥ ३७ ॥ बीजूं तीरथ सेवना । सखी तीरथ तारे जेह ॥ ते गीतारथ मुनिवरा । सखी तेहसु कीजे नेह । मुज० ॥ ३८ ॥ नगति करे गुरु देवनी । सखी त्रीजू नूपण होय ॥ किणहि चलाव्यो नवि चले । सखि चोथु नूपण जोय । मुज० ॥ ३९ ॥ जिनशासन अनुमोदना । सखी जेहथी बहु जन हुत ॥ कीजे तेह प्रनावना । सखी पांच नूपणनी खत । मुज० ॥ ४० ॥ ॥ ढाल ॥ इम नवि कीजे हो, ए देशी ॥ ॥ लक्षण पाच कह्यां समकित तणा । धुर उपशम अनुकूल । सुगुण नर ॥ अपराधी सू पण नवि चितवकी । चितविये प्रतिकूल । सुगुण नर । श्री जिननापित वचन विचारिये । टेक० ॥ ४१ ॥ सुरनर सुख जे दुःख करि लेखवे । वछे शिवसुख एक ॥ सु० ॥ बीजूं लक्षण ते अगीकरे । सार सवेग सुटेक । सु० । श्रीजिन० ॥ ४२ ॥ नारक चारक समनव कलग्यो । तारक जाणिने धर्म । सु० ॥ चाहे निकलवु निर्वेद ते । त्रीजू लक्षण मर्म । सु० । श्री जिन० ॥ ४३ ॥ द्रव्यथकी दुःखियानी जे दया । धर्महीणानी नाव । सु० ॥ चोथु लक्षण अनुकपा कही । निज शकते मननाव । सु० श्रीजिन० ४४ ॥ जे जिन नाख्यु ते नहि अन्यथा । एहवो जे दृढ रग । सु० ते आस्तिकता लक्षण पाचमु । करे कुमतिनो ए नग । सु० । श्रीजिन० ॥ ४५ ॥ ॥ ढाल ॥ जिन जिन प्रति वदन दिसे, ए देशी ॥ पर तीर्थी परना सुर तेणे । चैत्य ग्रह्यां वलि जेह ॥ वदन प्रमुख तिहां नवि करवु । ते जयणा षट नेय रे ।

नविका, समकित यतना कीजे । टेक० ॥ ४६ ॥ वंदन ते कर जोडन कहिये । न मन ते शीस नमाडे । दान ९ष्ट अन्नादिक देवूं । गौरव नगति देखाडेरे । नवि का० ॥ ४७ ॥ अनुप्रदान ते तेहने कहिये । वार वार जे दान ॥ दोय कुपात्रे पात्र मतिये । नहि अनुकंपा मान रे । नविका० ॥ ४८ ॥ अण बोलावे जेह ना खवूं । ते कहिये आलाप ॥ वार वार आलाप जे करवो । ते कहिये संलाप रे । नविका० ॥४९॥ ए जयणाथी समकित दीपे । वलि दीपे व्यवहार ॥ एमां पण कारणथी जयणा । तेना अनेक प्रकार रे । नविका० ॥ ५० ॥ ढाल ॥ ललना नीदेशी ॥ शुद्ध धरमथी नवि चले । अति दृढ गुण आधार ललना ॥ तो पण जे नवि तेहवा । तेहने एह आगार । ललना ॥ ५१ ॥ बोल्युं तेहवुं पालिये । दंति दंत सम बोल । ललना ॥ सज्जनना दुर्जन तणा । कह्लप कोटिने तोल । ल लना॥बो०॥५२॥राजा नगरादिक धणी । तस शासन अनियोग । ललना । तेहथी कार्त्तिकनी परे । नहि मिथ्यात संयोग । ललना ॥बो०॥५३॥मेलो जननो घण कह्यो । बल चोरादिक जाण । ललना ॥ पेत्रपालादिक देवता । तातादिक गुरु गण । ल लना॥बो०॥५४॥वृत्ति दुर्लन आजिविका । ते नीखण कंतार । ललना ॥ ते हेते दू षण नही । करतां अन्य आचार । ललना ॥बो०॥५५॥ढाल॥राग मल्हार॥ नाविजे रे समकित जेहथी रुअडूं॥ते नावनारे नावो मनकरि परवडूं॥ जो समकित रे ताजूं ताजूं मूल रे ॥ तो व्रत तरु रे दीये शिवपद अनुकूल रे॥५६॥त्रूटक॥ अनुकूल मू ल रसाल समकित । तेहविण मति अंध रे ॥ जे करे किरिया गर्व नरिया । तेह फूगो धंध रे॥ ए प्रथम नावना गुणो रुअडी । सुणो बीजी नावना ॥ बारणूं समकि त धर्मपुरनुं । एहवोते पावना॥५७॥टाल॥त्रीजी नावना रे समकित पीठ जो दृढ स ही॥ तो मोटो रे धर्म प्रासाद मगे नही ॥ पाइये खोटे रे मोटो मंमाण न शोनी ये ॥ तेह कारण रे समकितसूं चित थोनीयें ॥५८॥त्रूटक॥थोनीयें चित्त नित एम नावी । चोथी नावना नाविये ॥ समकित निधान समस्त गुणनुं । एहवुं मन ला वियें ॥ तेह विण छूटा रत्न सरिखा । मूल उत्तर गुण सवे ॥ किम रहे ताके जेह हरवा । चोर जोर नवे नवे ॥५९॥टाल॥ नावो पंचमी रे नावना सम दम सार रे एथवी परे रे समकित तस आधार रे ॥ बठी नावना रे नाजन समकित जो मि ले ॥ श्रुत शीलनो रे तो रस तेहमां नवि ढले॥६०॥त्रूटक॥नवि ढले समकित नाव ना रस । अमियसम संवरतणो ॥ षट नावना ए कही एहमां । करो आदर अ ति घणो ॥ इम नावता परमार्थ जलनिधि । होइ निनु फकफोल ए ॥ घन पवन

पुण्य प्रमाण प्रगटे। चिदानंद कल्लोल ए॥६१॥ढाल॥जे मुनिवेष सके नवी छंडी ए देशी॥ छरे जिहां समकित ते थानक। तेहना षट विध कहिये रे॥ तिहां पहिलुं थानक छे चेतन। लक्षण आतम लहिये रे॥ खीर नीर परे पुद्गल मिश्रित। पण एहथी छे अलगो रे॥ अनुभव हंस चंचु जो लागे। तो नवि दीसे वलगो रे॥६२॥ बीजूं थानक नित्य आतमा। जे अनुभूत संभारे रे॥ बालकने स्तन पान वासना। पूरव भव अनुसारे रे॥ देव मनुज नरकादिक तेहना। छे अनित्य पर्याय रे॥ द्रव्यथकी अविचलित अखंडित। निज गुण आतमराय रे॥ ६३॥ त्रीजूं थानक चेतन कर्ता। कर्मतणो छे योगे रे॥ कुंभकार जिम कुंभतणो जे। दंडादिक संयोगे रे॥ निश्चयथी निज गुणनो कर्ता। अनुपचरित व्यवहारे रे॥ द्रव्य कर्मनो नगरादिकनो। ते उपचार प्रकारे रे॥ ६४॥ चोथुं थानक छे ते भोक्ता। पुण्य पाप फल केरो रे॥ व्यवहारे निश्चय नय दृष्टे। भुंजे निज गुण नेरो रे॥ पंचम थानक छे परम पद। अचल अनंत सुख वासो रे॥ आधि व्याधि तन मन थी लहिये। तस अभावे सुख खासो रे॥ ६५॥ छट्ठु थानक मोक्षतणुं छे। संयम ज्ञान उपाया रे॥ जो सहिजे लहिये तो सघले। कारण निष्फल थाया रे॥ कहे ज्ञान नय ज्ञानज साचुं। ते विण जूठी किरिया रे॥ न लहे रुपुं रूपुं जाणी। सीप भणी जे फिरिया रे॥ ६६॥ कहे किरियानय किरियाविण जे। ज्ञान तेह शुं करशे रे॥ जल पेसी कर पद न हलावे। तारु ते किम तरशे रे॥ दूषण भूषण छे इहां बहुलां। नय एकेक ने वादे रे॥ सिद्धांति ते बेहु नय साधे। ज्ञानवंत अप्रमादे रे॥ ६७॥ इणि परे सडसठ बोल विचारी। जे समकित आराहे रे॥ राग द्वेष टाली मन वाली। ते समसुख अवगाहे रे॥ जेहनो मन समकितमां निश्चल। कोइ नहीं तस तोले रे॥ श्री नय विजय विबुध पय सेवक। वाचक जस इम बोले रे॥ ६८॥



ॐ श्री जिनाय नमः

अथ श्री शृंगारवैराग्यतरंगिणीप्रारंभ.

संस्कृतटीकाना कर्त्ता आरंभमां मंगलाचरण करेछे.

उपजातिवृत्तं ॥ श्रीपार्श्वनाथं प्रणिपत्य भक्त्या पुरि
स्थितं श्रीफलवर्द्धिकायां ॥ शृंगारवैराग्यतरंगिणी या
व्याख्याननाव्या क्रियते मया सा ॥ १ ॥

अर्थः—श्रीफलवर्द्धिकानामनी पुरीनेविषे स्थित श्रीपार्श्वनाथ भगवानने भ क्तिवडे प्रणाम करीने शृंगारवैराग्यतरंगिणी नदीनी नाविकारूप व्याख्या हुं करुंछुं.

अवतरण—श्रीसोमप्रभाचार्य, वैराग्यनी वासनावडे शृंगारने दूषित करनार छ तां आ शृंगारवैराग्यतरंगिणी नामनो ग्रंथ करवानी कामनाएकरी स्त्रीनुं रूप निं दा करवा योग्य छे एवुं प्रतिपादन करेछे. ॥ १ ॥

शार्दूलविक्रीडितंवृत्तम् ॥ धर्मारामदवाग्निधूमलहरीलावण्य
लीलाजुष स्तन्वंग्या यमितान्विलोक्य तदहो बालान्किमु
त्कंठसे ॥ व्यालान् दर्शनतोपि मुक्तिनगरप्रस्थानविघ्नक्र
मान् मत्वा दूरममून् विमुंच कुशलं यद्यात्मनो वांछसि ॥ २ ॥

अर्थः—अहो! आ धर्मरूप वननेविषे दावाग्निना धुमाडानी पंक्तिना जेवा श्या मवर्णवाला. सूक्ष्मअंगयुक्त शरीरवाली स्त्रीओना बांधेला जे वालो छे. तेने जोई ने तुं केम आनंदने पामेछे? जो तुं पोतानुं सारुं थवानी इच्छा करतो हो तो जे ना दर्शनेकरी मुक्तिरूप नगरीना मार्गमां विघ्न थायछे. एवा वालोने व्याल (स र्प) रूप मानीने दूरथी त्याग कर. एणेकरी वैराग्यरस दर्शावीने शृंगारने दूषित करांछे; जेम सर्प लांबा अने काला होयछे. तेमज स्त्रीना वाल पण लांबा अने काला होवाथी. तेओनुं साहश्यपणुं कह्युंछे; जेम सर्पने जोतांज आपणे दूर नाशी जैये छैये. तेम ते वालोने जोतांज तेओनो तिरस्कार करवो जोइये. शकुनशास्त्रमां कह्युंछे के कोई बाहेर गाम काम जतां होय ते वखते जो मा र्गमां साप मळे तो ते काममां विघ्न पडतां ते कार्यनी सिद्धि थाय नहीं. तेमज

मुक्तिरूप नगरीना मार्गमां स्त्रीना वालरूप सर्प जो आडे आवे एटले तेश्रामां मोह उत्पन्न थाय तो मोटो विघ्न थायछे, माटे ए सर्वथा त्याग करवा योग्य छे उपर कह्यु के, स्त्रीयोना बाधेला वालने व्यालरूप जाण, ए ठेकाणे कविए व मत्कार राख्यो छे के, वालशब्दमां यकार मल्याथी व्यालशब्द थायछे, माटे वा लने व्याल कहेवु योग्य छे एने श्लेषालंकार कहेछे

आ वृत्तमा सर्प चालती वखते जेम वांकोचूको थई जायछे, तेम स्त्रीना के श विटडीवाला होय तेने कविओ श्रेष्ठ कहेछे अने जेम सर्पनो रंग अति कालो होयछे, तेम स्त्रीना अति काला रंगवाला वाल होय, तो ते श्रेष्ठ कहेवाय छे एवी रीते वालनी जे श्रेष्ठता छे, ते विषयक शृंगार रस दर्शाव्योछे, अने जे म मार्गमां सर्प सामो आवे तो कार्यसिद्धि थाय नही, तेम गुणस्थानक निरंतर नी चडतो पुरुषने वचमां स्त्रीना केशनो मोह उत्पन्न थयो तो तेथी श्रेणी आगे चली सिद्धि थती नथी, एवी रीते वालनी जे निर्भत्सना कीधीछे ते विषयक वैरा ग्य रस दर्शाव्योछे ॥ १ ॥

> ये केशा ललिता सरोरुहदृशां चारित्रचंडप्रभाभ्रंशा
> नोटमहोदरास्तव मते चेतश्चमत्कारिणः ॥ क्लेशान्मू
> र्तिमतोऽप्यगम्य नियतं दूरेण तानुत्सृजेनोचेत् कष्टपरंप
> रापरिचितिं शोच्यां दशामेष्यसि ॥ २ ॥

अर्थ – हे भव्य कमलपत्रना जेवां नेत्रवाली स्त्रीना देदीप्यमान केश, चा रित्ररूप चंद्रनी कांतिना नाश करवाविषे मेघजेवा छे, अने जे तारा अंत करणमां चमत्कार उत्पन्न करेछे, तथा मूर्तिमान चक्षुरिंद्रियगम्य क्लेश छे, एम निश्चय जाणीने दूर नाखी दे जो एओना तु त्याग करीश नही, तो तु कष्टपरंपराए उ पपादन थाय करवायोग्य अवस्थाने पामीश आ श्लोकमां स्त्रीना केशने क्लेश सादृश्य कह्युछे, ते आवी रीते "ललित" ए शब्द मूलमां छे, एना अर्थ, नव री मित केशना युक्त, कष्टगम्यना क्लेश शब्द थायछे

आ उत्तम मतना वर्णनी साथ स्त्रीना केशनी बराबरी करीने जेम कारणे विष मेघ अति शोभायमान दीशामां आवेछे, तेम स्त्रीना मस्तकनी केश अति ललित एटले देदीप्यमान दीशामां आवेछे स्त्रीना केश जे चमत्कारी छ ते श्रेष्ठ कहेवायछे ए मुग्ध केशनी श्रेष्ठताना विषय करेलो अनुगत ते र

धारण करनारी स्त्रीनां नेत्रोने कमलपत्र जेवां कह्यांछे; ए वधो शृंगार रस जाणवो. अने स्त्रीना एवा केश जोईने पुरुषना अंतःकरणमां मदनादि विकाररूप चमत्कार उत्पन्न थायछे, माटे ते क्लेशरूप कह्याछे; केमके, कामादि विकारो क्लेशरूप कह्याछे, क्लेशो अंतरना विषय होवाथी चक्षुना विषय नथी, तेओएज जाणे केशरूप मूर्त्ति धारण करी होय नी! एवी उत्प्रेक्षा थायछे. ए कारणथी स्त्रीना देदीप्यमान केशने क्लेशरूप जाणीने तेनो तुं त्याग कर, एवडे वैराग्य रस दर्शाव्योछे.॥२॥

वसंततिलकावृत्तम्॥ ये शुद्धबोधशशिखंडनराहुचंभाश्चित्तं
हरंति तव वक्रकचा दृशांग्या· ॥ ते निश्चितं सुकृतमर्त्य
विवेकदेहनिर्दारणे ननु नवक्रकचाः स्फुरंति ॥ ३ ॥

अर्थः– हे पुरुष, निर्मल ज्ञानरूप चंद्रनुं ग्रासन करवाविषे, स्त्रीना वांका केश, राहु जेवा क्रूर छे. ते तारा अंतःकरणमां चमत्कार उत्पन्न करेछे. अर्थात् राहु जेम चंद्रनो ग्रास करेछे, तेम ए वांका केश तारा ज्ञाननो नाश करनारा छे. अने ते जाणे सुकृतरूप मनुष्यना विवेकरूप देहनुं विदारण करवाने नवी कर्वतज होयनी! ए उत्प्रेक्षा छे. एमां "वक्र कच" एटले वांका केश ते "नवक्रकच" एटले नवी करवतना जेवा छे. एमकह्याथी श्लेषरूप चमत्कार जाणवो.

आ वृत्तमां, स्त्रीना वांका केश होय ते श्रेष्ट कह्याछे. स्त्रीना वक्रकेश पुरुषना मनने मोहित करेछे, एथीज अंतःकरणमां चमत्कार उत्पन्न करेछे एम कह्युछे, माटे ए शृंगार रस छे; अने स्त्रीना वांका केशनुं दर्शन थतांज पुरुषनुं मन विव्हल थायछे, देहनी पण शुद्धि रहेती नथी, अने ज्ञाननो नाश थई जायछे तेथी तेओने राहुरूप कह्याछे. तेमज विवेकरूप शरीरने कापवाने नवी कर्वत जेवा कह्याछे, एवा जाणीने तेओनो तु त्याग कर. ए वैराग्य रस जाणवो. ॥३॥

उपजातिवृत्तम्॥अलंकृतं कुंतलभारमस्या विलोक्य लोकः कुरुते
प्रमोदम्॥वैराग्यवीरच्छिदुरं डरंत ममुं न किं पश्यसि कुंतभारम्॥४॥

अर्थः–हे पुरुष, पुष्पादिकेकरी गूंथेला स्त्रीना बांधेला केशोनो समूह एटले आंबोडो जोईने लोक आनंदने पामेछे, परन्तु ए वैराग्यरूप वीरनुं छेदन करणारुं प्रास नामक दुःसह शस्त्र छे. एम तूं कां जोतो नथी? अर्थात् स्त्रीना अलंकृत "कुंतलभार" एटले जे शणगारीने बांधेला केश छे, ते कुंतभार एटले प्रास ––

क शब्दज छे एम जाणवु आ ठेकाणे अल एटले लकाररहित, रुत एटले करेलो, जे कुतलनार शब्द, तेनो कुतनार एवो शब्द थाय, ते योग्य छे

आ वृत्तमां, पुष्पादिकेकरी शृंगारेलो स्त्रीना केशोनो अंबोडो पुरुषने एवो रमणीय लागेछे के, ते जोईने वैराग्यवान पुरुषनो वैराग्य पण भगी जायछे, एवी श्रेष्टता कहीछे, ते शृंगाररस छे अने ते दुःखे करीने पण सहन न थाय एवा प्रास नामक शस्त्ररूप छता वैराग्यनो नाशकरनारो छे, माटे तेनो त्याग कर, ए वैराग्य रस छे ॥ ४ ॥

वसंततिलकावृत्तम् ॥ कस्तूरिकातिलकितं तुलिताष्टमींदु
चित्ते विचिंतयसि सौख्यनिमित्तमेकम् ॥ वामभ्रुवा यदलिकं
तदहो अलीकमित्याख्ययेव परया प्रवदंति रूपम् ॥५॥

अर्थ –हे पुरुष, जेमा कस्तूरीनो तिलक कर्योछे, तेथी अष्टमीना चंद्र जेवी जेनी सुंदर भ्रकुटी देखाय छे, ते अद्वितीय सौख्यनु कारण छे, एवु तु अंतःकरणमा चिंतन करेछे, ते व्यर्थ छे अहो इत्याश्चर्ये! ते स्त्रीओनु अलिक एटले जे ललाट छे, तेने पंडित लोको अलीक एटले मिथ्या कहेछे अर्थात् अलिक एवा बे रूप ललाट वाचक छे, तेओमाना पहेला रूपने बीजा रुपे करी जाण, एटले ललाटने मिथ्या जाण, ए पण श्लेषज छे

आ वृत्तमा, अष्टमीनो चंद्र अर्धगोलाकार छता बन्ने खूणाए सरखो देखायछे, तेना वचमा श्याम वर्णना चादलाना जेवु देखायछे, तेथी ते अति शोभित लागेछे, तेम स्त्रीनु पण वांकु ललाट छता तेमा कस्तूरीनो तिलक कर्यो होय तो अति मनोहर देखायछे, ते जोईने पुरुषना मननेविषे घणो आनंद थायछे, ते शृंगाररस छे अने ए जे कस्तूरीना तिलक सहित स्त्रीनु ललाट अति शोभायमान देखायछे, तेमा काई अर्थ नथी, किंतु व्यर्थ छे, माटे तेनो त्याग करवो ए वैराग्यरस छे ॥५॥

उपजातिवृत्तम् ॥ न भ्रूरियं पंकजलोचनायाश्चकास्ति शृंगाररसैकपात्रम्॥नूनं किलसौ साधुतरा प्रसूते निबंधनं मोहविषद्रुमस्य॥६॥

अर्थ –हे पुरुष, कमलपत्रना जेवा लोचनवाली स्त्रीनी शोभायमान भ्रुकुटी छे, ते जाण शृंगाररसनु एक पात्रज छे, ते अतिशय श्रेष्ट भूमि छे, केमके, एथकी मोहरूपविषना वृक्षनो प्रादुर्भाव उत्पन्न थायछे, अर्थात् भ्रू एटले भ्रुकुटी, ते साधुतरा

भू एटले भूमि थायछे, एम कह्युं; तेमां आवी रीते श्लेष छेः- सा एटले प्रसिद्ध, धुतरा एटले रेफरहित एवो, भ्रू शब्द भूमिवाचक शब्द थयो ते योग्य छे.

आ वृत्तमां, स्त्रीनी जे शोभायमान भ्रुकुटि, तेने शृंगार रसना पात्ररूपे कही छे; केमके, एने जोतांज पुरुषने मोह उत्पन्न थायछे, माटे ए शृंगार रस छे, अने ए भ्रुकुटि नथी पण मोहरूप विषना वृक्षने उत्पन्न करनारी सारी भूमि छे, एम कहेवाथी वैराग्य रस जाणवो. ॥ ६ ॥

मालिनीवृत्तम् ॥ नवकुवलयदामश्यामलान् दृष्टिपातान् कृत परमदनाशान् विक्षिपत्यायताक्षी॥ इति वदसि मुदं किं मोह राजप्रयुक्तान् प्रशमभटवधार्थं विद्धमून्कृष्टिपातान् ॥ ७ ॥

अर्थ.- हे पुरुष, विस्तीर्ण नेत्रोवाली स्त्रीना कुवलयनी माला जेवा श्यामवर्णवाला, अन्यमदना नाश करनारा जे कटाक्ष, ते मारा उपर नाखेछे, एम जाणीने तूं शासारु हर्षित थायछे ? अरे, ए जे दृष्टिपात (कटाक्ष) छे ते प्रशम रूप शूरवीरनो वध करवा सारु मोह राजाए प्रेरणा करेला कृष्टिपात एटले तलवारना पात (घा) छे; एम जाण; अंही दृष्टिपातनो कृष्टिपात आवी रीते थयो छेः- दृष्टिपात शब्दनुं विशेषण मूलमां " कृतपरमदनाशान् "छे, एनो श्लेष करी आवो अर्थ थाय छेः- कृत एटले कर्यो, परम एटले अत्यंत, दनाश एटले दकारनो नाश थयाथी कृष्टिपात शब्द थाय छे ते योग्य छे.

आ वृत्तमां, विस्तीर्ण नेत्रोवाली स्त्री कही छे, एथी स्त्रीना विशाल नेत्रोने कविओए उत्तम कह्या छे, एम जाणवुं, एवा विशाल नेत्रोना जे कटाक्ष, ते कुवलयनी माला जेवा, अने अन्य मदना नाश करनारा कह्या छे ; एटले जे पुरुष उपर कुवलयनी मालाना जेवा कटाक्ष पडे ते पुरुष बीजा गमे तेवा मदवालो होय तो पण तरत ते स्त्रीनी उपर मोहित थईने तेना किंकर जेवो थई रहेछे, अने ते पोतानी उपर स्त्रीना कटाक्ष पडया जोइने अति आनंदित्त थायछे, माटे ए शृंगार रस छे; अने एवो लुब्ध थएलो पुरुष मोहरूप राजाने वश थयो थको दुःखी थायछे; केमके, नेत्रकटाक्षरूप तलवारना घाएकरी तेना प्रशमरूप शूरवीरपणानो वध थायछे. तेनो तुं त्याग कर, ए वैराग्य रस छे. ॥ ७ ॥

शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥ तस्याः कोपपदं यदाननमहोरात्रं स्मरस्नात्मनः संतापं वितनोपि काननमहो ज्ञात्वा स

खे तत्यजे ॥ एतस्मिन् वसता मनोन्वमहासर्पेण दष्ट
पुमान् कार्याकार्यविवेकशून्यहृदय कस्को न सजायते॥८॥

अर्थ –हे सखा, कोपनु स्थान जे स्त्रीनु आनन एटले मुख, तेनु रात्रदिवस स्म रण करीने तू पोताने सताप करीले छे, अहो इति खेदे ! ते आनन नथी पण कानन एटले वन छे, एम जाणीने मूकी दे, केमके, ए वनमा रहेनारो जे कामरूप सर्प, ते जे पुरुषने दश करेछे, ते पुरुषनो हृदय कार्याकार्य विवेकथी शून्य थई जायछे, एवो कोण छे, के जे उक्त विवेकशून्य न थाय ! किंतु सर्व थायज छे सामान्य सर्पनाविषे करीने मूर्छित थएलो पुरुष पण शून्य हृदयवालो थई जायछे, तो जेने सर्प दश कर्यो होय तेनु शु कहेवु ! अहीं कोपपद आनन कानन छे, एम कह्युछे, तेथी कोपपद एटले ककार छे उपपद एटले समीपपद जेनो एवो आनन शब्द कानन शब्द थाय छे ते योग्य छे, एश्लेष छे

आ वृत्तमा, स्त्रीनु मुख कोपायमान कह्यु छे तेनु कारण ए के, स्त्रीनी मुखमुद्रा यत्किंचित् कोपायमान पुरुषने दीठामा आवे तो तेने कामविकार उत्पन्न थायछे अथवा कोई कारणने लीधे स्त्रीने रीश आवीने पुरुषने पोतानी मुखमुद्रा कोपाय मान करी देखाडवाथी तेने प्रीति उत्पन्न थायछे, अने विविध प्रकारे तेने सम ज्याव्यानी आतुरताने लीधे कामविकार उत्पन्न थायछे ते अहीं शृंगाररस जाणवो, अने स्त्रीना मुखने वन जेवु कह्यु छे, ने तेमा कामरूप सर्प रहे छे ते दश करीने पुरु षना हृदयने शून्य करे छे एटले सारासार विवेकरहित करे छे, अर्थात् मृतकवु ज्य करे छे, तेथी तेनो तु त्याग कर ए वैराग्यरस जाणवो ॥ ८ ॥

उपजातिवृत्तम् ॥ साकारमालोक्य मुख तरुण्य किं मुग्धबुद्धे मुद माटधासि॥इद हि चित्तभ्रमनाटकस्य विचक्षणैरामुखमाचचक्षे ॥९॥

अर्थ – हेरुडीबुद्धिवान पुरुष, तरुण स्त्रीनु साकार एटले सुदर मुख जोईने तु शासारु आनंदित थायछे ! ए मुखने विद्वान पुरुष निश्चये करी चित्त भ्रमरूप नाटकवु आमुख एटले आवारन कहेछे अहीं साकार एटले आकार सहित जे मुख होय ते आमुख छे, ते योग्य छे

आ वृत्तमा, तरुण स्त्रीनु सुदर मुख कह्यु छे, तेनु कारण ए के मुखनी सुदरता तारुण्यपणामां होयछे ते गमे तेवी सारीबुद्धिवाला पुरुषनी बुद्धिने विभ्रम करे छे एटले मोहित करेछे ए शृंगार रस छे अने तरुण स्त्रीनु मुख चित्तविभ्रमरूप

मां आद्यारंभ सूत्रधार अने नटीप्रमुखना गायनद्वारा थायछे, ते अ
…छे. एटले स्त्रीनुं मुख जोईने मोहनो आरंभ थाय छे.
पुरुषना चित्तने मोह उत्पन्न करेछे. तेम ए पण जाणवुं. तेनो तुं त्याग
ए वैराग्य रस छे. ॥ ९ ॥

वसंततिलकावृत्तम् ॥ कामज्वरातुरमते तव सर्वदाऽऽस्यं वा
मभ्रुवां यदि कथंचिदवाप्तुमिच्छा ॥ यत्नं विनाप्यखिलज
न्मपरंपरासु तज्जातमेव भवतो ननु सर्वदास्यम् ॥ १० ॥

अर्थः– हे कामरूपज्वरथी पीडायमान थएली मतिवाळा पुरुष, जो सर्वद
एटले सर्व काळ सुंदर भ्रुकुटिवाळी स्त्रीनुं आस्य एटले मुख, कोई पण प्रकारेक
तने प्राप्त थवानी इच्छा होय, तो निश्चयेकरि यत्नशिवाय संपूर्ण जन्मपरंपराने
विषे सर्वदास्य एटले सर्वनुं दासपणुं तने थयलुंज छे, एम जाणवुं. आश्लोकमां
बे ठेकाणे “ सर्वदास्य ” ए शब्द आवेलो छे. ते बन्नेनो अर्थ भिन्न भिन्न थाय
छे. तेथी अहिं यमक जाणवो.

आ वृत्तमां, सुंदर भ्रुकुटीवाळुं स्त्रीनुं मुख कह्युं छे, एथी जे स्त्रीनी भ्रुकुटि सा
री होय, ते सुरूप दीठामां आवेछे. तेनुं मुख कामी पुरुषने अति प्रिय लागेछे.
अने तेने जोतांज कामीपुरुषनी मति कामज्वरथी पीडायमान थायछे, एज इहां
शृंगार रस छे. अने एवा स्त्रीना मुखनी प्राप्तिनी इच्छा जे पुरुष करेछे ते जन्मो
जन्मने विषे पराधीन रहेछे. माटे तेनो तूं त्याग कर ए वैराग्य रस जाणवो.॥ १०॥

शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥ तस्याः साधुरदं विलोक्य वद
नं य. संश्रयत्यंजसा मुक्त्वा मुक्तिपथं हहा प्रविशति भ्रां
त्या स दुर्गं वनम् ॥ तत्रात्यंतमचारुबद्धवसतिर्येनात्र रा
गादिभिश्चौरैर्धर्मधनापहारकरणात्कष्टं न किं प्राप्यते॥ ११॥

अर्थः– ते स्त्रीनुं “ साधु रदं ” एटले सारा दांतवाळुं वदनं एटले मुख जो
जे पुरुष वेगे करी तेनो आश्रय करेछे, एटले तेमां लुब्ध थायछे ते पुरुष,
हा इति खेदे ! मुक्तिमार्गने मूकीने, वसतिने अरम्य करीने दुःखेकरि प
मन न थाय एवा वनने विषे भ्रांतिए करि प्रवेश करेछे. ते वन मर्यादारहि
तेमां गमन करनारा पुरुषनुं धर्मरूप धन रागादिक चोरो हरण करी जाय
ी शुं कष्टनी प्राप्ति थती नथी ? अहिं साधुरदं वदन जे छे ते वन छे ए

म कह्यु छे ते आम – साधुरद ए शब्दनो पदछेद करिये तो साधु अद ए बे पद जुदा थायछे एमाना अद पदथकी दकार रहितपणु थायछे, एम वदननु वन थायछे, ते योग्य छे

आ वृत्तमा, सारा दातवाली स्त्रीनु मुख जोताज पुरुषनु मन लुब्ध थई जायछे मुक्तिनो मार्ग जे धर्मध्यानादिक तेने ते मूकी दे छे जेने वसति सारी लागती नथी, मदनने वश थयो थको वनादिक एकात स्थळमा ते स्त्रीसहित अथवा स्त्रीना आगमननी इच्छावान थयो थको वास करेछे, अने तेथी महाकष्ट सहन करेछे, एवो स्त्रीना मुख दर्शननो जे प्रभाव ते अहि शृगार रस छे अने स्त्रीना मुखरूप जे वन तेमा जे पुरुष प्रवेश करेछे तेनु धर्मरूप धन रागादिक चार लूटी लिये छे माटे तेमा लुब्ध थवु नही ए अहि वैराग्य रस छे ॥ ११ ॥

पृथ्वीवृत्तम् ॥ यियाससि भवोदधेर्यदितट तदेणीदृशामहीनमधर धर परिहरे पर दूरत ॥ इहास्फुजनतोऽन्यथाविशदवासनानौ स्तव व्रजिष्यति विशीर्णता न भविता ततो वाछितम् ॥ १२ ॥

अर्थ –हे पुरुष, जो तु आ ससार समुद्रनो पार लेवानी इच्छा करतो हो, तो हरिणी जेवा नेत्रोवाली स्त्रीओना अहीन एटले अमृतादिवडे परिपूर्ण, अधर एटले ओष्टरूप धर एटले पर्वत जे छे तेने तु दूर नाखी दे ते जो तु नही मूकीश तो ते पर्वतना सघट्टनना योगे तारी निर्मल वासनारूप नोका भागी जशे तेथी तारु इच्छेलु पार पडशे नही जेम समुद्रमा पर्वतना लागवाथी वहाण भागी जाय तो जवा आववादिक इष्टसिद्धि थती नथी ते प्रमाणे तु पण आ भव समुद्रने पहेले पार पहोची शकीश नही अही अहीन अधर जे छे ते धर एटले पर्वतज छे, एम कह्यु छे, ते आम – जे अहीन एटले अकारे करि हीन एटले रहित अधर शब्द ते धर शब्द थाय छे, ते योग्य छे

आ वृत्तमा, स्त्रीना नेत्रोने हरिणीना नेत्रोनी बराबरी करीछे, एटले हरिणीना नेत्रो अति विशाल अने सुशोभित होयछे तेम स्त्रीना नेत्रो पण अति विशाल तथा सुशोभित होवाथी पुरुषनु मन खेंची लियेछे, तथा जे कामी पुरुष छे तेने स्त्रीना अधरामृतनेविषे घणी प्रीति होयछे, माटे अमृतेकरी पूर्ण अधर कह्या छे, ते शृगार रस छे अने ते अधर छे ते पर्वतज छे केमके, जे पुरुष ते अधरनेविषे लुब्ध थायछे ते ससारथी छूटी शकतो नथी ए वैराग्य रस छे। ॥ १२ ॥

शिखरिणीवृत्तम् ॥ न भातीदं भ्रातः स्फुरदरुणरत्नौघकिरणप्रता
नं तन्वंग्यास्तरलतरलं कुंडलयुगम् ॥ इमं क्रुधं पुंसामिह विरहसं
योगदशयोर्ज्वलच्छोकानंगज्वलनयुगिदं कुंडयुगलम् ॥ १३ ॥

अर्थ.— हे भाई. देदीप्यमान रक्तवर्ण रत्नोनो किरणसमूह छे जेनाविषे, तथा " तरल तरलं " एटले जे अत्यंत चंचल छे. एवा कृशांगी एटले पातला आंगवाली स्त्री ना जे " कुंडलयुगं " एटले जे बे कानना कुंडल छे ते शोभता नथी; किंतु विरहदशा अने संयोगदशामां शोक तथा कामाग्निएकरी युक्तछे एटले विरहावस्थामां शोकावि र्भाव, तथा स्त्रीपुरुषनी संयोगावस्थामां कामाग्निनो आविर्भाव थायछे. अने आ संसारनेविषे पुरुषना शांतिरूप दूधने बालवावाला ए कुंडयुगल एटले बे कुंडने एम जाण. अहीं कुंडलयुग ते कुंडयुगल थाय छे. ते आवी रीते —कुंडलयुग शब्दनुं वि शेषण तरलतरलं एवु छे. एनो श्लेषार्थ आम छे.— तरलतर एटले चंचल छे. ल एटले लकार जेमा एवो जे कुंडलयुग शब्द तेमांनो लकार कहाडी नाखिये तो कुंडयुग शब्द थायछे, अने युग शब्द थया पछी तेना अंतमां लकार जोडीये तो कुंडयुगल शब्द थायछे. ते योग्य छे.

आ वृत्तमा, स्त्रीना काननेविषे देदीप्यमान रत्नजडित जे बे कुंडल होयछे, ते स्त्रीना रूपमां अति वृद्धि करेछे. अने चंचल होवाथी अति सुशोभित देखायछे तेमां पण कृशांगी एटले पातला आंगवाली स्त्रीने अति शोभेछे. ए शृंगार छे. अ ने ए जे बे कुंडल छे ते शोभाकारक नथी पण विरहदशा तथा संयोगदशामां शो क तथा कामाग्निना उत्पन्न करनारा छे, ए पुरुषनी शांतिरूप दूधनो नाश करना रा छे तेथी कुंडरूप छे, तेनो तूं त्याग कर ए वैराग्य रस छे. ॥ १३ ॥

अनुष्टुब्वृत्तम् ॥ ताडंकं सस्पृहं तस्याः पश्यन् मूढः परे
भवे ॥ नरो नरकपालेभ्यस्ताडं कं न सहिष्यते ॥ १४ ॥

अर्थ.— हे मूर्ख पुरुष, ते स्त्रीनुं साभिलाष " ताडंकं " एटले कर्णभूषण अव लोकन करतां आगल आवनारा भवमध्ये नरक पालन करनारा अधम परमाधा मी पुरुषोनी पासेथी " कंताडं " एटले कोण आघात सहन करनार नथी? अ पितु सर्व आघात सहन करशे. अहीं " ताडंक " ए शब्द बे वार आव्योछे, तेओ नो अर्थ भिन्न भिन्न छे. ए यमकालंकार छे.

आ वृत्तमा, स्त्रीना काननां कुमख जोताज पुरुपने एवी अभिलाषा थायछे के ए कुमलेकरी शोभायमान स्त्री मने प्राप्त थाय तो सारु ए शृगार रस छे, अने अभिलाषाए करी स्त्रीना कुडलोने जे पुरुष जुवे छे ते आवता जन्ममां नरकना पालन करनारा परमाधामी देवताओनी मार खायछे, माटे एनो त्याग करवो ए वैराग्य रस छे ॥ १४ ॥

वसततिलकावृत्तम् ॥ सार गल यमरविदविलोचनाना
मालोक्य चेतसि मुद कलयति मूढा ॥ हा निश्चित रचि
तमुक्तिपुरप्रवेशव्यापेधमर्गलममु न विचारयति ॥ १५ ॥

अर्थ - हे मूढ, कमलना जेवा नेत्रोवाली स्त्रीओनो जे सार एटले श्रेष्ठ, गल एटले कठ अवलोकन करीने पुरुषो अत करणमा हर्ष पामेछे परतु हा इति खेदे ! ए जे गल छे ते मुक्तिनगरीमा प्रवेश करवानेविषे प्रतिबध करनार होवाथी अर्गल छे, एवो विचार करता नथी अहीं सार एटले अरसहित गल शब्द ते अर्गल शब्द थायछे ते योग्य छे

आ वृत्तमा, स्त्रीना कठनी श्रेष्ठता कहीछे जो स्त्रीनो कठ सारो होय तो तेने जोताज पुरुष आनदित थायछे, अर्थात् कामनी इच्छा उत्पन्न थायछे, ते अहीं शृगार रस छे, अने एवा अभिलाषी पुरुषोनो मुक्तिरूप नगरीमा प्रवेश थतो नथी माटे तेनो त्याग करवो ए वैराग्य रस छे ॥ १५ ॥

शिखरिणीवृत्तम् ॥ अल प्राप्य स्पर्श कुचकलशयो पकजदृशां
परा प्रीति भ्रात कलयसि सुधामग्नइव किम्॥अवस्कद धर्मक्षितिप
पकटके दातुमनसा प्रयुक्त जानीया कलुपवरटेन स्पशमिम्॥१६॥

अर्थ – हे भ्रात, जेना कमलना पत्र जेवां नेत्र छे, एवी स्त्रीओना स्तनरूप जे कुभ छे, तेने अल एटले अत्यत स्पर्श पामीने अमृतमा मग्न थई जनाराना जेवो जे तु ते शु उत्कृष्ट प्रीतिने पामेछे ? ए स्पर्श, धर्मरूप राजानी सैन्यने प्रहार करनारु छे जेना मनमा, एवा कलुष एटले पापरूप नीचे मोकलेलो स्पश एटले जासूद छे, एम तु जाण अहीं अल स्पर्श जे छे ते स्पश छे, एम कह्यु रेफ अने लकार एकज होयछे, एवो नियम छे माटे अल एटले जेमां रेफ नथी एवो स्पर्श शब्द जे छे ते स्पश शब्द थायछे ते योग्य छे

आ वृत्तमां, स्त्रीना स्तननी उत्कृष्टता कहीने, एटले पुरुषने स्त्रीना स्तननो स्पर्श थतांज अमृतनेविषे मग्न थई गएला पुरुषनी पठे आनंद उत्पन्न थायछे; ए शृंगार रस छे; अने ए स्तन जे छे ते धर्मनो नाश करवाने अर्थे पापनो एक वानो जाणे छे. माटे तेनो तुं त्याग कर. ए वैराग्य रस छे. ॥ १६ ॥

वसंततिलकावृत्तम् ॥ पीनोन्नतं स्तनतटं मृगलोचनाया आ
लोकसे नरहितं यदपूर्वमेतत् ॥ मोहांधकारनिकरक्षय
कारणस्य विद्धास्तदस्तनतटमेव विवेकभानो. ॥ १७ ॥

अर्थ.— मृगना जेवां लोचनवाली स्त्रीनां जे पुष्ट अने उन्नत स्तनतट एटले बे स्तनो छे. ते नरहित एटले पुरुषने हितकारक मानीने, अने अपूर्व एटले प्रतिरूप पुरुषने चमत्कार उत्पन्न करे छे; तेनुं तुं अवलोकन करेछे; पण ते मोहरूप अंधकारनो दूर करवानुं कारण विवेकरूप सूर्यना अस्ततट छे. अर्थात् एनी ज्ञानरूप सूर्यनो अस्त थायछे. आ पद्यमां स्तनतट जे छे तेने तुं अस्ततट जाण एम कह्युं. केमके, नरहितं अने अपूर्व ए बे स्तनतटनां विशेषणो छे, तेओ मांथी आवो अर्थ निकळे छे.— नरहित एटले नकारेकरी रहित अने अपूर्व एटले जेनी आदमां अकार छे. एम करवाथी स्तनतटनो अस्ततट शब्द थायछे ते योग्य छे.

आ वृत्तमां, मृगना जेवां लोचनवाली स्त्रीना मांसथी भरेला अने उंचा रहेला जे बे स्तन छे, ते पुरुषने अति सुख करनारा लागेछे; अने पुरुषना मनमां कामविकार उत्पन्न करेछे माटे ए शृंगार रस छे. अने एज स्तनोनुं विलोकन करनारा पुरुषनो विवेकनाश थई जायछे. एटले कामविव्हल थयो थको तेने कांई सूझतुं नथी तेथी एनो त्याग कर ए वैराग्य रस छे. ॥ १७ ॥

शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥ कंदर्पद्विपकुंभचारुणि कुचद्वंद्वे मृ
गाक्ष्या मया न्यस्तो हस्त इति प्रमोदमदिरामाद्यन्मना मा
स्मभूः ॥ किंत्वाजन्म यदर्जितं बहुविधाभ्यस्य कष्टक्रियां
हस्तोऽयं सुकृतस्य तस्य सहसाऽदायीति संचिन्तय ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ हे मनुष्य. कामरूप हस्तिना गंडस्थल जेवा मनोज्ञ जे मृगाक्षी स्त्रीना बे स्तन छे, तेनेविषे में हस्तस्थापन कर्यो छे. एम जाणीने हर्षरूप मदिरावडे मदोन्मत्त अंतःकरणवालो तुं नही था. केमके, नाना प्रकारनी तपोनुष्टानादिरूप जे कष्टरूप क्रिया छे. तेनो अभ्यास करीने जन्मवडे संपादन करेलां जे सुकृत एटले

१, तेने ते आडु हाथ दीधुंछे जेमके, कोई बाहेरथी आवनारा पुरुषने हस्तप्र
समझाएकरी निषेध करे, तेम कुचद्वदनेविषे हस्तप्रदानेकरीने सुरतनो तें नि
कर्योछे एवो जे तु ते मनमा विचार कर आ पद्यमां स्तन उपर हाथ रा
अने सुरतने हाथ दीधु एज चमत्कार छे
आ वृत्तमां, कामरूप हस्ती कह्योछे ने तेना गण्डस्थलरूप स्त्रीना बे स्तन क
छे ते ज्यारे पुरुष हाथनेविषे ग्रहण करेछे त्यारे मदनातुर थयोथको म
र्दने पामेछे, ए शृंगार रस छे, अने नाना प्रकारे कष्ट करीने संपादन करेलां
स्तनो निषेध करेछे माटे तेनो त्यागकर ए वैराग्य रस छे ॥ १८ ॥

इन्द्रवज्रावृत्तम्॥ कण्ठेपकण्ठे लुलित विभावयेर्भुज युवत्या
भुजगं गराजितम् ॥ एतस्य संस्पर्शवशादपि क्षणाद
शेषचैतन्यमपैति मद्वयम् ॥ १९ ॥

अर्थ –कंठनी पासे रहेला गर एटले विषे करीने अजित एवा जे तरुण स्त्री
भुज एटले बाहु, ते भुजग एटले सर्पज छे, एम तु जाण ए सर्पना स्पर्शमा
त्री संपूर्णचैतन्य क्षणमात्रमां नाशने पामेछे जेम सर्पना स्पर्शेकरी चैतन्य
नाश थायछे, तेमज तरुण स्त्रीना भुजस्पर्शथी चैतन्यनाश थायछे भुज
भुजग आवी रीते थायछे –भुज शब्दनु विशेषण गराजित छे, तेनो अर्थ ग
र अक्षरेकरी रहित एटले युक्तपणाथी भुजग शब्द थायछे, ते युक छे.
आ वृत्तमां, कंठनी पासे रहेला स्त्रीना बे हाथ पुरुषने अकस्मात्
नि मोहित थयोथको पोताना शरीरनी शुद्धि पण रहेती नथी ए शृंगार
अने ए बे स्त्रीना हाथ छे ते साक्षात् सर्परूप छे, केमके, एनो
ना वेदुं थई जायछे, माटे तेनो तु त्याग कर ए वैराग्य रस छे

उपजातिवृत्तम्॥ कन्दावमके कुपिते नवाढो वर न्हि
द ॥ विश्वस्तधर्मातिरजीविते न स्मरेण न वाढो २०

अर्थ –बाह्य प्राणनो नाश करनारो क्रोधायमान जे नवाढो
ते पुरुषना मनमां सजग्र थाय ते सारु, परंतु धर्मरूप
नाश ने स्त्रीमयथी वाढो एटले तुल, त पुरुषना मनमां
थ थयव त पतित पुरुषने पाम्य नथी, केमके, सर्प, १०१
ना नाश करे, एम स्त्रीओना ने चाहुछे, ते वशमनय

नो नाश करेछे; माटे स्त्रीए पोताना हाथथी करेलुं आलिंगन सर्प करतां पण अ
धिक दुःख देनारुं छे. आ श्लोकमां नवाहा शब्द बे वखत आव्योछे तेनो अर्थ जुदो छे.

आ वृत्तमां, स्त्री ज्यारे पोतानी भुजावडे पुरुषने आलिंगन करेछे, त्यारे पुरुष
पोताना प्राणनी पण परवा राखतो नथी, एवो कामातुर थायछे: ए शृंगाररसछे.
अने सर्प गळामां वाळी प्राण लिये ते सारुं, पण स्त्रीनुं आलिंगन सारुं नही: के
मके. तेथी सारा कर्म वंधाईने अंतरात्मानो नाश थायछे. माटे तेनो त्याग कर
वो उचित छे ए वैराग्यरस छे. ॥ १० ॥

इंद्रवंशावृत्तम् ॥ कोयं विवेकस्तव यन्नतभ्रुवां दोषावगूढः प्रमदं त्रि
गाहसे ॥ यत्स्मरातंकपरीतचेतसां किं सुंदरासुंदरयोर्विवेचनं ॥११॥

अर्थ.— हे साधो. आ तारो कयो विवेक छे के. नम्र छे भ्रुकुटि जेओनी एवी
स्त्रीना दोषावगूढ एटले भुजाए आलिंगित थयो थको तुं उत्कृष्ट मदने पामेछे!
केमके. कामरूप रोगेकरीने जेना अंतःकरण व्याप्त थयाछे, एवा पुरुषने सारा
तथा नरसानुं विवेचन थतुं नथी. जेम अपस्मारादि (मरी) रोगवाळा पुरुषने शु
भाशुभ ज्ञान होतुं नथी, तेम तने पण थयुंछे. अथवा तारो विवेक दोषावगूढ
एटले दोषेकरीने युक्त छे एवो अर्थ पण थायछे, माटे ए तारो केवो विवेक
छे एम कहेवुं योग्यज छे.

आ वृत्तमां, पुरुषने स्त्रीए आलिंगन कर्युंछतां, ते गमे तेवो विवेकी होय तो
पण ते एक कोरे रहीने कामातुर थयोथको हर्षित थायछे; ए शृंगार रस छे;
अने स्त्रीना आलिंगनथी पुरुषना विवेकनो नाश थायछे, अने अंतःकरणमां अ
विवेक आवेछे. माटे तेनो तुं त्याग कर ए वैराग्य रस छे. ॥ ११ ॥

वसंततिलकावृत्तम् ॥ हंहो विलोक्य परमंगदमंगनाना
मानंदमुद्वहसि किं मदनांधबुद्धे ॥ सत्यं विवेकनिधनै
कनिमित्तमेतन्मेधाविनो हि परमं गदमुद्गृणंति ॥ १२ ॥

अर्थः— हे कामकरी अंधबुद्धिवाळा पुरुष. स्त्रीओना परमंगदं एटले उत्कृष्ट
बाजुबंध जोईने शुं आनंद करेछे? पंडित लोको जे छे ते ए बाजुबंधने ज्ञाननोनाश
करनारो परम एटले उत्कृष्ट गद एटले रोग कहेछे: ते सत्य छे. केमके. जेम रोग जीव
ना नाशनो हेतु छे. तेम स्त्रीनां बाहुभूषण पण ज्ञानना नाशनो हेतु छे. ए पद्यमां
परमंगदं ए बे वखत आव्योछे. तेनो अर्थ जुदो जुदो छे, एवो यमकरूप चमत्कार छे.

आ वृत्तमां, स्त्रीना बाहुनुं भूषण जे बाजूबंध छे, ते पुरुषना मनने एवो मोहित करी त्रिपेछे के पुरुष कामांध थयोथको महादर्पने पामेछे ए शृंगार रस छे, अने ए जे बाजूबंध छे ते आनंद करनारो नथी, पण जीवनो नाश करनारो मोटो रोग छे, एम जाणीने तेनो तूं त्याग कर ए वैराग्य रस छे ॥ २२ ॥

अय जनो वलयपंजर विलोकते मृगीदृशामधिभुजवल्लि बालिश ॥
न बुध्यते सुकृतचमूं जिगीषत समुद्यत वलजरमेनमेनस ॥२३॥

अर्थ – अय एटले आ प्रत्यक्ष मूर्ख जन जे छे, ते हरिणाक्षी स्त्रीओना भुजलतानेविषे वलयपंजर एटले जे कंकणसमूह छे ते जुवेछे परंतु ए वलय जे छे ते सुकृत जे शीलादिक, तेओने जीतवानी इच्छावालो एवो पापनो सावधानीभूत थानर एटले सेनासमूह छे, एम जाण आ पद्यमा वलयपंजर जे छे, ते वलजर छे एम समजुने, बकार अने वकारनु ऐक्यछे वलयपंजर शब्दनु विशेषण अय एशब्द छे एनो अर्थ ज रहित प थायछे , तेथी वलयपंजर शब्द वलजर थयो ते योग्य छे.

आ वृत्तमां, स्त्रीओना हाथमां जे कंकण होयछे, तेने जोईने जे मूर्ख जन छे ते आनंदने पामेछे, ए शृगार रस छे , अने ए जे कंकणनो समूह छे, ते शीलादिकना नाश करनारो छे, माटे तेना तुं त्याग कर ए वैराग्य रस छे ॥ २३ ॥

वसंततिलकावृत्तम् ॥ ये दृक्पथे तव पतति नितंबिनीना
कांता करा जन्मिपल्लवनप्रवीणा ॥नो वेत्सि तान् किमपवर्गपुरप्रयाणप्रत्यूहकारणतया करकानवश्यम् ॥ २४ ॥

अर्थ – हे जनमनाना प्रकटीकरण करवाविषे निपुण पुरुष, नितंबिनी स्त्रीओना कांत एटले मनोहर कर एटले हाथ तारी दृष्टिरूप मार्गमां आवेछे, तेओने मोक्षरूप नगरी प्रते जता करक एटले करानी पेठे विघ्न करनारा केम जाणतो नथी ! याहां जतां जो मार्गमा करानी वृष्टि थाय तो इच्छेला कार्यनी सिद्धि थाय नही, एनु शकुनशास्त्रमा कह्युछे आ पद्यमा स्त्रीना कर जे छे ते करकज एम कह्यु छे ते आ रीते –करशब्दनु विशेषण कांत शब्द छे, एनो अर्थ क छे जेना अंतनविषे एवा थायछे, अर्थात् कर शब्दना अंते ककार गणिये तो करक थाय ते योग्य छे

आ वृत्तमा जडतानु प्रकटीकरण करवाविषे स्त्रीना हाथ निपुण छे, एटले स्त्रीना हाथवती धुम्वने स्वर्गादि थतांज ते गमे तेवा धर्मादिकनेविषे सावध होय तो

पण विस्मृत एटले कामने वश थई जाय छे. ने तेमां ते पोताने परमानंद माने छे. ए शृंगार रस छे. अने स्त्रीना स्पर्शादिकेकरी स्तब्ध बनी गएला पुरुषने मोक्षनो मार्ग जे धर्म. ते सूजतो नथी, माटे तेनो तुं त्याग कर. ए वैराग्य रस छे.

उपजातिवृत्तम् ॥ नीव्यातमस्या हरिणेक्षणाया यंवीक्ष्य हारं हृदि हर्षमेषि ॥ विवेकपंकेरुहकाननस्य तमेव नीहारमुदाहरंति ॥ १५ ॥

अर्थ -नीवी एटले वस्त्र. तेनी गांठ पर्यंत हरिणाक्षी स्त्रीनो जे लंबायमान हार. तेने जोईने तुं पोताना मनमां आनंदने पामेछे. ते हारने पंडितलोक, ज्ञानरूप कमलना वनने नीहार एटले हिम कहेछे. जेम हिम, कमलना वनने नाश करनारो छे. तेम स्त्रीना हृदय उपरनो जे हार ते ज्ञानने नाश करनारो छे. आ पद्यमां हारने नीहार कह्योछे. ते आम:—हारशब्दनुं विशेषण नीव्यात छे. एनो अर्थ आ छे:—नीशब्देकरी व्यात एटले जे युक्त हारशब्द ते नीहारशब्द थायछे ते योग्य छे.

आ वृत्तमां. स्त्रीना हृदयनो जे लांबो हार ते जोतांज पुरुषने अति आनंद उत्पन्न थायछे, ए शृंगाररस छे; अने ते हार जे छे ते ज्ञानरूप कमलना वनने बालवामां हिम जेवो छे. एटले ते हारमां लुब्ध थएला पुरुषनुं ज्ञान नाश थई जाय छे, माटे तेनो तूं त्याग कर. ए वैराग्य रस छे. ॥ १५ ॥

वंशस्थवृत्तम् ॥ विलोक्य किं सुंदरमंगनोदरं करोषि मोहं मदनज्वरातुर॥नो ईक्षसे दुर्गतिपातसंभवं भवांतरे भाविनमंगनोदरम् ॥ १६ ॥

अर्थः—कामज्वरवडे पीडाने पामेला हे पुरुष, सुंदर अंगना एटले स्त्रीनुं उदर जोईने तूं कां मोहने पामेछे ? अंग एटले हे पुरुष, ए उदर नथी पण जन्मांतरने विषे अने नरकने विषे पडवाथी उत्पन्न थनारा जे दर एटले भय; तेज छे, एवो कां विचार करतो नथी ? आ पद्यमां अंगनोदर ए पद बे वखत छे; तेओनो पदविभागेकरी भिन्न अर्थ छे, ते अहिं यमकरूप चमत्कार जाणवो.

आ वृत्तमां, स्त्रीनुं उदर जोई पुरुष मोहने पामीने कामज्वरनी पीडाने पामेछे ए शृंगाररसछे; अने ए उदर नथी पण जन्मांतर तथा नरकमां थनारो भय छे, एम जाणीने तेनो तूं त्याग कर ए वैराग्य रस छे. ॥ १६ ॥

वसंततिलकावृत्तम् ॥ स्फूर्जन्मनोभवभुजंगमपाशनाभी नाभी कुरंगकदृशां दृशि यस्य लग्ना ॥ नाभीमयं जगदशेषमुदीक्षतेऽसौ यो यत्र रज्यति स तन्मयमेव पश्येत् ॥ १७ ॥

अर्थ – देदीप्यमान कामरूप सर्पनु पाशनाली एटले रहेवानु स्थान जे हरिणाक्षी स्त्रीयोनी नाभी एटले अवयवविशेष, तेनेविषे जे पुरुषनी दृष्टि लग्न एटले लागेलीछे ते पुरुष अनीमय एटले निर्भय अवलोकन करतो नथी. जे पुरुष जे ठेकाणे अनुरक्त थायछे ते पुरुष सपूर्ण तद्रूप थायछे आ पद्यमां दृष्टि सलग्न नाभी, नाभीमय सपूर्ण जुएछे ए शब्दश्लेष चमत्कारछे

आ वृत्तमा, स्त्रीनी जे नाभि छे ते कामने रहेवानु स्थान छे, एटले ते नाभिने जोतांज पुरुषने कामविकार उत्पन्न थायछे, ए शृंगार छे, अने जे पुरुष ए नाभिनेविषे आसक्त थायछे, ते अनेक जयने पामेछे, माटे एनो तु त्याग कर, ए वैराग्य छे॥२७॥

उपेन्द्रवज्रावृत्तम् ॥ जडोपयुक्तं जघनं मृगाक्ष्या समीक्ष्य किं तोषमरे गतोपि ॥ अमुं विशुद्धाध्यवसायहंसप्रवासहेतुं घनमेव विद्धि ॥२८॥

अर्थ – रे मूर्ख, जड एटले मूर्ख, तेओने उपयुक्त एटले योग्य, एवा हरिणाक्षी स्त्रीना जे जघन एटले जांघ, जोईने तु का आनंद पामेछे ? ए जघन जे छे ते निर्मळ चित्ताभिप्रायरूप हंसना प्रवास ने कारण भूत घन एटले मेघ छे, एम तु जाण अर्थात् ज्यारे वर्षा पडेछे त्यारे हंस पोतानु स्थान मूकीने मानससरोवर उपर जायछे प्रसिद्ध छे तेम मनुष्यनी दृष्टिने विषे स्त्रीनी जघा आवेछे, त्यारे चित्तना निर्मळ अभिप्राय मटी जायछे आ पद्यमा जडोपयुक्त जघन जे छे ते घन छे, एम कह्यु छे, डकार अने लकारनु सावर्ण्य होवाथी जडापयुक्त शब्दनो जलोपयुक्त शब्द करवा एटले जलना तोष सहित जे जघन ते घन थाय छे, ते योग्यछे ॥ २८ ॥

आ वृत्तमा, स्त्रीनी जाघ मूर्ख कामी पुरुषोने अति प्रिय लागे छे ने ते तेमां खुश थायछे ए शृंगार रस छे, अने निर्मळ चित्तना अभिप्रायना नाश करेछे, अर्थात् स्त्रीनी जघा निरखवाथी पुरुषनु चित्त मलिन थायछे, माटे त्याग करवा योग्य छे ए वैराग्य रस छे ॥ २८ ॥

उपजातिवृत्तम् ॥ नितंबमुन्नामितमानतापनोदं विदित्वा स्मरकर्मलक्ष्मणानाम् ॥ मर्मान्तपर्यन्तकटुं विद्धि नितम्बमेनं त्यज दूरतोपि ॥ २९ ॥

अर्थ – मनोपनी प्रेरणा करनारा रमणनयना स्त्रीना जे नितंब, एटले कटिना पाछलो भाग जोवानी तु इच्छा करेछे ते नितंब, पत्र, पुष्प तथा फल इत्यादि विना समडेकरी अत्यंत कडुवा जडना जेवा छे, एम जाणीने दूर नाखीदे अथा

तु निंबनुं झाड सर्व प्रकारे कडवुं होयछे, तेम स्त्रीना नितंब सर्व प्रकारे ग्लानि करवा योग्य छे. तेनो तुं त्याग कर. आ पद्यमां उल्लसित तापनो देनार जे नितंब ते निंबवृक्ष छे, एम कह्युं. ते आमः—उल्लसित एटले विकसित छे तकारनो अप नोद एटले नाश जेने विषे. एवो नितंब शब्द निंबशब्द थायछे ते योग्य छे.

आ वृत्तमां, कमलना जेवां नेत्रोवाली स्त्रीना जे बे नितंब छे. ते संतापनी प्रेर णा करनाराछे, एटले स्त्रीनी कटिनो पाछलो भाग जोवाथी अत्यंत मदन विकार उत्पन्न थायछे. ते इच्छा पूर्ण न थवाथी तेना मनमां संताप थायछे, एवो ते नि तंबोनो जे प्रभाव छे, ते शृंगार रस छे; अने स्त्रीओना नितंब निंबडाना झाडजेवा कडवा छे, माटे एनो तुं त्याग कर; ए वैराग्य रस छे. ॥ २९ ॥

शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥ नूनं नूपुरमेतदायतदृशो रागादि
विद्वेषिणां क्रीडार्थं पुरमित्यवेत्य न दृशाप्यालोकनीयं क्व
चित् ॥ येनास्मिन् मुखमात्रचंगिमगुणैराकृष्य तैरुल्बणै
र्बद्धस्य प्रसभं चिरादपि सखे मुक्तिर्भवित्री न ते ॥ ३० ॥

अर्थ — हे सखा. नूनं एटले निश्चयेकरी विशालनेत्रोवाली स्त्रीओनां जे आ नूपुर एटले चरणभूषण, रागादिशत्रुने क्रीडा करवानुं पुर एटले नगर छे; एम जाणीने क्यारे पण नजरेकरी जोईश नही. जेने पोतानुं सारुं थवानी इच्छा हो य. तेणे क्यारे पण शत्रुनुं नगर जोवुं नही. केमके, ए नगर प्रसिद्ध. उदार, त था मुख्यत्वे श्रेष्ट गुणे आकर्षण करी बलात्कारेकरी तने बांधीलेशे, तेथी फरी तू छूटी शकनार नथी अर्थात् ते नूपुरमां जो तु आसक्त थशे तो, फसाई पड शे; आ पद्यमां स्त्रीओना नूपुरने शत्रुनुं नगर कह्युंछे. ते आम·—नूपुरशब्दनुं विशे षण जे नून छे,तेनो अर्थ न शब्देकरि ऊन एटले जे रहित छे, एवु नूपुर छे,एम जाणवुं.

आ वृत्तमा' स्त्रीओना पगनां नूपुर पुरुषना मननुं हरण करी लिएछे. ए शृंगाररस छे; अने ते नूपुर शत्रुनुं नगर छे एम जाणीने तेनो त्याग करवो, ए वैराग्य रस छे. ३०

उपजाति वृत्तम् ॥ यास्त्रीतिनाम्ना विभृते शमादौ शस्त्री प्रबुद्धैरवबुध्यतां सा ॥ एनां पुरस्कृत्य जगत्यनंगभटो यतः पुण्यभटं भिनत्ति ॥ ३१ ॥

अर्थ.—जे स्त्री एवुं नाम तु अंत·करणमा धारण करेछे, ते शमादौ एटले उपश मादि धर्म कर्मने विषे शस्त्री एटले एक आयुधविशेष छे, एम सुजाण पुरुषोए जा

ु आ संसारनेविषे कामरूप योद्धो, ए स्त्रीरूप शस्त्रीने आगल करीने धर्मरूप यो
तु छेदन करेछे जेम संग्रामनेविषे एक मोटो योद्धो, पोताना शस्त्रेकरीने प्रति
द्धानु छेदन करेछे, तेम कामरूप योद्धो स्त्रीरूप शस्त्रीए करी धर्मरूप योद्धानुं छे
करेछे आ पद्यमां स्त्रीने शस्त्री कहीछे, ते आम –या स्त्री शमादी छिनत्ते, ए
जे स्त्री प्रथम शकार धारेछे, अर्थात् स्त्रीशब्दनी आद्ये शकार आव्याथी शस्त्री
थायछे ते योग्य छे

आ वृत्तमां, प्रसिद्ध शृंगाररस नथी, परंतु स्त्रीनी निर्भर्त्सना द्वारा वैराग्यांतर
शृंगारनी पण सूचना करीछे ॥ ३१ ॥

वसंततिलकावृत्तम् ॥ येयं वधूरवसिता हृदये प्रमोदसंपा
दनव्यतिकरैकनिबंधनं ते ॥ सा दुर्गदुर्गतिपथेन जगन्नि
नीषोर्धूरेव मन्मथरथस्य विभावनीया ॥ ३२ ॥

अर्थ – हे पुरुष, ताराहृदयनेविषे हर्षसमूह उत्पादन करवानु कारण जे वधू
टले स्त्री, अवसिता एटले आवीने रहीछे, ते स्त्रीने तु जे हृदयने हर्ष उत्पन्न
नारी मानेछे, ते वधू अत्यंत दुर्गम नरकना मार्गेकरी लेई जवाविषे इच्छा क
रा कामरथनी धू एटले धुरी छे, एम तु जाण अर्थात् ए स्त्री नथी, किंतु नरक
मार्गेकरी संसारनेविषे लईजनारो जे कामरथ, तेनी धुरी छे आ पद्यमां व
कामरथनी धुरी छे, एम कह्यु, मूलमां वधू शब्दनु विशेषण अवसिता शब्द छे,
ो अर्थ वकारकरि सित एटले रहित यथाथी वधू शब्दनो धू शब्द थायछे
योग्य छे

आ वृत्तमां, स्त्रीने हर्षसमूह उत्पादन करनारी, अने पुरुषना मननेविषे रम
करनारी कहीछे, ए शृंगार रस छे, अने ए वधू नथी पण कामदेवना रथनी धुरी
एम जाणीने तु त्याग कर, ए वैराग्य रस छे. ॥ ३२ ॥

मंदाक्रांतावृत्तम् ॥ प्रीतिं तन्वत्यनलसदृशो यास्तरुण्य
स्त्वयैता देहद्युत्या कनकनिकषा द्योतिताशा विवेकिन् ॥
मन्ये तामामनलसदृशा संयमारामराज्या माभू पा
पात्रनोप्यस्मि यदि शिवावाप्तये बद्धबुद्धिः ॥ ३३ ॥

अर्थ – ना समूहेक. विवेकवान् पुरुष, जेनी अनलस एटले आलस्य रहित दृष्टि छे, अने

जेनी सुवर्णना जेवी शरीरनी कांतीए दिशाओ प्रकाशित करीछे. एवी तरुण स्त्रीओ तने हर्ष उत्पन्न करेछे. ते अनलसदृश एटले अग्निना जेवी स्त्रीओनी सत्ता संयम एटले चारित्ररूप वनपरंपराविषे छे, एम जाण. अर्थात् जेम अग्निसंपर्केकरी वन दग्ध थायछे. तेम स्त्रीसंपर्केकरी चारित्र दग्ध थायछे. जो मोक्षप्राप्तिनी बुद्धि तने थई होय. तो स्त्रीओनी समीप पण जतो नही, आ पद्यमां अनलसदृश पद बे वार आव्यांछे. तेनो अर्थ नोखो नोखो छे. ए चमत्कार जाणवो.

आ वृत्तमां, चंचलदृष्टिवाली स्त्रीना शरीरनो वर्ण सोना जेवो होय, तो पुरुषना मनमां अति आनंद उत्पन्न करेछे. ए शृंगार रस छे; अने स्त्री अग्नि जेवी छे. ने संयमादिक वनपरम्पराने बाळी भस्म करनारी छे, माटे एनो तुं त्याग कर, ए वैराग्य रस छे ॥ ३३ ॥

मालिनीवृत्तम ॥ क इह विषयभोगं पुण्यकर्मायशून्यं स्पृहय
ति विषभोगं भावयेस्तत्ततस्तम् ॥ स्मरति न करणीयं मूर्छि
तो येन जंतुः पतति कुगतिगर्ते नेक्षते मोक्षमार्गम् ॥ ३४ ॥

अर्थः— आ संसारनेविषे कयो पुरुष पुण्यकर्मनो आय एटले लाभ. एणेकरी शून्य एटले रहित जे विषय भोग एटले पांच इंद्रियना सुखनी इछा करेछे, केमके ए जे विषयभोग छे, ते विषभोग एटले विषभक्षण छे, जे विषयभोगना योगे मोहने पामेलो प्राणी, स्मरण करवायोग्य ते करतो नथी, तेथी नरकरूप खाडामां पडेछे. ते फरी मोक्षमार्गने पामतो नथी, जेम विष खानारा पुरुषने स्मरणादि रहेतां नथी, तेम विषयोपभोग करनाराने पण स्मरणादिक रहेतां नथी. आ पद्यमां विषय भोग जे छे ते विषभोग छे, एम कह्यु, ते आम.— विषयोपभोगी पदनुं यशून्यं ए विशेषण छे, एनो अर्थ यकारेकरी शून्य एटले रहित थायछे; एम यकाररहित जे विषयभोग ते विषभोग छे, ते योग्य छे.

आ वृत्तमां, पांच विषयोनो तिरस्कार कर्यो छे, तेओनुं मूळ कारण स्त्री विषयसुख शास्त्रोमा कह्युछे, ते आश्लोकमां यद्यपि प्रगट कह्यु नथी तथापि अर्थात् सिद्ध थायछे, तेथी ए शृंगार रस छे; अने विषयभोगने विषभोग कह्याछे ए वैराग्य रस छे. ॥ ३४ ॥

उपजातिवृत्तम् ॥ सखे सुखं वैषयिकं यदेतदाभासतं तन्नरकां
तमंतः ॥ सत्यं तदुःसर्पदघप्रबंधनिबंधनत्वान्नरकांतमेव ॥ ३५ ॥

अर्थ – हे सखा, आ जे विषयसुख छे ते तारा अंतःकरणमां कांत एटले मनोहर लागेछे, ते सत्य छे, मिथ्या नथी, परंतु विस्तारने पामनारी जे पापपरंपरा, तेनुं ए कारण छे. माटे जेनो अंत नरक छे, एटले नरकने देनारा छे, एम जाण. आ पद्यमां प्रथमना नरकांत ए बे शब्द भिन्न छे, अने पाछलाना नरकांत ए बे पद एकसरखा छे, ए काव्यचमत्कार जाणवो.

आ वृत्तमां, विषयसुख जे छे, ते पुरुषना मनने घणा सारा लागेछे, एम कह्यु छे, ते शृंगार रस छे, अने ए विषयसुखथी पापपरंपरा विस्तारने पामेछे, माटे त्याग करवा योग्य छे ए वैराग्य रस छे ॥ ३५ ॥

शिखरिणीवृत्तम् ॥ स्मरक्रीडावाप्या वदनकमले पक्ष्मलदृशां दृढाऽसक्तिर्येषाम् अधरमधुपानं विदधताम् ॥ अदूरस्था बंधव्यसनघटना क्लेशमदनी द्विरेफाणां तेषामिह मधुकराणामिव नृणाम् ॥ ३६ ॥

अर्थ – कामनी क्रीडारूप जे वापी एटले कुवो छे, तेनेविषे स्त्रीना अधरोष्ठरूप मधुपुष्परस पान करणारा जे पुरुष छे, जेओनी स्त्रीना मुखकमलनेविषे दृढ आसक्ति छे, एवा मोह पामनारा जे पुरुष छे, तेओने आ स्त्रीना मुखकमलनेविषे भमरानी पठे क्लेशकरी कुमळ एवा बंधनाए व्यसन घटना एटले कष्टरचना समीप वर्तिनी छे. जेम मधुपान करनारा भमराओनी कमळोनेविषे दृढाशक्ति बंधने करी कष्ट देनारी छे, तेम अधररसपान करनारा पुरुषोने स्त्रीना मुख कमळनेविषे दृढ जे आसक्ति ते प्रेमबंधनेकरी कष्ट देनारी छे.

आ वृत्तमां स्त्रीनो अधरामृत भमराओनी पठे पुरुषोने अति प्रेम उत्पन्न करनारो छे, ए शृंगार रस छ, अने तेथी ते भमरानी पठे बंधनने पामेछे, माटे त्याग करवा योग्य छे, ए वैराग्य रस छे ॥ ३६ ॥

सखे मनोपान्नं पिब चपलतामुत्सृज निजां भ्रमागमे काम विरचय मचि चित्तहरिणि ॥ हरत्येनां तृष्णां न युवतिनितंबस्थलभुवो विमुक्ता नीरागैर्विषमशरसंपातविषमा ॥ ३७ ॥

अर्थ – हे सखा, आ चित्त हरिणना जेवा छे, केमके, जेम हरिण अतिचंचल होयछे, तेम चित्त पण महाचंचल होयछे, माटे मृग अने चित्तनुं साम्यपणुं कहुंछे, तेथी चंचलताने त्याग करीने मनोहररूप जलनुं पान कर, अने अत्यंत भ्रम रूप वननी भ्रांति कर. आ जे युवती एटले तरुण स्त्रीओ छे, तेओना नितंब एटले

जे केडनी पाटजनो भाग छे, ते स्थळभूमिना जेवो छे. त्यां तारी तृषा मटनार न थी. ए स्थळभूमि केवी छे. नीर एटले पाणी अने अग एटले वृक्ष. एणेकरी रहि त छे. जळ अथवा वृक्षनी छायावडे तृषा निवारण थायछे, ए बन्नेमांनो कोई ए स्थळभूमिने विषे नथी. अने ए भूमिनेविषे व्याध्यादिक दुष्ट पुरुष वाण नाखेछे. ते वाणथी घणो संताप पामीने तरत मरण थशे; पण तृषा मटवानी नथी. व ळी ते निर्जन भूमि केवी छे? के रागरहित पुरुषोए जेनो त्याग कर्योछे. अने त्रि पुरहर जे कामदेव. तेना बाणना संधानना योगे चिंतामणी छे. माटे युवतीना नितंबनी इच्छा तुं नही कर. एवो चित्त प्रत्ये उपदेश छे.

आ वृत्तमां, स्त्रीना नितंबनुं वर्णन कर्युं छे; ए शृंगाररस छे; अने ते स्थळभूमि नी पठे चित्तरूप भ्रमरने पीडा करेछे, ए वैराग्यरस छे. ॥ ३५ ॥

शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥ चेतश्चापलमाकलय्य कुटिलाकारां कुरंगीदृशो दृष्ट्वा कुंतलराजिमंजनघनश्यामां किमुत्ता म्यसि ॥ धर्मध्यानमहानिधानमधुना स्वीकर्तुकामस्य मे प्रत्यूहार्थमुपस्थितेयमुरगश्रेणीति संचिंतयेः ॥ ३६ ॥

अर्थः– हे चित्त. कुटिल एटले वक्र आकारवाळा मेघना जेवा काळा अथवा काजळना जेवा अत्यंत श्यामवर्ण, जे हरिणाक्षी स्त्रीना केशनी पंक्ति छे. तेने जोई ने तुं शानाथी व्याकुळ थायछे? ए स्त्रीना केशनी पंक्ति जे छे ते धर्मचिंतनरूप म हानिधान स्वीकार करनारो तुं तेने साधन काळनेविषे विघ्न करवानाथी तैयार थई छे. एवी उरगश्रेणि एटले सर्पपंक्ति छे; एम जाण. कोई कार्य करवानाथी उद्युक्त थएला पुरुषने सर्पदर्शन निषिद्ध छे; अने निधान ग्रहणना समये तो अत्यंत अनिष्ट छे. माटे स्त्रीकेशपंक्तिरूप सर्पश्रेणीनुं दर्शन तुं नही कर. केमके. एम करवाथी धर्म चिंतनरूप निधानना ग्रहण समये तने विघ्न आवशे नही.

आ वृत्तमां. स्त्रीना केशनी पंक्तिने सर्पपंक्ति कहीछे. अने तेनी श्यामताने मे घनी तथा काजळनी उपमा दीधीछे; ए शृंगाररस छे; अने ते सर्पनी पठे चित्तर्ने तेनाथी सर्वथा त्याग करवा योग्य छे; ए वैराग्यरस छे. ॥ ३६ ॥

यासां सत्यपि सद्गुणानुसरणे दोषानुवृत्तिः परा याः प्राणान्वरमर्पयंति न पुनः संपूर्णदृष्टिं प्रिये ॥ अत्यंताभिमतेपि वस्तुनि विधिर्यासां निषेधात्मकस्तास्त्रैलोक्यविलक्षणप्रकृतयो वामाः प्रसीदंतु ते ॥ ३७ ॥

अर्थ – हे पुरुष, जो तने मुक्तिरूप नगरी प्रत्ये जवानी अनिरुचि होय, तो तू कामरूप गजशिशुने क्रीडाने अर्थे, विहारविषे योग्य एवा आ स्त्री नितंबरूप स्थली एटले भूमि, तेने तू दूर मूकीदे जो तू ए भूमिने मुकीश नही, तो यौवनरूप प्रबल वायुए करी विस्तारने पामेला व्यामोहरूप रज कणो तारा नेत्रोमां पडशे तेथी मार्ग सूझनार नथी अर्थात् मोक्षमार्ग मलनार नथी आखोमा धूल गयाथी मार्गने जोई शकातु नथी ए प्रसिद्ध छे, एम ससाररूप अरण्यमां भ्रमण करीश

आ वृत्तमा, कामने हस्तिनाबालक जेवो कह्योछे तेने क्रीडा करवाने स्त्री नितंबरूप पृथवी छे, अर्थात् कामक्रीडानु स्थान जे स्त्रीना नितंब कह्याछे ए शृगाररस छे, अने ए पृथवीनेविषे यौवनना योगे नेत्रोनेविषे रज कणो पडवाथी मार्ग सूजतो नथी, अर्थात् स्त्री नितंबरूप भूमिनेविषे जे पुरुष आवी जायछे ते विषयरूप रज कणोकरी हृदयाध थई जायछे माटे ए त्याग करवा योग्य छे ए वैराग्यरस छे ॥ ३९॥

मालिनीवृत्तम् ॥ शमधनमपहर्तुं कामचौरप्रचार विरचयति निकाम कामिनी यामिनीयम् ॥ सपदि विदधती या मोह निद्रासमृद्धा जनयति जनमत सर्वचैतन्यशून्यम् ॥ ४० ॥

अर्थ –आ कामिनीरूप यामिनी एटले रात्रि, उपशमरूप धन हरण करवाने सारू कामरूप चोरनो अत्यत प्रचार प्रगट करेछे, तथा मोहरूप निद्रानी समृद्धि करनारी जे ए रात्र, ते जन एटले मनुष्योने अत करणनेविषे सर्व चैतन्य थकी रहित करेछे जेम रात्रिनेविषे सर्व मनुष्य निद्रित छता द्रव्य हरण करवासारू चोर फिरे छे तेनी पठे जाणी लेवु

आ वृत्तमा, स्त्रीने मोह उत्पन्न करनारी रात्रि कहीछे, ने कामने चोर कह्योछे, अर्थात् स्त्री कामोत्पत्ति करनारी छे, ए शृगाररस छे , अने ए रात्रिनेविषे मनुष्य भ्रमण करे तो कामरूप चोरना सपाटामा आवी पोतानी सपत्ति तथा प्राण प्रमुख सर्व खोई दियेछे, माटे एनो त्याग करवो योग्य छे ए वैराग्य रसछे ॥ ४० ॥

उपजातिवृत्तम् ॥ मृगेक्षणा नूनमसावसीमा भीमाटवी बुद्धिमतामतीत्या ॥ यद्वाहुवल्लीभिरनगभिल्लो बध्वा नरान् लम्भयते न मुक्तिम् ॥४१॥

अर्थ –जे बुद्धिमान पुरुषोने अतिक्रमण करवा योग्य नथी, जेने मर्यादा नथी, जेना मृगना जेवा नेत्र छे, एवी आ स्त्री ते भयकर वन छे , जेनी बाहुलताए करी,

कामरूप चोर. मनुष्योने बांधिने फरी छोडी मूकतो नथी, अर्थात् बांधलोने बांधलो ज रहेवा दियेछे. जेम अरण्यमां मार्गे चालनारा लोकोने चोर. बेडिवडे बांधिने तेओनुं सर्वस्व हरण करी लीयेछे. तेमज मृगेक्षणा स्त्री पोतानी बाहुलताए कंठने विषे बंधन कर्या पछी पुरुषने मूकती नथी

आ वृत्तमां. स्त्रीने मर्यादारहित कही. तेथी हावभाव सूचव्या छे, स्त्रीने वनरूप कही ने तेनी भुजाने लतारूप कही, एमां कोई पुरुष सपडाय तो फसी पडेछे, अर्थात् स्त्रीए भुजावडे आलिंगन कर्युंछतां तेथी पुरुष छूटी शकतो नथी, ए शृंगार रस छे. अने ए वनमां कामरूप चोरटा वशेछे ते मोक्षमार्गे जनारा पुरुषनुं धर्म धन प्रमुख हरण करी लेनार छे, माटे त्याग करवा योग्य छे, ए वैराग्य रस छे. ॥४१॥

शिखरिणीवृत्तम् ॥ इयं वारं वारं द्युतितुलितरोलंबवलयं न वक्रं भ्रूचक्रं चलयति मृगाक्षी मम पुरः ॥ कुधीकारागारापसरणमतिं मां स्खलयितुं प्रपंचत्पंचेषोर्वहति निबडं लोहनिगडम् ॥ ४२ ॥

अर्थ.— आ मृगलोचना जे स्त्री छे. तेनुं जे वांकुं भ्रुकुटिचक्र छे, ते भमराओना जेवुं कांतिवालुं छे. ते मारी सामे वारवार चचल करेछे, एम नथी, पण नरगी बुद्धिरूप कारागृहथी दूर भागी जवानी इच्छावालो जे हुं छुं, तेमने भागी जवा न देतां कामना प्रपंच युक्त थइ सह जे लोखंडनी बेडी धारण करेली छे. अर्थात् जेम चोरने बेडी नाखीने बंदीखानामां नाखेछे, तेमज मने पण वश करवा सारु आ स्त्री भ्रुकुटीचक्ररूप कामदेवनी लोखंडनी बेडी धारण करेछे.

आ वृत्तमा, स्त्रीनुं भ्रुकुटिचक्र एवुं छे के जे पुरुष तेना फासामां आवे ते फरी छूटी शकतो नथी, अर्थात् अति मोह उत्पन्न करनारुं छे; ए शृंगार रस छे; अने स्त्रीनुं भ्रुकुटिचक्र काम देवनी लोहनी बेडी छे, माटे तेनो त्याग करवो जोये ए वैराग्य रस छे. ॥ ४२ ॥

मंदाक्रांता वृत्तम् ॥ यामोन्यत्र द्रुततरमितो मित्र यत्कंठपीठे नायं हारश्चकितहरिणीलोचनाया चकास्ति ॥ नाभीरंध्रे विहितवसतिर्योस्ति कंदर्पसर्पस्तन्मुक्तोयं स्फुरति रुचिरः किंतु निर्मोकपट्टः ॥४३॥

अर्थ —हे मित्र, आ आपणे स्थानकने मूकीने जलदी बीजे ठेकाणे जवुं जोये के मके तृषावान थएली हरिणीना नेत्रना जेवां जेनां नेत्र छे, एवी स्त्रीओना कंठमा जे

आ हार शोभे छे, ते हार नथी, किंतु नाभिरूप रंध्रनेविषे रहेनारो जे कामरूप सर्प, तेणे मूकेलु आ मनोहर निर्मोकपट्ट एटले कंचुक दीगमा आवेछे, तेज आ ठेकाणु मूकीने बीजे ठेकाणे नाशी जवानी सूचना करेछे सर्पनु कंचुक भयनो हेतु छे माटे नाभीरूप जे कामरूप सर्पने रहेवानु राफडु, अने आ हाररूप सर्पनु कंचुक छे, एम जाणीने नाशी जवु योग्य छे

आ वृत्तमा, स्त्रीओना कंठना हारनी शोभा कहीछे, तथा नाभिनु वर्णन करेलु छे, ए शृंगाररस छे, अने ए बन्ने दुःखना साधन होवाथी त्याग करवा योग्य छे ए वैराग्यरस छे ॥ ४३ ॥

वसततिलका वृत्तम् ॥ य कामकामलविलुप्तविवेकचक्षु स्वर्गापवर्गपुरमार्गमवीक्षमाण ॥ ज्ञानाजन प्रति निरादरतामुपैति भ्रात· पतिष्यति स भीमभवाधकूपे ॥ ४४ ॥

अर्थ – जे पुरुषना विवेकरूप चक्षु कामरूप कामल एटले नेत्र रोगेकरी ग्रस्त छे, ते स्वर्ग अने अपवर्ग एटले मोक्षरूप नगरनो मार्ग जोई शकतो नथी, एमछता जे पुरुष ज्ञानरूप अंजननो आदर करतो नथी ते पुरुष भयकर ससाररूप अंधकूपमा पडेछे, जेम कमलाना रोगेकरीने जेना नेत्रो ग्रस्त थयला होय, ते जो आंखोनेविषे अंजन नाखवानो अनादर करे तो अंध कूपमा पडी जाय, तेम ज्ञानांजननो जे निरादर करेछे, ते आ ससाररूप आंधळा कूवामा पडेछे

आ वृत्तमा, कामने नेत्र रोगना जेवो कह्योछे, एटले जने कामलो प्रमुख नेत्ररोग थायछे ते कांई जोई शकतो नथी तेम कामरूप नेत्र रोगना योगे पुरुष निर्विवेकी थायछे, एवी कामनी महिमा छे, ते शृंगाररस छे अने कामातुर पुरुष आ ससाररूप आंधळा कूवामा पडछे, माटे त्याग करवायोग्य छे, ए वैराग्यरस छे ॥४४॥

शिखरिणी वृत्तम् ॥ भवारण्य मुक्त्वा यदि जिगमिषुर्मुक्तिनगरीं तदानीं माकार्षीर्विषयविषवृक्षेषु वसतिम् ॥ यतश्छायाप्येषा प्रथयति महामोहमचिरादय जतुर्यस्मात्पदमपि न गतु प्रभवति ॥४५॥

अर्थ – हे पुरुष, जो तु भवाटवीने मूकीने मुक्ति नगरीप्रते जवानी इच्छा करतो हो, तो विषयरूप विषवृक्षनेविषे वसति नही कर केमके, आ वृक्षनी छाया पण महामोहना विस्तारने पमाडेछे ए विषयवृक्षनी छायाना स्पर्श पण मा

हकारक छे. ए कारण माटे आ प्राणी एक पगलुं पण चालवाने समर्थ थतो नथी. जेम वननेविषे विषवृक्षनी नीचे बेठेलो पुरुष, मत्त थयेलो होयछे, ते वखते ते वन मूकीने नगरमां जवानी इच्छा करे तो एक पगलुं. पण नाखी शकातुं नथी. माटे मोक्षनी इच्छा करनारा पुरुषे विषयसेवन करवानी बुद्धि करवी नही.

आ वृत्तमां. विषयना सेवन थकी पुरुष कामांध थई जाय छे, एम कह्युंछे ते शृंगाररस छे. अने ते सर्वथा त्याग करवा योग्य छे एम कह्युंछे ते वैराग्यरस छे.

उपजातिवृत्तम्॥सोमप्रभाचार्यमभा च यन्न पुंसां तमःपंकमपाकरोति॥
तदप्यमुष्मिन्नुपदेशलेशे निशम्यमानेऽनिशमेति नाशम् ॥ ४६ ॥

इति श्रीशतार्थवृत्तिकारश्रीसोमप्रभाचार्यविरचिता
शृंगारवैराग्यतरंगिणी समाप्ता.

अर्थः—सोमप्रभा एटलेचंद्रकांति. अने अर्यमभा एटले सूर्यकांति जे मनुष्योनो तम पंक एटले अज्ञानांधकारसमूह दूर करता नथी, ते पण आ अल्प उपदेश श्रवण कर्यो छतां नाशने पामेछे, अर्थात् चंद्रकांति तथा सूर्यकांति अज्ञानरूप अंधकारनो नाश करवाने समर्थ थती नथी, अने आ उपदेश अंतरनो अंधकार मटाडवाने समर्थ छे. एथी आ उपदेश अति उत्कृष्ट छे. आ पद्यमां ग्रंथकर्त्ताए पोतानुं सोमप्रभाचार्य एवुं नाम चातुर्ये करी गोपन करेलुंछे, ते ज्ञाताओए जाणी लेवु. ॥ ४६ ॥

आ ग्रंथनुं नाम ग्रंथकर्त्ताए शृंगारवैराग्यतरंगिणी राख्युंछे, एनोअर्थ शृंगार अने वैराग्यरूप तरंगोवाली नदी, एवो थायछे ते नदीना बन्ने प्रकार नंदलाल नामना टीकाकर्त्ताए स्पष्टरीते दर्शाव्या छे, तेनोज भाव लईने आ अमे अर्थ कर्यो छे. ग्रंथना अंतमां टीकाकर्त्ताए त्रण श्लोक राख्या छे ते आप्रमाणेः—

संवत्सरद्विपमुनींडुमितस्य मासे मार्गे त्रयोदशमिते दिवसे भृगौ च ॥ स्वल्पा तरीविरचिना सुखबोधिकाख्या श्लेषार्थयुक्तरतरंगिणिकासुशास्त्रे ॥ १ ॥ आगारानाम्नि नगरे नंदलालेन धीमता ॥ दानविशालशिष्यानुरोधेन कृपया गुरोः ॥२॥ युग्मम् ॥ सोमप्रभाचार्यकृतिं सुदुर्गमां विवृण्वता स्वल्पधिया मयाऽत्र यत् ॥ न्यूनाधिकोट्टंकनमल्पबुद्धितः कृतं विशोध्यं कृतिभिः कृपालुभिः ॥ ३ ॥

इति श्रीशृंगारवैराग्यतरंगिणीभाषांतरं समाप्तं

॥ अथ श्रीवीरस्तवनप्रारम्भ ॥

स्व श्रेयससरसीरुह, सूर श्रीवीर कुपिवर सेज ॥ सविशेपहर्परसवश,-सुरासुर
व्यूहसेव्यांऽन्हि ॥ १ ॥ अश्वोवसीयससर ,शोपसहस्राशुराश्रय सहसां ॥ ससार
लालसां वो, जूयाहजशो वशी वीर ॥ २ ॥ विपयाशीविपवीश्वर, हिसारस सरसवा
रिरुहशिशिर ॥ विश्वस्य रोपशार्वर, सहाररवे शिवाय स्या ॥ ३ ॥ आशसव शि
वश्री,विलासलीला विहाय सुरयोपा ॥ य शिश्रियु स्वरीशा श्रीवीर श्रेयसेऽस्तं
व ॥ ४ ॥ हरहासहसशशिहा,रहारियशसो शिवेपिसश्रयया ॥ ईहे वरिवस्यायं,
वीरेशस्यान्हिसाररसयो ॥ ५ ॥ शीलसरोवरलहरी, विहारशिशिरा असवरीयो व ॥
वीरस्य व्याहारा, न्हियासुरशरीरशौर्यहरा ॥ ६ ॥ उरुसशयशैलस्वरु, ररिहा वीराव्ह
यो वरवृपास ॥ अवसेयाह्नौदय वा, वर्पारुह्वारिवाहरव ॥ ७ ॥ सरलाशया सुशी
ला, रिरसव श्रायसश्रिया सह ये ॥ येपा श्रीवीरेश्वर,सेवारस एव हर्पाय ॥ ८ ॥ वीर
शिवालयसरसी, वरलावर सर्वविपयविश्राम्य॥ सवरसाररसवासर, सर्वेपां लोलवीष्य
प ॥ ९ ॥ शीलश्रियो विवाहावसरे विश्वाश्रयो रसावलये ॥ आवर्प वसुवर्षां, वि
शा विशालैरयैरासी ॥ १० ॥ आशासे सहसाह, वासवसेवाई शिवरसाल हरे ॥ रु
हविश्रसावसाय, व्यवसायायासविरहवर ॥ ११ ॥ असुरुपयोर्विशरारु,श्रीसर्वस्व
हि शशिसरोरुहयो ॥ अशरारुस्वास्यश्री, लास्यविलासैर्विलोलयसि ॥ १२ ॥ ससा
रसनिलराशे , शोपे कुपिरोर्वशेयऽर वीर ॥ सर्वाशालासियशो,राशिरहिसारह शा
ला ॥ १३ ॥ उरसिशयाशु श्रेय ,श्रिया असवरसरोरुहशशीव ॥ रायाश्रयं वि
वावह, रसाविहार स्वसेवाया ॥ १४ ॥ सदानिक ॥ अविपहशिर शूल, विश्व
जिहो विपयवैरिवारस्य ॥ व्याहरसि वृपरहस्य, शस्याय शरीरिनिसराय ॥ १५ ॥ शैश
व [illegible] शिरोविलोलसेव्यांन्हे ॥ सहरसि हेलयांह , सिहइव वशेश्वरं
[illegible] गशुशिशिरलेश्यं,रायंव्यवहारलालसंररुपै ॥ सश्रीयसे क
[illegible] ॥ १७ ॥ उल्लासय स्वसेवाररसशीले विशि शिवावली वी
[illegible] ल, लहरीसहारसुशिरीव ॥ १८ ॥ श्रवसी वशयसि सोर्व,
[illegible] शा ॥ यै सह रसालयाऽहा,सि हारहूाररसालरस ॥ १९ ॥
[illegible] ार्यवीर्यशाली य ॥ सवरवैरियश शशि, राहुरशेपश्रियां
सूरिवरै ,विहाय आशाररसाविहारियशा ॥ अहोऽसुरवश

हरि, सुरेशजशिष्यविशालोराः ॥ २१ ॥ शुश्रूषुशिष्यविसर,अव.सुदर्पसवर्पिसंरा
व· ॥ अविजयवार्यैश्वर्य, श्रीयोपाश्लेपरसविवशः ॥२२॥ सैपोऽसहायवीर:, शिवा
रिवाराहवेष्वसुसहेषु ॥ विश्वस्य सुरोर्वीरुह, आयुष्यः श्रेयसां वीर. ॥ २३ ॥ संसारो
रविशालय, वारिविशोर्पार्वहव्यवाहो वः ॥ अव्यालीलाऽलसमुर, विलयाद्दावाऽविपय
शील· ॥ २४ ॥ पंचभिः कुलकं ॥ अह्रियोऽलसस्य शिष्या.वयवलवस्याऽयविरहवि
रसस्य ॥ श्रीवीर वीरयरया लेश्या अश्रेयसीरस्य ॥ २५ ॥ यः पंचवर्गपरिहारमनो
ज्ञमेतच्चेतश्चमत्कृतिकरं गुणकीर्तनं ते ॥ जिव्हाग्रवर्ति वितनोति विपश्चिताना श्री
वीरभाग्यभुजि न प्रभवति तस्मिन् ॥ २६ ॥ इति पंचवर्गपरिहारेण श्रीजिनप्रभसू
रिकृतश्रीवीरस्तवनं समाप्तम् ॥

॥ अथ श्रीगौतमस्तवनं ॥

श्रीमंतं मगधेषु गोर्वर इति ग्रामोभिरामोऽस्ति यस्तत्रोत्पन्नमसन्नचित्तमनिशं श्री
वीरसेवाविधौ ॥ ज्योतिःसंश्रयगौतमान्वयवियत्प्रद्योतनद्योमणि तापोत्तीर्णसुव
र्णवर्णवपुषं भक्त्येंद्रभूतिं स्तुवे ॥ १ ॥ के नाम नाभंगुरभाग्यसृष्टयं दृष्टयं सुगणा
स्पृहयंति संतः ॥ निमेषविघ्नोज्झितमाननेंदुज्योत्स्नां मनोहत्य तवापिबन्या ॥ २ ॥
निर्जित्य नूनं निजरूपलक्ष्म्यात्तृणीकृतः पंचशरस्त्वया स ॥ इत्थं न चेत्तर्हि कुतस्त्रिने
त्रनेत्रानलस्तं सहसा ददाह ॥३॥ पीत्वा गिरं ते गलितामृतेच्छा· सुराश्चिरं चकुर्भो
भमिंदुं ॥ सुधाह्रदे तत्र मुनीश मन्ये लक्ष्मछलात् शैवलमीक्ष्यतेऽत ॥ ४ ॥ सौ
भाग्यभंग्यापि समाविदाने प्रत्येति लोक कथमेतदज्ञः ॥ यस्त्वा समग्रास्त्वपि लब्धिका
ताः समालिलिंगु· समकालमेव ॥ ५ ॥ त्वत्पादपीठे विलुठत्यमर्त्यास्तिरस्कृत्या
किन्न कल्पवृक्षा. ॥ तैरप्यमाहंत्त तवोपमानोपमेयभावः कथमस्तु वस्तु ॥ ६ ॥ परो
नेत्राली तव रोहिणीयं मुदे न कस्याद्भुतकृच्चरित्रा ॥ यदास्पुष्टा वदनेंदुगत प्रनिर्णय
बोपि शिवाय यस्या. ॥ ७ ॥ यत्केवलज्ञानमविद्यमानमप्यात्मनि प्रापितवानदा
स्त्वं ॥ लोकोत्तरत्वे ननु तावकानां दिङ्मात्रमेतद्भगितागुतानां ॥ ८ ॥ नवर्ष्णानां
गुतथो गुणज्ञैर्विधीयमाना विबुधाधिपाद्यं. ॥ कृत्यात्तव स्तोत्रवनागणस्य सम्यक्
ये कृत्करणीभवंति ॥ ९ ॥ न गगवासो भजमेतिभार नाजेंयमे वत्तगात कदाचित्
॥ पुरस्कृते नोपि घनाघनाली तथापि प्रातीतनयोनिरुद ॥ १० ॥ प्रभो मत्तार्थीत
सुपाम्य सम्यक् त्वयार्जितं यतदपवर्गलभ्यं ॥ गुरो पतितेन्द्रविबुधमानयोलना
कीर्तिस्तानि तेन ॥ ११ ॥ त्वदाणिमापुर्यजिता पाम्प शिवांगना काचर्वा गिवे

श ॥ तत्रापि नीतिं दधती शलाकाव्याजेन जग्राह् तृण नु वक्रे ॥ १२ ॥ श्रीवीरसेवा
रसलालसत्वात् तद्दाधिर्नी केवलबोधलक्ष्मीं ॥ अप्यायतामादरिर्णी वरीतु तृण
य,मत्वा त्वमिव त्वमस्या ॥ १३ ॥ अपोढपंके कविनिर्निपेव्ये निरस्ततापे बहु
नगजाले ॥ विनो नवद्वाड्मुखगांगपूरे ड्वादिपूगास्तृणवच्चरति ॥ १४ ॥ राका
मये दिग्वलये समतात् यश शशाकेन कृते भुव ते ॥ कुहूध्वनि केवलमेव कवदेश
पिकाना शरणीचकार ॥ १५ ॥ जगत्रयोन्नासि यशस्त्वेवेतत् क स्पर्द्धता सार्द्धमनेन च
इ. ॥ यस्यापरार्द्धेपि तृणस्य नैव प्रनाप्रनावो लनतेऽवकाश ॥ १६ ॥ ठग्रेंड्पद्मादिषु
रूढिमात्र त्वन्नाम्नि तु श्रीर्वसतीति मुष्टि ॥ कुतोन्यथा तत्पदीक्षितानां पुर पुरो नृत्य
ति नित्यमृद्धि ॥ १७ ॥ वसुनूतिसुतोपि कौतुक वसुनूतेर्जनक प्रणेमुषा ॥ नगव
न्ननगोपि वर्तसे कथमगीकृतसर्वमगल ॥ १८ ॥ नाथ करोषि वृषमीश गणाधिपोपि
धत्से सदा स यमपाशमपि प्रचेता ॥ श्रीदोपि सूत्रितयमालयवासकेलिस्त्व पावकोपि
हरसे हरहेतिपातं ॥ १९ ॥ यत्तपत्यपि कलौ जिनप्रनाचार्यमत्रमनुशीलता स्फुरेत्
॥ हेतुताऽत्र खलु तत्वदेकताध्यानपारमितयैव गृह्यते ॥ २० ॥ मयैव दुर्दैव शमयितुमल
नूतमहिमा सुतस्त्व लेशेन श्रुतरथधुरा गौतमगुरो ॥ कुरुद्योतं क्लीवहिनपतिसुधा गौत
मतिमे प्रनो विद्यामत्र प्रनव नवतो गौतम नम ॥ २१ ॥ इति श्रीगौतमस्तवन समाप्तम् ॥

॥ अथ नेमिस्तवन क्रियागुप्त ॥

श्रीहरिकुलहीराकर, वज्रमणिर्वज्रपाणिना प्रणत ॥ त्वमवद्यमुक्त नेमे. प्रणमुषां
शेमुषीमशुना ॥ १ ॥ अवद्य ॥ मयि प्रसादप्रवण रूपानिधे विधेहि शैवेय निज मनस्त
या ॥ यथा जगन्नाथ मधुव्रत व्रतं नवे नवे तारकपादपद्मयो ॥ २ ॥ नवे ॥ नयेन नेमे यदु
वशमौक्तिक श्रियानिवासस्तव पादपकज ॥ दु खोर्मिसघट्टविघट्टितात्मना तेनाति
गनीरतमे नवाबुधौ ॥ ३ ॥ आति ॥ दुर्नयार्णवमहातरीनिना स्यात्पदोपहितवस्तु
विस्तरा ॥ पातकानि नवदीरितागिराऽजतु जातशिवदानलालसा ॥ ४ ॥ अजतु ॥
प्रेंखन्नखश्रेणिमयूखलेखा निर्वासिताशावलयाधकार ॥ अवार्यसौदर्यविलास गेऽहं
तवांघ्रियुग्म शरण प्रपद्ये ॥ ५ ॥ गे ॥ यस्त्वया कुजुपथ सता मतो देवखडितकुतीर्थि
कवर्ग ॥ त प्रपद्य निरवद्यमुद्यता नेदयति ननु मुक्तिपुरीं द्राक् ॥ ६ ॥ कदे ॥ वरिवस्या
वि गै यस्ते सद्विवेकविनाकृत ॥ तस्यानिमुखमीकृते न जातु सुखसपद ॥ ७ ॥ असत् ॥
कर्मकक्षावलीपावक तावक दुर्नयाहकृतित्रासन शासन ॥ ये प्रपन्ना गुणस्ते हिनो
देहिनस्ते सुराराध्यद्ध खानि सुश्रियां ॥ ८ ॥ असु ॥ विनवराज्यकलासुररा
जतावरमणीरमणीनिरत मम ॥ हृदि पदाबुरुहस्मरण चते गिरि च तथ्यगुणस्तव

नं तव ॥ ए ॥ चते ॥ जगज्जनश्रवणपुटामृतछटां तमोपहां सुजनितरा मपेक्षलां ॥ उदीरयन् गिरमिलवेशनावनावरा गतामयसुखसंपदां सतां ॥ ॥ १० ॥ श्रराः ॥ जव्यान् नवभ्रमणजीरुकचित्तवृत्तीन् सद्देशनानिरनितस्त्वमुरुप्र नाव ॥ दोषासमागमनिमीलितमजखंडमाश्वासयेन्न किमुरश्मिनिरंशुमाली ॥ ११ ॥ श्राव. ॥ जूत्यानिनूतपुरुहूतपुरानिरामतां कुर्वंति संततमहोत्सवनाजमुर्वरां ॥ सर्वंदनंदथुमयानि महाजुतानि ते कल्याणकानि जुवनेश विनाव्य चेतसा ॥ १२॥ श्रयानि ॥ जास्त्वया भ्रमरविभ्रमवर्णों हे मुनींड् वपुषि प्रचरिष्णुः ॥ पापशात्रवनिव र्हणकृत्न ध्यानसंततिरिवाश्रितमूर्तिः ॥ १३ ॥ जहे ॥ डर्बोधं मे सपदि पदकीजूत वास्तोः पते सद्भृंगश्रेणीकुवलयवनश्यामलछायकाय ॥ श्राकौमाराजुवनजयिनि र्यस्य ते ब्रह्मवर्म स्वैः कादंबैर्न खलु मदनः स्प्रष्टमप्यक्रमीष्ट ॥ १४ ॥ ज्य ॥ जाडांनो दनिनादयादवकुलश्रीकंठपीठीलुगन् मुक्ताहारमहारथं रतिपतिं निर्जित्य जैनाजिरे ॥ कीर्ति कैरवकोमलामधिगतं त्वामेव देव प्रनुं श्रीमन्नेमिजिनेंड्चंड् शरणं जीरुर्जे वारातितः ॥ १५ ॥ एमि ॥ सेवाहेवाकिनः स्युस्तव पदयुगले येऽत्र नक्तिप्रयुक्तास्तेषां देवा सदा पिप्रति हतविपदः संपदः सुप्रसन्नाः ॥ चितारत्नं प्रयत्नात् करतलकलि तं कुर्वतां सर्वकालं कालं नेतर्नराणामटति सुघटतां नो मनोराज्यसिद्धिः ॥ १६ ॥पि प्रति ॥ नवताऽऽरि जयोद्धुरैर्यशःप्रसरैः शुक्लतया जगत्रयं ॥ जिनसिद्धिरिति प्रसिद्धिना क् सुखसाम्राज्यमयी महापुरी ॥ १७ ॥ श्रारि ॥ श्रवगछतरां स्वसेवकं मा जगवन् पां च शिवस्य वर्तिनीं त्वं ॥ करुणार्द्रमनाः कुरु प्रसादं मयि तस्याः सपदि प्रकाश नेन ॥ १८ ॥ श्रवक् ॥ मरकतकमनीयकांतिकाय त्वमजिनतेंड् किरीटघट्टितांन्हे ॥ चिरमिन मम चंचरीकचर्यां हृदय कुशेशयकोशमन्वजस्त्रं ॥ १ए ॥ श्रय ॥ निखिलज्ज नतां गोसा गुप्तक्रियास्तवसूत्रणादिति कृतनुतिः सानंदं श्रीजिनप्रजसूरीजिः ॥ जव तु नवतां नेतुं जूयो जवभ्रमसंजवं जयमजयदो जीमः श्रीमच्छिवातनय. प्रनु ॥२०॥ इति श्रीनेमिजिनस्तवनं क्रियागुप्तं समाप्तम् ॥

॥ अथ श्रीवर्द्धमानस्तवनप्रारंनः ॥

कंसारिक्रमनिर्यदापगाधाराशुद्धविराद्छदछवि ॥ छंदोनिर्विविधैरधीरधीः स्तोष्येऽहं चरमं जिनेश्वर ॥ १ ॥ त्रैलोक्यनेतस्तव डर्नयालीनिर्नाशनं शासनमाश्रितो यः ॥ त स्यैड्वजायुधमाविरस्ति डःकर्मशैलेंड्निदाविधाने ॥ २ ॥ किमेकमाश्चर्यकरं न ते यत पुष्पंधयोप्येश विशेषविज्ञ. ॥ त्यक्तोपजातिभ्रमणानिलापस्त्वदंगसौगंध्यमनुप्रयानि ॥ ३ ॥ य. सृजत्यजर सौरजसारैरंबुजैस्तव पदांबुजपूजां ॥ प्रेक्ष्य तम्य दिवि देवमृ

गाद्य स्वागतानि निगदंति सराग ॥ ४ ॥ वाजिवारणरथोद्धतानटैरुद्धटा सुजन नोगजगिभृत् ॥ राज्यऋद्धिरुपनम्रमीति ते नंनमीति तव य पदौ मुदा ॥ ५ ॥ ना किनिकायकरप्रहताना सप्रसरन् गगने मरुजानां ॥ जन्ममहे तव कस्य न जज्ञे दत्तमदो धकधोंकतिनाद ॥ ६ ॥ ये नतयात्तभ्रमरविलसिता जज्ञु पादांबुरुहि तव विनो॥ तैं श्रेय श्रीमेधुरमधुरसास्वादो सादात् समजनि कृतिनि ॥ ७ ॥ तत्वा तत्वारोपलोपप्रवीणां प्रव्हप्राणित्राणसस्याधुरीणा ॥ श्राज्ञा धत्ते मौलिना जव्यजं तुश्रेणिं श्रद्धाशालिनी तावकीनां ॥ ८ ॥ वसुधाम सुधामयवक्त्र विधो तव नाथित माद्रियते भुवि य ॥ स सुखानि सुखानिरिवोद्यमणीन् बिभृते परितोऽटककीर्ति नर ॥ ९ ॥ स्रग्विणी कुडलभ्राजिगल्लस्थला तारहारद्युतिद्योतिवक्षस्तटा ॥ राजि राखमलनामखंडादरा पादपीठे लुठत्तावके पावके ॥ १० ॥ क्षणादेव तेषां शिव श्रीभुजगप्रयातं विशुद्धि शुभ कर्म पुसा ॥ नवन्नाममन्त्रस्य वर्णानुपूर्वी रसज्ञाग्रव र्तिभुरापादिता ये ॥ ११ ॥ द्रुतविलंबितमध्यरवध्वनद् विविधतूर्यमनेकमणीमयं ॥ कुसुमवर्षचितं तव देशनावनितल कश्चैत्य न मोदते ॥ १२ ॥ मुकुरोज्वले म णभृता हृदये प्रमिताक्षरापि वत वाक् जवत ॥ श्रनियत्तया प्रतिपफाल जिनध्व नितोऽर्थतश्च जगदर्च्यधिया ॥ १३ ॥ जगत्प्रनो नकिंनरादनुद्विजा द्विजातिवशाद पहृत्य कृत्यवित् ॥ नरेंद्रवशस्यमचीकरच्छचीपतिर्नवतं हरिनैगमेषिणा ॥ १४ ॥ वाचां ते निखिलनयाविरोधिनीना डुर्बोधद्रुमदलने कुठारिकाणां ॥ माहात्म्य भुवनमन प्रहर्षिणीना निर्वक्तुं कऽव यथावदस्तु शक्र ॥ १५ ॥ सिद्धार्थराजकुलनदनपारिजा त न भ्राम्यति क तव कीर्तिरपारिजात ॥ वर्णेन दुग्धमधुरेण मतोजनागसिद्धो द्धता स्थिरतया सुमनोजनाऽग ॥ १६ ॥ श्रति महति नवोर्मीमालिनीह भ्रमतो जननमरणवीच्या घातदोदूयमाना ॥ कथमपि पृथुपुण्या प्राणिन प्राप्नुवति प्रव हणमिव केचिच्छासन तावकीन ॥ १७ ॥ लवणिमतर्जितस्मरपुरध्रिरूपदर्पा घटितक टाक्षलक्षशरविद्धकामिमर्मा ॥ कनकमणीमयाभरणरश्मिरजितांगी व्यजयत वाहि नी न नवत समाधिमुद्रां ॥ १८ ॥ प्रबोध नव्यांनोरुहवनमधीशाधिगमयन् ह रन् मोहध्वांत परसमयतारा कवलयन् ॥ निविष्ट सिंहासनमलजमलनामडलद्यु तो नवानाभातिस्मोदयशिखरिणीव द्युतिपति ॥ १९ ॥ श्रमितदमितस्रोतो भा यधुरगमसगमत्रिदशहरणीनेत्रो नेत्रत्रिनागविलोकिते ॥ तव जिन मन शोके कर्तुं मनागपि न समाक्षलपितुमल किं हेमाद्रि युगातमहाबला ॥ २० ॥ दारिद्र्यापत्य रिजवजन्तुविस्रसामृत्युडु खरार्ता के के न तव बलयदेवसेवां प्रपन्ना ॥ किं स्याद्योग

ममनपटोगैमयम्योपयुर्का मंदाक्रांता जगति जनता दुःसहेनामयेन ॥ २१ ॥ ग
रुबितनिशाकरांशुप्रजा जैत्रकीर्तिजटाधवलितनिखिलत्रिलोकीतलं श्रद्धयोपासते
॥ गग्नगवितमन्मृगग्रीशचूडामणिज्योतिषामरुणितपदपीठमूमिनिषेव्यन्नविस्त्वां
प्रनो ॥ २२ ॥ त्रित्राणो नग्वविक्रियां नयकरीं धूतोल्लसल्लालथीगंड् शब्दम
नीषकः प्रकटयन नृपोयनीकादतः ॥ त्वद्भक्तया नृतकोप्यवाप्य नृपतां मांसादरं
वर्धयन धर्मेऽनेकपराजिदर्पदलने शार्दूलविक्रीडितं ॥ २३ ॥ विद्यामंत्रैर्न कार्यं सुर
तरुनिरलं चिंतन च मृतं पर्याप्तं राज्यलक्ष्म्या कृतममरतया ह्यास्तां सुवदना ॥ स्फु
र्जेत्वेका तु नतिरत्वयि मम मनसि ध्वस्ताखिलमला कैवल्यश्रीर्यया स्यात् करतलनिल
या साऽन्हाय नगवन् ॥ २४ ॥ श्रीवीरः सर्वदिर्कः कनकरुचितनूरोचिरुद्दीप्रदीपैर्मंग
ल्य.मोस्तु दीपोत्सव इव जगदानंदसंदर्न्नकंदः ॥ सूक्तिर्जैनप्रनीयं मृदुविशदपदा स्रग्ध
राधीयमाना नव्यानां नव्यनूत्यं नवतु नवतुदे नावनानावितानां ॥ २५ ॥ इति
श्रीवर्द्धमान स्तवनं समाप्तम् ॥

॥ अथ चतुर्विंशतिजिनस्तवनं ॥

कनककांतिधनु शतपंचकोन्नितवृषांकितदेहमुपास्महे ॥ रतिपतेर्जयिनं प्रथ
मं जिनं नृषनं वृषनं वृषनंजिन· ॥ १ ॥ द्विरदलांछित वांछितदायक क्रमलुठत्त्रि
दशासुरनायक॥ स्तुतिपर· पुरुषो नवति क्षिता वजित राजितरा जितराग ते॥२॥तुरग
लाछनसंनव संनवत्यहग्दिं जिन यत्र रसादहं ॥ हृदि दधे नणितीर्गुणनूरुहां
समहिता महितामहि तावकी· ॥ ३ ॥ नवमहार्णवनिस्तरणेच्छया त्वमनिनंदन
देव निषेव्यसे ॥ व्रतनृतां कुगतेः स्मरनिग्रहप्रसनया सनया सनयात्मना ॥ ४ ॥
त्रिभुवनामितकामितपूरणे सुरतरोरुपमामतिगामुकी ॥ तव विनो नजते नवतः
क्षमावसुमते सुमते सुमतेर्दद ॥ ५ ॥ धरनृपात्मज पद्म जिनेश्वर त्वयि कृतप्रण
तः क्रियते पति· ॥ स्वजसतः प्रथितार्थिदरिद्र तोपरमया रमया रमयान्वितः ॥६॥
जगत्सुपार्श्व जगत्त्रितयाक्रनुः पवितकाशिपुरीकवीलक्षण· ॥ सुकृतिनः कृतिनश्चरितं वि
दुःसुनवतो नवतो नवतोदनं ॥ ७ ॥ कुनयकाननन्नंजनकुंजराः शशिरुचे महसेन
नृप प्रनो ॥ निखिलजीवनिकायहितोक्तिनिः शुनवदा नवदा नवदागमा· ॥ ८ ॥
धि विजित्य मनोनवमग्रहीन्मकरमंकमिषाद्ध्वजमस्य यः ॥ स्तुतजनाः सविधिं
हृदा सुरस्तुतमसंतमसं तमसंस्तुतं ॥ ९ ॥ दृढरथांगजशीतल शीतलद्युतिकलावि
मला तव नारती ॥ मनसि कस्य न हर्षसनाथतां जिन ततान ततानततायिनी ॥१०॥

यति गंडकजस्मतनुर्जिन शशिमुखोऽजदक् दशमोत्तर ॥ कनकदीप्तिरमर्पितहीर
क्षत्वग्दो वरदो वरदोर्युग ॥ ११ ॥ शुजमयी वसुपूज्यसुत प्रजो भुवननेत्रमहो महि
कांकिता ॥ तव तनुर्वितनोतु सुग सतामरुचिर रुचिरं रुचिरजिता ॥ १२ ॥ सकजस
वसर्गेअविकासने रविरुचिर्विमल त्रिजगत्पते ॥ अपि शम नयते तव गीर्जिनामृत
सा तरसा तरसा तृप ॥ १३ ॥ निजयशोजरनिन्दुतजान्हवीजलवलक्ष्मिकीर्तिरनं
जित् ॥ दिशतु व कुमतासुरनिग्रहे नृशमन शमनं शमनश्वर ॥ १४ ॥ नवजयं
त धर्म धुनोतु वाक्श्रुतिपथाऽतिथिता गमिता सती ॥ किमु करोति न पित्तरज' शर्म
रगिता रसिता रमिताजुया ॥ १५ ॥ जयति शांतिजिन स्म जगति या नटचमूर्यु
थि मोहमहीपते ॥ रणकथामपि नक्तिजरेण ते ससहसा सहसा सहसाऽमुचत्
॥ १६ ॥ श्रयति कुंथुजिनाधिपराज्यमाहिमवत स्त्वयि चक्रहताहितं ॥ त्रिदिवतोऽस्य
धिका जनि श क्षिनिर्वनरमा नरसानरसारकि ॥ १७ ॥ जगदधीश सुदर्शन भूमिपान्वयपय'
रग्दीश निशामणे ॥ प्रणिदधऽतिपदो विशदव्रता वनरतानरता नरतावकान् ॥ १८ ॥
दि नरम्तरमल्लिजिनस्मरन्नपि हि मूर्तिसुपैति महत्फल ॥ निशमयन् समताकरु
णांचितां स्मुदिता मुदिता मुदितादर ॥ १९ ॥ त्वमिन सुव्रत कच्छपलांछनो जनरुचि
र्दिशविभूषण ॥ शिवसुखाय तप परशुश्रिताऽशुजनरनो नयनो नयनोधिपां ॥ २० ॥
रिनिरमे तदाद्यनिर्वृतितिस्मरशार शरणीक्रियतां त्वया ॥ गुणगणस्य नमिर्बुधवर्ह
ण व्रजनना जननाजन नायनस् ॥ २१ ॥ अनुमितं खलु नेमिजिना नयत्रमणतो
मपक्ष यदि पश्चिर ॥ महितपादनरान् नरत रुपानरनमानरमा वनमानिना
॥ २२ ॥ कमठशासन पार्श्वजिनकरे रमतएव मन प्रियधर्मणां ॥ अपि कुतीर्थ्यज
नेन कुमन्मना तव मतेऽरमतेऽरमतेजस ॥ २३ ॥ त्रिजगदीक्षण केसरिलक्षण ह
णमपि प्रभुवीर मनागिरां ॥ गुणगणान् मम माम्य गिरस्यतामुदयिता दयितादयि
तावरान् ॥ २४ ॥ च्युतिजनुर्व्रत केवलनिर्वृतिक्षणदिनाददतां मुदमार्हतां ॥ व्यरचि
यिरपपरिदर्शहैनां नवसुधा वसुधा वसुधामनि ॥ २५ ॥ इति जिनप्रवरोमयकाऽमि
मक्रमगर्तयमकाऽयवेधुना ॥ बजममी वितरंतु शुभस्थिता शुभवर्ता नवर्ता नवतां
निजित् ॥ २६ ॥ मधुरदेशकर प्रसरक्षिताऽग्जितमस्कतया तपनोपमा ॥ ददतु तीर्थ
कृतो मम निर्ममा शमरमा मरमाऽमरमानिता ॥ २७ ॥ जयति दुर्नयपर्वतनिनीवर्ने
हिमननिर्मितनिकररर्कोमुदी ॥ शमयितु निमिगणि जने महाऽजिनराजि न नाजिननार
ती ॥ २८ ॥ करनाथकला प्रणती निनप्रवरतीर्थमिनाश्मिश्रिता ॥ ददतु हेमर
वि सुदा सुखस्थपरम परम परमश्रिया ॥ २९ ॥ इति चतुर्विंशतिजिनस्तवन समाप्तं ॥

अथ श्रीमहावीरस्तवनप्रारंभः



पराक्रमेणेव पराजितोऽयं सिंहः सिषेवे धृतलक्ष्मदंभ. ॥ सुखानि वः खानिरयं रमाणां दमातुरस्तीर्थकरः करोतु ॥ १ ॥ सताम्यतेजा करसप्तकोच्चः कर्मेधसत्तानिरसत्तनीति ॥ प्रणीतवान् सप्तशतीं नयानां वीर. श्रिये व्यंजितसप्ततत्वः ॥ २ ॥ शक्रानत प्राणतकल्पपुष्पोत्तरात्वमाषाढवलक्षपष्ठ्यां ॥ देवाधिदेव द्विजदारदेवा नंदोदरेऽभूर्विहितावतारः ॥ ३ ॥ इषस्य नंद्यादसिता त्रयोदशी द्व्यशीत्यहानंतरमीशितस्ततः ॥ सुरेशसेनापतिदेशिताध्वना क्षात्रं कुलं यत्र पवित्रितं त्वया ॥ ४ ॥ अभूतभूतिद्युभवद्भुवा भवक्षतुर्मदे नोऽजनि हेजिन ध्रुवम् ॥ जगत्रयीजंतुषु हर्षवर्षिणी निरुद्धरुद्धिर्मदनत्रयोदशी ॥ ५ ॥ त्वया स्वदेहद्युतिसंविभागसंभावित हेम सुवर्णमासीत् ॥ तारत्तु हीनं त्वदनुग्रहेण डुर्वर्णमित्यापदवर्णवादं ॥ ६ ॥ बाल्ये विबोधाय हरेः सुराद्रिः पादाग्रभुन्नस्तव यच्चकंपे ॥ चित्रीयता त्वत्तरसा रसात न्मूर्धानमाधूनयतिस्म नूनं ॥ ७ ॥ बभूव भाग्यातिशयप्रभावात् गुरुस्तवापि त्रिजगंगुरोर्य ॥ युक्तयैव तं मेरुगिरेर्गरिष्ठं सिद्धार्थमप्यार्यगणा गृणंति ॥ ८ ॥ कथं गुणः प्राप्तयशःपताका नारीषु नास्तु त्रिशलाशलाका ॥ यत्कुक्षिशुक्तौ विमलः सुवृत्तो मौक्तिक्यभूस्त्वं गुणयुक्तिहृद्य. ॥ ९ ॥ दिवि प्रवृद्धं सुरमीश मुष्टिघातेन यद्धाम नतामनंधीः ॥ गर्वाद्रिखर्वीकरणश्रमं तु चकर्ष तीर्थेश्वर शैशवेन तत् ॥ १० ॥ मोहं गमी यः खलु तद्भवेपि गंतुं कथं सोर्हति लेखशालां ॥ ऽतीव शक्रोऽपजलाप पित्रोरनैःचिंति ते विनयेन धीमान् ॥ ११ ॥ व्याकुर्वतस्ते हरये यदागमं संगृह्य बुध्या कतिचित् गिरां लवान् ॥ अध्यापको यद्विदधे तडुच्चकैरेंद्रं भुवि व्याकरणं प्रथामगात् ॥ १२ ॥ यस्या न कस्योदितमुक्तिमार्गमार्गस्य कला दशमी शमीश ॥ प्राज्यं प्रभो यत्र विसृज्य राज्यं श्रमण्यसाम्राज्यमुपाययास्त्वं ॥ १३ ॥ शिवालये प्रोज्झितविग्रहं यत् त्वत्पादमूले चमरं निलीनं ॥ जंभारिदंभोलियमः प्रचंडो भस्मभूमाप्यंघ्र किमत्र चित्रं ॥ १४ ॥ न बाधितुं जातु दधुः समर्थतां मुनींद्र धातोरिव नान्ववर्त्तिषुः ॥ समाधिरूढां प्रकृतार्थसंपदं तवोपसर्गा व्यशिषंस्तु केवलं ॥ १५ ॥ न कौशिके रागमुपासनापरे करोषि रोषं स्म न चंमकौशिके ॥ अहो उदासीनत यैव निर्जिता चमूस्त्वया डुर्विपहापि कर्मणां ॥ १६ ॥ निर्बर्हितुगां सुरभर्तुरुद्यतस्तथा तथा यो डुरचेष्टत त्वयि ॥ वहिः कृतः स्वर्गिसमाजसंगमा

तु ससगम स्यान्नकथ जनगम ॥ १७ ॥ एकाग्रपङ्क्तित्रिंशतावसाने श्रीगौरती
रे ऋजुवालिकाया ॥ तवोदगात् केवलऋद्धिरस्ताऽपराह्नराधस्य शुचौ दशम्यां
॥ १८ ॥ एकाक्रमादुर्मुनय कथ मामितीव कोपात् लसुपर्यशोक ॥ अदीदृशत् पद्
पदगन्तपुष्पव्याजस्फुरत्तारकदृक्सहस्र ॥ १९ ॥ सुरैर्विकीर्णास्तिव देशनावना वनु
प्रसूनप्रकरा समतत ॥ नयश्लथीभूतकरात्परिच्युता शराश्चानगजस्य कौसुमा
॥ २० ॥ स्फुटीभवन्मालवकौशिकीमुख्यप्रशस्तरागस्तवसत्त्वोचित ॥ प्रविश्य दि
व्य श्रवणाध्वनि ध्वनिर्मुदे न केषां रजयन् मृगानपि ॥ २१ ॥ स्यातु चलच्चामर
युग्मकैतवात् त्वदीयदन्तद्युतिजाह्नवीजले ॥ ध्रुव त्वदास्याब्जवासिनारती युग्मे
उपेतौ कलहससदपती ॥ २२ ॥ स्थैर्यं हृतं यत्नवता शिशुत्वे तवार्चनाय स्फुटमे
व मेरु ॥ सपससमागादिति तुङ्गहेमसिंहासने ते करवति तर्क ॥ २३ ॥ हतु क्षमो
ऽतम एनमेव तदेहि मेरवतमोपहल्व ॥ इतीव विज्ञापयितु सिषेवे भामण्डलब
धतो रविस्त्वां ॥ २४ ॥ दृगब्जराजन्मनिदे नवत्नी सुधासपीत्यै त्रिजगज्जनौघ ॥
नूनं नदन् गगदि देवदेवोदिव्याहतो दुन्दुभिराजुहाव ॥ २५ ॥ मेद प्रमाणांतरद
र्शितं रत्नमयते सर्व ऽनीव पुर्सा ॥ सितातपत्रत्रितयच्छलेन रत्नत्रय दर्शयतिस्म सा
क्षात् ॥ २६ ॥ सुपर्वसचारितहेमपकजापदेशतश्चक्रमणक्षणे कि ॥ गतस्पृहस्या
पि गुणैर्वशंवदा पदोसने ते निरयो नरानुगन् ॥ २७ ॥ त्रैलोक्यसयुक्तनिरङ्कुशश्रि
प्राकारवेमात्रयरेखिनाग ॥ नेक्षत धन्या कतिनाम रक्षायत्रोपम त्वां सुमनोर्चनीयं
॥ २८ ॥ त्वत्प्रातिहार्यश्रियमित्यवेक्ष्य चेतो न यस्येश चमत्चकार ॥ स केवली नम
तदा ऽस्तु तस्य नरत्वरम्याननिर्जगत्यां ॥ २९ ॥ अनिद्यविद्यामदनद्धदर्पणा गणा
धिपास्ते पदमृत्रयन् श्रुत ॥ गिरस्तवैव त्रिपदीसुधाब्धि सतां मन सप्रथितेन गौ
रव ॥ ३० ॥ अशेषनापापरिणामसञ्जन विचित्रसदेहविघातदक्षा ॥ मुने वच
स्ते नयनिर्विरोधना दिशापि सर्वाधरिशा निजधन ॥ ३१ ॥ तप्त्वा तप पष्टमपानस
ध्यनोर्तातिर र्ज्ञातिरदर्शीगरी ॥ अपापमाप पदमीश पापा पुर्यां द्विपुणरल
निरलमरायु ॥ ३२ ॥ रे यत्र युके मनि फल्गुनीषु जाते स्मरोऽनूस्मृतकल्पमानी
तद्विश्वयद्योतनफल्गुनीषु बभूव कल्याणपचक ते ॥ ३३ ॥ नुरनाशिपतेरनतया
नवत स्वातिगतेऽत्र जारिपे ॥ उदयायुचिनं नानापनादकयागाद्गर्माश्रिरिश्रि
या ॥ ३४ ॥ ज्ञानेंद्रशाक्रुकृत्प्रदीप जगत नदाम्बुदागश्रेणीक्वकिरीटकांतिनारी
संक्षाप्यमानाङ्घ्रे ॥ मोहोर्मीपनिगर्पपर्वतनिदि ध्यायामधामश्रियामश्रांत जिनसि
द्धमृगिकिहिन श्रीवीर तुभ्य नम ॥३५॥ इतिस्तुतिपरगयणो त्रिजगदेरचूडामणो प्रसीद

परमेश्वर स्वरगन्जिनम मयि ॥ जवेन्मम जवेन्नवे नवडुपासनावासना जिनप्रनवसं
सिद्धं वस्द पूर्णमेनावता ॥३८॥ इति पंचकल्याणिकमयं श्रीमहावीरस्तवनं समाप्तम्॥

॥ अथ श्रीमंत्रस्तवनप्रारंज ॥

म श्रियं श्रीमदर्हंत. सिद्धा सिद्धिपुरीपदं ॥ आचार्याः पंचधाऽऽचारं वाचका
वाचनां वरं ॥ १ ॥ साधव सिद्धिसाहाय्य वितन्वंतु विवेकिनां ॥ मंगलानां च सर्वेषा
माद्यं जवति मंगलं ॥ २ ॥ अर्हमित्यक्षरं माया वीजं च प्रणवाक्षरं ॥ एनं नानास्व
रूपं च ध्येयं ध्यायंति योगिन ॥ ३ ॥ हृत्पद्मषोडशदलस्थापित षोडशाक्षर ॥ पर
मेष्टिस्तुतेर्वीज ध्यायेदक्षरदं मुदा ॥ ४ ॥ मंत्राणामादिमं मंत्रं तंत्रं विघ्नौघनिग्रहे ॥
यं स्मरंति सदैवेनं तं जवंति जिनप्रजाः ॥ ५ ॥ इति श्रीजिनप्रजविरचितं मंत्रस्तवनं
समाप्तम् ॥

॥ अथ श्रीवर्द्धमानस्तवनप्रारंजः ॥

श्रीवर्द्धमानः सुखवृद्धयेऽस्तु यश प्रतापैरजिवर्द्धमानः ॥ सिद्धायिका रक्षति यस्य
तीर्थं विरोधतः संततमेव देवी ॥ १ ॥ जिनेंद्र नेंद्रा अपि तावकीनां स्तोतुं गुणान्
शक्तिजुषस्तथापि ॥ जक्त्येरितस्तान् कतिचिन्नवीमि नाज्ञः स्वमात्रां विविनक्ति वीर
॥ २ ॥ नयाध्वनां नाथ कृतकमल्यैरभ्रांतमेकांतहितोपदेशैः ॥ करैरिवोल्लद्युति
ना तमिस्राम्लया नतानां जवजीर्निरासि ॥ ३ ॥ प्रणीयतेऽस्मानुत्तरलचित्रैः स
मं विमानैस्त्रिदशागमेन ॥ कल्याणकेष्वूवलयं त्वदीयैस्त्रिविष्टपान्यूतमनूनऋद्धि ॥ ४ ॥
नरतमीशं नजतोऽनुजातु दुःखान्यलं कानि च नापि तापं ॥ पाणिस्थचिंतामणिमंग
लाज का निर्वृति पीडयितु शशाक ॥ ५ ॥ सूर्यप्रजा मोहतम समूहव्यापादने मंशयव
निदाग्री ॥ त्वद्देशनावाग् जयति त्रिलोकीलोकस्य कर्णामृतवृष्टितुल्या ॥ ६ ॥ रिपून्
विजित्यांतरगानगाधवीर्येण सतूज्ञानरमां निवेश्य ॥ करयकार्षीरनि मुक्तिपुर्यां सा
म्राज्यमज्यानि सुखोत्करेण ॥ ७ ॥ जिस्तेव पीयूषजुजा जनस्य मथ्नाति मिथ्यात्व
विषोर्मिपूरं ॥ तव प्रजा नेत्रपुटैर्निपीता कृतस्थितिर्वेष्मणि नि.कलंके ॥ ८ ॥ वृत्ताष्ट
कयक्षरनाम यस्तदंत्यवर्णाहितनामकेऽन्हि ॥ इयं स्तुतिर्वीरजिनस्य दृष्टा करोतु क
ल्याणमनुत्तरं व. ॥ ९ ॥ इति जिनप्रजसूरिकृत श्रीवर्द्धमानस्तवनं समाप्तम् ॥

॥ अथ श्रीपार्श्वस्तवनप्रारंजः ॥

पार्श्वं प्रजुं शश्वदकोपमानं दकोपमानं जववन्हिगानां ॥ आराधतां दत्तनिरतरा
निरंतरायं पदमाप्तुमीडे ॥ १ ॥ वीक्ष्ये जगन्नेत्र महान् यत्र महा[illegible]स्य तवांह्रि

युग्म ॥ पुण्य स एवाऽवसरोऽमराली सरो मरालीव निषेवते यत् ॥ २ ॥ प्रणौमि त्वां पूर्णसमस्तकाम समस्तकाम सरुदप्यधीश ॥ नवतमानस्य विमानमाया विमानमाया प्रनवो नवति ॥ ३ ॥ नयाढ्यमुद्यज्जमनंगमालं मनंगमालंक्षितसर्वनाव ॥ केनामधीमन्निरमानि शातं रमानिशातं न वचस्त्वदीय ॥ ४ ॥ नित्यं प्रमादेनविना शिताम विनाशितामगजनगजाजा ॥ त्वन्नाम धन्यं स्मरतीश सारं रतीशसारंगमृगेन्द्रनाद ॥ ५ ॥ नृत्योपि योत्राऽवृजिनप्रनावे जिनप्रनावैकरमस्त्वयि स्यात् ॥ सरूपवान्नीरगजाश्वसेने गजाश्वसेनेश्वरतामुपैति ॥ ६ ॥ नूयान्नमो नीलतमाऽलकाय तमालकायप्रन तुन्यमेव ॥ नवात्तदन्यः कतमोऽविता न तमोवितानच्छिदुरोऽर्क एव ॥ ७ ॥ त्वद्भुत रुत्येप्नविरामवामे विराम वामेय मयि प्रसीद॥नव्यान् स्तव पातु जिन प्रनोऽय निनप्रनो य विदधे यतीन्द्र ॥ ८ ॥ इति जिनप्रनसूरिविरचितं श्रीपार्श्वस्तवनं समाप्तम्॥

॥ अथ श्रीपार्श्वनाथस्तवनप्रारंभ ॥

श्रीपार्श्वपादानतनागराज प्रोत्सर्पवेन फणनागराज ॥ सत्ता हृताऽसत्परिणामराग त्वां संस्तुमः स्थैर्यगुणाऽमराऽग ॥ १ ॥ ये मर्त्यदेवासुरमाननीय पश्यन्ति ते श्रीन रमाननीय ॥ सत्यस्त्रिलोकीतिलकाऽमितानि सिध्यन्ति तेषामिह कामितानि ॥ २ ॥ दृशोर्द्वयं पद्मदलानुकार नाशिश्रयत्ते कमलानुकाऽर ॥ कुतोऽन्यथा त्वन्नतिदीक्षितेषु स र्वश्रियो नेम तदीक्षितेषु॥ ३ ॥ अन्यर्हितं नव्यकदंबकानां हर्षप्रकर्षोल्लसदंबकानां॥ सेवन्ति ये त्वां विधिवत्तनन्ते निर्वाणसौख्यं बुधवत्तनन्ते ॥ ४ ॥ रतेरहरूत्यपनायिकानि वपु श्रिया ते सुरनायिकानि ॥ नाद्योनि चेतः परनावलीनमर्चित्यविस्तारि ष्ट नावनीन ॥ ५ ॥ प्रनो तवाऽस्तस्मरराजमाने नखांशुजालेन विराजमाने ॥ क्रमांबुजे लक्ष्मिगृहे रसेनगत्रार्चनीय सुमहे रसेन ॥ ६ ॥ आकांक्षिता यद्गुनिय जनतानिरामाऽस्टदामहोदयपुरी ध्रुवतानिगमा ॥ अप्यध्वरश्रुतितपःसवनादृते न पुसाऽऽप्यते निन तव स्तवनादृतेन ॥ ७ ॥ इत्यं फणीन्द्र सततश्रितपार्श्व नाऽथ स्त्री या स्तव पठति यस्तव पार्श्वनाथ ॥ तस्मै स्पृहामवृनिनप्रनयाय नव्या लक्ष्मी विनीति सुमन स मवायनस्या ॥ ८ ॥ इति जिनप्रनसूरिविरचितं श्रीपार्श्वनाथस्तवन समाप्तम् ॥

॥ अथ श्रीनंदीश्वरकल्पप्रारंभ ॥

आराध्य श्रीजिनाधीशान् सुराधीशार्चितक्रमान् ॥ कल्पं नंदीश्वरद्वीपस्याचक्षे श्रियावन ॥ १ ॥ अस्ति नंदीश्वरोनामाऽष्टमोद्वीपो यमनिन ॥ तत्परिक्षेपिणा न दीश्वरेणांनोधिना पुन ॥ २ ॥ एतद्वलयविष्कंने लक्षाशीतिमनुर्युता ॥ योजना

नां त्रिषष्टिश्च कोटयः कोटीशतं तथा ॥ ३ ॥ असौ विविधविन्यासोद्यानवान् देव
भोगभू. ॥ जिनेंद्रपूजासंसक्तसुरसंपातसुंदरः ॥ ४ ॥ अस्य मध्यप्रदेशे तु क्रमात्
पूर्वादिदिक्षु च ॥ अंजनवर्णाश्चत्वारस्तिष्ठंत्यंजनपर्वताः ॥ ५ ॥ दशयोजनसहस्रा
तिरिक्तविस्तृतास्तले ॥ सहस्रयोजनाश्चार्द्धे क्षुद्रमेरूच्छ्रयाश्च ते ॥ ६ ॥ तत्र प्राक्
देवरमणो नित्योद्योतश्च दक्षिणः ॥ स्वयंप्रभः प्रतीच्यस्तु रमणीय उदक्स्थितः ॥७॥
शतयोजनायतानि तदर्धं विस्तृतानि च ॥ द्विसप्ततियोजनोच्चान्यर्हच्चैत्यानि तेषु च ॥
॥ ८ ॥ पृथक् द्वाराणि चत्वार्युच्चानि षोडश योजनीं ॥ प्रवेशे योजनान्यष्ट विस्ता
रेप्यष्ट तेषु तु ॥ ९ ॥ तानि देवासुरनागसुपर्णानां दिवौकसां ॥ समाश्रयादेव तेषां
नामभिर्विश्रुतानि च ॥ १० ॥ षोडशयोजनायामा स्तावन्मात्राश्च विस्तृता ॥ अष्ट
योजनकोत्सेधास्तन्मध्ये मणिपीठिकाः ॥ ११ ॥ सर्वरत्नमया देवछंदकाः पीठिकोप
रि ॥ पीठिकाभ्योऽधिकायामोच्छ्रयभाजस्तु तेषु च ॥ १२ ॥ ऋषभा वर्द्धमाना च त
था चंद्राननापि च ॥ वारिषेणाचेति नाम्ना पर्यंकासनसंस्थिता ॥ १३ ॥ रत्नमयोयु
ता स्वस्वपरिवारेण हारिणा ॥ शाश्वतार्हत्प्रतिमाः प्रत्येकमष्टोत्तरं शतं ॥ १४ ॥
द्वे द्वे नागभूतकुंडभृत् प्रतिमे पृथक् पृथक् ॥ प्रतिमानां पृष्टतस्तु छत्रभृत् प्रतिमैकिका
॥ १५ ॥ तेषु धूपघटीदामघंटाष्टमंगलध्वजाः ॥ छत्रतोरणचंगेर्यः पटलान्यास
नानि च ॥ १६ ॥ षोडश पूर्णकलशादीन्यलंकरणानि च ॥ सुवर्णरुचिररजो वालु
कास्तत्र भूमयः ॥ १७ ॥ आयतनप्रमाणेन रुचिरा मुखमंडपा ॥ प्रेक्षार्थमंडपा
अक्षवाटिकामणिपीठिका. ॥ १८ ॥ रम्याश्च स्तूपप्रतिमाश्चैत्यवृक्षाश्च सुंदरा. ॥ इं
द्रध्वजाः पुष्करिण्यो दिव्याः संति यथाक्रमं ॥ १९ ॥ प्रतिमाः षोडश चतुर्द्वारस्तू
पेषु सर्वतः ॥ शतं चतुर्विंशमेवं ता. साष्टशततद्युता ॥ २० ॥ प्रत्येकमंजनाद्रीणां
ककुप्सु चतसृष्वपि ॥ गते लक्षे योजनानां निर्मत्स्यस्वच्छवारय ॥ २१ ॥ सहस्र
योजनो द्वेधा विष्कंभे लक्षयोजना. ॥ पुष्करिण्यः संति तासां क्रमान्नामानि षो
डश ॥ २२ ॥ नंदिषेणा चाप्यमोघा गोस्तूपाऽथ सुदर्शना ॥ तथा नंदोत्तरानंदा सु
नंदा नंदिवर्धना ॥ २३ ॥ भद्रा विशाला कुमुदा पुडरीकिणिका तथा ॥ विजया वै
जयंती च जयंती चापराजिता ॥ २४ ॥ प्रत्येकं योजनं पंच पंचशत्या परत्र च ॥ यो
जनानां पंचशतिं यावद्विस्ताररंजि तु ॥ २५ ॥ लक्षयोजनदीर्घाणि महो
द्यानानि तानि तु ॥ अशोकसप्तछदक चूत चंपकसंज्ञया ॥ २६ ॥ मध्ये पुं
ष्करिणीनां च स्फटिका. पल्यमूर्तयः ॥ ललामवोद्यानादिचिन्हा दधिमुखाद्र
य ॥ २७ ॥ चतुःषष्टिसहस्रोच्चाः सहस्रं चावगाहिन ॥ सहस्राणि दशा

धन्नाडुपरिष्टाच्च विस्तृता ॥ २८ ॥ अंतरे पुष्करिणीनां द्वौ द्वौ रतिकराचलौ ॥ त
तो नवतिद्वात्रिंशदेते रतिकराचला ॥ २९ ॥ शैलेषु दधिमुखेषु तथा रतिकराद्रि
षु ॥ तन्त्राश्वतार्हच्चैत्यानि सत्यजनगिरिष्विव ॥ ३० ॥ चत्वारो द्वीपविदिक्षु तथा
रतिकराचला ॥ दशयोजनसहस्रायामविष्कम्भशालिन ॥ ३१ ॥ योजनाना स
हस्र तु यावदुच्चयशोभिता ॥ सर्वरत्नमयादिव्या झल्लर्याकारधारिण ॥ ३२ ॥ त
त्रद्वयो रतिकराचलयोर्दक्षिणस्थयो ॥ शक्रस्येशानस्य पुनरुत्तरस्थितयो पृथक्
॥३३॥ अष्टाना महादेवीना राजधान्योऽष्टदिक्षु ता ॥ लक्षाबाधा लक्षमाना जिना
यतनभूषिता ॥ ३४ ॥ सुजाता सौमनसा चार्चिमाली च प्रभाकरा ॥ पद्मा शिवा तथा
शुच्यजने भूतावतंसिका ॥ ३५ ॥ गोस्तूपासुदर्शने अप्यमलाप्सरसौ तथा ॥ रोहिणी
नवमी चाथ रत्ना रत्नोच्चयापि च ॥ ३६ ॥ सर्वरत्नसचया च सुवसुर्वसुमित्रिका ॥ व
सुनागादि च वसुधरानदोत्तरे अपि ॥ ३७ ॥ नदोत्तरकुरुर्देवकुरु कृला ततो
पि च ॥ कृष्णराजी रामरामा रक्षिता प्राक् क्रमादमू ॥ ३८ ॥ सर्वर्द्धयस्तासु देवा कुर्व
ते सपरिच्छदा ॥ चैत्येष्वष्टाह्निकापुण्यतिथिषु श्रीमदर्हतां ॥ ३९ ॥ प्राच्येऽजन
गिरौ शक्र कुरुतेऽष्टाह्निकोत्सव ॥ प्रतिमानां शाश्वतीनां चतुर्द्वारे जिनालये ॥४०॥
तस्य चाद्रेश्चतुर्दिक्स्थमहावापीवितर्दिषु ॥ स्फाटिकेषु दधिमुखपरितेषु चतुर्ष्वपि
॥ ४१ ॥ चैत्येष्वर्हत्प्रतिमानां शाश्वतीना यथाविधि ॥ चत्वार शक्रदिक्पाला कुर्वते
ष्टाह्निकोत्सव ॥४२॥ ईशानेंद्रस्त्वोत्तराहेऽजनाद्रौ विदधाति तं ॥ तल्लोकपालास्तद्वापी
दध्यास्यादिषु कुर्वते ॥ ४३ ॥ चमरेंद्रो दाक्षिणात्येऽजनाद्रावुत्सव सृजेत् ॥ तद्वाप्यत
र्दधिमुखेष्वस्य दिक्पतय पुन ॥ ४४ ॥ पश्चिमेऽजनशैलेतु बलींद्र कुरुते मह ॥ तद्दि
ग्पालाश्च तद्वाप्यतर्गदधिमुखाद्रिषु ॥ ४५ ॥ चर्पदीपदिनारब्धानुपवासान् कुर्व
तियों ॥ कुर्वन्नदीश्वरोपास्यं श्रायर्गौ श्रियमाश्रयेत् ॥ ४६ ॥ नत्वा चैत्यानि वदा
रुस्तस्तोत्रस्तुतिपाठनात् ॥ नदीश्वरमुपासीनोऽनुपर्वाहस्तरेत्तरां ॥ ४७ ॥ प्राय पू
र्वाचार्य प्रथितैरेवायमाचित श्लोकै ॥ श्रीनदीश्वरकल्पो लिखित इति श्रीजिन
प्रभाचार्ये ॥ ४८ ॥ इति श्रीजिनप्रभाचार्यविरचितनदीश्वरकल्प समाप्त ॥

॥ अथ श्रीशारदास्तवनप्रारम्भ ॥

वाग्देवते भक्तिमता स्वशक्तिकलापवित्रासितविग्रहा मे ॥ बोध विशुद्ध भवती
विधत्ता कलापविन्नासितविग्रहा मे ॥१॥ अक्षमरीणाक्षजहसपत्राकृतस्मरेणानमतां
निहतु ॥ अक्षप्रवीणा कजहसपत्रा सरस्वती शश्वदपोहतात् ॥ २ ॥ ब्राह्मी विजे

थीट विनिडशृंग्रप्रनावदाता धनर्गाजितस्य ॥ स्वरेण जैत्री ऋतुना स्वकीयप्रना वदाता धनर्गाजनस्य ॥ ३ ॥ मुक्ताक्षमालालसदीपथीशाऽनिशुज्ज्वला नाति करे त्व दीये ॥ मुक्ताक्षमाला लसदीपथीशा यां प्रेक्ष्य नेजे मुनयोपि हर्षं ॥ ४ ॥ ज्ञानं प्रदातु प्रवणा समातिशया लुनाना नवपातकानि ॥ त्वं नेमुषां नारति पुंडरीक शयालुनानानवपातकानि ॥ ५ ॥ प्रौढप्रनावा समपुस्तके न ध्याता सि येनांवि विरा जिहस्ता ॥ प्रौढप्रनावा समपुस्तकेन विद्या सुधापूरमदूरङःखा ॥ ६ ॥ तुभ्यं प्र णाम. क्रियते नयेन मरालयेन प्रमदेन मात. ॥ कीर्तिप्रतापा नुवि तस्य नम्रमरालयेन प्रमदेन मात. ॥ ७ ॥ स्व्यागविदभ्रमदं करोति वेलं यदीयोचिति तेऽन्ह्रियुग्मं ॥ रु च्या श्विं दभ्रमदं करोति स स्वन्य गोष्ठी विडरां प्रविश्य ॥ ८ ॥ पादप्रसादात्तव रू पमंपत् लेखानिरामोदितमानवेश ॥ नवेन्नरः सूक्तिनिरेव चित्रोल्लेखानिरासीदि तमानवेशः ॥ ९ ॥ सितांशुकां ते नयनानिरामां मूर्ति समाराध्य नवेन्मनुष्यः ॥ सितांशुकांते नयनानिरामांधकारसूर्यः क्षितिपावतंसः ॥ १० ॥ येन स्थित त्वामनु गर्वतीर्थ्य'सन्नाजिता मानतमस्तकेन ॥ डुर्वादिनां निर्दलित नरेंद्रसन्नाजितामानत मस्तकेन ॥ ११ ॥ सर्वज्ञ वक्त्रवरतामरसांकलीनामाली प्रती प्रणयमंथरया दृशै व ॥ सर्वज्ञवक्त्रवरतामरसांकलीना प्रीणातु विश्रुतयशाः श्रुतदेवता न. ॥ १२ ॥ बालोऽनुकम्प्य इ त्थमस्तुतिनिविडनक्तिजमत्वष्टैकैर्गुर्फगिरामिति गिरामधिदेवता सा ॥ बालोऽनुकम्प्य इ ति रोपयतु प्रसादस्मेरां दृशं मयि जिनप्रनसूरिवर्ण्या ॥ १३ ॥ इति श्रीजिनप्रनसूरि कृतश्रीशारदास्तवनं समाप्तम् ॥

॥ अथ श्रीजिनसिंहसूरिस्तवनप्रारंनः ॥

प्रनुः प्रदद्यान्मुनिपङ्क्तिपंक्तेर्नागारिरागोपचिति सदानः ॥ समुद्वहन् श्रीजिनसिंह सूरिर्नागारिरागोपचिति सदा न ॥ १ ॥ कल्याण गोत्रायितमोहरेणां चंमानिलेन स्थिरतागुणेन ॥ कल्याणगोत्रायि तमोहरेणान्नात्य त्वयैवार्हतशासनस्य ॥ २ ॥ स्वा मिन् मनोन्वेति न ते मृगाक्षी मनोजवानां चतुरगमानां ॥ बोधेन शृङ्गीर्ने कुलं गजा नां मनोजवानां च तुरगमानां ॥ ३ ॥ कंदर्पकांतारविनावसूनां प्रासे त्वयीशान्यमृ र्पि तप श्रीः ॥ कंदर्पकांतारविनावसूनां निधिर्गुणानां नुवि यस्त्वमेव ॥ ४ ॥ ज गत्कंनांजोजवने गुणौघवक्रारविंद नविना कृतोदं ॥ वदे त्वदीयं सकलोरुपस्य व क्त्रारविंदं नविनाकृतोदं ॥ ५ ॥ सर्वं कषायानलमेघवारिमोहाय सूक्तं शृणु त विजेतु ॥ स वे कषायानलमेघवारिवृत्तं स्मर श्रीजिनसिंहसूरेः ॥ ६ ॥ सुदे न कस्यास्तु धुरि स्थि

ता ते सरस्वती कुड्वशीकराणा ॥ माधुर्यशैल्याक्रायिनी तरिर्णा सरस्वती कुड्वशीक राणां ॥ ७ ॥ सदोदितावोधमपूरुषा अप्यानदितावागमृतं अवोन्यां ॥ सदोदितावो धमपुरुषा अप्पुपाशमस्तेन मुनीष्ठ तेषां ॥ ८ ॥ व्यामोहवाणासुरदर्पमाथ पद्मावरो दीर्णतमोवितान ॥ त्वमेवि सन्मत्रजपाविराद पद्मावरो दीर्णतमोवितान ॥ ९ ॥ योगेन धीगेचित माननीय श्रियस्तवोचे शशिनोपमान ॥ योगेनधीरोचित माननीय प्रख्यातमूर्ख तमुदाहराम ॥ १० ॥ स्मराशुगाना हृदि मेगिममर्मावियामरेशास्त्र निधेहि तानि ॥ तत्वानि सूरीड् मर्दान्हिनेदविधाऽमरेशाऽस्त्रनिधे हितानि ॥ ११ ॥ जिनप्र नाचार्यमनासमानावबोधमव्या कविमात्मशिष्य ॥ जिनप्रना चार्यमनासमाना प्र नो स्फुरत्वस्य तव प्रसादात् ॥ १२ ॥ श्रीमज्जिनेश्वरयतीश्वरपादपद्मशृंगारभृगकरणि जिनसिंहसूरि ॥ इत्य स्तुतोस्तु यमकै शर्मकरवेकुरानदकदलनकुलतिलो नतानां ॥ १३ ॥ इति श्रीजिनप्रभसूरिकृतयमकस्तवकितश्रीजिनसिंहसूरिस्तवन समाप्त ॥

॥ अथ श्रीपचनमस्कृतिस्तवनप्रारम्भः ॥

प्रतिदिनं तम पारे पारेवाग्वर्त्तिवैभव ॥ प्रपंच वेदस पंच नमस्कारमनिष्टुम ॥ १ ॥ अहो पंचनमस्कार कोप्युदारो जगत्सु य ॥ सपदोऽष्टौ स्वय धत्ते दत्तेऽनंता स्तु ता सतां ॥ २ ॥ दत्तेऽनुकूलएगान्यो चुक्तिमात्रमपि प्रभु ॥ एव पच नमस्कार प्रा निजोऽप्येपि मुक्ति ॥ ३ ॥ नमस्कारनरेड्स्य किमपि प्राभव स्तुम ॥ यदीयकृत्कृतेना पि त्रिभुवनि विश्व क्षणात् ॥ ४ ॥ सिद्धयोप्यणिमाद्यास्ता नमस्कारमधिष्ठिता ॥ अष्टावष्टपकुरान्मापि यदसा प्रणतेऽविशत् ॥ ५ ॥ शिर कादिविधार्यार्ऽर सांगवेशवि वेशिता ॥ नमस्कृतेनेरपदी क्टरे वज्रपजर ॥ ६ ॥ चाप्पर्ता श्रीनमस्कारान कार्मण क्षिमनोविक ॥ यरसप्रयोगत पाशुपि सननयेज्जगत् ॥ ७ ॥ नमस्कार तुम सिद्ध पत्पदस्पर्शपूतया ॥ पयाम्रादितगराग्नि ज्वातिमाग्गादयेऽऽवरी ॥ ८ ॥ नववर्णी नम स्कृत्या कृती प्रतिपद जपन् ॥ विघ्ने विविधाविप्रविनावयसनिमद्व ॥ ९ ॥ कर्णिका दलजाडये हत्पुडरीके निवेश्य य ॥ ध्यायेत्पच नमस्कार ममार स तरेत्तरां ॥ १० ॥ अर्ष्टा कोटे पदेभ्यस्य वर्णानान्स्य तावत ॥ कुड्यादावर्चयन् सम्यगेति शांतेर्निशांततां ॥ ११ ॥ ध्यायाहरयन्दपीठायेमिर्ध्य स्य परमेष्ठिनां ॥ विकुर्व्यामृत किन नाशयेद्विश्व क्षिपा ॥ १२ ॥ करणत्रीषु विन्यस्यार्हदादीन् ध्यानमानयन ॥ प्रत्यूहपन्नगव्यूहव्यपोहे वैनतेयति ॥ १३ ॥ गुरून् पच क्रमात् ध्यायन् मुद्रया परमेष्ठिनां ॥ गूढमन्त्र मचिरात् कर्ममर्मापि विमोचयेत् ॥ १४ ॥ षोडशाहरगात् अक्षापरम परमेष्ठिन ॥ प्राणी प्रणि

...श्रीपवस्तुफलमेधते ॥ १५ ॥ विद्युज्जलाग्निनृपालव्यालचौरारिमारिजं
भयं वञ्चयते पंच नमस्कारस्य संस्मरन् ॥ १६ ॥ आराध्य विधिवत्पंच नमस्कारमु
दग्धीः ॥ लक्षजापेन पापेन मुक्तमार्हन्त्यमश्नुते ॥ १७ ॥ ऐहिकं फलमीप्सूनामष्ट
कर्मप्रसाधिनी ॥ मुक्त्यर्थिनां च स्यादेषैवाष्टकर्मनिषेधिनी ॥ १८ ॥ विपदामनि
चारन्योपादानस्याखिलश्रियां ॥ स्मर्ता नमस्कृतेः स्वर्गिवर्गेण वरिवस्यते ॥ १९ ॥
चतुर्दशानां पूर्वाणामेषैवोपनिषत्परा ॥ आद्या सकलविद्यानां बीजानां प्रकृतिः
पर ॥ २० ॥ इयं पथ्योदनं पथ्यं परलोकाध्वयायिनां ॥ परमास्त्रं नृणां मोहराज
युद्धाय सज्जितं ॥ २१ ॥ प्राणी प्राणप्रयाणस्य क्षणे ध्यायन्नमस्क्रियां ॥ लभते सु
गतिं नैकान् पाप्मनः कृतपूर्व्यपि ॥ २२ ॥ नमस्कृति कृपावित्तैः श्रोत्रयोः प्राभृती
कृतां ॥ स्वीकृत्य पुस्यसध्यंचस्तिर्यंचोपि ययुर्दिवं ॥ २३ ॥ त्रिदंडिनं निगृह्याऽस्तिय
ष्टिना श्रेष्टिनंदन. ॥ नमस्कारस्य महसाऽसाधय त्स्वर्णपूरुषं ॥ २४ ॥ स्मृत्वा पंच
नमस्कार प्रविष्टायास्तमोगृहं ॥ घटन्यस्तो महासत्याः पन्नग. पुष्पमाल्यभूत् ॥ २५ ॥
नमस्कारेण संबोध्य मातुलिंगवनामरं ॥ प्राणत्राणं स्वपरयोर्व्यधत्त श्राद्धपुगव. ॥
२६ ॥ यद्भूतं हुंडिकः प्रापत् सुकुलं चंडपिंगलः ॥ इतस्ताहक् गुणस्फीति सुदर्श
न सुदर्शने ॥ २७ ॥ एष माता पिता स्वामी गुरुर्नेत्रं जिपक् सखा ॥ प्राणत्राणं
गतिर्दीप शांति पुष्टिर्महन्महः ॥ २८ ॥ निधयः संनिधौ कामधेनुरप्यनुगामिका ॥
नभृतो नृतकास्तस्य यस्य नैष हृदो हिरुक् ॥ २९ ॥ नास्येयत्तां प्रभावाणां क्रमगतिं
तथा गिरा ॥ मितायुष्टाश्च सर्वोपि न्यक्षेण भणितु क्षम· ॥ ३० ॥ सर्वावस्थोचितं
सर्वश्रुतसार सनातनं ॥ परमेष्टिमहामंत्रं भक्तितत्रमुपास्महे ॥ ३१ ॥ उर्ध्वांजन
लक्ष्मानविदितो विभ्रत्सुवर्णात्मता भव्यानंदनभद्रशालमहिमा गेचिलभृताचि
त· ॥ अस्तु श्रीजिनगेहभास्वररुचिस्थानं लसन्निर्जर सोय वः परमेष्ठिपंचकनम
कार. सुमेरु.श्रिये ॥ ३२ ॥ साम्नायावयवां जिनप्रभगुरुर्पा सत्रयामास्थान छि
ां पंचनमस्कृतिस्तुतिमिमामानंदनंदन्मना. ॥ यस्यैपांचति वक्त्रसीमनि सदा सुला
ाविभ्रमं त मुंचत्यचिरेण विघ्ननिचयाः श्लिष्यंति च श्रीभरा ॥ ३२ ॥ इति
ंचनमस्कृतिस्तवनं समाप्तम् ॥

॥ अथ श्रीवीरस्तवनप्रारंभः ॥

ीवर्द्धमान परिपूरितनम्रकाम चामीकरप्रभ जिनप्रभसूरिरंत ॥ मोमुःपतं न
ज्ञानहर्षवर्षदीपोत्सवस्तवलव यमकावदातं ॥ १ ॥ श्रिनामना कमजाद

र्म्य कल्पपाद पयोज ये ॥ कर्रां तान् प्रति निर्थंककल्पपादपयोजये ॥ २ ॥ क स्ते नांत न सद्बोधमिथुराराातिलक्ष्मणे ॥ रक्के च तुल्यचित्ताय सिथुराराातिलक्ष्मणे ॥ ३ ॥ हिलेश देह दर्शे त्वा शिवगकार्त्तिके निद ॥ नान्यतीर्थ्या यत्र क्षुता शिवशंकार्त्तिकेनिद ॥ ४ ॥ स्वान्यपरणोनामादान दीपाञ्जिका सता ॥ कोटिं परां यत्र तेऽनुदानदीपाञ्जिका सता ॥ ५ ॥ कुदृशा शुश्रुवे तेऽत्यदेशनागितदर्पका ॥ धन्यैरेवेश वैराग्यदेशनाशितदर्पका ॥ ६ ॥ त्वन्मुक्त्याऽसीत्तमो हतु तरसा दक्ष पावनी ॥ पू पापा पापपक्षाऽपेतस्माद्दक्षपाऽवनी ॥ ७ ॥ त्वत्सेवाया हषीकेनहस्तिपाऽलम्यहीनता ॥ र्न्नं नाम तदा राज्ञो हस्तिपालस्य हीनता ॥ ८ ॥ दधानाऽधोरगेपूकस्वातिरेकाविराजता ॥ हृकेषु जात त्वन्मोक्षो स्वातिरेका विराजता ॥ ९ ॥ त्वन्निर्याणेन करण नागमङ्गमरजयत् ॥ एनामि नगरन् क ना नागसङ्गमरजयत् ॥ १० ॥ मूढगत स्यड्यार्यममता विषपानत ॥ नाद्योपचर्या कुर्यास्त्व मम ताविपपानत ॥ ११ ॥ तायर या पित्रन्मुग्धं रमायाननसारस ॥ दृष्टिर्विदत्ति सौरस्य रमाया न न सारस ॥ १२ ॥ स्तूपासमन्नदमद्ध नगत पृथिव्या सिद्धार्थनदनयशोनिमतं समस्या ॥ सिद्धार्थनदनयशोनि मतं समस्या सर्वश्रिया जिन निज हृदि रोप्यता मे ॥ १३ ॥ इतिश्री जिनप्रभसूरिविरचितश्रीवीरस्तवन समाप्तम् ॥

॥ अथ श्रीआदिजिनादिस्तवनप्रारम्भ ॥

प्रणम्यादिजिन प्राणी मरुदेवागजायते ॥ हरणे पापरेणूना मरुदेवां ग जायते ॥ १ ॥ गर्भमदगमत्नारमाननम्यप्रजारुण ॥ मादयेणाजितस्मैर माननम्य प्रजारुण ॥ २ ॥ मोहस्यानापनस्माण गजवेग मिता रये ॥ यस्मै निग्य नमश्चक्रे ग नरे ग्रमिनाग्ये ॥ ३ ॥ मुन ऽनिनदन मृतो गजसरन्देहत ॥ यत्पादाब्जे नृणां नाव गजस यन्द दन ॥ ४ ॥ ह्यथाना सुमते गरस्य सान्वसागदयानन ॥ ध्यापस्त्वा च म नीगग सान्वसागद यात्रन ॥ ५ ॥ क पद्मप्रभ शक्तीस्ते प्रनाव मिता हिला ॥ मन्मातुर्मीष्ट चन्द्रार्कप्रनाप्रमिता हिता ॥ ६ ॥ मोहराज सुपार्श्व न्य नुनमायामनोनुप ॥ नर्मा तेऽत कोम्नु सिद्धानुनमायामनोनुप ॥ ७ ॥ नव चन्द्रप्रनोत्पन्नमहसे नक्रमेनन ॥ न मेवारिग्द मातु महसेनदमे नत ॥ ८ ॥ मयि विभ्रनतु चन्द्रनाथनक्रप्रनादया ॥ तन्यास्त्व सुविधे सर्वजानन्द प्रनो दयां ॥ ९ ॥ शीनलान् श्रियोयाद्या गरिस्पमनामया ॥ त्वा प्रन्यान्मा स्तो नतंगविकल्पमना मया ॥ १० ॥ त्वन्मने स्मते श्रेयन् स्मनापतनेत्र या ॥ सा धीश्रिया मेऽस्तु स्तं स्मनापननत्रया ॥ ११ ॥ वासुपूज्य मनिज्ञात्त बभूवास्म्ययागत ॥

शरण त्वत्कर्मा विश्वबंधुकारुण्ययोगतः ॥ १२ ॥ श्रेयसः शरणं नव्य त्वं गन्न रिमजंकृते ॥ त्वयि देहि च नव्यादिकृत्व गन्नविमजंकृते ॥ १३ ॥ य:ख्यातस्त्रि जगत्यार्थ सदानुतनयोऽनिशं ॥ हत्वकैवत्मोक्षमर्या सदानुतनयोनिशं ॥ १४ ॥ तत्पादाब्जोऽजिनो दद्यादि मन्नं पटतां पदं ॥ शांते मोहं जिनं मन्ये दमजंपटतां पदं ॥ १५ ॥ नुश्रीकुंथं प्रनिप्रव्हा यमजाजन जंजना. ॥ यास्तावोऽरागरोपयम जाजनजंजना: ॥ १६ ॥ सोहं समर्था सूयस्य नतमामवनिर्वलं ॥ गोरत्नमर्हन्न कोऽनत मामव निर्वलं ॥ १७ ॥ शक्ति नवाब्धेरुच्चतं मतिमल्लीनदेहिन. ॥ पुण्य धानजैने ननिर्मलिमलीन देहि नः ॥ १८ ॥ यस्या विज्ञासास्त्रैलोक्य पद्मानंदनना नव. ॥ सा तु सुव्रत सा शक्त्या पद्मानंदनना न व ॥ १९ ॥ यत्र नांह्रिद्वयी ते वा न म रुचिरकोमला ॥ तत्र राजेप्यनीतानां नमेरुचिरकोमला ॥ २० ॥ नेमे नमस्ते दोषक्ष रजन. प्रजविलवे ॥ कर्मान्गुरुवथायोग्रैरजनप्रजविल्लवे ॥ २१ ॥ तापाग्नौ जुहुवे पार्श्व नवता पंचसायक ॥ श्रितोऽतस्त्वं जनो मोहनवतापं च सायक ॥ २२ ॥ नाऽलुन्यः कामसर्गाख्याय लोकनेतरणीयसा ॥ तेन वीर जगत्कर्मालोकने त रणीयसे ॥ २३ ॥ तवार्हन् पंचकल्याणी दया लोकामदायिन ॥ पायास्त्रिजगते दत्तो दयालो कामदायिन. ॥ २४ ॥ त्रातुं जीववीथा, संविदक्षा मानव तामिता ॥ जिनं द्राः पांतु करुणा दक्षा मानवतामिताः ॥ २५ ॥ यदाराध्यति गीर्वाणव्रजाऽनयदशा मन ॥ तत प्रज्ञा शरणं नत्का व्रजान्नयदशासनं ॥ २६ ॥ यस्या नेशगिरा जैन्या सुत गमयवासना ॥ हत्वापद. सुसंवस्यासुतरा मयवासना ॥ २७ ॥ लक्ष्म्याकृष्टिकरं जिनेन्द्र मनघं नंद्यावलीमंदिर वंदे तस्य गिर नतभ्रमतमः सूर्यं श्रियां कारणं ॥ सार्वीयप्रथित प्रजावमखिलाश्लिष्टाघहानिप्रद दंभव्यालमृणिं वरेण्यसमयं रंगद्गुणं बोधिदं ॥ २८ ॥ इति श्रीयमकयुक्त आदिजिनादिस्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ अथ श्रीपार्श्वप्रातिहार्यस्तवनप्रारंभ. ॥

त्वां विनुत्य महिमश्रियामहं पन्नगांकमठदर्पकोपिणं ॥ स्वां पुनामि किमपीनर कितापन्नगां कमठदर्पकोपिण ॥ १ ॥ कोनुरज्यति देशनौकसि इागशोकतरुणा वि नाशिते ॥ रत्नहेमरचिनि क्षितोऽ्सलऽागशोकतरुणाविनाशिते ॥ २ ॥ देहदीधिति तिरस्कृतो दयन्सारजा. सुमनस. सदानवा ॥ देशना भुवि किरंति ते स्फुरत्सारजा. सुमनसः सदानवा. ॥ ३ ॥ तादृश. श्रवणतस्तवोत्तमा कारकाय वरदेशनाध्वने ॥ प्रस्थितः कऽत्र पाप्मनां निराकारकायवरदेशनाध्वने ॥ ४ ॥ नाकिनायकयुगेन सादर चामरैर्विपदनाग वीज्यसे ॥ त्वं न कैर्भवसुखायमुक्तये चामरैरिव पदनागवीज्यसे ॥ ५ ॥

वीक्षितुर्नयनयोर्निराकृता शातनासुरमणीप्रभावत ॥ आतनोति कृतसिद्धविष्टर शात
नासुर मणीप्रभावत ॥ ६ ॥ इष्टरर्पयति कीर्तिशुभ्रिता शातनावजयमर्यमोद्द ॥
दीप्यमानमनुमौलि तावक शातनावजयमर्यमोद्द ॥ ७ ॥ व्योमि गांजि निनद पु
ष्पतामानर्वरिमुदिरो महर्षिनि ॥ कैर्न दुदुभिरव श्रुतस्तनौ मानरेरिमुदि रोमहर्षि
नि ॥ ८ ॥ अमुरीपु कुपथानि मौक्तिकन्यास हृद्यरुचितानि चायितु ॥ त्रीणि ते
जिन शितांगवारण न्यासहृद्यरुचितानिचायितु ॥ ९ ॥ प्रातिहार्यमहिमाजायस्तव
श्रीजिनप्रभ विति स्तुतो मया ॥ पार्श्वकामितफलाय कल्पता कल्पपादप इवैष
नेमुषा ॥ १० ॥ इति जिनप्रभसूरिकृतश्रीपार्श्वप्रातिहार्यस्तवन सपूर्णम् ॥

॥ अथ श्रीकल्याणपचकस्तवनप्रारम्भ ॥

निनिपजोकापित चूतज श्रिया नयन्मुद नैरयिकानपि क्षण ॥ त्रिलोकलोकस्य
रते प्रपचय जिनेद्र कल्याणकपचक स्तुम ॥ १ ॥ निवेदित प्रीतिपरं पुरदरैश्चतुर्द
श स्वप्नविनावितोदय ॥ महानिधानागम चारुरर्हतां तनोतु गर्भावतरोत्सव शिव
॥ २ ॥ कुरुकुमारीकृतसूतिसक्रिय सुपर्वसपादितमज्जनक्षण ॥ सृजतमुद्योतम
य जगत्रय जनुर्मह सन्मुमदे जगद्गुरु ॥३॥ सुरोपनीत परिवत्सर धनैर्यथानिजा
य पत्तितोषितार्थिने ॥ जिनाधिपानां निखिलांगिरक्षिणे नमस्तपस्याप्रतिपत्तिपर्वणे
॥ ४ ॥ अमर्त्यनिर्मितदेशनाजनीकृताद्भुत कैवल्यवैनजोत्सव ॥ अमदनादीरापु
ग्तिांश करोतु जैन शुभनाजन जन ॥ ५ ॥ पुरदरक्कदितसभ्रमभ्रमत्सुराधमाजि
गितमुक्तिरत्सव ॥ जिनस्य निर्वाणदिन दिगतरस्फुरत्तम सत्तमशर्मणेऽस्तु न ॥ ६
मरूपो नूतनराज्यस्थितानामसुत्र कल्याणकपचकेऽर्हतां ॥ विना विदेहान् दश कर्मभू
मिषु स्मरति मागर्कनियोन् सनातनान् ॥ ७ ॥ इत्याहतत्रिभुवनप्रभुतत्क पचक
ल्याणचक्रमच हृदि यो विभर्ति ॥ शस्त्राणि त जिततराण्यपि मोहराज सौभाग्य
भाग्ययुनि न प्रभवति तस्मिन् ॥ ८ ॥ इति श्रीकल्याणपचकस्तवन समाप्तम ॥

॥ अथ लक्षणप्रयोगमयश्रीवीरस्तवनप्रारम्भ ॥

निर्मार्गविस्मीर्णनवार्णव कैस्तकर्णमाकर्णितवर्णवाद ॥ सुपर्णमराद्दि दमे सु
पर्ण श्रीवर्णवर्ण विनुवामि वीर ॥१॥ यस्याप्यतो प्राप्यत तारकनि क्रमांबुज नाथ
नमस्करोते ॥ समाश्रयप्रमाणानिरस्य गणस्य त वक्तरण गृणनि ॥२॥ तृप्येनि ने
ज्ञानवर्धिनावं क नस्तदस्च्युतिमपुनिस्त्वो ॥ प्रशानतिष्ठ वदन त्वदीय सम्यामर
इन्द्रानदनिद्रमिङ ॥ ३ ॥ दिवानिश त्वत्प्रणतस्य गम्या पुरी प्रजनिनं कृतार्थिता

नां ॥ विभो बहुव्रीहिसमासवत्त्वमन्यार्थ एवोपदधासि वृत्तिं ॥ ४ ॥ विभक्तिमुक्तं पु
परसंख्यैः समाश्रितं धातुविकारहीनं ॥ अपूर्वमेतत्कटकृत्यनिष्ठाप्रधानमाख्यात
मिन त्वदीयं ॥ ५ ॥ यस्मिन्न संधिर्न च वर्णलोपो न संस्तुतिर्विग्रहकारकाणां ॥
नवा विकल्पः क्वचन प्रयोगेष्वहो नवं व्याकरणं तवेदं ॥ ६ ॥ ध्यात्वा हृदा त्वां फ
लमेति भव्यो दृष्टापि साक्षान्न कृतीत्वभव्यः ॥ तत्सत्यमेतद्बहिरंगतो यत् स्यादंतरं
गोत्रविधिर्बलीयान् ॥ ७ ॥ एतावतैव प्रतिभाति विश्वविलक्षणं वीर भवच्चरित्रं ॥
भालेन युष्मत्पदसंप्रयोगेष्यलंभि लोकस्य यदुत्तमत्वं ॥ ८ ॥ एकत्र धातावुपस
र्गपंचकप्रयोग इष्टः कविभिर्निरंतरं ॥ त्वद्ध्यानधातावुपसर्गविंशतिं सुरः प्रयोक्ता न
कथं क्षुलक्षणः ॥ ९ ॥ प्रभो महच्चित्रमिदं कदंबके कुतीर्थिकाणामपि कर्म धारये॥
यन्मोहराजप्रधनेषु पुंवद्भावो न कश्चित् परिपोस्फुरीति ॥ १० ॥ क्षुद्द्योर्वरद भावकर्म
णोर्दर्शयन् विकरणस्थितिं पदे॥निर्विभक्ति समुदाहरन् पदं साधुलक्षणविचक्षणो भ
वान्॥११॥अनुपघातिनमेव किलागमं प्रणिगदंति जिनेश्वर शाब्दिकाः॥अघुमतामुपघा
तकरःस्पृशत् कथमिवागमतां स कृतःपरैः॥१२॥योपादानं भ्रश्यतः पापपूगस्याति ध्या
यं वंदत्ते वासवानां॥आधारः श्रीसंपदां संप्रदानं त्रैलोक्यस्य स्तोत्ररत्नोपदापाः ॥१३॥
वेदावधः करणमुशतां मोहवार्धि तरीतुं कर्ता भार्तो द्विरदरदनछेदशोनिर्यशोभिः ॥
तव्यानां यस्त्वमसि सुपथप्रस्थितो हेतुकर्त्ता तस्मै तुभ्यं जिन मम शिरो नम्रताकर्म
तु ॥ १४ ॥ अंतस्थास्तव शासनस्य यशसां कुंदावदातत्विषां गम्भंते भुवि संप्र
रणविधौ मर्त्या न तत्कौतुकं ॥ यत्ते नित्यमनामिनोपि कुगुरां दुर्वृत्तदेवेषु च प्रा
सैते गुणवृद्धिभाजनतया ब्रूमस्तदत्यद्भुतं ॥ १५ ॥ तात त्रातरिदं नपुंसकमपि स्वांत
मदीयं भवन्माहात्म्यस्तुतिसुंदरीं प्रणयतः पाणौ करोत्वेकदा ॥ तत्संश्लेषसुखानु
भाववशतः क्लैब्यं विधूय क्षणात् तत्रोत्पादयिता ऽथ शाश्वतचिदानंदाव्हयं नंदनं
॥ १६ ॥ इत्थंकारमिभारि लक्षणनरः सल्लक्षणप्रक्रियाचित्रं स्तोत्रमिदं विदंभहृदयो
विद्यामजाग्रत्तमं ॥ कुर्वाणः स्मरबाणकुंठनकलानिलातततानर्तको नाट्याचार्य
तनमनेड् पदवीसाम्राज्यमासादयेत् ॥ १७ ॥ इति श्रीजिनप्रभ विरचितलक्षणप्र
यमपश्रीवीरस्तवनं समाप्तम् ॥

॥ अथ श्रीवीतरागस्तवनप्रारंभः ॥

जयंति पादा जिननायकस्य दोषापहा ध्वस्ततमोविकाराः ॥ रवे
कौशिकक्लेशकराः स्वराश्च ॥ १ ॥
॥ देवाधिदेवत्वमनिष्टवंतश्चतुःकषायक्षतये निम्बा

स्तवेन कृतार्थतामेति कृती कृतीश ॥ न वाच्यता याति कदापि लोके यथा यथार्थस्तव
काव्यकर्ता ॥ ३ ॥ त्वमेव चेच्चेतसि जागरूको जतोरसि श्रीजिनराजमल्ल ॥ जवेन्न किं
मम्मित्रिजगन्महल्ल प्रपात्यते किं नहि मोहमल्ल ॥४॥ त्वमेव देवस्त्रिविधेन येषां जगत्र
यीवंद्यपदो हि पादै ॥ धात्री पवित्रीक्रियते किमत्रचित्रं तदीयैस्त्रिजगत्पवित्रै ॥ ५ ॥
उपाधियोगान्महतो लघुत्वं लघोरपि प्राज्यगुरुत्वमेव ॥आदर्शके देव यथा द्विपस्य प्रदी
पदीनां तु तनूनत स्यात् ॥६॥ कश्चिद्गुणानां हि लवोपि लोके यो दृश्यते सोपि विनो
पनाय ॥ अनंतकल्याणनिधेर्जिनेंद्र पयोविना पल्लविता नवृक्ष ॥ ७ ॥ नातः परं देव
जडत्वमत्र प्रत्यक्षजत्कोपि जयान्नबुद्ध ॥ सर्वज्ञताप्यस्ति विभो न चान्या त्वमेव दे
वो विदितो यदीह ॥ ८ ॥ विदंति सर्वेप्यपरानधीशान् नतान्नतास्ते प्रवदंति सर्वान् ॥
जगज्जगन्नाथ यथास्थितं हि त्व वेत्सि हि त्वां तु न वेत्ति चित्रं ॥ ९ ॥ बहिः स्थितं
वेत्ति परस्वरूपं न स्वस्थितं देव तव स्वरूपं ॥ चक्षुर्यथा पश्यति बाह्यरूपं नचात्मरू
पं तु कदापि लोके ॥ १० ॥ सदात्मविज्ञानविहीनधीभिर्न ज्ञायते नाथ विभो
स्वरूप ॥ स्वशीर्षपश्चात्प्रविभागसम्यङ् निरीक्षणे कोपि न बाह्यहेतु ॥ ११ ॥ मध्य
स्थभावोपि जिन त्वयीह गुणक्षते स्याद्गुणिनो नितांतं ॥ यथाऽगुणप्रत्यय एषधाता
पर्यंपयो कोऽत्र विचारहेतु ॥ १२ ॥ त्वद्भक्तिभावोप्ययथार्थ एव नवत्प्रणीतार्थ
विपर्ययेण ॥ विनीयते सर्वेहितोपसर्गवर्गेण यात्वर्थइवान्यथा हि ॥ १३ ॥ दो
दयते य स्वयमेव रागद्वेषादिदुष्टाकनर्दर्पयेट ॥ सम्पूयते सोपि हि देवबुध्या दहा
महामोहविजृंभितं तत् ॥ १४ ॥ अचिंत्यमाहात्म्यनिधि प्रसन्न जगच्छरण्य जगतोपि
पूज्य ॥ त्वमेव देव प्रविवेनक्ति हि त्वा प्रकाशतेऽन्येन किमु प्रदीप ॥ १५ ॥ किम
स्मिनास्मिनि विवेकपक्षा गगादिपक्षक्षतिलब्धदक्षा ॥ ये श्रीजगन्नाथ जिनप्रभास्ते
त्वामेव देव निनमाश्रयति ॥ १६ ॥ इति श्रीवीतरागस्तवन समाप्तम ॥

॥ अथ श्रीचंद्रप्रभस्वामिस्तवनप्रारंभ ॥

देवेर्य स्तुवे तुष्ट मांमनाश्रितविग्रह ॥ दयार्द्रंइप्रन प्रीतिं सामनाश्रितविग्रह
॥ १ ॥ येषां प्रभावादिव कर्मानवष्ट्कमनानय ॥ ते जिना पांतु वानव्यजनवृत
कमनानय ॥ २ ॥ कृतीर्थिमार्येन कृपामद नाशानिरजन ॥ श्रुतं येनन मानाधि
मदनो ज्ञानिरंजन ॥३॥ पातु गीर्वा कृनाविद्यापरमा कमनाशना ॥ यत्र प्रना या ज
नेत्रेने परमा कमनाशना ॥ ४ ॥ इति श्रीचंद्रप्रभस्वामिस्तवन समाप्तम ॥

॥ अथ श्रीरुषभदेवस्तवनप्रारंभः ॥

संस्कृतभाषा.

निरवधिरुचिरज्ञानं दोषत्रयविजयिनं सतां ध्येयम् ॥ जगदवबोधनिबंधनमादि
जिनेंद्रं नवीमि मुदा ॥ १ ॥ कस्तवमिति द्विपोलं वदितु परितो गुणान् गुरुनिभो
पि ॥ चुलुकैः प्रमिमासति वा कश्च जलं वरमनीरनिधेः ॥ २ ॥ तदपि त्वद्भक्तिनर
प्रतरलितो वच्मि तावकगुणाणुं ॥ चापलनुन्नो स्फुटमपि लपन् शिशुर्वा निरपवा
दः ॥ ३ ॥ ज्ञानप्रदीपजमिव स्निग्धांजनमुपहित चरणलक्ष्म्या ॥ सद्ध्यानहृगंजि
ताय चिकुरचयस्ते स यो रुरुचे ॥ ४ ॥

प्राकृतभाषा.

तमकसिण सप्परवयमोर मोरउच्छाहुते किलिम्मंति ॥ तुह सासणाधिंं जे कुणं
ति विविहे तव किलेसो ॥ ५ ॥ तञ्जिय कल्लाणसिरि, पिढे वकल्लाणसिरिविलासगि
ह ॥ तुह वदे देहमहं विलसिरमोहंपि हयमोहं ॥ ६ ॥ युग्मं ॥ तुह सुहरभासयला,
रविदलद्दी मरदफुसणेणं ॥ ज विजितु हिमरस्सी नियकंती निवहमुहडेहिं ॥ ७ ॥
असइ तमभि भवजर सुत्तिरिउं पहू ससंकोसो ॥ डग्गं खुर इय घणपरि,हिदंभउ
परनिसेहगा ॥ ८ ॥

मागधी भाषा.

तुह शुस्तिदेवभाव, स्तं गदपञ्जे शमयपथमचञ्ञे ॥ ते यिण कुमदलक्कमव.शि
मिश्चादिस्टी पदहि भवे ॥ ९ ॥ तमवञ्यवञ्यिदमिधं, श्चाचिलिद शुम्ह मोरुपुनम
गं ॥ काला चिदामि हगे, हलिशनले पिस्किउं धञ्ञे ॥ १० ॥ केलीकलाकगुणहं,
ञिञ्ञकशवस्टलाधि किलणाह ॥ तुह श्चपुलभवत्तिलसं, वदामु हगे शलीलाह
११ ॥ संयणिदधञ्ञकमले, यं पञ्कालिदमहंदपंकमले ॥ विदपलमहिमशलवे,
उ भव शं शदा कोहे ॥ १२ ॥

पैशाची भाषा.

न गचित्रानन, श्चनञ्ञ मामञ्ञ वुञ्ञ तिसपञ्ञं ॥ रंतन ज्ञितपंक मे. पतनि
विनी पनय ॥ १३ ॥ भत्तिजगतो दूरे चिपति यो तुह शमियतेनेन ॥ ममटनरे
धा विञ्हितम्भिनातो न सो जोति ॥ १४ ॥ गुम्पानिधेति तेरं श्चपुञ्ञग्गपात
येव॥कीन्तिनो यंन म्ती मकथं नपते शुकतबीजं॥ १५॥ श्रम्न . . .
हि तुमं मिमजगपा॥ तिञिर पमतधीजन, पञ्चा . . .
. . . ॥ १६ ॥

चूलिका पैशाची

नाठ मिनेन्द्रफजिता तुह रतन सेवते लमा अनख॥ह्यानून फकुरकुन पोम सक लक्मपि च रिपु ॥ १७ ॥ चलयजमटलपटिमा चिकुराली शोफते तवसयुके ॥ चन्न नगिगिनितसयेन्न चरनायन्न तन्न नर तुवा ॥ १८ ॥ तुह्रंसकिञितटे फुञ,ति मरख नालिव मचुकचनाची ॥ गतरुचकपोलतनरुचि,फासुर सोतामिनीतामा ॥ १९ ॥ निगकुसुमकानारिञ चनपरिहिन सखनीरवाहखटा ॥ पथस फुरि सचकला नयनी ती नतिया तुमए ॥ २० ॥

शौरसेनी

कुमद मऊ्यनिदाण ताअ नरमाणरिक्कदे जगव ॥ चिदाविदाय नव्वे,व मो दि याराणनाय इमा ॥ २१ ॥ कधुय अल हरिपदवि कधुय अतं वा मरुत्त निस पसुले ॥ गन्नु लहिय अपुव्वपद पणइजण पाविदूण रवलु ॥ २२ ॥ दवाड ति गागमिदो पव्वर्त्तं पीग नलग्ङ्केण ॥ नवरि तुह नत्तिपवि माजिणराय फुरड हि दयम्मि ॥ २३ ॥ युग्मम ॥ हीमाणहे नगादो चकिदोह्न अम्महे यदिच्चावो ॥ णता पध तापध म सरंग सामिआ तनो ॥ २४ ॥

॥ समसस्कृतम् ॥

समगोम्हनाग कनिमनस्मनानिमयहिमनाग ॥ नरनयभूनिमहावग ना वेय नरनमनिरद ॥ २५ ॥ तर चरणोनयजाहह पाजीभेरापरायणादेव ॥ विद नि नगनिगणा वगनिहिग्मामरग्नय ॥२६॥ महिमरर तमसमहिम, विमन्न वरधी गरोम्हरिमन ॥ समयदयारगसुगम चरण संरे तवासुगम ॥ २७ ॥ तव नामधेय विनायकग्गा नुवि नगरनी यने ॥ सम्ठाग्निगमग्न, दरमाजिगकेनिरस ॥२८॥

॥ अपभ्रंशभाषा ॥

नव रेह्ड अनिमामनि चिद्दुउगरनि नुयविहि ॥ निक्कियग्विरजमूणे फुग सुहहन नगिनहि ॥ २९ ॥ रहु मिल्हि विमहनहि, यारहुविय जणरयहार ॥ पइ कायहि सुणियइं कुरुग्मवित्र कग्णपयार ॥३०॥ तास मरानयजनहिज, निनर निवडइ हुडुक्कि ॥ जाम्वन पाम्वय नुय प डुमाम्णनायकइनि ॥ ३१ ॥ सुग्हु कइं निछु ता सुप इकहन सुमननवनम्मु ॥ दिविदिवि जीवाजुन कर दि पइ वुत दजिणधम्मु ॥ ३२ ॥ चउव्वे हि कुनिन्दियवच बयणु अयम्व्य मयइ रिम्हुानि नगमिवमिय त, इ जिरंतु नमंसेहिं सुण्हि ॥ ३३ ॥ इकानि तेहा नाव विम्मु कुडुपणमिय तुन पाय ॥ नुजि रू

हि ता सुरम्दइ कविविणु पुरकवियाय॥३४॥ मज्ज कहंतिद्ध नावरि,उ दडवड तण उद्द वक्क ॥ मामिय नट्ठलंतउ,तु दुनदु चंपइ परचक्क ॥ ३५॥ जुत्तिवि किरिय नाणहरि, घ यंमण मनमुद्धि,सुगग्गि ॥ कुकुनपहुवइ गिवनय.रि तुह सासणरहिलग्गि ॥३६॥ परि कवि नुद्द तणु नूटहि.कंचणकांति रवन्न ॥ वियसहि महणयणुल्लम, तामइ नवडुह निन्न ॥ ३७ ॥

उत्तरपद्यस्याद्यंन्द्वौ संस्कृतं १ समसंस्कृतं २ प्राकृतं ३ द्वितीये पैशाची चूलिका पैशाचिके ॥ तार्तीयिके मागधीशौरसेन्यौ ॥ तुर्ये अपभ्रंशः ॥

नायालीहयमंदयामयमलं भासं धरंत परं राकालि पवलोतयं अरवचयासत्तं क मालाचित ॥ धीनं लोअमहं ददावहकलं ठिन्नाहमायालदं नाथा नीरूदिरेसि वदउं पई साणंउ सीलुल्लइ ॥ ३८ ॥

॥ कविनामगर्भचक्रं ॥

न भानां भ्चिशुद्धयोगरजसोन्मीलत्प्रतोपान्वित भस्तः सौष्ठवनम्रमोहरवनः कंकं जहत्तद्भवि. ॥ स्च्या नास्करतिग्मतिद्विरमणीसंक्रृतनावः पर रंता ज्ञानरमांशमास्त स्थमे तन्या. सुविद्यां चिर ॥ ३९ ॥ जगति विदितवान् यस्त्वत्कमाज्ञास्वरूपं तव शु चिपदनावं संस्तवादध्यवस्य ॥ रचयति निजकंगालंकियां स्तोत्रमेत नवति नवकरीणा मिहसोनीष्टलक्ष्मी ॥ ४० ॥ इति श्रीजिनप्रनसूरिविरचित अष्टनाषात्मकं श्रीऋषन देवस्तवनं समाप्तम् ॥

॥ अथ श्रीमहावीरस्तवनं ॥

चित्रैः स्तोष्ये जिनं वीरं चित्रकृच्चरितं मुदा ॥
प्रतिलोमानुलोमाद्यैः खड्गाद्यैश्चातिचारुनिः ॥ १ ॥

॥ प्रतिलोमानुलोमपाद ॥

वंदे ऽमंददमं देवं यशमाय यमाशयः ॥ नायेनाययनायेना पाकता ममता कृपा २

॥ अनुलोमप्रतिलोम ॥

दासतां तव नागारा नचेयाय मतामस॥ समतामययाचेनरागानावततां सदा॥३॥

॥ अर्द्धप्रतिलोमानुलोम ॥

वरदानवराद्वित्व त्वद्विरावनदारव ॥ याज्यदेव नयान्यास सन्याय नवदेज्यया॥४॥

॥ अर्द्धभ्रम ॥

श्रीद वीर विरेनत्वं दमिताक्ष गताशुन ॥ वीताक्षमारनितारे रक्ष मां सदरगवि५

॥ मुरजबंध ॥

गीरतारजतारद्दपे धीग्ता स्थिरतारसा ॥सारतारश्रुतावध्या सुरता जन तावकी ६

॥ गोमूत्रिका ॥

ये पञ्पति तवेहाम्यारविंदं नक्तिबंधुरा ॥न पतंति नवे शस्यास्ते जिदो नगवन्नरा ॥७॥

॥ सर्वतोनड ॥

नमामरससामान मारिताक्ष्क्ताररिमा॥साता म या यामतासा रक्ष्याममपाक्ष्र ८

॥ रथपद ॥

तिर्यङ्नरसुराकीर्णा नाम्रते ननते सना ॥
स्व माहात्म्यात् रुताश्चर्य याश्रिता ततता श्रिया ॥ ए ॥

॥ द्यक्षरपाद ॥

रंगारांगोरुगीर्गगा गौरीगुरुररोगरर् ॥ गोरंगा गाररोगारि रिरिरो रैगुरुं गिरि ॥ १०॥

॥ एकाक्षरपाद ॥

लाननानोननिनान ततताततितातते ॥ ममाममाममसुमा ननानेनोननानन॥११॥

॥ एकाक्षर श्लोक ॥

काकिकाककांक केकाकोककोकिक ॥
ककाकुककांक कक कांकाककांकक ॥ १२ ॥

॥ भ्रमयोग ॥

मस्नूर्मा तवस्तानिर चाम्सरोवरं ॥
कुत शुम्नद्नाना सुनान तव शागन ॥ १३ ॥ युग्म ॥

॥ कान्या षड्समदानितक ॥

मगनि पुन्दवन्दापा न्मापमानिकद्युनिका ॥ कामधेनुर्नयविदां बधोत्ताम्न
ज्ञानमा ॥ १४ ॥ सार म्याद्वादमुद्रापाम्बिपदी नयनोऽजसा ॥ सा मेऽस्तु हृदि का
लेका न्निखेन गह्नितेन मा ॥ १५ ॥

॥ मुसलं ॥

श्रीसिद्धार्थकुलव्योमदिवाकर निरंजन ॥
कष्टनेकांतया मर्त तीर्थकर तवाश्रिना ॥ १६ ॥

॥ त्रिशूलं ॥

जुक्ता या त्वयि नव्याली धन्या धत्तेस्म चेतसा ॥
सामता तामसाकाममकासारंगसागरं ॥ १७ ॥

॥ हलं ॥

त्रिशलाकुक्षिपाथोजराजहंस जगद्विनो ॥
जोगास्तृणमिव त्यक्तास्त्वयामुक्ति दिदृक्षया ॥ १८ ॥

॥ धनु ॥

सुरासुर नमस्तुभ्यं नमस्यति जिनोत्तम ॥
मनःप्रसादसंदर्जदलिता शुजवासना ॥ १९ ॥

॥ शर ॥

कथं कर्तुं जनो मोहव्यपोहमहदक्षम· ॥
मनसा सादरं यस्त्वां न स्तौति तिमिरापदं ॥ २० ॥

॥ शक्ति ॥

बाल्यो मरुशिरःकंपसंपत्प्रथितविक्रम ॥
मनोजानोकहव्याल मम स्वामी जवाजवं ॥ २१ ॥

॥ अष्ट दलकमलं ॥

मानितार्यक्रमामार रमामाकंद माधवः ॥
वधमार्गे ममाकाम सकामार्थीः प्रतानि मा ॥ २२ ॥

॥ षोडशदल कमलं ॥

वनप्या न धनस्वान ध्यानमौन कनहन ॥
ज्ञानस्थान जिनश्रीनघनमेनस्खनःस्व न ॥ २३ ॥

॥ स्तुत्यनामगर्ज बीजपूरं ॥

जय हेमवपु·श्रीक जगन्मोहापहारक ॥
जराहिवीन सिंहांक जन्मनीरधि नाविक ॥ २४ ॥

॥ हरा ॥

तुभ्यं नमोस्तुजनपस्थितिकाय नीतिवन्याशुपावक सुरस्तुत वीर नेतः ॥
विशाल तावितुजमंडपहेमरूप कल्याणधीरूपदक्ष नतदमीन ॥ २५ ॥

॥ कविकाव्यनामाक चक्र ॥

नमाकृत्यपथो जिनेश्वरवरो नव्याजमित्र क्रियाद्दिष्टं तत्वविगानदोषरहितं सूक्तं श्रवस्तर्पण जन्माचिन्त्यसुखप्रद सुरचितारिष्टक्षयो व सदा दाता शोभनवादिधी क जनद यामेक्षण सविदा ॥ २६ ॥

॥ चामरबंध ॥

श्रीमद्धाम समग्रविग्रह मया चित्रस्तवेनामुना नूतस्त्व पुरुहूतपूजित विनो सव प्रगृर्ध्यमिमे ॥ ख्यातज्ञातकुनायतंस सकलत्रैलोक्यस्तूयमातर स्फारस्फूरतरज्वरसरज र गरुडगच्छागत ॥ २७ ॥ इति श्रीमहावीरस्तवन समाप्तम् ॥

॥ अथ श्रीजीरापल्लिपार्श्वस्तवन ॥

जीरिकापुरपति सदा दवतं परमद् स्तुवे जिन ॥ यस्य नाम जगतो वशाकर शर्म जयति मन्त्रराजन ॥ १ ॥ नाथ तावक मुखेन्दुदर्शन दर्शन च नयनामृतं स्तुवे ॥ येन मेदुलितापहारिणा हारिणा हरति पुण्यवारिधि ॥ २ ॥ विश्वविस्तृत मनाप्रभाव ते नायतेन इह मानिनो युगे ॥ व्रजते विनकरे हि नासुरे नासुरेश्वरपुर स्य हि नरेन् ॥ ३ ॥ अर्बुदस्य नगता व्यनाशि या नाशियात्रिकजनेष्वनीतिद ॥ पश्यतोऽस्तनूताशि सारसा सारसाधुनिचिता नवचरा ॥ ४ ॥ मामभाग्रमपि जीरप स्थिरा पवित्राननगलोदरीरया ॥ त्वत्पदस्थितिमनेन साधुना साधुनायकपुरीवना सने ॥ ५ ॥ त्वां नमन्त्यभिरमाङ्गिलाङ्ग तारकरणसुम प्रपूज्य य ॥ प्राप्य चिन्म यमनेनस पद सपद स समर्पयति शाश्वती ॥ ६ ॥ त्वत्पुर प्रकृते प्रभावना नावना चिन निधाय या हृदि ॥ निश्चितं स जनने न दुर्गती दुर्गतीर्णनयसागर प्रभो ॥ ७ ॥ यो दधाति हृदि तेऽङ्घ्रिपङ्कज पङ्क मामर करोति स ॥ तनयेपि न नयति या र्भत पार्श्वनम्यतु नरोत्तरमा ॥ ८ ॥ त्वत्स्मृतेरपि जना निरामया रामया परमया निरामया ॥ पापिनृपास्य जयति नृपिता नृपिता स्फि सुरागनाङ्ग ॥ ९ ॥ त्वत्पदप्रण तिप्रसादर सादर दयति जानुना ह्यति ॥ यत्र याति ननु जानुनालया जानतार ए नमस्तु तत्र किं ॥ १० ॥ अनगगपिराऽप्यपाग पापगजिद्दर पीमयति मा ॥ सन्धरि त्वदि विनो स्यानये पानयेन शरणागतं तव ॥ ११ ॥ त्वन्मय जगति दम्भ मानम मानयदमनतस्य दुर्लभ ॥ नम्रगनमय करणरो रेणरा जिन न हि तन्वयतु ॥ १२ ॥ इत्यादिमपि स्तुत्ना देव नादिह नाविप्रदा ॥ या वरेर नव यामनामन नाम स्तुमनसि प्रदीप्यति ॥ १३ ॥ ज्ञानिन जगदिन निरतन

स्तनं त्रिजगन्ः पुगननं ॥ त्वां स्मरामि सकलंच निष्कलं निष्कलंकमचलं महाव नं ॥१४॥ इत्थं य ध्यन्न. स्तवीति सतत श्रीजीरपल्लीपुरीवास्तं पार्श्वजिनप्रभुं प्रकटित प्रेमप्रताशोदय ॥ सोऽत्यर्थं गुरुगं नवित्तुरगिकं धर्मार्थकामामृतश्रीनिः श्रीनिरिव स्वर गुणगणाश्लिष्टानिराश्लिष्यते ॥१५॥ इति श्रीजीरपल्लीपार्श्वस्तवनं समाप्तम्।

॥ अथ श्रीफलवर्द्धिजिनपार्श्वस्तवनं ॥

सयलाहिवाहिजलहर, समूहनंदणगणनटपवमाणं ॥ फलवद्धिपासनाहं संथुणिमो फणय इहफल ॥ १ ॥ विहुयासं विहुयासं, विहुयासं पत्तमभिथुणंति तुमं ॥ अमयरया अमयरया, अमयरया णुणइव्वमवयणं ॥ २ ॥ समणाणं समणाणं, समणाण जंपिउं फुरइ नत्ती ॥ विणयाणं विणयाणं, विणयाणंदणजयाहि मुहे ॥ ३ ॥ अहिरम्मा अहिरम्मा, अहिरम्मा दिणियमंनि क्यपूया ॥ सवाही सवाही, सवाहीणा तुह य नत्ता ॥ ४ ॥ गयवाहा गयवाहा, गयवाहा अरहियापइपसन्ने ॥ परमहिया परमहिया, परमहिया नह न हुंति नरा ॥ ५ ॥ सहवणा सहवणा, सहवणामयरिक्कहवंति जणा ॥ सुहयगया सुहयगया, सुहयगया तुह पसाएण ॥ ६ ॥ कणयाउ कणयाउ, कणयाउ रक्खसी तुमं भवणं ॥ नहवओ नहवओ, नहवओ रिद्धितिरियाए ॥ ७ ॥ नाएणं नाएणं, नाएणं चियति लोहसुहडंमि ॥ नयराई नयराई, नयराई सुगुणपागणं ॥ ८ ॥ फलवद्धी फलवद्धी, फलवद्धी दाइणा तुमे विहिया ॥ सत्तपरी सत्तपरी, सत्तपरीणंतयाइजया ॥ ९ ॥ समणाली समणाली, समणाली णं तदागमे धन्ना ॥ चरणरया चरणरया, चरणरया नाइचत्तसिरी ॥१०॥ निहप्पहस्स निह,प्पहस्स, निहप्पहस्स मोहदले ॥ रयणायर रयणायर, रयणायर गुहिर तुज्झ नमो ॥ ११ ॥ इत्थं थुउंमि सिरिपास जगन्निवास सिंगारहारफलवद्धिपुरीसिरीए ॥ बुद्धीयराकयजिणप्पहसूरिवाणी ग्रयज्जमे वियर अंतररोगमुक्कं ॥ १२ ॥

॥ इति श्रीफलवर्द्धिपार्श्वनाथस्तवनं समाप्तम् ॥

॥ अथ श्रीचंद्रप्रभस्वामिस्तवनं ॥

॥ संस्कृत ॥

नमो महसेननरेंद्रतनूज जगज्जनलोचनभृंगसरोज ॥ शरन्नवसोमसमद्युतिकाय दयामय तुभ्यमनंतसुखाय ॥ १ ॥ सुखीकृतमादरसेवकलोक विनिर्जितदुर्जयमनावनिपक ॥ सुरासुरवृंदनमस्कृत नंद महोदय कल्पमहीरुहकंद ॥ २ ॥

॥ प्राकृतं ॥

जय निरमिय तिहुयणजंतु संति जय मोहमहीरुहदलनदंति ॥ जयकुंदक

त्रिपसमदतपंति जयजय चदप्पह्वदकति ॥ ३ ॥ जय पणयपाणिगणकप्परु रुक जय जगडिय अपयमकसयपरक ॥ जय निम्मलकेवलनाणगेह, जयजयजिणि ट अप्पहिमदेह ॥ ४ ॥

॥ शौरसेनी ॥

रिगदउहस्सेड मोहारिकेदूदय दलिदगुरुडरिदमध विहिदकुमदरुप ॥
नारतं नमदिजोसददनदवलसजलहदिनिन्नदि गतिं सोदद निम्मल ॥ ५ ॥

॥ मागधी ॥

असुलसुलनिसलनलनाय सेविपदे नमिल जय जतुलुदि दिन्नसिवपुलपदे ॥
चलनपुनिलद ससालिसलसीलुदे, देहि महसामितंसालि सालदपदे॥ ६॥

॥ पैशाचिक ॥

तलिताखिलतोसतपा सतन मदनानलनीलमनानगुण ॥
नलिनारुणपाततलानमते जिननो इधतं सशिव लजते ॥ ७ ॥

॥ चूलिका पैशाचिक ॥

पलनानिकनातुलतप्पहल चलनीकल चालुपशप्पसल ॥
ललनाचनकीतकुनलुचिल चिनलाजमहसमलामिचिलं ॥ ८ ॥

॥ अपभ्रंश ॥

सामपसुरुख निहाणुनाहनदिहो जेहिं तउ पुन्नविहूणउजाणु निफलजम्मु तिर्द नरपसुह ॥ ९ ॥ निम्मल तुह मुहचडजे पहुपिरगुइ पसरिसिउ इयनिरुवमआणड तिह मुनिसामी रिप्फुरइ ॥ १० ॥

॥ वय समसस्कृत ॥

हारिहारहारामृदसुदरदेहानय केरलरमलाकेनिनिलय मल्लुनगुणगणमय॥ रमनारणकरचरणचरणनरमणमरल वलमिहिरमणिसगमविलासलालसमनम वदन ॥ ११ ॥ नयनरदयजलनाहनिमलमगलकुनमदिर वामरामरस्केनिहरण हरियरगुणयधुर ॥ मदरगिरीगुरुमारमननरनिनूमदकुजर देहिमहादयमेय देर म म केरनिकुनर ॥ १२ ॥ इनि जगदनिमदन जनहदि चदन चइप्रन जिनचइरर॥ पहनायानिहुन मम मगमपुनमिहिसुग्यानि रिनो रितर ॥ १३ ॥

इनि श्रीजिनप्रभसूरिजिनचइप्रभस्वामिस्तव षड्भाषास्तवन सपूर्णम् ॥

॥ अथ श्रीवर्द्धमाननिर्वाणकल्याणकस्तवनप्रारंभः ॥

श्रीसिद्धार्थनरेशवंशकमलाशृंगारचूडामणेर्भव्यानां दुरपोहमोहतिमिरप्रोल्लासने ऽर्हमणेः ॥ कुर्वे किंचन कांचनोज्वलरुचेर्निर्वाणकल्याणकस्तोत्रं गोत्रनिदर्शनीयचरणांभोजस्य वीरप्रभोः ॥ १ ॥ प्राप्य देव शरदां द्विसप्तति शीतगौ पवनदेवतर्द्धगे ॥ तामुपायत रसेन कार्तिकाऽमावसीनिशि शिवश्रियं भवान् ॥ २ ॥ हस्तिपालकनृपालपालिता पूर्न पूरयतु मन्मनःशुचा ॥ यत्र दर्शइव चंद्रमा भवानस्तमाप भवतापहा पुनः ॥३॥ कर्जदर्शनिशि दर्शितर्द्धयस्तत्रपुर्यखिलवर्णजाः प्रजाः॥ त्वन्महोदयमही तयाऽधुनाऽप्युत्सवं विदधतेऽनुवत्सरं ॥ ४ ॥ यैर्ध्वनिस्तव पपे श्रवःपुटैः षोडशप्रहरदेशनाविधौ ॥ तान्निवेश्य धुरि धन्यताजुषां रेखया न खलु लुप्यतेऽन्यतः ॥५॥ पुण्यपापफलपाकवर्णनामध्यमध्ययनपंक्तियुक्शतं ॥ व्याकृथाः स्फुटमपृष्टपट्कृतिव्याकृतीश्च परिषद्पुरस्तदा ॥६॥ जीवति त्वयि जिनेंद्रभूतिना त्वत्प्रणामविधिभंगभीरुणा ॥ नूनमेष्यत न देव केवलज्ञानसंपदनुरागभागपि ॥ ७ ॥ यद्विधेयमुपदिश्य गौतमः प्रेषिभक्तिभृदपि त्वयाऽन्यतः ॥ रोगिणः कटुकभावुपानवन्न्यायसेऽस्य चकपे गुणाय तत् ॥ ८ ॥ त्वद्दिदृक्षवतरत्सुरावली या न देहमणिभूषणांशुभिः ॥ सा कुहूरजनि रसातामसा पूर्णिमानिशमुपाहसद्ध्रुवं ॥९॥ निर्वृते त्वयि विलोक्य विष्टपं ध्वातपूरपरिपूरितोदरं॥ रोदयंत इव रोदसी प्रतिश्रुत्स्वरेण रुरुदुः पुरंदरा.॥१०॥ वन्हिवायुजलदेश्वरः सुरैस्तलपर्णिकरुतांगसंस्कृते॥भूतिमात्रमपि भूतिधाम ते ऽपस्पृशन् वत न तान् रजोऽस्पृशत् ॥११॥ भक्तितो महितुमीशवासवास्तावकीनहनुसंग्रहं व्यधु ॥नूनमक्षविजयाय तावकानुग्रहेण हनुमत्वमित्वव॥१२॥ कुग्रहा न तव जातु शासनं वीर बाधितुमलंभविष्णवः ॥ एककः स खलु भस्मकग्रहो बाधते भवदुपेक्षितस्तदा॥१३॥ जग्मुषि त्वयि शिवं नराधिपास्तत्क्षणं गृहमणीनबोधयन्॥ ये वस्तु कुनयकाननधुमध्वजप्रतापशिखिनः कणा इव ॥१४॥ यत्र कश्चन मुनिस्त्वया समं मुक्तिमेषरितैर्जिनेश्चि ॥ दुःषमा समयभावलिंगिनां व्यंजितेन गुरुनिर्व्यपेक्षिता ॥ १५ ॥ प्रस्थिते त्वयि शिवाय तत्क्षणं संमुमूर्छुरधिपृथ्वि कुंथवः ॥ क्षुद्रजीवबहुलामतः परं सूचयंत इव भाविनीं महीं ॥ १६ ॥ यत्र यत्र चरणौ त्वयार्पितौ तत्तदास्पदमगाद्भुतापतां ॥ ए कथा पुनरपापया पुरापापयाऽजनि सुरोक्तिनामतः ॥ १७ ॥ यत्र मुक्तिमगमः नाम दुमावाप पापतुहिनार्कतापतत् ॥ प्रीतिमीति तरुकुंजभंजने नाग नागकरणं कर्तुं न. १८ ॥ यः पठत्यशठधीस्तव वीरस्तोत्रमेतदवधानसमेतः ॥ तत्रभावरिपुभ

जि रयश्रीनाजि न प्रनवति प्रबलापि ॥ १ए ॥ इति श्रीवर्धमाननिर्वाणकल्याणकस्तवन समाप्तम् ॥

॥ अथ श्रीअरिनाथस्तवनप्रारम्न ॥

जय शरदशकलदशह्यवदन जय हृतजगदसह्नमदमदन ॥ जय नतशमगतशमनजकदन जयनगवदरपरमपदसदन ॥ १ ॥ गतमलकमलसकलकरचरण जननमरणनयनयनरहरण ॥ रचय चरणरसनशबलस्वन मनवमसनवमरसरमरचन ॥ २ ॥ नयरचनरतदशशतनयन नयवनजलदजलजदलनयन ॥ फलदकलकलपजयकरयजन नमदशमपह्रशममननजन ॥ ३ ॥ अमरफलदपदह्रपदकमल गजकरसरलसबलकरयमल ॥ जनयसनयमतनतजनसकल मतफलमपमलकलमलमकल ॥ ४ ॥ नयमयवचनपवनसमवमत परमतजलदपटलमनसमत ॥ शमदमयमसमरसरमसमय नवपतनजनयमज मम शमय ॥ ५ ॥ धनरसकनकशकलयनरत्न मदकलकरणकलनजयशरन्न ॥ शरणदचरणनरकदरशमन सदयमदयमफलयगजगमन ॥ ६ ॥ नतशतमखतमखलजनमदर गमपपगमपदमनयदमदर ॥ नयनवजयवननयदशमगम शकलनगजकलगनवनवगम ॥ ७ ॥ नमचयमपनयतपमहृतपन परसमयजरजह्रपदजपन ॥ समजनदमनकमनगजकरट दलनसबजलतमहृतमदचरट ॥ ८ ॥ मदनयनगमनरणनरसरण गतगणमदनतरणयरकरण ॥ परसहृचरसमरसजगदवन समवसरणरमदत्लमहृनयन ॥ ए ॥ सततमचरचरजगदयगमक मननजनकथनतरतमगमक ॥ परपदनगरगमनरणरणक मफलदशमसफलयपथनणक ॥ १० ॥ रसनरलनदननसनमदमन नयनपयनचरनरथतसमर ॥ दलयबह्लमजमरवरवशतमतरतनरमलगतपरवशत ॥ ११ ॥ कपटशकटजलशयसमनवक जनमवगमकसमपरसमरक ॥ गदगजरणफणधरदकदृहन धनह्रमरकजदरह्रमह्न ॥ १२ ॥ समनमतमह्परमतकलम गणधरगणयरशमरसकलस ॥ नयदनवदपदनवनदवम वनमयनमपसह्नमह्नवम ॥ १३ ॥ एव श्रीअरतीर्थराज तव यो ५ करोगछिदा काम केवलवर्णसन्ततरसुगास्वाद विधत्ते सुधी ॥ श्रेया वा न जरामरत्वदवीर्माग्स्यानि वाहनरा मित्राजी जय सुदर स नियनं शिश्रीयते मानव ॥१४॥

इति के

यश्रीनाजि न प्रनवति प्रबलापि ॥ १७ ॥ इति श्रीवर्धमाननिर्वाणकल्याण
ान समाप्तम् ॥

॥ अथ श्रीअरिनाथस्तवनप्रारम्भ ॥

ाय शरदशकलदशह्यवदन जय हृतजगदसह्नमदमदन ॥ जय नतशमगतश
िकदन जयन्नगवदरपरमपदसदन ॥ १ ॥ गतमत्रक्रमलसकलकरचरण
ामरणजवनयचरहरण ॥ रचय चरणरसनशवलस्वन मनवमसनवमरसरम
॥ २ ॥ नवरचनरतदशशतनयन नयवनजदादजलजदलनयन ॥ फलद
लयजयकरयजन नमदशमपहृशमनजजन ॥ ३ ॥ श्रमरफलदपदहर
मल गजकरसरलसवलकरयमल ॥ जनयसनयमतनतजनसकल मतफ
मलकलमलमकल ॥ ४ ॥ नयमयवचनपवनसमवमत परमतजलदपट
ासमत ॥ शमदमयमसमरसरमसमय नवपतनजनयमज मम शमय ॥ ५ ॥
ाकनकशकलघनवरन मदकलकरणकलनजयशरन ॥ शरणदचरणनरकदर
सदयमदधमफनयगजगमन ॥ ६ ॥ नतशतमखतमखलजनमदर ग
ारमपवमनयदसदर ॥ नवनवनवयननरदशमगम शकलनगजकजगजदन
॥ ७ ॥ तमचयमपनयतपमहृतपन परसमयजरजहृरपदजपन ॥ समज
ानकमनगजकरट दलनसबलतमहृतमदचरट ॥ ८ ॥ मदनयनगमशरणन
ण गतरणसदयतरणजरकरण ॥ परसहृचरसमरसजगदवन समवसरण
हृमहृनवन ॥ ९ ॥ सततमचरचरजगदवगमक मननजनकथनतरतमशम
परपदनगरगमनरणरणक मफलदशमसफलयपथनणक ॥ १० ॥ रसनर
ानलसनमदमन नवनपवनचरनरयतसमर ॥ दलयवहलमलमरवरवशत
तनरशतगतपरवशत ॥ ११ ॥ कपटशकटजलशयसमनवक जनमवगमय
परसमवक ॥ गदगजरणफणधरदकदहन धनहरमरकजदरहरमहन ॥ १२ ॥
तसततमहृपरमतकलस गणधरगणधरशमरसकलस ॥ नवदनवदपदलवलस
न वनमवनमयसहनमहनवम ॥ १३ ॥ एव श्रीअरतीर्थराज तव यो इक
गविदा काम केवलवर्णसत्तारसुग्रास्वाद विधत्ते सुधी ॥ श्रेयो वा न जरामर
दवीर्माग्यानि वाहलरा मिनाजी जय सुदर स नियतं शिश्रीयते मानव ॥१४॥
केवलाहृरमप श्रीअरनाथस्तवन सपूर्ण ॥

जि रयश्रीनाजि न प्रनवति प्रवलापि ॥ १९ ॥ इति श्रीवर्धमाननिर्वाणकल्याणकस्तवन समाप्तम् ॥

॥ अथ श्रीअरिनाथस्तवनप्रारम्भ ॥

जय शरदशकलदशद्दयवदन जय हृतजगदसहृनमदमदन ॥ जय नतशमगतशमनजकदन जयजगवदरपरमपदसदन ॥ १ ॥ गतमजकमलसकलकरचरण जननमरणनवनयनरहृरण ॥ रचय चरणग्सनशबलसन मनवमसनवमरसरम वचन ॥ २ ॥ नवरचनरतदशशतनयन नयवनजपदजलजदलनयन ॥ फलदकलकलयजयकरयजन नमदशमपदृरशममनजन ॥ ३ ॥ अमरफलदपददहरपदकमल गजकरसरलसवलकरयमल ॥ जनयसनयमतनतजनसकल मतफलमपमलकलमलमकल ॥ ४ ॥ नयमयवचनपवनसमवमत परमतजलदपटलमनसमत ॥ शमदमयमसमरसरमसमय नवपतनजजनथमज मम शमय ॥ ५ ॥ धनखकनकशकलघनवरन मदकलकरणकलनजयशरन ॥ शरणदचरणनरकदरशमन सदयमदघमफजयगजगमन ॥ ६ ॥ नतशतमखतमखलजनमदर गमयपरमपदमनयदसदर ॥ नवनवनववननवदशमगम शकलनगजकलगलदनवगम ॥ ७ ॥ तमचयमपनयतपमहृतपन परसमयजरजहृरपदजपन ॥ समजनदमनकमनगजकरट दलनसवलतमहृतमदचरट ॥ ८ ॥ मदनयनगमशरणनरशरण गतरणसदवतरणवरकरण ॥ परसद्चरसमरसजगदवन समवसरणरमदहमहृजवन ॥ ९ ॥ सततमचरचरजगदवगमक मननजनकथनतरतमशमक ॥ परपदनगरगमनरणरणक मफलदशमसफलयपथनणक ॥ १० ॥ रसनरलसदनलसनमदमन नवनपवनचरनरयतसमर ॥ दलयवहलमलमरवरवशतमतरतनरशतगतपरवशत ॥ ११ ॥ कपटशकटजलशयसमनवक जनमवगमयसमयरसमवक ॥ गदगजरणफणधरदकदहन धनहरमरकजदरहरमहन ॥ १२ ॥ समतसतमहपरमतकलस गणधरगणप्रशमरसकलस ॥ नवदनवदपदलवलसदवम वनमवनमयसहनमहनवम ॥ १३ ॥ एव श्रीअरतीर्थराज तव यो दुकमैरोगच्छिदा काम केवजवर्णसत्तवसुधास्वाद विधत्ते सुधी ॥ श्रेयो वा न जरामरत्वपदवीर्गाख्यानि बाह्यतरा मित्राली जय सुदर स नियतं शिश्रीयते मानव ॥ १४ ॥ इति केवलाहरमप श्रीअरनाथस्तवन सपूर्ण ॥

जि रयश्रीजाजि न प्रनवति प्रबलापि ॥ १ए ॥ इति श्रीवर्धमाननिर्वाणकल्याण कस्तवनं समाप्तम् ॥

॥ अथ श्रीअरिनाथस्तवनप्रारन ॥

जय शरदशकलदशद्यवदन जय ह्तजगदसह्नमदमदन ॥ जय नतशमगतश मनजकदन जयनगवदरपरमपदसदन ॥ १ ॥ गतमलकमलसकलकरचरण जननमरणनवनयजरह्रण ॥ रचय चरणरसनशबलसन मनप्रमसनवमरसरम वचन ॥ २ ॥ नवरचनरतदशशतनयन नयवनजदजलजदलनयन ॥ फलद कलकलयजयकरयजन नमदशमपहरशममननजन ॥ ३ ॥ अमरफलदपदहर पदकमल गजकरसरलसबलकरयमल ॥ जनयसनयमतनतजनसकल मतफ लमपमलकलमलमकल ॥ ४ ॥ नयमयवचनपवनसमवमत परमतजलदपट लमनसमत ॥ शमदमयमसमरसरमसमय नवपतनजनयमज मम शमय ॥ ५ ॥ धनखकनकशकलघनवरन मदकलकरणकलनजयशरन ॥ शरणदचरणनरकदर शमन सदयमदयमफलयगजगमन ॥ ६ ॥ नतशतमखतमखलजनमदर ग मयपरमपवमनयदसदर ॥ नवनवनवनननवदशमगम शकलनगजकलगलवन वगम ॥ ७ ॥ तमचयमपनयतपमह्तपन परसमयजरजह्रपदजपन ॥ समज नदमनकमनगजकरट ढलनसबलतमह्तमदचरट ॥ ८ ॥ मदनयनगमशरणन रशरण गतरणसदयतरणचरकरण ॥ परसह्चरसमरसजगदवन समवसरण रमदह्मह्नवन ॥ ए ॥ सततमचरचरजगदवगमक मननजनकथनतरतमशम क ॥ परपदनगरगमनरणरणक मफलदशमसफलयपथनणक ॥ १० ॥ रसनर लसदनलसनमदमन नवनपवनचरनरयतसमर ॥ दलयबह्लमलमरवरवशत मतरतनरशतगतपरवशत ॥ ११ ॥ कपटशकटजलशयसमनचक जनमवगमय समयरसमवक ॥ गदगजरणफणधरदकदह्न धनह्रमरकजदरह्रमह्न ॥ १२ ॥ समतसतमह्परमतकलस गणधरगणधरशमरसकलस ॥ नवदनवदपदलबलस दवम वनमवनमयसह्नमह्नवम ॥ १३ ॥ एव श्रीअरतीर्थराज तव यो डुष्क र्मरोगच्छिदा काम केवलवर्णसत्स्तवसुधास्वाद विधत्ते सुधी ॥ श्रेयो वा न जरामर त्वपदवीर्मारव्यानि वाह्यतरा मित्राली जय सुदर स नियतं शिश्रीयते मानव ॥१४॥ इति केवलाह्नरमप श्रीअरनाथस्तवन सपूर्ण ॥